अग्निगर्भ

राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
महाश्वेता देवी के अन्य उपन्यास

1084वें की मां
जंगल के दावेदार

अग्निगर्भ

महाश्वेता देवी

रूपान्तर
जगत शङ्खधर



राधाकृष्ण

श्री ओंप्रकाश की स्मृति को

जिन्हें मैंने कभी नहीं देखा किन्तु जो फिर भी मेरे अत्यन्त निकट थे क्योंकि हमारी आस्थाएँ और मूल्य समान थे, और जिन्होंने मुझे हिन्दी पाठकों से परिचित कराया।

—महाश्वेता देवी

भूमिका

पश्चिमी बंगाल में और भारतवर्ष में कृषक वर्ग के (मुख्य रूप से भूमिहीन किसानों के, जिनकी संख्या आजकल प्राय: पाँच करोड़ है और सारे श्रम-जीवी मनुष्यों के अनुपात में सौ में 26.33 भाग है) असंतोष और विद्रोह का इतिहास समकालीन घटना-मात्र नहीं है। आधुनिक इतिहास के हर पर्व में विद्रोह का प्रयास, उनके प्रति दूसरे वर्ग के शोषण के चरित्र को प्रगट करता है, कालान्तर में भी अब तक वह प्राय: अपरिवर्तनीय बना है। संन्यासी विद्रोह, वहाबी आंदोलन, नील विद्रोह, एक समय से दूसरे समय तक और-और विद्रोहों से आरंभ कर आज के नक्सलबाड़ी आंदोलन ने प्राय: एक ही मौलिक अधिकार को ओरी से ऐतिहासिक मर्यादा दी है।

1967 के मई-जून में नक्सलबाड़ी अंचल में संगठित आंदोलन की पृष्ठभूमि विषय की पुन:-आलोचना में सहायक होगी। दार्जिलिंग ज़िले के नक्सलबाड़ी, खड़ीबाड़ी और फाँसी लगने वाले अंचल के अधिकांश भाग के रहने वाले आदिवासी भूमिहीन किसान है। उनमें मेदी, लेप्चा, भोटिया, संथाल, ओरांव, राजबंसी और गोरखा सम्प्रदाय के लोग हैं। स्थानीय ज़मींदारों ने बहुत दिनों से चली आ रही 'अधियार' की व्यवस्था में उन पर अपना शोषण जारी रखा। इस व्यवस्था के नियम के अनुसार ज़मींदार भूमिहीन किसानों को बीज के लिए धान, हल-बैल, खाना और मामूली पैसे देकर अपने खेत में काम पर लगाते, उपज का अधिकांश भाग ज़मींदार के घर जाता। इसके विरोध में ही किसानों का असंतोष और विद्रोह है। उपज का बड़ा भाग ज़मींदार के घर जाना, मामूली बात पर राज़ी-नाराज़ी के आधार पर किसान को ज़मीन से अलग कर देना, और सबसे अधिक ज़मीन के लिए किसान की आदिम भूख है। इस तरह असंतोष और संघर्ष के दृष्टिकोण से ही 1954 में सरकार ने 'एस्टेट ऐक्वीज़िशन ऐक्ट' पास किया। इस क़ानून की ख़ास बात थी कि कोई व्यक्ति कुल मिलाकर

25 एकड़ से अधिक ज़मीन न रख सकेगा। इस क़ानून के बनाने के पीछे अच्छी नीयत में शक नहीं, लेकिन क्रियान्वित करने में ज़मीन के मालिकों की मामूली-सी ज़मीनें ही गयीं। वेनामी सारी ज़मीनें उनके पास रह गयीं। 1971 में परिवार के आधार पर कृषि-भूमि की उच्चतम सीमा निश्चित कर जो क़ानून (संशोधित) पास किया गया, उससे भी कोई लाभ नहीं हुआ। सबको पता है, क़ानून में मछलियों को पालने के बाड़े, चाय के बाग़, औद्योगिक कारखाने इत्यादि नामों की ओट में हज़ारों एकड़ खेती की ज़मीन छिपा रखने के विरुद्ध कोई बात ही नहीं।

असंतोष का अन्यतम कारण, इस इलाक़े के चाय-बाग़ानों की मिल्कियत की ज़मीनें थीं। यहाँ काम करने वाले मज़दूर प्रमुखतः बाग़ान-मालिकों के लाये हुए थे। वंश-परंपरा से रहते हुए वे स्थानीय निवासी हो गये थे। अमानवीय शोषण के दवाव से ये सदा ही असंतुष्ट रहते और इनके बारे में 1967 के 6 जून के **द स्टेट्समैन** अख़बार में लिखा गया था: 'ऑल-मोस्ट ए स्टेट ऑफ़ क्रूअल स्लेव्री।' इन चाय-बाग़ानों के मालिकों के क़ब्ज़े में जो अतिरिक्त ज़मीन थी, उसे उन्होंने अपने आश्रित श्रमिकों में बाँट दिया। सरकार ने इस बंदोबस्त की ज़मीन को अपने अधिकार में लेने की सोची, किंतु बाद में योजना छोड़ दी गयी। इससे श्रमिकों के मन में असंतोष की गाँठ पड़ गयी। सन् पचास के मध्य भाग में चाय-बाग़ान अंचल के अधिया वालों ने मालिकों के विरुद्ध आंदोलन आरंभ किया। उनकी मूल माँग थी कि चाय-बाग़ान की अतिरिक्त भूमि सरकारी अधिकार के आश्रय में लाना होगी और उन लोगों में उसे बाँट देना होगी। 1956 में इस आंदोलन ने एक भयंकर रूप धारण कर लिया। परिणामस्वरूप बाग़ानों के मालिकों ने ज़मीनों से अधियारियों को उखाड़ फेंका, उनके घर-द्वार हाथियों के पैरों के नीचे कुचलकर तहस-नहस करवा दिये। इस प्रकार के अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध नक्सलवाड़ी के किसान एक दिन संगठित शक्ति लेकर विद्रोह के पथ पर उतर पड़े। उस आंदोलन ने एक ही तरह से वंचित-शोषित किसानों को आंध्र में, केरल में, तमिलनाडु में, बिहार में और उड़ीसा में प्रेरणा दी। जिसे नक्सलवाड़ी आंदोलन नाम दिया गया है, उसे बहुत-से नाम दिये गये हैं। सारे काम का मुक़ाबला किस तरह किया गया, यह सभी जानते हैं। घटनाओं से चरम वामपंथी पतन, किताबी और बहुत जोशीले युवकों का फ़स्ट्रेशन, अन्य शक्तियों और कृपाओं पर पली संस्थाओं के क्रियाकलाप, जो भी क्यों न कहा जाये, कुछ तो सचमुच बाक़ी रह ही जाता है। जिन-जिन कारणों से यह आंदोलन उत्पन्न हुआ वे अक्षुण्ण और अप्रतिबंधित हैं। इस मत के अनुयायी युवक ही अहिंसक

भारत में पहले-पहल हिंसा की राजनीति लाये। यह होने पर भी भारत के नक्शे से कुछ-कुछ चिह्न पोंछकर मिटाये नहीं जा सकते। भूखे किसानों का शोषण बेरोक-टोक चल रहा है। जमींदारों ने बेनामी, देश की प्रायः सारी खेती-योग्य भूमि कुछ हजार परिवारों की मिल्कियत में कर ली है। दूसरे नाम से चक्रवृद्धि ब्याज में पीसना और बेगार लेना चल रहे हैं। ग्राम्य भारत का स्वरूप श्मशान की तरह है। सूखे में और गरमी में आदिवासी और अन्यान्य तथाकथित अवर्ण हिंदू जाति सूखी नदी का कलेजा खोदकर पानी तलाश करते हैं, भात का फेन और आमानी[1] बिकते हैं। पलामू के आदिवासी लोगों को चीना घास के बीज के सिवा और कोई चीज खाने को प्रायः नहीं मिलती। आंध्र में कांग्रेस की विजय के अर्थ निश्चय ही यह नहीं कि वहां बहुत दिनों से नक्सल-दमन के नाम से अवर्णनीय अत्याचार नहीं हुए। जिन-जिन कारणों से आंदोलन भड़का, वे कारण अभी मौजूद हैं। हर जन-आंदोलन के पीछे के उनके कारणों की विवरण-संख्या बाद के खोज करने वालों ने जमा की। यह देखा गया कि आंदोलन का स्वरूप और प्रवृत्ति लेकर जितनी गड़बड़ रही, दमन में उतनी ही दक्षता रही। क्षणिक होते हुए भी किन-किन कारणों से तृणभूमि में आग लगी, इस बारे में सब मौन हैं। किंतु प्रशासन के मौन रहने से ही क्या सचाई समाप्त हो जाती है ?

मेरी कहानियों की पृष्ठभूमि का उद्देश्य प्रमुखतः नक्सलबाड़ी घटनावली और उसकी पृष्ठभूमि का उल्लेख प्रधानतः होने पर भी यह मानना होगा कि इस देश के कई दशकों की जीवन-यात्रा में वही सबसे अधिक उल्लेखनीय और अनुप्राणित होने योग्य घटना है। बसाई टुडू-द्रौपदी की ये सारी घटनाएँ ही तात्कालिक परिणाम हैं, यद्यपि संग्राम में उन्होंने ही समाज में परिवर्तन किया और परिणाम में नाम और स्थानीय अवस्थिति के सिवा काल और देश के प्रतीक बन गये। अवश्य ही किसी भी आंदोलन का शायद साधन-मार्ग और परिणाम सच नहीं होता, एकमात्र इतिहास ही उनके मूल्य का निर्णायक होता है। और वर्तमान युद्धरत मनुष्य इसीलिए सब देशों में अपना बनाया सारा मार्ग तोड़कर नया पथ निर्मित करने का स्वप्न देखता है और प्रतिज्ञा करता है। इतिहास के दृढ़पूर्ण मार्ग पर इसी कारण से निरंतर गंतव्य स्थान का सत्य ही सत्य के नाम से चित्रित होता है।

किंतु, सब जगह समस्या केवल भूमि की नहीं है। खेतमजूर के

1. पानी, जिसमें रात को भात भिगोकर रखा जाता है।

हिसाव मे किसान अपने उचित प्राप्य से वंचित हैं। पानी, वीज के धान, खाद के लिए उनकी निरंतर लड़ाई, अनाहार और ग़रीवी में उनके दिन कटते हैं। स्वतंत्रता के वाद इस देश में जो आर्थिक प्रगति हुई है, उसका फल किसी मध्यवर्गीय-मज़दूर-खेतमजूर को नहीं मिला। एक ओर, धनी-वर्ग और अधिक धनी हो गये हैं, एक आत्मतुष्ट, अशिक्षित, असभ्य नया धनिक-वर्ग उत्पन्न हुआ है। दूसरी ओर; सामान्य मध्यवित्त लोगों के पास जो कुछ था उसे खोकर वे अधिक ग़रीव वन गये। निम्नवित्त एवं मध्य-वित्त वर्ग आज संपूर्ण रूप से क्षय होने की ओर वढ़ रहे हैं। धनी किसान और अधिक धनी हो गये हैं, मामूली ज़मीनों के मालिक अपने अंतिम सहारे धरती को ज़मींदार-महाजन को देकर खेतमज़ूरों की संख्या वढ़ा रहे हैं। इसके अलावा जीवित रहने का मौलिक अधिकार भी जहाँ उनके लिए निषिद्ध है, वहीं शहरी धनी मध्यवर्ग और उच्चवर्ग के किरायेदार साहित्य के नाम से अपने-अपने आत्मानुशीलन में लगे हैं। रोम जलने के वाद नीरो ने वायलिन वजाया तो था, उसे उसका अधिकार भी था, क्योंकि जिन कारणों से रोम जल रहा था, उनको भूलकर अपने वायलिन का गुंजन ही उसे अच्छा लग रहा था। लेकिन उसके परिणामस्वरूप उसे भी मिट जाना पड़ा। वंगला साहित्य में वहुत दिनों तक विवेकहीन वास्तविकता से विमुख साधना चली। लेखक लोग प्रत्यक्ष को देखकर भी नहीं देख रहे हैं। इसका नतीजा हुआ है, अच्छे पाठकों के मन में उनका भी परित्याग हो गया है। तमाम समस्याओं, तमाम अन्याय, वहुतेरी जातियों, तमाम लोकाचारों से युक्त देश के लेखकों की सामग्री देश और उसके मनुष्यों से नहीं मिलती, इससे अधिक आश्चर्य की वात और क्या हो सकती है? मनुष्य के प्रति इस प्रकार का यह नकचढ़ापन संभवतः भारतवर्ष की तरह के आधे औपनिवेशिक, आधे सामंतवादी, विदेशी शोषण के अभ्यस्त देश के लिए ही संभव है। शहरों में ही क्या आज़ादी है? वेकारी की समस्या वरावर वढ़ रही है, चीज़ों के दाम आकाश छू रहे हैं, शिक्षा में हद की अराजकता है, इससे मध्यवित्त संतुलन खोकर रेले में दूसरे वर्ग की ओर वढ़े जा रहे हैं। वर्ग-संघर्ष का क्षेत्र अधिक साफ़ होता जा रहा है। इतिहास के इस संधि-काल में एक जिम्मेदार लेखक को शोषितों के लिए क़लम उठाने पर वाध्य होना पड़ता है। अन्यथा इतिहास उसे माफ़ नहीं करेगा।

लिखने की ज़रूरत क्यों हुई, यह वता दिया गया है। संभवतः, अव कुछ घर की वात भी वताने की ज़रूरत है। मेरी रचना में निर्देशित राज-नीति खोजना व्यर्थ है। शोषित और पीड़ित मानव के प्रति संवेदनशील मानव ही मेरे लेखन की प्रधान भूमिका है। 'जल' कहानी का मास्टर

सत्ता और वित्तवान कांग्रेसी है। 'एम० डब्ल्यू० बनाम लखिन्दर' गल्प का खेतमजूर-आंदोलन सी० पी० आई० के खेतमजूर यूनियन का नेतृत्व प्रदान किया आंदोलन है। 'ऑपरेशन बसाई टुडु' कहानी का काली सांतरा सी० पी० एम० दल में रहा और बसाई टुडु ने स्वयं नक्सल-आंदोलन को भी छोड़ दिया था। और 'द्रौपदी' गल्प की नायिका आदिवासी नक्सल-कार्यकर्त्री थी। मानसिकता में और कहीं एक ओर वहीं एकीभूत होना मेरे निकट परस्पर-विरोधी नहीं है। जीवन गणित नहीं है और राजनीति के लिए मनुष्य नहीं, मनुष्य के न्यायाधिकार को जीवित रखने के अधिकार को सार्थक करना ही समस्त राजनीति का लक्ष्य होना उचित है, यह मेरा विश्वास है। मुझे वर्तमान समाज-व्यवस्था को बदलने की आकांक्षा है। मैं शुद्ध दलगत राजनीति में विश्वास नहीं रखती। स्वतंत्रता के इकत्तीस बरस में मैंने अन्न, जल, जमीन, क़र्ज़, बेगार—किसी से भी देश के मनुष्य को मुक्ति पाते नहीं देखा। जिस व्यवस्था ने यह मुक्ति नहीं दी उसके विरुद्ध शुभ्र, शुद्ध और सूर्य के समान क्रोध ही मेरे समस्त लेखन की प्रेरणा है। दक्षिण-वाम—सभी दल सामान्य मनुष्य से किये हुए वायदों को पूरा करने में असफल रहे हैं, ऐसा मेरा विश्वास है। मेरे जीवन-काल में इस विश्वास को बदलने का कोई कारण होगा, ऐसी आशा नहीं है, इसी से सामर्थ्य के अनुसार मानव की कथा ही लिखी, जिससे कि सामना होने पर उसके लिए लज्जित न होना पड़े, क्योंकि लेखक को जीवन-काल में ही अंतिम न्याय के लिए उपस्थित होना पड़ता है और जवाबदेही की जिम्मेदारी रह जाती है।

—महाश्वेता देवी

अग्निगर्भ

थाने में अचानक खबर आयी। चील ने जैसे कौवों के बीच मांस का टुकड़ा फेंक दिया हो और उसके बाद कांव-कांव मच गयी हो। खबर लाया था एक लड़का। जमाने का एक रंगरूट। जमाना भला नहीं था। मत्तर के मान से जमाने के कलेजे पर आग बुझाने वाला इंजन ही घंटा बजाता आया था। इसी में सारे दूकानदार, बोझा ढोने वाले, वकील, व्यापारी, साइकिल-रिक्शा वाले जमाने के रंगरूट बन गये थे। उनका काम मतलब की खबर जुटाकर थाने पर पहुँचाना था। 'आर्मी मस्ट ओबे'[1]। वेतन के रूप में इनको मिलती थी थाने की सुरक्षा। नौलखा हार! थाने की सुरक्षा न मिलने से भद्दी-बदशक्ल परोपकारी महिलाओं को धर्मराजा के मेले में कैम्प लगाने पर डांट पड़ी। रंगरूटों को सुरक्षा मिलती है और वे इस बाजार में अपने-अपने ढंग से कमाते-खाते हैं।

खबर लाया था एक लड़का—मातो डोम। रंगरूट बनने के बाद से लड़का घरमा गाँव से भगा दिया गया था, या अपनी तबीयत से प्रवासी बना हुआ था। बीच-बीच में वह गांव जाता और 'बांबी' छपी बनियान और रंगीन छींट की लुंगी दिखा डोमिनियों को लुभाकर चला आता।

उसने बताया, 'बसाई मर गया।'

'कौन?'

'बसाई, बसाई टूडू[2]।'

'मर गया? तूने देखा?'

'मैंने नहीं देखा। बाप ने बताया।'

एम० आई०[3] उस पर भी नहीं घबराया। पर थाने का मुंशी देउकी

1. सेना को हुक्म मानना होगा 2. संथालों में एक जाति 3. सब इंस्पेक्टर, नायब दारोगा।

मिसिर पुराना घाघ था। सारी हुकूमतों के अमल में बाबुओं की सुरक्षा पाने वाला था। वह बोला, 'उसका बाप है रतन। वही रतन। जब रतन ने कहा है तो खबर छूंछी न होगी। आप जायें।'

'रतन डोम ?'

'हाँ, मशाई। रतन नाचता फिरता था। बच्चू ने इससे भी कुछ नहीं सीखा।'

'बच्चू जेल में नहीं है ?'

'हज़ार वोट कंट्रोल[1] करता है। उसे जेहल में कौन रखेगा ? सामन्त को ओट[2] क्या आप देंगे ?'

वोट-कंट्रोल सुनकर एस० आई० चुप हो गये और रतन डोम को जेल की कोठरी में देखने की इच्छा के लिए अपने को धिक्कारने लगे। लड़के से बोले, 'तेरा बाप क्या कहता था ? वह कहाँ है ?'

देउकी मिसिर ने फिर टोका, 'रतन डोम थाने आयेगा ? थाना उसकी जगह है ?'

एस० आई० ने पूछा, 'तेरा बाप कहता था ?'

'ना ! बाप ने मुझे नहीं देखा। बात नहीं हुई। माँ मेले में आयी थी। माँ कहती थी, मेरे बाप ने देखा, वह मर गया। बसाई मर गया, उसे देखने भागा। मैंने पूछा, कहाँ ? वह बोली—चरसा के पास जंगल में।'

बात सुनकर एस० आई० के शरीर में भूचाल आ गया। जंगल को कूम[3] करने की उनकी बात थी। बरसात बीतने पर जायेंगे। चरसा के जंगल का ध्यान कर उनका कलेजा काँप उठता था। वह साल के पेड़ों के जंगल की तरह नहीं था। पेड़ों के बीच से आँखें चलती थीं। चरसा में साल-पियासाल-केंदू-आँवला-बहेड़ा का घना जंगल था। बरसात में चरसा नदी किनारे तोड़ कर बहती थी। उस पानी को पाकर बड़ी-बड़ी लताएँ, हंसपदी लता और उलट कंवल के पेड़ जंगली हो जाते। ऐसे जंगल को 'कूम' कराना बहुत मुश्किल था। बीमारी का बहाना बनाकर वे चैन की बंसी बजा रहे थे। अब अगर उस जंगल में बसाई टूडू मरता है, तो उनकी नौकरी पर मुसीबत है। सामन्त उसे कच्चा ही चबा जायेगा। सामन्त की पार्टी के कम लड़कों को उसने वैनिश[4] नहीं किया। जेल से निकलकर वे उसका क्या करेंगे, यह सोचकर ही उसकी नींद उड़ जाती थी।

अब देउकी मिसिर ने सब समझ लिया और बोला, 'मातो, तू बाहर जा। बस का कंडक्टर है न ?'

1. हाथ में रखता है 2. वोट 3. छानना 4. सफ़ाया।

'नहीं, बेकार हूँ।'

'मैं कह दूंगा।'

मातो चला गया। मन-ही-मन बहुत गुस्सा आया। कह दूंगा। हो.। थाना बाबू के कहने पर क्या पाल बाबू की मजाल है कि उसे कंडक्टरी न दे! अभी तो मातो बहुत धकियाया हुआ और लाचार है। जात गयी, पेट भी नहीं भरता। बाप उससे घृणा करता है। गाँव में रहना उसके लिए खतरे से खाली नहीं है। बस की कंडक्टरी मिल जाये तो मन में फिर भी सांत्वना रहे। लेकिन बम्हनई की गर्मी में मिसिर बाबू उससे घृणा करते हैं। आज-कल सिनेमा के आगे चिनिया बादाम बेचना उसकी रोज़ी है। उसमें 'शहर में है' कहना तो चल जाता, पर यह कुछ ज़िंदगी नहीं थी। जी-भर के सिनेमा देखना, छककर शराब पीना, गले में रूमाल बाँधकर शहर में घूमना—सभी तो पहुँच के बाहर रह जाता है। बसाई की खबर बना दी है, इससे अब उसे डर लगने लगा है। बसाई धर्मराज की तरह ही अचूक और बदला लेने वाला है। मातो को वह बहुत बड़ी सज़ा दे सकता है। डर के मारे विवश होकर मानो काली सांतरा के पास जाता है। काली सांतरा प्रौढ़ है, शासन का आदमी है, किसान आंदोलन में कभी बसाई का साथी रह चुका था। 'ज़िलावार्ता' नाम के भद्दे छपे साप्ताहिक का संपादक है।

काली सांतरा बहुत समय से पार्टी का आदमी है और उपनगर-केंद्रित कर्म-क्षेत्र उसका अपना चुना हुआ है। लेकिन परिणाम में शहरी बाबुओं की तरह उसकी उन्नति नहीं हुई। उसकी ईमानदारी पर किसी को शक नहीं है। राजनीति से दो पैसे न कमा पाने पर अपने बेटे के आगे ही वह बुद्धू है। लेकिन बस्ती में उसकी एक इमेज है। पुराने दिनों से पार्टी का आदमी है और बिना पैसे के आँखों का कैम्प न लगा तो मोतियाबिन्द न कटा पाया। ऐसे आदमी को चुनाव के समय या पार्टी का इमेज नष्ट होते समय नमूने की तरह दिखाने के काम में लाया जाता। काली सांतरा पिछले साल कलकत्ता जाकर हार्निया कटा आया था। उसके बाद से उसका शरीर कमज़ोर है। इस समय वह धान कटाने के आंदोलन में गाँव गया हुआ था। किसानों को कृषि-ऋण देना होगा, इसके लिए प्रयत्न किया, 'ज़िला वार्ता' प्रकाशित की। बहुत जगह बुकपोस्ट भेजी। अभी भी वह स्कूल-कमेटी की मीटिंग में जाता है और शहीद दिवस के अनुष्ठान में ज़िले के हाकिम के पास बैठता है। लेकिन आजकल फूटे बर्तन में पानी भरने की तरह बेकारी की अनुभूति उसे खिन्न कर देती है। काली सांतरा समझता है कि उसकी बस छूट गयी है। पार्टी ने उसका उपयोग किया। उसके उजले कपड़े पहनने पर पार्टी के सफल मेम्बरों को जैसे दुःख होता और वे

नीरव दृष्टि से तिरस्कार करते। सबका विश्वास था, पार्टी के बाहर सबके सब-कुछ होने की बात थी—घर, नौकरी, प्रतिष्ठा-अख़बारों में खबर—अकेले काली सांतरा की छींट की कमीज, अधजली धोती और बाटा का टिकाऊ जूता पहनकर अच्छे कार्यकर्ता की तरह लड़ते रहने की बात थी।

इस तरह के कारणों से आजकल क्रांति-दिवस पर भी काली सांतरा के कलेजे में आवेग नहीं नाच उठता था। क्रांति और समाजवाद लैंपपोस्ट की ओट में खड़ा है, उसे पुकारकर लाने-भर की जरूरत है, इस बात पर वह अकेला विश्वास करता है, यह काली सांतरा को नहीं मालूम था। अब उसे अपना-आप बहुत अलग-थलग लगता। अकेलेपन का घूंघट वह हटा न पाता, और पार्टी की मीटिंगों में तो नहीं ही हटा सकता था। अब जो बातें अबेर-सबेर उसके मन में उठतीं वे भले कार्यकर्ता के जीवन की गोधूलि वेला में बड़ी मर्मांतक होती हैं। ब्लॉक के कुएँ से डोम लोग पानी नहीं भर सकेंगे, यह देखकर, या विधवा साथिन से ब्याह करने के कारण गांव के स्कूल से नित्य-जीवन दलूइ को हटाये जाते देखकर (विधवा ब्राह्मणी थी) काली सांतरा के मन में होता कि आरंभ का संग्राम ही विफल हुआ है—इस देश में क्रांति बड़ी भारी क़िस्से की पोथी नहीं, पान का पत्ता मात्र है। इस तरह की नैतिक बातें उसके मन में उठती हैं, इससे उसे निराशा होती। वह क्रांति-दीक्षित है, उसके मन में क्या इस तरह की बातें उठना ठीक है?

काली सांतरा के जीवन में बसाई टूडू एक विशेष अनुभव था। कभी बसाई के साथ उसने किसान-आंदोलन किया था। उसके बाद दोनों की राय और राह एक न रहे। लेकिन इकहत्तर में बसाई के लिए वही टेरामाइसिन के कैप्सूल लेकर भागा गया था। संपर्क के लोगों का विश्वास था कि बसाई के एक-एक काम-काज की ख़बर काली सांतरा को शुरू से थी, लेकिन वह बताता नहीं। बसाई टूडू के बारे में काली सांतरा की कमजोरी या लॉयलटी के कारण कलकत्ते के किसी दफ़्तर में काली सांतरा के नाम पर लाल स्याही से निशान लगा हुआ है, इसका काली सांतरा को पता न था।

काली सांतरा को पता न था कि बसाई टूडू के चार बार मरने के बाद (1970 से 1976 तक बसाई चार बार मरा) चारों बार उसे शनाख़्त करने के लिए औरों के साथ काली सांतरा को भी जाना पड़ा था, वह स्थानीय एस० आई० की इच्छा से नहीं था। चारों बार कलकत्ता से फ़ोन आया था। फ़ोन के निर्देश से काली सांतरा को जीप पर चढ़ना पड़ा था।

इस बार मातो डोम ने आकर काली सांतरा से कहा, 'थाने में, बताया, तो किसी को विश्वास नहीं हुआ। इससे आपसे बताता हूँ, बसाई मर गया।'

'कहाँ ?'

'चरसा के जंगल में।'

'तुम यहाँ क्यों आये, बाबू?'

'आप उसकी लाश पहचानें।'

'जाओ, अभी भाग जाओ।'

मातो डोम समझता है कि आज का दिन भी बरबाद हुआ। ऐसी खबर, पर उसमें न तो होश में आये थाने के बाबू लोग और न चौंका काली सांतरा। लक्षण अच्छे नहीं हैं। बसाई की खबर उसे नहीं बताना था। माँ ने शराब के नशे में कहा था। कहा था मन के दुःख में। मातो के गाँव से निकाले जाने के बाद से उसकी माँ के मन में बहुत दुःख है। पुलिस गाँव में बराबर गड़बड़ किया करती है। सत्तर-इकहत्तर में मदद देने के लिए गाँव सरकार की आँखों में सौतेला बेटा था। वस्तुतः गाँव का स्वरूप श्मशान-सा हो गया है। 'चरसा' नाम सुनकर बी० डी० ओ० बीज नहीं देता, रिलीफ़, सूखे में, अकाल में गाँव में नहीं घुसता। गाँव के आदमियों को अँगूठा दिखाकर खेत काटने वाले आकर जोतदार के धान काटते और मजदूरी लेते। 'चरसा' नाम के चारों ओर से रिलीफ़ की बाढ़ आती। सत्तर-इकहत्तर में मदद देने के परिणामस्वरूप चरसा का यह हाल हुआ। रतन की पत्नी, मातो की माँ ने पति से कहा था, 'वह मरे तो मरे। उसके लिए ऐसी मुसीबत !' यह बात सुनकर रतन ने पत्नी की कमर में डंडा मारा। उसी दुःख से मातो की माँ ने मेले में आकर बाँस की टोकरियाँ बेचकर शराब पी, मन के दुःख से लाचार हो गयी और मातो से सब बताया।

मातो को लगा कि अब शनि उसके सिर पर नाच रहा है। डर से काँप कर उसने सिनेमा-हाउस की राह पकड़ी।

काली सांतरा ने प्रेस बन्द कर साइकिल ली, धुंधली नज़र से अँधेरा काटते-काटते महादेव साउ की आढत पर गया। महादेव से बोला, 'चावलों की लॉरी से सदर जाना है। सो, लॉरी कब जायेगी ?'

'यही ग्यारह बजे।'

'हूं, कौन-सी जायेगी ?'

'बाबा तारकनाथ।'

'बाबा तारकनाथ' लिखी हुई लॉरी पर जाकर काली सांतरा बैठ गया। उमर इकसठ थी, काली सांतरा बहुत ही अकेला-अकेला, दुबला भी

था। मोतियाविन्द का ऑपरेशन वैसा कुछ न हुआ। वायीं आँख धुंधली-सी थी। दोनों आँखों को ग्रहण लग गया था। हमेशा यही लगता कि सूर्य-ग्रहण की रोशनी का धुंधलापन हो। इकसठ वरस की उमर में मोतियाविन्द की आँखें लेकर, टेंट में सात रुपये और शरीर में सारी अशान्ति लिये, वेटे के पास भोजन न मिलने का दुःख मन में लिये, छाती में प्रेस के कंपोज़ीटरों के रुपयों के लिए अपमानित होने की ज्वाला लिये, प्रशासन से लड़ाई करना वहुत कष्ट की वात है। इतना कुछ क्यों सहा जाये? जिसके लिए वह 'कॉज़'[1] को नहीं पाते, वह गोली-सा लगता। लगता, जाति-भेद और छूत-अछूत की मौलिक समस्या का समाधान ही जव नहीं हुआ, तो क्रांति और समाजवाद वहुत वड़ी वातें हैं, वहुत दूर का स्वप्न है, उसे अपने ज़िले में सव जातियों के लिए वहुत-से कुएँ देख पाना शान्ति होती। जव मन की यह अवस्था हो, तो काली सांतरा अकेला कुंभ वनकर नक़ली क़िले की रक्षा करने के लिए कैसे लड़े? लेकिन 'नक़ली क़िला'? अगर वैसा ही होगा, तो वसाई टूडू के पास जाने के लिए प्रशासन को टोपी पहना कर[2] 'वावा तारकनाथ' पकड़कर जाना किसलिए? प्रशासन को टोपी! टोपी ही तो है। अकड़ने की सामर्थ्य कैसी होती है? काली सांतरा ने मन-ही-मन सोचा कि प्रशासन को 'टोपी पहना रहा है'। पर पट्टी पढ़ा रहा है, अँगूठा दिखा रहा है, यह भी तो सोच सकता था? लेकिन अव वह चारों ओर से फँसकर वहुत परेशान था। अव अकड़ने के लिए अक़ल लड़ाना संभव नहीं था। एक जीवन में वहुत तमाशे हो चुके हैं। काली सांतरा को पता था कि जीप और एस० आई० आयेंगे और उसे ले जायेंगे। शनाख़्त करो। 'शनाख़्त' शव्द के पहले थका मन वार-वार 'लाश' क्यों जोड़ देता है? काली सांतरा चार वार जा चुका है। हुक्म पर। इस वार वह स्वयं जायेगा। इसीलिए यह प्रतारणा है। चौथी वार वसाई ने कहा था, 'लहास हो गया हूँ, उसी से शनाक्त करने आये हो, कमरेट?'

काली सांतरा ने सीट से टिककर आँखें मूंद लीं। सदर। वह सदर जायेगा। लॉरी चल दी।

2

रात के नौ वजकर सत्तावन पर मातो डोम थाने से निकला और काली सांतरा के पास आया। दस वज कर तीन मिनट पर प्रकृतिस्थ

1. उद्देश्य, लक्ष्य 2. सम्मान दे रहा है।

एस० आई० ने कलकत्ते को ट्रंक बुक की और जल्दी ही लाइन मिल गयी। केवल चरसा गाँव के लिए नगण्य जागुला से सीधी लाइन खींची गयी है। जागुला आजकल कई ऐस्फाल्ट की सड़कों का केंद्र है। सत्तर-इकहत्तर में दमाई आदि के लिए परगना धधक रहा था और उस समय बिना अन्न-वस्त्र के प्रशासन की लड़ाई में गये जवान लोग सदा पराजित हुए। उनके मनोरंजन में रेवती और बेदाना समर्थ न हुए। जमाना ख़राब था। उस दशक की नसों में ज्वर की आग थी। बेदाना वालों में भी उस ज्वर का संचार था। ये भी भागे हुए लोगों को न जाने क्यों आश्रय देते और जिरह में बीड़ी पीने से बिना दाँत के पोपले मुँह से खनकती आवाज़ में कहते, 'आश्रय नहीं देंगे, तो बिना विस के ढेमना साँपों को क्या पता चलेगा? कांग्रेस-अँग्रेज में जब लड़ाई होती; तब नक्षत्र भूयाँ क्या मेरे घर में नहीं छिपा था?'

इस बात पर सरकार बिलकुल चुप हो जाती और इसके बाद इस जागुला में विलायती शराब की दूकान खोलकर लड़ने वाले सैनिकों की ख़ातिर की जाती।

वे दिन बीत गये। फिर भी चरसा नाम प्रशासन के शरीर पर दुष्ट व्रण[1] है। सर्च ऐंड डेस्ट्रॉय—'ऐप्रिहेंशन ऐंड इलिमिनेशन—शूट टू किल'[2] इत्यादि मतलब के इलाज से भी प्रशासन के शरीर से 'चरसा' रोग निर्मूल नहीं हो सका। एस० आई० सब जानते हैं। उचित तालीम पाकर ही वह जागुला आये हैं। अब वह फ़ोन पर बोले, 'बसाई टुडू। चरसा में मरा।' तभी फोन पर कलकत्ते की ओर चरसा 'टॉप प्रॉयटी'[3] हो जाता है। आदेश आता है, 'गो टू साइट। इन्फ़ार्मेंट फ़ॉलोइंग।'[4] यह बात कइयों को दैवी आश्वासन होती है और एस० आई० को शान्त, साहसी, हिंस्र, कर्तव्य-परायण बना देती है। आदेश आता है, 'काली सांतरा।' और एस० आई० फोन रखकर बेल्ट कस लेते हैं और देउकी मिसिर की ओर देखते हैं। देउकी मिसिर कहता है, 'कांस्टेबल चला गया है।'

लेकिन 'जिला वार्ता' को अँधेरा कर काली गायब है। ख़बर लाया कांस्टेबल। देउकी मिसिर एस०आई० से बिलकुल तमककर बोले, 'सामन्त बाबू की घरवाली की खाल खींच लूँगा। सांतरा बाबू नहीं है। घर जा। जाकर देख। जायेगा कहाँ? एँ?'

---

1 घहरबार 2 खोजकर नाश कर दो—पकड़कर समाप्त कर दो—जान से मारने के लिए गोली चलाओ 3. सबसे अधिक महत्वपूर्ण 4 मौक़े पर आओ। पता देने वाला आ रहा है।

लेकिन कहीं भी काली सांतरा को नहीं पाया। अब देउकी मिसिर मन की आँखों से एस० आई० का डिमोशन[1] देखकर और पाशवी आनंद से बोले, 'मैं घर जा रहा हूँ। ड्यूटी ओवर। उसे पहचानता है अकेले काली सांतरा। और कोई नहीं है जिसने उसे देखा है।'

एस० आई० समझते हैं, देउकी मिसिर इस तरह उसे नीचा दिखा रहा है। थाने में वाम्हन नाम से वह और मिसिर हैं। लेकिन उनके भाग्य से बड़ी लड़की इस समय मलया रुइदास है। दामाद आई० ए० एस० है, फिर भी वह चमार है और मिसिर उससे बहुत चिढ़ता है। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें और कहें, 'आप चलें न? आपने भी तो उसे देखा है।'

'हँ! मैं जाऊँ, जाकर तीर खाऊँ!'

'देखिये मिसिर बाबू, अफ़सर हो। आप जानकर भी नहीं जा रहे हैं, इससे आपका रेकॅर्ड खराब हो जायेगा। यह अच्छा नहीं कर रहे हैं।'

'नहीं, नौकरी छोड़ दूंगा। जंगल में जाऊँगा बसाई के आमने-सामने? न मशाई, वह न कर सकूंगा।'

'मैं रिपोर्ट दूंगा।'

'आप एस० आई० हैं। बसाई ने डिप्टी-सुपर[2] के पेट में टेंटा[3] भोंक दिया था।'

लाचार एस० आई० बसाई के विवरण के काग़ज़ जेब में रखकर रवाना हो गये। घनघोर आषाढ़ की रात में उनकी जीप 303 की गोली थी। टार्गेट[4] था चरसा। दोनों ओर के धान के खेतों में लगता कि करोड़ों बसाई हैं। धान के खेत देखते ही उनके मन में बहुत अधिक असंभव-सा डर लगता। धान माने धान की रोपाई। उसके बाद वर्षा के नये जल में नन्हे धान के पौधों को काट फेंकना। 'धान' का काम कितने मातृभाव से भरा हुआ होता है। भारतवर्ष की धात्री मानो धान हो। लेकिन धान के अर्थ ही होते हैं जमींदार की जमीन। अगहन में धान की कटाई होती है। तीसरी बार मृत्यु के बाद बसाई की दर्पसहित घोषणा थी: 'धान काटूंगा। उसको सरकारी मंजूरी नहीं दी—उससे जमींदार सूर्य साउ की लहास गिद्धों को खिलाऊँगा।' थाने में तसवीर थी, काग हांकने की जगह बिना सिर सूर्य साउ थे। बसाई टूडू ने धान की कल्पना के 'धान' शब्द को होमीसाइड कर लाल-लाल कर दिया था।

अब उन्हें सहसा खयाल आया कि पुलिस के प्रशासन में बहुत-से हि

---

1. पदावनति 2. डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट 3. मछली मारने की बर्छी 4. लक्ष्य 5. नरहत्

र है। अभी तक यह बात उनके ध्यान मे नहीं आयी थी। जीभ भाग चली
र० आई० के मन में हो रहा था कि बसाई को आँखों ने देखा नहीं। जे
कागज पढ़कर क्या पहचानेंगे ? उम्र इक्यावन, ऊँचाई पाँच फुट सात
? उनके भान्जे की ऊँचाई भी तो पाँच-सात है। इसी में नौकरी नहीं
ली। उम्र इक्यावन ? उनकी गैरसरकारी उम्र भी तो इक्यावन है। रंग
ला ? किसका रंग काला नहीं है ? उनका अपना रंग तो...। माथे पर
ट का निशान है। वह तो हर किसी के हो सकता है। बरस में छः लाख
ये 'ऑपरेशन-टूडू' में खर्च होते हैं। लेकिन कोई एक तसवीर नहीं खींच
ा। आखिरी बात सबसे भयंकर थी। फ़ेवरिट मुद्रा-दोष है, बहुत ग़ुस्सा
ने या विचलित होने पर बसाई टूडू हाथ मरोड़कर हवा का गला दबाने
भंगिमा करता है। एस० आई० ने अपने गले पर हाथ फेरा। अहा,
ना गला खुद को इतना अच्छा लगेगा, यह किसे पता है ? बहुत अधिक
नसिक यन्त्रणा से एम० आई० ने सन्तोषी माँ को पुकारा और अंतर के
स्तल में उषा मंगेशकर के गले मे सन्तोषी माँ का गाना सुना। चार
र बसाई टूडू आमने-सामने की लड़ाई में मारा गया। चारों बार मरने
बाद फिर किसी-न-किसी 'एक्शन-ऑपरेशन' में बसाई टूडू ने दर्प सहित
ने को प्रगट किया। इस रक्त-बीज के वंशधर को वह मत्स्यसखा कोमल-
ह किस प्रकार समाप्त करेंगे ? वह तो माँ दुर्गा ? यह सब-कुछ न होता।
ा खजूर के गुड़ के कारण। चले जाते पुरुलिया। घरवाली रूठकर बैठ
ी, 'जागुला में खजूर के बाग़ खरीदेंगे। हज़ार भेली गुड़ मिलेगा। अब
हारा जाना न होगा।" तब हजार भेली खजूर के गुड़ का लालच छोड़ने
एम० आई० को तकलीफ़ हुई थी। खजूर का बाग़, धान के खेत, दो
ं, जागुला में बाद में बसने की कितनी इच्छा थी, देश और घर के पास
सुविधा की जगह है, लेकिन बसाई टूडू ने कारबार में गुड़-चींटे छोड़
े। बसाई ! बसाई टूडू ! उम्र इक्यावन, ऊँचाई पाँच फ़ुट सात इंच,
काला, माथे पर चोट का निशान—इस विवरण मे कितने ही लोग पूरे-
पूरे मिलते ! फ़ेवरिट मुद्रा-दोष बहुत भयंकर है। अत्यन्त क्रोध में, या
चलित होने पर बसाई दोनों हाथों से गला मरोड़ देता है। एम० आई०
अपने गले पर हाथ फेरे। अच्छा नहीं है, यह सब अच्छा नहीं है। इतने
य के बाद उनके मन में उठ रहा है कि प्रशासन उनके साथ भला व्यव-
र नहीं कर रहा है। जिस तरह के विवरण बहुत लोगों के होते हैं, उस
रह के विवरण देकर बसाई टूडू को पकड़ने के क्या अर्थ होते हैं ? टूडू।
ान। दिमाग बिगड़ जाये तो राक्षस बन जाता है। कैसा धनुष चलाते
! बसाई तो पहले नक्सली नहीं था। जब से बना तब से [illegible]

। सोचने पर दिमाग़ चक्कर खा जाता है। लीडर बनकर भूमिहीनों के
ुड संथाल खेत-मजूरों और क़र्जदारों को लेकर बच्चू ने फ़ौज बनायी थी।
नक्साली बाबुओं से कहा था, 'पाइपगन करेंगे। गोली चलायेंगे। क्यों?
कुछ नतीजा नहीं निकला। साँप नहीं। मैं तीर का फल विस में बुझाऊँगा,
उनको तालीम दूँगा। बाबू की शिक्षा पर संथाल मूतता है।' बसाई दूसरी
बार मरने के बाद बोला था। 'होः! बसाई टूडू मरा नहीं। अगर मर
जाता तो मैं किसे पकड़ने के लिए जंगल में घुसा था?' एस० आई० समझ
गये कि वे बड़ी मुसीबत में हैं। जीप चली जा रही है। 303 की बुलेट।
ट्रिगर[1] दबाने से गोली छूटेगी। कार्य-कारण नियम है! 'बसाई फिर मर
रहा है'—यह ख़बर उँगली के दबाव में है। प्रशासन ट्रिगर दबा रहा है।
गोली छूटेगी ही। लेकिन गोली और टार्गेट की दूरी जितनी कम होती जा
रही है, एस० आई० उतना ही घबराते जा रहे हैं। अब लग रहा है कि
काम में जाते में एस० आई० लोगों की लाश गिरती है, बसाई आदि कहते
हैं 'लहास'—जिस काम के परिणाम में एस० आई० आदि की लाश गिरे,
उस काम में फिर एस० आई० क्यों लगे हैं? तब क्या प्रशासन सोचता है
कि बसाई के पकड़े जाने पर सुपर और डी० आई० जी[2] का नाम हो,
अख़बार में इंटरव्यू दें, ख़िताब पायें? एस० आई० क्या सरकार की नजर
में एक्सपेंडेबल[3] माल हैं? माल खो जाने से कुछ नहीं आता-जाता?
प्रशासन के चरित्र की यही निर्मम दशा एस० आई० नहीं समझ पाते। जब
समझे, उस समय वह उड़ी जा रही जीप पर थे, उसे लौटाने की राह नहीं
थी। मन को चिंताओं से मुक्त कर लें? आहा, बड़े साढ़ू आबकारी दारोग़ा
हैं। लड़के दोनों पैरों को शून्य में उठाकर पाँवों के अँगूठों की ओर देखने से
यौगिक नियम मन को शान्त कर दिन-भर के सागर को पार कर जाते हैं।
एस० आई० वर्षा के अंधकार में जीप में बैठे कमर का रिवॉलवर हाथ में
लिये किस तरह यौगिक क्रिया में शून्य में पाँव उठाकर अँगूठे देखें? संतोषी
माँ! पत्नी के संतोषी माँ का व्रत शुरू करने से तो सब भला ही हुआ था
डॉक्टर ने बता दिया कि बड़ी लड़की जन्म से बाँझ है। बाम्हन की बेटी
होकर मोची की घरवाली बनी, वह बदनामी एक पीढ़ी में ही ख़त्म ह
गयी। उनको लज्जित करने के लिए लड़की के घर में वंश-वृद्धि नहीं हुई
माँ की कृपा से खजूर का बग़ीचा मिला। गुड़ में सोलह आना लाभ है
लेकिन बसाई टूडू फिर क्यों मर रहा है? माँ की शक्ति उस बच्चू पर न
चलती?

1. बंदूक-पिस्तौल का घोड़ा, लिबलिबी 2. सुपरिंटेंडेंट और डिप्टी इंस्पेक्टर ज
[illegible] माल।

वसाई टूडू। मन-ही-मन एस० आई० फिर पाठ रिवाइज करते रहे। मर कर भी नहीं मरता, प्रशासन का वैरी। बच्चू राक्षसों की हड्डियों का बना है। नहीं तो चार बार मर कर शनाख्त होती है, प्रशासन के खर्च से जलाया जाता है फिर जी उठता है—यह क्या सिनेमा की संपूर्ण रामायण है कि सारा असभव सभव हो? एस० आई० ने आँखें बंद कीं। रिपोर्ट के माने अक्षर। बसाई माने बुरा-सा एक जीता-जागता आदमी। बसाई, तुम मरो!

3

जीवित अथवा मृत, अथवा मृत या जीवित और मरे बसाई टूडू की बात एक ही समय दो लोग सोच रहे थे। ठीक कहा जाये तो कहना होगा कि दोनों की स्मृति में बसाई टूडू आज की रात जीवित हो उठा था।

एस० आई० और काली सांतरा।

उनके आगे कहना अच्छा है, कह डालना ही अच्छा है, जागुला में उस समय क्या हो रहा था?

काली सांतरा गायब था। 'जाओ, जाकर देखो,' कहकर एस० आई० को जीप में बैठाने में बाद देउकी मिसिर का धूर्त दिमाग ऐक्टिवेटेड[1] हुआ। प्रशासन माँ है। माँ की दया से देउकी मिसिर जागुला के माने-जाने व्यक्ति हैं। जागुला से दूसरे थाने को उनकी बदली भी नहीं होती। सारे शासन-कालों में चलने वाले उन्होंने चार टिकिट बड़ी चालाकी से खरीद रखे थे। देश के जीवन में वह कौशल सबको अनिवार्य रूप से सिखाने पर कोई भूखा न मरता।

वह कौशल यों है—जब बसाई के साथ सामन्त का मनमुटाव हुआ तो देउकी ने सामंत को मदद दी, बसाई के सौ में से नब्बे लोगों को या तो 'आर्म्ड एनकाउंटर'[2] या 'सर्च ऐंड डेस्ट्रॉय'[3] करा दिया। लेकिन सौ में से दस लोगों को इशारा कर दिया, 'बचवा, सब लोग भाग जाओ' और उनके आगे देउकी की इमेज कैसी बनी? हाँ, हाँ, उसके खबर देने से कुछ ज्यादा लोग मरे जरूर, लेकिन वह प्रशासन के दबाव से। वह आदमी असल में सिम्पैथेटिक[4] है, नहीं तो इतने लोगों को क्यों बचा दिया? बस, यही उसका एक तरह से ठिकाना हो गया।

---

1. चालू, सक्रिय 2. सशस्त्र मुठभेड़ 3. खोजकर समाप्त कर रखने वाला।

बाद में सामन्त आदि के साथ जब पाल बाबू आदि का झगड़ा हुआ, तो एक ही तरह से नब्बे-दस का तरीक़ा चालू हुआ।

अब फिर सामन्त के दिन हैं। देउकी को हर राज में ही काम के लोग मिल गये। नतीजा यह हुआ कि वह जागुला थाने में रह ही गया।

एस० आई० को विदा करने के बाद देउकी को ध्यान आया कि काली साँतरा कहाँ चला गया, यह जानने की ज़रूरत है। बसाई को शनाख़्त करना पड़ेगा, इसलिए काली साँतरा भाग गया है, यह निश्चित रूप से जानना होगा। प्रशासन माँ बनकर भुलावे में रखता है और बाप बनकर डंडा मारता है—इस दुहरी भूमिका में काम करता है। प्रशासन काली साँतरा से कहता है : 'जाओ, टूडू की शनाख़्त करो।' उसके बाद गुप्त रूप से फ़ाइल में लिखता है : 'संदेहजनक चरित्र। बसाई की शनाख़्त करने गया था।' देउकी जानता है कि आज न हो तो कल काली साँतरा पर झाड़ पड़ेगी। उस समय देउकी को अगर पता चल सके कि काली साँतरा किसी प्रो-बसाई और ऍंटी-प्रशासन काम में गया था तो देउकी का भला ही होगा, बुरा नहीं। एस० आई० के डिमोशन में भी इससे मदद मिलेगी।

इसलिए देउकी फ़ौरन मातो डोम के पास गया। ज्योंही पता चला कि मातो ने काली साँतरा को सब बता दिया है, तभी वह समझ गया कि काली बसाई के पास जायेगा। सरकारी जीप पर नहीं जायेगा, अपने ढँग से लुक-छिप कर जायेगा। लुक-छिप कर चरसा जाने के लिए लॉरी चाहिए। लॉरी माने, महादेव साउ ! महादेव साउ बोले, 'बाबू ने सदर जाने को कहा था।'

'सदर ?'

देउकी का मन प्रशंसा से भर उठा। बसाई के आस-पास भी नहीं जायेगा। बसाई सामन्त या पाल नहीं है। उसकी कोई सरकारी रेजीम[1] नहीं बनी। लेकिन सब सरकारों में ही वह अपनी रेजीम चलाये जाता है। उसने कह रखा है : 'जिस दिन जागुला में घुसेगा, उस दिन देउकी मिसिर का सिर बर्छी की नोक पर नाचेगा। न, देउकी बसाई के पास नहीं जायेगा। लेकिन अगर जाता, तो वह भी कहता, 'सदर जाऊँगा।'

यह 'सदर' ज़िले का सदर-शहर नहीं था। 'सदर' एक गाँव है। सदर उतरने पर चरसा नदी दूर नहीं रहती। बरसात में चरसा बाढ़ से उफन उठती है। लेकिन काली साँतरा के पुराने माहवारी कर्मचारी बेतूल काउरा[2]

प्रशासन 2. काउरा—एक तरह की नीच जाति।

का घर सदर में है। रात पड़ने पर उसकी सहायता के लिए श्मशान की पतली धार के पास पुल से उस पार जाना होता है। उसके बाद तीन मील चलने पर जंगल है। वाह! काली सांतरा ने समझ से काम लिया है।

देवकी ने सोचकर देखा, सवेरा होने के पहले खबर सामन्त को दे देना ठीक रहेगा। काली सांतरा बहुत देर तक हाकिम के पास बैठकर फ़रमान देखता आया है। अब उसकी मरम्मत की जरूरत है। सामन्त की गुडबुक में रहने की जरूरत है। सभी कहते हैं कि सामन्त रहने आये हैं, जाने के लिए नहीं आये हैं।

4

देवकी मिसिर की विचार-पद्धति ने साइंस-फिक्शन[1] का यंत्र बना कर काली सांतरा का शायद नियंत्रण कर लिया है।

सदर में लॉरी रोक कर काली सांतरा उतर पड़ा। एक तो अमावस्या, उस पर मेघावृत्त निशीथिनी के खप्पर में उसे डालकर 'बाबा तारकनाथ' और भी दूर, एक दूसरे सदर को रवाना हुई। काली सांतरा मोदी की दूकान में धुंधली लालटेन लेकर बेतूल काउरा के घर चला। बेतूल आजकल मजदूर नहीं है। काली सांतरा की पिता की दी हुई तीस बीघा जमीन थी। तैंतालीस में पार्टी में शामिल होने के समय काली सांतरा ने वह जमीन मजदूरों को दे दी थी। कारण दो तरह के थे। एक था कम्युनिस्ट व्यक्तिगत मिल्कियत में विश्वास नहीं करते—यह आदर्श औरों के आगे रखना था। जागुला के दूसरे क्रांतिकारी लोगों ने अपनी-अपनी जमीनें रख कर काली सांतरा को कासाबियान्का[2] बना दिया। दूसरा था काली ने सपने में भी नहीं सोचा था कि धान और जमीन की जरूरत होगी। उसने विश्वास कर लिया था कि क्रांति हो रही है। जल्दी ही देश-भर में कम्यून स्थापित होंगे और काली सांतरा की खाने-रहने की समस्या मिट जायेगी। काली का और भी स्वप्न था, अपने छोटे भाई के साथ बेतूल काउरा की बहन का ब्याह कर देगा।

काली सांतरा का बाद का जीवन इससे विफल हो गया। बेतूल महिन जिन दो आदमियों को उसने जमीन दी थी, वे उसे पागल सोचते। छोटे भाई ने छुटपन में स्कूल में 'मेरा आदर्श मानव' रचना में बड़े भाई की बात तो

1. वैज्ञानिक कथा-कहानी 2. एक आज्ञाकारी पुत्र, जो पिता की आज्ञा से जलते जहाज पर जल मरा, पर अपने स्थान से हटा नहीं था।

लगी थी, लेकिन बड़े होकर उसी ने दादा पर दोष लगाया : 'ज़मीन देने वाले तुम कौन हो ? दे दी, या बाद में रुपये ले लिये ?' काली सांतरा कहने जाकर भी न कहता, 'अरे, क्रांति आ रही थी, व्यक्तिगत मिल्कियत में क्या ज़मीन रह जाती ?' कहता इसलिए नहीं कि क्रांति आ रही थी चालीस के दशक में। सत्तर के दशक में वह बात बकवास करने वालों का प्रलाप थी। जो हो, उसके लिए जो कुछ किया गया, बेतूल काउरा और मयेश ढाली उस क्रांति की ज़मीन को पकड़कर रख न सके और जल्दी ही वह ज़मीन महाजन के रोजाना खाते में चली गयी। काली सांतरा के जीवन की सुख-दुख की भागी गिनिमाला ने अभी तक ज़मीन के लिए मुंह नहीं खोला, लेकिन काली का बेटा अनिर्वाण म्युनिसिपल ऑफ़िस में घुसने के बाद मां से बोला, 'मां, तुम क्या चाहती हो ?' गिनिमाला तभी कहती, 'मेरे ससुर की ज़मीन का उद्धार करो, बेटा।' महाजन का रोकड़ खाता अजगर की तरह है। निगलना जानता है, उगलना नहीं जानता। उस खाते से वह ज़मीन अब बाहर नहीं आती, क्योंकि टुकड़े हुई ज़मीन—ढालू ज़मीन—दो उपज की ज़मीन—सारी ज़मीन ही अभिमन्यु, या अजगर का भोजन हैं। रोकड़ खाते में हड़बड़ाकर घुस जाती हैं, निकलना नहीं जानतीं। रोकड़ खाते का भोज्य-भक्षक संबंध समुद्र-मंथन या वेद के होम पक्षी से भी पुराने हैं, इसीलिए कंठमणि सांतरा की ज़मीन-वमीन का उद्धार नहीं होता। पर भीष्म की कठोरता से गिनिमाला धान की ज़मीन बीघे के बाद बीघा ख़रीदती रहती है, अपने नाम से। काली सांतरा के मन को इससे चोट लगती है। मानो, उसका एक क़िला और बेदखल हो रहा हो। अनिर्वाण कहता, 'इस ज़मीन का धान खाने में अगर घिन लगती हो, तो चावल ख़रीद दो, तुम्हारी रसोई अलग बन जायेगी। इस ज़मीन के लिए टें-पें करने से ठीक न होगा। कोर्ट में दर्ख़ास्त देकर, तुम्हें पागल साबित कर छोड़ूँगा।' काली सांतरा अब समझता है कि बहुत ज़माने से गिनिमाला और बेटा उसके विरुद्ध प्रतिहिंसा पालते आये हैं। अब समझता है कि इसी कारण से अनिर्वाण बाप के दिये आदर के 'लेनिनचन्द्र सांतरा' नाम का व्यवहार नहीं करता। 'जीवन एक कठिन खेल है'—यह सिद्ध करने के लिए ही शायद बेतूल का बेटा आकर गिनिमाला की ज़मीन जोत देता है। बेतूल समझता है कि यह करने से काली बाबू के मन में कहीं भयानक 'साइल इरोजन'[1] हुआ, मन का धँसना हो सकता है। उनके मन में एक प्रकार की सहानुभूति होती है और 'ज़िला वार्ता' ऑफ़िस में जाकर वह कहते

1. धरती का कटाव।

'औरतों-लड़कों की अक़ल ! किस साले ने जमीन ख़रीदी ? एँ ? बस झूठ-मूठ का बखेड़ा होगा तब पता चलेगा।' काली सांतरा समझता है कि बेतूल इसी बात को कहने के लिए इतनी दूर आया, इसके पीछे पुरानी लॉयल्टी[1] नहीं है। बहुत दिन जागुला के बाजार में बेतूल काली को देखकर भी नहीं देखता। अब वह आया है, उसका सबब है। वह भी आदमी है, काली भी आदमी है। दोनों ही दो दशकों से विवाहित हैं। दोनों ही पत्नी के आगे झुके नहीं। परिणामस्वरूप काली बेतूल को बीड़ी देता है और बीड़ी सुलगाने के समय अग्नि को साक्षी कर दोनों के बीच एक मूल्यवान मैत्री स्थापित होती है।

इसके बाद सदर जाकर बेतूल के घर जाने की बात काली सांतरा के मन में उठी थी। लेकिन तमाम लोगों की तरह ही काली भी मन-मुताबिक सहज काम कर सकता था। इसीलिए वह जीवन में बहुत कुछ न कर सका। सदर-शहर गया था, फ़क्शन[2] हो रहा था, फिर भी कोशिश कर सुचित्रा मित्र का गाना नहीं सुना। बहुत तबीयत हुई थी, रियायती सप्ताह चल रहा था, फिर भी खद्दर की जवाहर बंडी नहीं ख़रीदी। जेब में रुपया रहते हुए हावड़ा स्टेशन के स्टाल से पेपरबैक में 'राइज ऐंड फ़ाल ऑफ़ थर्ड राइख' नहीं ख़रीदी। अब सब-कुछ फेंककर जीवन के बस-स्टॉप पर पहुँचना हो गया है। तमाम स्टॉपों पर उतरना न हुआ, तो न हुआ। 'बस-स्टॉप' शब्द मन में कितनी स्मृतियाँ जगाता। गिनिमाला को बाप के घर पहुँचाकर लौटते समय बस से देखा था दिघाई गाँव। बहुत तबीयत हुई कि उतर पड़े। देख आये अपनी बहन की ननद रेवा को। इसी गाँव में वह रहती है। गिनिमाला के साथ ब्याह न होता तो काली रेवा से शादी करता। तबीयत थी। लेकिन उतरे या न उतरे, यह निश्चय करने में बस चल पड़ी। जीवन में कितनी छूटी हुई अपूर्ण इच्छाओं की बातें रहती हैं। बेतूल के पास जाने की बड़ी इच्छा थी। पूरी नहीं हुई। बेतूल एक दिन आया। बोला, 'घरसा का पुल हिलता है। एक बार देखकर अख़बार में लिख क्यों नहीं देते ?' तब काली सांतरा सदर जाता है। बेतूल का घर-द्वार देखकर समझता है कि वह बहुत ही दुख में है। मसूरी दाल और डेंगला-पोस्त के साग से काली ने बेतूल के घर भात खाया। बेतूल, उसका बड़ा बेटा, बेतूल की पत्नी—सभी में इस गृहस्थी में कैसा एक अंडर-करेंट[3] चल रहा है, इस बात को काली समझ गया. करेंट[4] में बिजली थी। किसलिए, यह उसकी समझ में न आया। बाद में उसे दल में बैठाने समय

1. निष्ठा, वफ़ादारी 2. आयोजन 3. अन्तःप्रवाह 4. धाराप्रवाह।

वेतूल ने वताया, 'नक्सांली हंगामे में विलकुल नहीं था, फिर भी पुलिस के कुत्तों ने हमला किया—छोटा लड़का चरित्तर जंगलवासी हो गया है। उसकी माँ रोती रहती है। कहाँ से यह हंगामा आ गया ?'

काली साँतरा वेतूल काउरा के घर वड़ी रात को पहुँचा। वेतूल जागा ही हुआ था। उसकी कमर में थोड़ा दर्द है, रात को आसानी से नींद नहीं आती। काली ने उसे धीरे से पुकारा। वेतूल ने दरवाज़ा खोलकर उसे भीतर कर लिया। काली ने ग़ौर किया कि वेतूल को ताज्जुव नहीं हुआ। नक्सली कष्टों की जानकारी ने वेतूल में अर्वन सोफ़िस्टिकेशन[1], दार्शनिक अभिज्ञता ला दी है। वेतूल ने कोई प्रश्न नहीं किया। समझ लिया कि काली जव इतने निकट आ गया है, तो उसमें कोई वात है। वात का गोपनीय होना ही स्वाभाविक है। उसने काली से कहा, 'आँगन में चलें।'

काली वोला, 'जंगल चलेंगे।'

'वसाई टूडू ?'

'जानता है ?'

'इस वार नहीं वचेगा।'

'कहाँ है, जानता है ?'

'चलें। मैं चलता हूँ।'

'चलेगा। पुलिस आ रही है।'

'फिर पुलिस ! उद्धव ने जीवन में पुलिस घुसा दी है। नक्सल कहकर पीछा करते-करते इधर-उधर भागते-भागते अंत में लड़का नक्सल हो गया।'

'वह भी वहीं है ?'

'होगा काम देखिये। नक्सल खतम हो गया। जेहेल से खलास कराया, उसके वाद वसाई ने फिर नक्सल में लगा दिया। उद्धव उसका चेला हो गया। लस्कर को काटूंगा, साँपूए के ढेर में आग लगाऊँगा, महा-जन किसी को न छोड़ेगा, मुझे उद्धव ने कसम दिलायी। वह उद्धव रोत फिरता था। वह उद्धव...।"

'चल।'

वेतूल ने वड़े लड़के को वुलाया और दरवाज़ा वंद करने को कहा। उसके वाद फिर दरवाज़ा थोड़ा खोल काली के हाथ से लालटेन लेकर घ में रख दी। काली से वोला, 'लालटेन नहीं लेंगे। पुल पर आज पुलि रहेगी। वहाँ जाने से फ़ायदा नहीं है।'

---

1. शहरी वनावट, नागरिक कृत्रिमता।

'कहाँ खेतमजूरी के लिए लड़ने आया। पांव में गोली लगी थी उससे सड़ने लगा।'

'मानुस ही है, किसी दिन मरेगा ही।'

'ना:।'

'कहता क्या है?'

'मानुस नहीं। मानुस होकर चार बार मरा मानुस जीता है? अभी सुना, बसाई मर गया, सबने लहास की पहचान कर ली। पुलिस ने लहास जलायी, फिर बसाई जी कर लड़ाई कर रहा है।'

'इसके पहले तो वे बसाई नहीं थे।'

'नहीं? आपने भी तो देखा था।'

किसे? किसे देखा था काली साँतरा ने? वे क्या बसाई टूडू थे? आइडेंटिफ़िकेशन परेड की लाश घूम रही थी। हाँ टूडू—बसाई इसलिए—जाना-पहचाना चेहरा—बसाई टूडू—बसाई टूडू ज़िंदा है? मर गया? काली साँतरा तब इस अँधेरे जंगल को पार कर कहाँ जा रहा है?

एक ध्यान आया, सामने दँक[1] है। बेतूल बोला, 'देखकर चलें। गढ़ैया गहरी है, हाथी-डुबाऊ।'

5

'गढ़ैया गहरी है'—कुछ बातें सुनने के साथ-ही-साथ काली साँतरा के मन में एक आश्चर्यजनक दृश्य आया। उसका शरीर बड़ी तृप्ति के साथ अँधेरे जंगल में बेतूल के इशारे पर चल रहा है। शरीर से मन अलग हो गया। वर्तमान फ़ेड आउट[2] हो गया, फ़ेड इन[3] किया भीषण सूखे में जलते बाकुली गांव ने—दूर पर, दिगन्त मरीचिका के समान कांपता रहा। काली चला जा रहा है, पहुँचा पल्ताकुड़ि, खोया हुआ खड़ा है, सिर पर ताड़ की बनी टोपी है। सिर पर ताड़ की टोपी पहने, शर्ट और धोती पहने बसाई टूडू ने उसे उँगली से बाकुली दिखायी, दलदल दिखायी, बोला, 'दलदल गहरी है, हाथी-डुबाऊ।'

'देख के लगता नहीं।'

'वहाँ पानी रहता है, नहीं तो वह जो कनाल[4] की सों-सों सुनते हो, वह जल हमें नहीं मिलता।'

पल्ताकुड़ि में जिस घर में वे ठहरते हैं, उस मुसई टूडू के मकान में

---

1. गढ़ैया 2. धुंधला पड़ गया 3. धीरे-धीरे दूसरा दृश्य बदला 4. कैनाल—नहर।

वसाई टूडू का सम्मान देखकर काली अचंभे में पड जाता है। यह देखकर और भी ताज्जुब में पड़ जाता है कि वसाई को छोटे-बड़े सभी 'कमरेड' कहते हैं। वे गढ़ैया में नहाते हैं। 'उस दँक ने जिंदा रखा है,' गमछे से वदन रगड़ते-रगड़ते वसाई कहता है। गढैया काफ़ी वडी है। छोटे ताल की तरह। 'यह कैसे हुआ ?' काली पूछता है। उसका अपना रहना भी सूखे अचल में है। जल देखकर वडा आनन्द होता है और रक्त की कोई एक तृष्णा जैसे मिट जाती है। किशोर वय में मित्र के साथ पवना जाकर चारों ओर नदी, नाले, ताल,तलैया, गढैया देखकर आश्चर्य और खुशी हुई थी। इतना जल ! इतना पानी होते हुए इस देश के लोगो का दारिद्रय नही मिटता, यह देख कर काली बड़े आश्चर्य में पड गया। उस समय भी काली नही जानता था कि प्रकृति की उदारता या कृपणता पर मनुष्य की दशा निर्भर नहीं करती। ईस्ट बँगाल लँड ऑफ प्लॅटी और जागुला, कैंड्ल लँड ऑफ सूखा[1] —दोनों जगह ही मनुष्य ऐसे गरीव हो सकते हैं, क्योंकि गरीवी मानव द्वारा ही पैदा की हुई है।

दँक कैसे बना ? इस प्रश्न के जवाव में वसाई कहता, 'कुछ वरस पहले सब मिलकर धर्म-कुआँ खोदने लगे थे। उसमें पानी निकला था। मुझे लगा कि भूमि के नीचे जल है। नही तो कनाल खोदकर जल कैसे निकला ?' दँक अगर वास्तव में असमाप्त कुआँ हो तो गहरा कुआँ है। उसके चारों ओर झाँवा पत्थर थे। दँक जैसे गहरा कुंड हो। काफी उतरने पर पानी था। वहुत गहरा, वहुत-सा पानी, निर्मल, ठडा। चारो ओर पहाड़ की-सी जगत की छाया से ढँका, सिर्फ पानी की छाती पर धूप से तपता आकाश जल रहा था।

खेमारी की दाल और भात खाने को मिला। खाने के वाद वृक्ष के नीचे वसाई और काली बैठे। काली एक विशेष मिशन पर आया था।

वीड़ी खींचकर वसाई वोला, 'कहो काली वावू, क्या कहते हो ?'

'वसाई, तुमने पार्टी छोड दी ?'

'कह लो, पहले पूछ लो।'

'तुम वीरू पाठक के दल मे चले गये हो ?'

'और कहो।'

'क्या कहूँ ? इन पैंतालीस सालो मे किसान-सभा का काम किया, पार्टी में आकर सूर्य साउ को लेकर मत वदला, उससे मन टूट गया। एक वार भी न आये, न आलोचना की। बताओ तो, यह क्या हुआ ?'

1. पूर्वी वगाल भरा-पूरा देश और जागुला सूखे का पालना।

'क्यों ? बड़ा अच्छा काम हुआ।'

'तुम ?'

'कौन कहता है कि मैं नक्साली हो गया ?'

'नहीं हो गये ? वीरू पाठक क्या है ? नक्साल नहीं है ?'

'यह उसे मालूम होगा।'

'तुमको नहीं मालूम ?'

'नाः ! मुझे दरकार नहीं है।'

'यह क्या कह रहे हो, बसाई ?'

'समझ नहीं रहे हो ?'

'हाँ !'

'तो अच्छी तरह खुलकर बात कहूँ, काली बाबू ! बातें करने में टाइम लगेगा। आज रह सकोगे ?'

'रह सकूँगा।'

'एक बात है। बातें बहुत होंगी। उससे ख़फ़ा नहीं होंगे, काली बाबू। क्यों, आँखें क्यों ख़राब कर रहे हो ?'

'आँखें अजीब-सी हो रही हैं।'

'क्या जाली कटायी ? काम नहीं हुआ ?'

'नहीं !'

'तब कितना कहा, हकीमी कराओ, पद्मकाँटे से जाली दूर करा दूँगा, नहीं सुना।'

'आँखें अजीब हो रही हैं, बसाई।'

'अख़बार लेकर मर रहे हो।'

'कुछ करना तो होगा !'

'अच्छी बात है, तुमको चुनाव में क्यों खड़ा नहीं किया ?'

'क्यों खड़ा करें ?'

'इससे तो तुम्हारा मरना अच्छा होगा। अब दुनिया में भले लोगों को भात मिलता नहीं। मैं अच्छा बनने नहीं चला। अब तो बहुत बुरा हो गया हूँ। उस पर तुम कहते हो, मैं नक्साली हो गया। यह तुम्हारी कैसी बात है ? पार्टी ने मीटिंग नहीं बुलायी ? सामन्त बाबू आराम से कुर्सी पर नहीं बैठे ? चा-मूड़ी नहीं खायी ? इतने ढोल पीटे बिना काली बाबू सान्याल बसाई टूडु के पास क्यों आये ?'

बातें सब सच थीं। बसाई हँस-हँस कर बातें कर रहा था और काली भी हँसे जा रहा था। ऐसे वक़्त सहसा काली को एक बार पढ़ा हुआ याद आया 'धात्री देवता' उपन्यास की एक जगह की बात। सशस्त्र युद्ध करने

ले अस्त्र त्याग कर अहिंसक बनने चले। मत क्यों बदला—यह जानने के लिए पार्टी के आदेश के अनुसार पूर्ण नाम के क्रांतिकारी लड़के ने वृद्ध क्रांतिकारी को गोली मार दी। उसके बाद चांदनी रात, याद है। काली सांतरा बसाई के पास आया है। बसाई सशस्त्र युद्ध के मार्ग से अहिंसा के पथ पर नहीं गया है। काली भी उसे मारने नहीं आया है। बसाई और काली की पार्टी सशस्त्र युद्ध में, और भी बहुत तरह के युद्धों में विश्वास रखती है। बसाई किस विश्वास की राह जा रहा है ? केवल सशस्त्र संग्राम के मार्ग पर ? केवल सशस्त्र संग्राम ? बंदूक की नली ?

बसाई ने उसकी परेशानी का उत्तर दिया। बोला, 'मैं ही बता रहा हूं, काली बाबू ! मैं एक नयी राह सोच रहा हूं। राह पुरानी होने पर भी नयी है। पर जो तुम लोग सोच रहे हो, वह नहीं। नक्साल मैं नहीं बना हूं। बीरू पाठक बनो, जो मेरे काम में मदद देगा, मैं उसके साथी का साथी हूं। अभी सुनो...।'

'कहो।'

बसाई काली को अचंभे में डाल रहा है। बाघ की प्रकृति छोड़े जा रहा है। बसाई टूडू ने एक राह खोजी है ? सशस्त्र युद्ध ही लग रहा है, पर नक्साल नहीं। बसाई ऐसा आत्मस्थ क्यों है ? किस तरह ?

बसाई बोला, 'तुम बाबू लोग पार्टी में आते हो। और मैं क्या, काली बाबू ? सान्थाल, खेतमजूर, मिशन का पढ़ा-लिखा, फिर खेतमजूर। तुम कहते हो पैंतालीस के साल से किसान-सभा कर रहे हो ? तैंतालीस साल में जिला किसान-सभा के नकुल बाबू मुझे माइमानसिं[1] ले गये, नालिताबाड़ी कानफरेंस में। वहां पहली बार मांग हुई थी, खेतमजूर को एम० डब्लू०[2] देना [illegible]—याद है ?'

सो बाद में हुगली कानफरेंस हुई। बहुत भरोसा हुआ, कालीबाबू। खेतमजूर किसान से अलग नहीं है। आज जो किसान है, महाजन को जमीन बन्धक देकर कल वह खेतमजूर हो जाता है। हां कालीबाबू, उसके बाद वर्धमान में, मेदिनीपुर में खेतमजूर पार्टी हुई, किन्तु जब देखा किसान-सभा ने खेतमजूर दल को हराम की संतान की तरह छोड़ दिया...क्यों ? उस समय मदत नहीं दी, तब से अपनी बात सोचने लगा।"

बसाई रुका। बीड़ी सुलगायी। काली ने चुपचाप बीड़ी ली और उसे

1. मैमनसिंह नगर 2. मिनिमम वेज, न्यूनतम मजदूरी 3 बर्दवान।

वसाई की बीड़ी से सुलगाया।

'कैसा लगा? आज मेरी विवेचना करने आये हो? अपनी पार्टी के दादा लोगों से कह देना। अपनी बात सोचने लगा, इसके माने समझते हो? अपनी बात माने, खेतमजूर-समाज की बात। नकुल बाबू को तुम लोग जानते हो? उसका ताऊ पुराना कांग्रेसी था। गांधी के समय कलकत्ता देख आया था कि काउरा, तिउर[1] को मौक़ा देकर उठाया गया था।

'उससे बिगड़कर चन्दर भुइयाँ, वहाँ के राजा ने उसके घर-द्वार, खलिहान में हाथी घुसा दिया। उसी से ये लोग जागुला आ गये।'

'चन्द्र भुइयाँ नहीं, उसके पिता महाचन्द्र भुइयाँ।'

'गोकुल बाबू मोक्चन्द्र भुइयाँ ही कहो।'

'गोकुल बाबू ने अच्छा-सा गाना बनाया था।'

'तुमने सुना है? अच्छा गाना है वह।'

'हरिजनों का गाना।'

'कहो तो।'

'सुर याद नहीं है, बोल भी क्या याद हैं? गांधी राजा ने कह दिया, तुम लोग हरिजन—आओ तो तुम सब तीन जन ले लें...।'

'हाँ काली बाबू, तीन जन—भुइयाँ ज़मींदार, साउ महाजन, बाउरी[2] जोतदार। तीन यमदूतों के डंडों से कब नहीं मार खायी, याद नहीं पड़ता। मुझे तुम जानते हो। बाप नहीं, माँ नहीं, बुआ मरी तो अकेले नंगा, छः बरस का बच्चा। मिशन में साहब ने ले लिया, वह भी गोकुल बाबू के कहने से। उसने अच्छा काम किया। किन्तु कांग्रेस की क्या पार्टी है! कोई छूआछूत नहीं भूलता। मिशन से आ गया, भाग आया, सो गोकुलबाबू ने कहा था—बसाई बाबू बन गया? ऍं? लँगोटी पहने, चूहे-मकड़ी खाने वाले समाज का संथाल, सो क्या कहता?'

'वे पुराने ज़माने के आदमी थे।'

'नये जमाने में पार्टी के बाबू सान्ताल-काउरा-तिउरों को भाई-भांजा समझते हैं? ऍं? उससे सामन्त बाबू के डेरे पर तुम लोग पियाला में चा पीते, मैं मिट्टी के कुल्हड़ में?'

'वह ख़ून का संस्कार है, बसाई, सहज नहीं जाता।'

'बाबू की एक जात है। काउरा की तरह एक जात। उसी में, इतने अच्छे आदमी हो तुम, तुम भी बाबू बनकर बाबुओं को मदत देते हो। और पढ़ाई-छकिल में बैठकर कलास-लड़ाई समझाते हो। ना काली बाबू, मुझे

---

1. छोटी जातियाँ 2. जाति-विशेष।

टोपी नहीं पहना सकते हो।'

बसाई की बातें बहुत नापसन्द थीं, लेकिन नीम के रस की तरह कड़वी और सच्ची थीं। काली सांतरा को बड़े गुस्से में असंतोष हो रहा था, लेकिन वह समझ रहा था कि बात सच है। सामन्त के बारे में उचित समालोचना करने पर काली सांतरा अपने वर्ग के एक छोटे असभ्य आचरण के समर्थन में तर्क खोजेगा।

'गुस्सा मत हो, काली बाबू, तुम्हारी तरह दो-चार लोग छोड़कर सब लोग कभी-न-कभी समझा कर छोड़ेंगे, कि तू बसाई, सान्ताल, तेरे समाज के मनुष लँगोटी पहनते हैं, अकाल में चूहा-साँप खाते हैं। जमीन हो, ऐसा सान्ताल नहीं। जो जात में ऊँचा हुआ हो वह खेतमजूर है, काली बाबू। बाम्हन-कायथ खेतमजूर नहीं होते। होते तो खेतमजूर समाज में भी छुआछूत होती। मेरा कपार बहुत अच्छा है कि नंगे, भूखे, साले—सब खेतमजूर हैं, और बड़े खाकर भी सौक पर जात-पांत का भाग नहीं होता। एक घर में हँड़िया से सभी भात खाते हैं।'

'बसाई, कोई भूलने नहीं देता, तुम सांउताल हो, इसी से क्या तुम पार्टी छोड़कर चले आये?'

'ना:, मैं क्या राँड़ का बेटा हूँ जो तुमको मारने से रो दे? ना:, कालीबाबू। लेकिन हवा में लाठी चलाने की टूटी हुई बातों को लेकर धूल उड़ाने की शिक्षा हमारे बाबू कामरेडों के पास है। इसी से टूटी बातें पूछ रहा हूँ। क्या उसी कारण से हटा हूँ? कुछ बताओगे?'

'तो बताऊँगा, तुम किसी तरह भूल नहीं पाते कि तुम सांउताल हो। तिल का ताड़ बनाकर देखने से नासमझ की तरह खफा होते हो।'

'इस बात के दो जवाब हैं। क्यों भूलूं? सांतालों को भूल जाऊँ कि वे सांताल हैं, यह तुम लोग कैसे कर सकोगे? आज भी देश नहीं चीन्हते, मानुस नहीं चीन्हते हो। ऐसा देश गढ़ दो जिसमें साताल-काउरा में, ऊँचे घर के कामरेडों में अन्तर न रहे। कर सकते हो? सभी प्लेन पकड़कर दिल्ली-सोवियत-अमरीका घूमना चाहते हैं। गाड़ी चढ़ना, लाइलन[1] पहनना! कर सकोगे? सबके कमर में लँगोटी, सूर्य साढ़ की लात खाना, पके धान को दूसरे काटते हैं, देखकर छाती फटती है, कर सकते हो? कुछ करो, तभी सान्ताल भूलेगा कि वह सान्ताल है।'

'बसाई, तुम बहुत बदल गये हो।'

'और जवाब है काली बाबू, सान्ताल-काउरा-तिउर कैसे भूल जायें

---

1. नायलान।

कि वे एक हैं ? भूलने के काम थे तुम्हारे, है न ? काम किये ?'

'जवाब एक ही दिया, वसाई।'

'दिया ? वह होगा। मिशन स्कूल में जाकर भी क्या सान्ताल शिक्षित हो जाता है, काली वावू ? वह वेकार की वात रहने दो, फायदा नहीं।'

काली ने पहले भी वसाई का सम्मान किया था। सालिहातू की चुनाव की मीटिंग में सामन्त को दस्त-क़ै और बुख़ार हो गया। वीमार, गू से भरे सामन्त को पीठ पर लादकर सिर्फ़ वसाई गया था। वस की एक पूरी सीट ख़ाली कर वसाई ने ड्राइवर से कहा था : 'वड़ा कामरेट है। और मुसाफिर नहीं लेगा। सीधे मंसूरगंज चलो, अस्पताल। वस में पसिंजर चढ़ाने में कामरेट को कुछ हो गया तो तुम्हारी लहास फेंक दूंगा। मैं वसाई टूडू हूँ।'

वसाई न होता तो सामन्त ज़िंदा न वचता। इस समय काली को याद आया—'वड़ा कामरेड—लीडर है—श्रेष्ठ कामरेड—सोवियत भी उसे जानता है'—यह सव प्राप्य सम्मान वसाई टूडू ने वहुत वरसों तक तमाम लोगों को दिया ? लगा, जिनको दिया, उन्हें वह न्यायतः प्राप्य था, एक वार अर्जित होने से ग्रहण कर लिया। 'वड़े कामरेड' वनने की मुश्किल हुई, एक वार जेल काटने का उदाहरण लेकर जिस तरह वाद में मंत्री वनने से और वदमाशी नहीं चलती—उसी तरह एक वार अच्छा काम करने पर 'वड़ा कॉमरेड' होने से वाद में उसे भूलने से काम नहीं चलता। लेकिन 'वड़े कामरेड' भी आजकल उसे याद नहीं रखते। चुनाव के दिन छोड़कर दिखायी नहीं देते। वंगाल के देहात के वारे में दूर वैठकर उनकी भी सफ़ाई, वंगाल की शकल उन्होंने देखी है, इसी से वे अव दुनिया की शकल देखने जाते हैं। उसका नतीजा होता है रक्तचाप, या हृदयरोग, या वहुमूत्र के धनी रोग से मृत्यु और वसाई टूडू को खो देना। तो क्या वसाई एक्सपेंडेवल था ? ऐसा है तो वह पागलों के पागलपन की तरह पार्टी नहीं—नक्साली नहीं—अपनी संथाली वुद्धि से रणनीति वना रहा है, यह जानकर वाघ और सिंहों को चौकन्ना क्यों होना पड़ा ?

वसाई वोला, 'लो, वात में वात वढ़ती है, काली वावू। लो, चा पियो। उसके वाद वात होगी। मुसाई के रुपये की चा आयी है। देखो, यह भी मेरा कामरेट है।'

मुसाई टूडू का वेटा, सात वरस का गिधा चाय ले आया, मुसाई की पत्नी लाई ले आयी।

वसाई वोला, 'क्या खिलायेगी रे ? वावू कामरेट हैं, लेकिन टेढ़ापन, वेईमानी, हरामीपन नहीं जानते। कालीवावू, तुम भी सान्ताल वन सकते

थे। तुम भी नंगे रह गये, मैं भी।'

आज उन्नीस सौ सततर की जुलाई में जंगल छानते-छानते काली सांतरा के मन में आया, अगर मर जायें तो बाकी समय का लेखा-जोखा करने पर पता चलेगा कि 'चलेगा' नहीं, अभी चल रहा है, जो बसाई ने कहा था, 'लेकिन टेढ़ापन बेईमानी, हरामीपन नहीं जानते हैं'—इससे अधिक मूल्यवान ऐहिक पुरस्कार किसी लीडर को न मिला, न मिलेगा; बसाई ने सबको झूठा-निकम्मा समझ कर छोड़ दिया है। पेड़ की डाल से गोयालकेंड़ा लताएँ हटाते-हटाते काली सांतरा का शरीर मुक्त लगने लगा था, जैसे कलेजे से खून निकलता जा रहा हो, व्यर्थता की अनुभूति, काली अगर मरे तो बिस्तर पर लेटे-लेटे मरेगा, चाहे घर पर हो या अस्पताल में। गोली से नहीं मरेगा—बसाई की मौत पहले होगी—बुलेट से छिदी देह। बेनेट से नहीं मरेगा—बसाई की दूसरी मौत थी—बेनेट से छिन्न-भिन्न चेहरा और पेट। आमने-सामने के संघर्ष में नहीं मरेगा—पेड़ की टेक लगाये बसाई, तीसरी मौत में हड्डियाँ पिसी हुई। गैंग्रीन से नहीं मरेगा—गैंग्रीन में बैंगनी रंग का होकर चौथी मौत में बसाई फूलकर चमकीला होगा। काली ने जो जीवन बिताया है उसमें मलमलमी है, पर काली ने कौन-सा पुण्य किया है कि बुलेट-बेनेट के आमने-सामने के संघर्ष में—एनकाउंटर में काली मरे?

'जरा रुको। दम ले लें।'

वेनूल रुक गया, आँखें तेज कर चारों ओर देखा। बोला, 'अब बायें पकड़कर चलें। उफ्! गोयालकेंड़ा लता की क्या बाढ़ है? मालिदों के झुंड वर्षा का पानी पाकर झाड़ी बन गये हैं।'

वे बायीं ओर पकड़ कर चले।

मुसाई टुडू के घर पर उस रात को सुअर का मांस पका था। इतनी गरमी के बाद संध्या के सात बजे से हवा ठंडी हो गयी थी। बसाई ने कहा था कि पानी पड़ेगा। 'देख मुसाई, हवा ठंडी चल रही है।'

'तुम देखो।'

'मुसाई हम लोगों के हवा-पानी का पंडित है, काली बाबू। मुसाई, पानी कब होगा?'

'भुरका तारा नहीं देखेगा।'

'क्या कह रहे हो?'

'कुछ बाजी क्यों नहीं लगा लेते हो?'

सुअर का मांस और भात खाकर वे आँगन में लेटे थे। वसाई वोला, 'सोओगे, या वातें करोगे ?'

'वातें करो।'

'कल जाओगे ?'

'हाँ।'

'वस मत पकड़ो, लारी से जाओ।'

'जाऊँगा।'

'रिपोट नहीं करोगे ?'

'वताना पड़ेगा।'

'क्या कहोगे ?'

'वताओ, तुम क्या कहते हो ? मैं तो जो समझूँगा, कहूँगा।'

'सुनो ! रात वीतने दो, काली वावू।'

'जाने दो।'

रात क्रम से ठंडे से और ठंडी हो रही थी। मच्छर नहीं थे। इतनी गरमी में झाड़ियाँ और पौधे सूख जाते, पानी सूख जाता, मच्छर नहीं रहते। वखार में धान नहीं रहता। मुसई चिल्लाकर वोला, 'वसाई, पानी वरसने पर जाना।'

वसाई ने मचान वना लिया है। यह वसाई की चौकी है क्या ? वसाई का कार्य-क्षेत्र वहुत फैल गया है। फैल जाना ही स्वाभाविक है। इन पिछड़े हुए गाँवों में सूखे में, वाढ़ में, कॉलरा की महामारी में—महाजन के साथ लड़ाई में वहुत वरसों से एम० एल० ए० या एम० पी० नहीं देखे। अत्यंत स्वाभाविक और गणित के हिसाव से वसाई उनका अपना हो गया है।

'वसाई, तुम जिला सेक्रेटरी क्यों नहीं हुए ?'

'वाद में वताऊँगा। पहले सुनो !'

'कहो।'

वे वातें कर रहे थे। आकाश नीरव मेघों से आच्छादित था। हवा और भी ठंडी थी। अकसर वैशाख में, चैत में, आँधी-पानी नहीं होते।

'मैं खेतमजूर हूँ। सोचकर देखा, चवालीस की उमर हो गयी, मैं खेतमजूर ही रहा। तमाम मीटिंगें कीं, कानफरेंसों में गया, लेकिन खेतमजूर का आसन देखने को नहीं मिला। वत्तीस साल में किसान-सभा हुई। तव से आज तक नहीं समझा कि खेतमजूरों को किसान सभा ने मदत क्यों न दी ? चौंसठ साल में पार्टी के भाग हो गये। भाग हो, जो हो, सभी कमनिस हैं। कमनिसों का किसान-फरंट तक मानना नहीं छूटा, खेतमजूर भी किसान हैं। गोकुल वावू से सुना है, अड़तीस साल में कुमिल्ला की सभा में स्वामी

महजानन्द ने कहा था : 'खेतमजूर आंदोलन किसान-सभा का आंदोलन है। छोटा किसान किसान-सभा की जान है। आज जो छोटा किसान है कल वह महाजन की जमीन पर खेतमजूर बनता है।' नहीं कहा था?'

'कहा था।'

"किंतु खेतमजूर का हक कमनिस किसान-फरंट ने नहीं देखा। क्यों, काली बाबू? क्यों? कमनिस किसान-सभा जिनके लिए है, वे मँझोले किसान हैं, है न? वे भी खेतमजूर लगाते हैं, नहीं? उनके हक पर चोट लगती है, नहीं? और कमनिस दल जो समझता है, वोट—हाँ वोट! मँझोला किसान वोट कट्रोल नहीं करता? तब समझ लो कि बसाई घास नहीं खाता, धान का भात खाता है—उससे हमने समझ लिया, कमनिस होकर काम कर सकते हैं। तुम्हारे कामरेट कहला सकते हैं, किंतु जब हम खेतमजूर हैं तो तुम भी हमको ठोकर मारोगे। भूखे आदमी को लेकर खेल करना भला खेल नहीं है।'

'तुमने ठीक ही कहा।'

काली कह न सका कि यह बात उसकी भी है। के० एम० यूनियन[1], खेतमजूर यूनियन लेकर उनकी जानकारी भयंकर व्यर्थता-बोध से कटु है। बसाई का वक्तव्य के० एम० यूनियन में चला आया देखकर काली को सर्वनाश के गर्जन का बोध हुआ। कहाँ, क्या हुआ जा रहा है? न रोके जा सकने वाले खिंचाव सृष्टि के आरंभ से धरती टूटकर टुकड़े-टुकड़े हुई जा रही है। 'महादेशों को मिलाकर देखोगे तो इस-उसकी खाई बनती जा रही है। कभी वे यहाँ तक जुड़े हुए थे।' महादेशों को किसी ने भाटकर जोड़ा नहीं, जोड़ा जा नहीं सकता। बसाई पुराने बन्धनों को तोड़कर निकल गया। फिर उस टूटे हुए में जोड़ नहीं लगेगा, वह बीच का हिंस्र अपरिचय का सागर किसी सेतु से जोड़ा नहीं जा सकेगा। इस समय बसाई अपरिचित महादेश है। किंतु उस महादेश पर आक्रमण—एक्सप्लोरेशन—कॉलोनाइजेशन[2] संभव नहीं है। सब-कुछ का स्व-स्वार्थ में या दलगत स्वार्थ में उपयोग या त्याग समझ नहीं है, बसाई टुडू भी नहीं।

'काली बाबू! मैं खेतमजूर हूँ। खेतमजूरों के हक में किसी भी किसान-सभा ने मदत नहीं दी। कमनिस किसान-सभा, व्वाप रे! कमनिस नाम लेते लहू जल उठता है, काली बाबू। कमनिस किसान-फरंट की गोद में बड़ा हुआ, जब से गोकुल बाबू का कागज बाँटा, इश्तहार के हरफों को टटोला, एक-एक अक्षर जैसे मुर्दा चीज हो, रग फेरने से हरफ भी उठते हों, कलेजे में

---

1. किसान मजदूर यूनियन 2. योजना—उपनिवेशन।

लहू गरज उठता हो। काली बाबू ! तुम्हें ऐसा नहीं हुआ ?'

'हुआ बसाई, हुआ था। सबको ही हुआ।'

'एक दिन होता है, बाद में नहीं होता। होने पर यह क्या देखा, काली बाबू ? तुम-मैं रोजगार करने नहीं आये, किंतु सामन्त ? लक्ष्मण बाबू ? तारक बाबू ? मुझ पर रेड कामरेट हँसते हैं ? कमनिस पार्टी में सभी जमींदार रोजगार कर डालते हैं ? घर हुआ, सामन्त के गाड़ी भी हुई, लड़के की नौकरी लगी, सारे बड़े लीडर, कलकत्ता पहचानते है। 'कमनिस' नाम सुनाकर सब जमा कर लिया ! सूर्य साउ का कारबार है। जमींदारी में जान है ? तुम मर जाओ, मैं बड़ा बन जाऊँ। ना काली बाबू, बसाई का कलेजा टूट गया है।'

'कहते चलो बसाई, रुको मत !'

चूँकि काली सांतरा जानता था कि वह फिर बसाई टूडू के पास नहीं आयेगा, बैठकर इतनी बातें नहीं करेगा। काली बसाई नहीं है, वह कुछ दाँव पर नहीं लगा सकता है, जो दल केवल उसका उपयोग ही करता हो, उसको भी नहीं छोड़ सकता है। उस पार्टी की मदद खो नहीं सकता। परिणाम : पत्नी-पुत्र पराये हो गये, 'ज़िला-वार्ता' अखबार का भद्दा शीर्षक एकमात्र अपना है, फिर भी काली सांतरा का खून मध्यवित्त ख़ून है। उस रक्त में अपने लेनिन—पत्नी के साईं बाबा—बेटे के राजेश-धर्मेन्द्र-हेमा प्रेम से एक जगह रहते हैं। वह रक्त कुछ भी नहीं देता, सब-कुछ लेता है और मिल-जुलकर पँचमेल गीत बनाता चलता है। ना, अब काली नहीं आयेगा। कमनिसों में वर्ग-अनुसरण बहुत प्रबल है। उससे अच्छा है, बसाई बात करे। काली बड़ा प्यासा है। मुसई ने कहा था, आज वर्षा होगी। धरती बड़ी प्यासी और बाट जोहते-जोहते थक गयी है।

'काली बाबू ! कभी किसान-सभा ने फिर भी काम किया था। उस समय भी खेतमजूरों का अधिकार नहीं देखा। खेतमजूरों को उसमें बहुत कम फ़ायदा हुआ था। सूर्य साउ के घर गणेश-पूजा हुई—लँगड़े—भिखारी, दोनों पैर वालों के ढंग की। वर्धमान में 'कनाल कर आंदोलन' हुआ। सभा के शोरगुल में रेट उतरा। सो बाद में उत्तर में 'हाट तोला' आंदोलन, अधिया की लड़ाई, जमींदार का साथ। हाँ, कुछ हुआ था। जलपाईगुड़ी में पुलिस ने आंदोलन तोड़ दिया, दिनाजपुर में नहीं तोड़ सकी, उसी में सभा की माँग, हमारे पास प्रमाण है, हम गरीब किसानों के अधिकार देखते हैं। उसके बाद मायमनसिं में हाजंग[1] आंदोलन। गर्व से किसान-सभा

1. एक आदिवासी जाति।

की छाती फूल गयी, किसान-सभा ने यह गर्व क्यों किया, काली बाबू ?'

काली कह सकता था : 'किसान-सभा और कमनिस पार्टी इस भारत की धरती पर एक विशेष भारतीय स्वरूप से, सीढी के नियम से चलती हैं। सीढी के नीचे के बाँस पर पाँव रखकर ऊपर चढ़ना पड़ता है और नीचे की लकड़ी को भूल जाना पड़ता है। भारत में धर्म मे, राजनीति में, रोजगार मे, शिक्षा के क्षेत्र में, संस्कृति के क्षेत्र में, व्यक्तिगत जीवन में—ऊपर उठने का एक ही नियम है, सीढी का नियम ! इस परंपरा का नाम ही भारतवर्ष है। गोली खाते हैं सामान्य कार्यकर्ता, नाम होता है जेल में आराम से बैठे प्रथम श्रेणी मे बंदी लीडरो का—यह भारतीय ऐतिहासिकता है।' काली क्या कहे ? क्यों कहे ? एक आदिवासी के आगे अपने मध्यवर्ग के विश्वासघात की बात क्यों स्वीकार करे ? वर्ग-हीनता में विश्वास रखने वालों का वर्ग-अनुसरण क्या कम है ? उसके सिवा लीडर लोग क्या मध्यवित्त नही हैं ?

'उसके बाद आया ति—हा—ई।'

बसाई के गले में शब्द डूबकर वर्षा आ गयी। ठंडी हवा मे, आँधी में, धूल के झपेटों में, बादल उड़कर वर्षा आयी। बसाई बोला, 'मुसाई तो पानी और हवा का पंडित हो गया है। एँ ? आकाश हम भी देखते हैं, लेकिन समझते नहीं।'

वे चटाइयाँ लेकर बखार में चले आये। बसाई ने कुप्पी जलायी। काली ने देखा, बखार बहुत साफ़-सुथरा है। ऐसे गरीब संथाल लोग इतने साफ़ कैसे रहते हैं ? जो लोग संथाल नही हैं, वे क्यों साफ नही रह सकते ? बखार लिपा-पुता साफ है। चबूतरे पर चटाई, कोने में पानी की कलसी, अलमूनियम का लोटा। मिट्टी से पुती दीवारो पर बाँसों मे खोंसा हुआ बसाई का गमछा, पत्तो की बनी टोपी थे।

'यह तुम्हारा एक अड्डा है ?'

'मेरे अड्डे बहुत हैं। तुमको क्यों बताऊँ, तुम बाद में जाकर पुलिस को बता दो। जागुला थाने का देउकी मिसिर तो मुझे बहुत चाहता है।'

'ना बसाई, बताऊँगा नहीं।'

'सो पता है। नहीं तो नवीन बाबू, मोती बाबू को भगा क्यों दिया ? तुम चोट करने वाले होते, तो क्या समझते हो कि तुम्हें जिंदा छोड़ देता ?'

'कैसे मारोगे ?'

'तभी देखा जायेगा।'

'हटाओ, बातें करो।'

'ठहरो, पानी का बाजा सुन लूँ। ओह, तीन दिन साला पानी।

गड्ढे-गुड्ढे भर जायें, धरती हल चलाने लायक हो जाये। जमीन सूखकर धूल हो गयी है।'

'बोलो, बसाई।'

'बोलता हूँ। बीड़ी सुलगा लूं।' बसाई ने बीड़ी सुलगायी।

'तिहाई। धान पर कितने गीत कितने दिनों तक होते रहे, याद है?'

'याद है।'

'धान तो गान नहीं होते, काली बाबू। हम लोगों की जहान[1] है। खेती प्रधान देश हमारा है न? बीज छोड़ेंगे, पौधे रोपेंगे, खेत निरायेंगे, धान काटेंगे, दूसरे के बखार में उठाकर रखेंगे, सो मूल गीत जो गाते हैं—उन लोगों ने कोई भी सभा नहीं देखी। ति—हा—ई! बहुत बड़ा आंदोलन था। जलपाईगुड़ी, रंगपुर, दिनाजपुर, चौबीस परगना लाल-लाल हो रहे थे! किसान-सभा ने बटाई के किसानों को मदत दी। किंतु काली बाबू, बटाई के मजूरों को किसने मदत दी? खेतमजूर बटाई के किसान नहीं। किंतु खेतमजूर जाते नहीं? गोली से नहीं मरते? बटाई के किसानों ने दो भाग की माँग की थी, वह मिला नहीं। किंतु कुछ भाग बढ़ गया। काली बाबू, जो बढ़ा, उसका कुछ खेतमजूरों को किसान-सभा नहीं दिला सकती थी? नाः! कुछ नहीं दिया। खेतमजूरों की बात नहीं सोची। घमंड से किसान-सभा मोटी हो गयी। लड़ाई की, लड़ाई! बताओ? खेतमजूरों का खून अगर किसान-सभा से मुँह फेर ले, तो क्या कहते हो?'

'कुछ कहने को नहीं है।'

'क्यों? नहीं क्यों? बाबू लोगों के साथ मेरी और बात नहीं होगी यही अन्तिम है। पर तुमने कुछ क्यों नहीं कहा? कहने को नहीं है। हाय बेईमानी!'

'तुम कहे जाओ।'

'दिन बीते, दिन बीते, स्वाधीनता। उतने दिन मैं किंतु कटु नहीं हुआ जितनी बातें कहीं, उतनी बातें एक बरस से सोच रहा हूँ। मत से कालीबाबू, कि कुछ पढ़ा नहीं। वह रसूल की किताब भी नित्य बाबू पकड़कर पढ़ा ली।'

'पता है। नित्य ने बताया था।'

'पार्टी में सब लोग मुझे बेईमान कहते हैं?'

'मेरे रहते? हसन की बात याद नहीं है?'

'खूब याद है। उसने मुझसे कहा—कामरेट, खेत-मजूरों का अ

1. जान।

देखने जाकर तुमने किसान सभा की पीठ मे छुरी भोंक दी। उस पर तुमने उसकी शर्ट पकड़कर मुझसे माफी मँगवायी थी।'

'फिर?'

'पगला सिरफिरा हूँ, इसी से तुम्हे इतना चाहता हूँ। लेकिन तुम्हारे सामने नहीं, पीछे।'

'ना कोई बेईमान नहीं कहता। पर, समझ तो सकते हो, और सब जानते हो। सेल की मीटिंग हुई थी, सब लोगों को होश आया। अच्छी बात है, तुम क्या रजनीपाल को डाँट आये थे? सब लोग कह रहे थे।'

'ना। वह नक्सली हो सकता है।'

'किसने मारा?'

'वाह काली बाबू, वाह! सभी जानते हैं कि उसे मारा उसकी व्याहता बहन के लफंगे ने। उससे तुम भी पुलिस के फूफा बन गये। मरा एक गू का कीड़ा, उसका दोष मढ़ दो बसाई टुडू की गरदन पर, नक्सलियों की गरदन पर, कि बाद मे चार गोलियाँ चला सको; ऐं?'

'ना, ना। पुलिस उस आदमी को पकड़ेगी।'

'तुमने भी क्या किसी गुरु को पकड़ लिया है, काली बाबू? सब जीवों में भला-ही-भला देखते हो, पुलिस में भी? ऐं? यह तुम्हारा गुरु है कौन? मुझे दिखा तो दो। गुरु पाकर मेरी साध मिटे। फिर जीवों पर दया लौट आये। पार्टी की ओर मन लौटे। पुलिस मे विश्वास आये।'

काली हँसने लगा। बोला, 'खूब पानी पड़ रहा है, बसाई, सवेरे वर्षा होगी?'

'अरे ठहरता क्यों नहीं? कल कनाल से माछ चोरी करूँगा, तुम्हें खिलाऊँगा।'

'नहीं रे, नहीं, लौटना होगा।'

'पता है काली बाबू, पता है।'

'कहो, बातें करो।'

'देखो, स्वाधीनता के बाद से सभा की शकल बदल गयी। नदिया मे सभा ने प्रेम की बाढ़ ला दी। बटाई के किसान, खेतमजूर, बड़े किसान, मध्यम खेतिहर, शहरी बाबू—सबको सभा ने एक नजर से देखा। मरा छोटा खेतिहर, मरा खेतमजूर।'

'हाँ।'

'मेरे मन में अड़सठ साल से एक बात बैठ गयी।'

'कौन-सी बात?'

'यह किसान-सभा पुलिस से भी बुरी है, काली बाबू। यह कांग्रेस की बाप है।'

'क्यों?'

'तिरेपन साल से खेतमजूर के लिए एम० डब्लू० कानून बना, दार्जिलिंग जिले, जलपाईगुड़ी जिले में। फिर भी खेतमजूर की पार्टी नहीं बनी। किंतु हम लोगों की कमनिस किसान-सभा को यह नहीं मालूम था?'

'मालूम था।'

'क्यों नहीं बताया? क्यों उसके लिए आग नहीं फूंक दी? क्यों सारे जिलों में एम० डब्लू० की माँग नहीं उठायी? क्यों?'

'लीडरशिप का निकम्मापन था।'

'ना:, लीडरशिप बहुत अच्छी है। बड़ा अच्छा काम कर रहे हो, हे लीडरशिप! सरीफ लोग, बाबू लोग लीडर हैं। सरीफों-बाबू लोगों की बात सोची है, काली बाबू! सरीफों का हक, बड़े किसान व मँझोले खेतिहर का हक, बाबू लीडर देखेंगे, इसीलिए तो आज तक बाबू खानदान के सिवा लीडर नहीं आते? कमनिस लीडर भी बाबू, कांग्रेस लीडर भी बाबू! हम बसाई टूडू जब पार्टी छोड़ें, ऐसा समझा तो उन्होंने जिला सेक्रेटरी बनाना चाहा। उसके पहले प्यार नहीं था। किस बात का जिला सेक्रेटरी? खेतमजूर यूनियन का। वह कौन-सी यूनियन है? अड़सठ साल से पंजाब में मोगा कांफरेंस में जो यूनियन बनी, उसका मददगार कौन? सी० पी० आई०? दिल्ली से लाये गाय—पीछे बछड़ा था सी० पी० आई०। इस यूनियन का जिला सेक्रेटरी बसाई क्यों? उससे पार्टी का जोर बढ़ता था। इस यूनियन को मदत देने को कोई नयी, लड़खड़ाती यूनियन थी? बसाई, इस यूनियन को हाथ में लो। क्यों? किसान-सभा के जिला सेक्रेटरी बनाने के समय बसाई की बात किसी ने नहीं सोची?

'कहा था। चुनाव में हार गया।'

'ई० एम० डब्लू० को लेकर लड़ाई में उतरते देखा था? लेबर डिपाट ने बरस-के-बरस एम० डब्लू० बढ़ा दिया। कानून बना, कानून हुआ सरकारी रिपोट में। किंतु मेरे हाथ में एक पैसा भी नहीं आया।'

बसाई चुप हो गया। उसकी आँखें लाल हो गयी थीं। मुँह फेरकर उसने बीड़ी सुलगायी। काली समझ गया कि अब काली के मर्मस्थल पर चोट पड़ी है। बसाई की सारी निराशा का कारण खेतमजूरों पर अन्याय था। समझता है, काली सब समझता है। लेकिन जब लौटकर जायेगा तब सामन्त को कुछ भी समझा न सकेगा, यह भी मालूम है। राजनीतिक पार्टी

करने से मानवीय समस्या कैसी विदेह ऐब्स्ट्रैक्शन[1] में समाप्त हो जाती है ! लेकिन वामपंथी राजनीति मे इस तरह होना उचित नहीं था। वामपंथी राजनीति मे बसाई टूडू को भी स्नेह करने की बात थी। 'स्नेह करने' की बात मे बड़ी जिम्मेदारी रहती है। व्यक्तिगत संबंध में प्यार करने पर मनुष्य सदा सब अवस्थाओ मे दायित्व स्वीकार कर चलता है। वामपंथी राजनीति है कमनिस—माने,प्यार करना। कमनिस माने, किसी के लिए दूध-बताशा, किसी के भाग्य में साग-भात भी नहीं—ऐसा नहीं है। लेकिन वही हुआ। असल में सब अगर मध्यमवर्ग मे केंद्रित हो जाये, तो यही होता है। काली समझता है, सामन्त नहीं समझता। सामन्त के पास जाने के पहले तक बसाई टूडू इन्सान रहेगा। जो इन्सान भला कम्युनिस्ट है, विश्वस्त कार्यकर्ता है, यंत्रणा से जीर्ण पड़ गया है, आशाएँ टूटने पर नया संकल्प करना कठिन है, ऐसा एक संपूर्ण मानव है। सामन्त अपनी कट्टर राजनीतिक थ्योरी बसाई पर अप्लाई कर बसाई को गणित के ऐब्स्ट्रैक्शन में ले जाकर छोड़ देगा। सामन्त के निकट ही बसाई यदि अकगणित और ऐब्स्ट्रैक्शन बन जाये, तो औरो के निकट ? बसाई ने इसी सामन्त के एक बार प्राण बचाये थे। एक बार और सामन्त को बम्बई जाना था, जागुला के पार्टी फ़ंड मे उस समय इतना रुपया नहीं था। बसाई ने तीसरे पहर पचास रुपये ला दिये। बोला, 'साले का साला महादेव साउ ! साइकिल बेच दी, उसके पचास रुपये से ज्यादा नहीं दिये। उसकी लारी का टायर बेनाराम ने फँसा देने को कहा था। दिया साले गुनहगार ने।' साइकिल कई गाँवों के खेतमजूरों और छोटे किसानों ने रुपये जमा कर बसाई को खरीद दी थी। बसाई उन लोगों के सुख-दुख का साथी था। 'जिन्होंने आँखों से ऐसा कामरेट देखा। कागज पर लिखा कामरेट मालूम है, आँखों से देखा ऐसा कामरेट नहीं है। इसी से तुमको दिया। पाँव-पाँव कब से पैदल फिर रहे हो।' बसाई बोला था, 'तुम सालों के पास बहुत-सा रुपया हो गया है।' पहनने के कपड़ों का किनारा खोलकर वह साइकिल पोंछता था।

बात की याद दिलाने से सामन्त सुपीरियर हँसी हँसेगा। हँसी की सुपीरियर और इन्फीरियर डिग्री में अन्तर है। काली को यह बात पहले नहीं मालूम थी। वह अपने स्वभाव से अत्यन्त नम्र, दीन था—पहले का जमाना होता तो उसे शायद असली वैष्णव कहा जाता। आजकल देखा कि वोट के वक़्त या मीटिंग आर्गनाइज करने मे शरीर को कष्ट होता है,

---

1. अमूर्त।

यह बात कहने पर सामन्त और दूसरे लोग सुपीरियर हँसी हँसते और काली के कलेजे में हँफनी हो जाती। यह बात न मानकर अपने त्याग और आत्मदान की बात इस तरह कहते कि काली को केंचुआ बना देते। उनका शरीर मूल्यवान, आराम-विश्राम का शरीर था—काली पार्टी का सामान्य कार्यकर्ता था। उसके शरीर की हानि कोई बात नहीं। उसका त्याग, त्याग नहीं था। उसका सर्वस्व-दान कुछ न था।

काली एक्सपेंडेवल था। उसे उड़ा देने से चलता था। यथार्थ में पार्टी लेवुल से बहुत लोगों की सुपीरियर हँसी देखते-देखते आजकल काली के मन में अकेले 'जिला वार्ता' ऑफ़िस में एक अद्भुत व्यर्थता का बोध होगा। वह पार्टी के लिए जान दे रहा है, लेकिन पार्टी सदा उसे समझा देती है कि वह एक्सपेंडेवल है। ऐसी दशा में काली क्या सोचे ? कार्यकर्ता के प्रति ऐटिच्यूड, पार्टी का स्वभाव क्या इस्टेब्लिशमेंट की तरह नहीं है ? पार्टी और इस्टेब्लिशमेंट तो विरोधी पक्ष हैं। कार्यकर्ताओं के प्रति व्यवहार में क्या दोनों एक-से हैं ? युद्ध। मरेंगे सामान्य सैनिक, नाम होगा जनरलों का। 'व्हॅट पासिंग वेल्स फ़ॉर दोज़ हू डाई ऐज़ कैट्ल ?'[1] ऐसा क्यों हुआ ? इस्टेब्लिशमेंट को तो मनुष्य को प्यार करने का 'कॉज़' नहीं था। पार्टी के लिए वह 'कॉज़' था। जिसका 'कॉज़' रहता है और जिसका नहीं रहता, कार्यकर्ता के प्रति व्यवहार में दोनों एक-से क्यों हैं ? जो द्वैत है, वही अद्वैत है ? भारत का ट्रेडिशन ! काली सांतरा की हालत एक-सी क्यों रह जाती है ? इस्टेब्लिशमेंट की सरकार में सारी बदज़ात नीतियों के हाथों मनुष्य लांछित होता है, पार्टी की सरकार में भी क्यों वे ही रह जाते हैं ? प्रबल और हिंस्र कम्युनिस्ट-विरोध, घूसख़ोर चोर-स्वभाव, साधारण मनुष्य को कष्ट देने में आनन्द देता है ?

उसके बाद व्यर्थता का बोध। न, न, इस तरह सोचने का अधिकार उसे नहीं है। काली सांतरा की तरह हज़ारों कार्यकर्ता कुछ मैटर नहीं करते। सभी कमनिस पार्टियाँ ही काली सांतरा की उपेक्षा कर सकती हैं। वे पार्टी को कुछ नहीं देते। गृहस्थी का सुख, व्यक्तिगत जीवन, संसार में सम्मान के प्रलोभन का त्याग—कुछ नहीं देते। सारा त्याग, क्षमाशीलता, निष्ठा लीडरों के लिए है। ब्रूटस की तरह वे सब आनरेबल मेन[2] हैं। एक बार वे भी विरोधियों की तरह व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए संग्राम का टिकिट भुनाते हैं। दल का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करते हैं। एक दूसरी ओर

1. जो पशुओं की मौत मरते हैं उनके लिए घंटे क्या बजाये जायें ? 2. सम्मानीय व्यक्ति।

वे विरोधियों के पिता और भारतीयों में भारतीय हैं। प्राचीन भारत के आदर्श में तरुण लोगों के लिए जगह नहीं है। सारे स्थान वृद्धों के ही लिए हैं। विरोधी पक्ष 'कॉज के लिए समर्पित फ़ाख्ता' छोकरों को ऊपर उठाता है और उन्हें नाम देता है 'तरुण तुर्क'। पार्टी वह भूल नहीं करती। मैदान में और मेनीफ़ेस्टो में वे युवकों से डबल ज़ोर से पुकार कर कहते हैं, 'रक्त दो।' किन्तु कार्यकाल में किसी तरह नहीं नहीं छोड़ते। एक भी नया काडर[1] तैयार नहीं करते। एक बार जो लीडर बन गया, आज भी वही लीडर है—सिर्फ़ वामपथ में! ब्लडप्रेशर, रक्त में शर्करा, हृद्‌चाप—सब लेकर आज भी वे नक़ली दाँत और लटकती खाल लिये पद सभाले हुए हैं। ब्रूटस की तरह ये ऑनरेबल मेन हैं।

हज़ारों कार्यकर्ताओं की हालत काली की तरह है। ये सब प्रश्न कलेजे में लिये तमाम लोगों को आउट ऑफ़ लॉयल्टी चुप रहना पड़ता है। पार्टी इमेज को रिइटरेट करके चलना पड़ता है। परिणामस्वरूप पत्नी-पुत्र-परिवार एक छत के नीचे रहते हुए भी दूर हो जाते हैं। होंठों के कोने लटक जाते हैं, चेहरे पर रेखाएँ पड़ जाती हैं, भयंकर रूप से आशाएँ टूट जाती हैं, मन का संताप कलेजे में दबाकर बढ़ते रहना पड़ता है।

यह प्रक्रिया नाशकारी है। पार्टी के पक्ष में। अच्छा काडर वह मिट्टी है जिस पर पार्टी खड़ी है। काडर के मन में प्रश्न उठते रहते हैं। उस मिट्टी का कटाव होता रहता है। थोड़े-थोड़े कटाव से धरती उर्वरता खोकर नष्ट हो जाती है। निचली मिट्टी में निरंतर मृदा का क्षरण होते रहने से पार्टी में धँसाव नहीं होगा? यह सोचकर ही काली सांतरा का मन बैठ जाता। उसके पहले काली मरना चाहता है। कार्यकर्ता के प्रति पार्टी के अन्यायी मनोभाव के फलस्वरूप खिसकाव होने से पार्टी नहीं रहेगी? पार्टी नहीं रहेगी? पार्टी न रहे, ऐसे दिन की बात काली सांतरा सोच नहीं सकता है। पार्टी सदा रहे, तुम रहो। तुम्हारे लिए मैंने अपने को कब का उजाड़ कर दिया है। वह 'सोने का बंगाल श्मशान बन गया' उसी 'जनयुद्ध' अख़बार के ज़माने में। मैन-मेड फ़ेमिन इन बंगाल। मैन मेड फेमिन। फ़ेमिन या दुर्भिक्ष इस तरह का नहीं होता है। आदमी आदमी को नहीं समझता, पार्टी मनुष्य की समस्त सत्ता को लील जाती है और बदले में प्रयोजनीय स्नेह और अंडरस्टैंडिंग देना भूल जाती है। परिणामस्वरूप मानव मनुष्यों के मन में एक और ही क़िस्म का अकाल तैयार करता है। मिट्टी का कटाव होने से आजकल पौधे बौने रह जाते हैं।

---

1. कार्यकर्ता।

'क्या सोच रहे हो, काली बाबू ?'

'उँ...?'

'क्या सोच रहे हो ?'

'अपनी बात तुमसे कहने को।'

'कहोगे ?'

'ना बसाई, तुम ही बातें करो। अपनी बातें शुरू करने पर शायद बहुत-सी बातें कहूँ। कहना ठीक न होगा।'

'नाः ! पहले तो तुम सच्चे कामरेट हो, उस पर बसाई ने अब दल छोड़ दिया है, बेईमान हो गया है।'

'ठहरो, अभी आया।'

'पानी पड़ रहा है, दरवाज़े के उधर बैठ जाओ।'

6

ज़रूरी काम करने के बाद काली दरवाज़ा पकड़ कर खड़ा हो गया था। आसमान में झीना अँधेरा था। शुक्ल पक्ष की रात थी। यह रात कब से काली के मन को पकड़े थी। पलताकुड़ि गाँव बिजली की चमक से प्रकाशित हो रहा था। बहुत दूर तक दिखायी पड़ रहा था। गाँव के पार का सपाट मैदान। सूखे मैदान का समुद्र। पलताकुड़ि और बाकुली दो द्वीप-मात्र थे। कनाल का गर्जन था। पुराने कामरेड बसाई टूडू ने दल छोड़ दिया है, इसलिए उसका वक्तव्य सुनने लायक़ है, उसे समझाने की बात लेकर न आता तो काली साँतरा ऐसी रात न देख पाता। नवीन गड़ाई, मोतीदास—इन दो पुराने पार्टी-कार्यकर्ताओं को पहले भेजा गया था। बसाई ने साफ़ कह दिया, 'कोई बात ही नहीं।' इससे नवीन और मोती बहुत घबरा गये और जल्दी जागुला लौटकर सामन्त को रिपोर्ट दी। तब सामन्त काली के पास आया और बोला, 'कामरेड ! बसाई के पास चले जाओ। बसाई नक्सल हो गया है, यह खुद कहे।' अगर कहे, तो क्या करना होगा—काली के इस परेशानी-भरे सवाल के जवाब में सामन्त सुपीरियर आवाज़ में बोला, 'तब पार्टी जो समझेगी वही करेगी।' इस तरह 'पार्टी' शब्द उच्चारण करने से लगता कि पार्टी शब्द के अर्थ होते हैं 'अदालत'। 'कोर्ट विल डिसाइड'[1]—बसाई अपराधी है या निरपराध ? दंडनीय है या नहीं ? इस तरह 'पार्टी' कहने से लगता जैसे कि पार्टी इंसानों से नहीं बनी है। सामन्त

1. अदालत फ़ैसला करेगी।

बसाई, काली—हर-एक, हर-एक को मानो पहचानते न हों। लेकिन आज की रात बहुत सुन्दर है। याद रखने लायक है। वर्षा। मिट्टी सोंधी हो रही है। रजस्वला। जेठ में गर्भ में आमन[1] का बीज धारण कर सकेगी। बसाई अगर पार्टी में लौट आता! सब गलतियों की सफाई हो जाती! बसाई पार्टी में वापस आता! लेकिन बसाई अब न आयेगा। स्टैट्यूटरी मिनिमम वेज फॉर ऐग्रीकल्चरल लेबर[2] के छ शब्दों की प्रशासन और पार्टी उपेक्षा कर रहे हैं। लेकिन ताज्जुब हुआ कि बसाई नक्सलवादी नहीं हुआ। सामन्त को विश्वास नहीं कराना पड़ेगा। जो जानता है, उसके सिवा भी कुछ हो सकता है, इसे सामन्त सोच भी नहीं सकता। सोचना नहीं चाहता। जो सोचने से सुविधा हो, सामन्त वही सोचता है। बहुत लोगों की राय। जो सोचने से मन नामक पृथ्वी की परत पर तोड़-फोड़ हो और नया स्तर-चित्र बनाना पड़े, यह सब सोचने की सारे इंसानों की तरह सामन्त भी अलग रहता है। बसाई ने जब पार्टी छोड़ी थी, तो सुना जाता है कि बीरू पाठक के साथ उसकी मुलाकात हुई थी। बीरू जब नक्सलवादी है, बसाई बहुत ही जरूरी काम से खेतमजूर वाले गाँवों में घूम रहा है, तो बसाई निश्चय ही नक्सलवादी हो गया है। काली समझता है कि बसाई नक्सल-वादी नहीं हुआ। जमीदारों के धान काटकर न्यूनतम मजदूरी नहीं मिलती, मजदूरी माँगने पर जमीदार काटने वालों को लाकर सरकारी मदद से धान कटा लेता। यही यंत्रणा और अन्याय बसाई का महाविश्व था। चीन का मार्ग और चेयरमैन का पथ, उसका चेयरमैन न था। बाहरी आइडिया उसने जो सीखा था वह समझता है, उसका वह त्याग करना चाहता है। नक्सलवादियों की मदद से उसका काम होने से वह मदद लेगा। लेकिन उसका अपना संग्राम जितनी दूर कहेगा, उतनी दूर रखेगा, उससे अधिक नहीं। इस बात का सामन्त को विश्वास नहीं कराया जा सकता। सामन्त को ये सब बातें समझाना सम्भव नहीं है। दीर्घ पार्टी-राजनीतिक जीवन ने सामन्त आदि के मन में इम्यूनिटी[3] की दीवार बना दी है। वह दीवार चीन की दीवार की बाप है। वह दीवार मन में रहती है। है, इसी से सामन्त किसी भी तरह दूसरों का स्वतंत्र मतवाद मन में घुसने नहीं देगा। कहेगा, 'बसाई नक्सलवादी है।' बस, बसाई को तब अलग कर देना होगा और नक्सलवादियों के लिए जो व्यवस्था है, बसाई के लिए भी उस एक ही व्यवस्था का सहारा लेना पड़ेगा—सोचने पर भी काली को बहुत खिन्नता हुई। सामन्त कहेगा कि बसाई नक्सलवादी है। केवल बसाई और काली

1. हेमंत की फसल 2. कृषि-मजदूरों के लिए कानूनन न्यूनतम मजदूरी 3. प्रतिरोध।

असली वात जानते हैं। और किसी को मालूम न होगा। इस प्रकार का अन्याय शायद प्रायः ही होता रहता है। काली को वहुत खिन्नता हुई।

वहुत, वहुत-सी विरोधी-शक्तियाँ हैं। काली साँतरा इतने लोगों से कैसे लड़ सकेगा ? वसाई के-से लोग क्या ग़लत समझे जाने के लिए ही पैदा होते हैं ? किन्तु वसाई की वात विना सुने-समझे उसे खोना होगा। उसके वाद उसे विना समझे, वह जो नहीं है, वह कहकर, उसका प्रचार कर, सुविधा के अनुसार व्याख्या रेकर्ड कर रखने से किसका नुक़सान है ? वसाई टूडू का ? या व्याख्या करने वालों का ? कहाँ मिलेगा भविष्य का रिसर्च अनालिस्ट[1], जो मिथ्या को हटाकर सत्य को रेकर्ड करेगा ? दुनिया में कितने सत्य इसी तरह प्रशासन की चेष्टा से मिथ्या रेकर्ड होकर वने रहते हैं ? प्रतिदिन क्या ट्रूथ-असैसिनेशन[2] नहीं चलता रहता है ? दुर्घटना, जुलूस पर गोलियाँ, आंदोलन-दमन—सव वातों में क्या हर रोज़ झूठ को सच कहकर रेकर्ड नहीं किया जा रहा है ? उसके लिए कौन क्या कर सकता है ? न, न, काली ये सव वातें क्यों सोच रहा है ? वसाई क्या 'अतीत' हो गया है ? वसाई तो सामने है। काली के सामने।

वसाई ने दोनों हाथों से हवा का गला मरोड़ा। काली, पुष्ट, छोटी-छोटी उँगलियाँ मुड़ गयीं। वार-वार। मुद्रा-दोष देखने लायक़ था। काली साँतरा समझ गया कि रात धीरे-धीरे उसके जीवन की सवसे मूल्यवान रात हो गयी है।

वसाई वोला, 'मेरा मन टूट गया। फिर भी कहूँगा—खेतमजूरों को कमनिस पार्टी, सी० पी० आई० ने कुछ मदत दी। तुम सोचो, काली वावू। सच्चे कमरेट तुम हो। और कोई नहीं। नाः। उनके भी हो। उन्होंने ख़ूव, खूव भारी मदत दी। हुगली में हरिपाल का नाम जानते हो ?'

'पहचानता हूँ।'

'कैसा आदमी है, कालीवावू ?'

'कैसा माने ?'

'तुम-सा क्या वह आधा-सान्ताल है ? खेतमजूरों की लड़ाई में कितनी वार जेहल गया, कितने फौजदारी मुकदमे पुलिस ने उसके नाम लगाये। लेकिन पीछे नहीं हटा।'

'वह तो कानून के पथ पर लड़ता है, वसाई।'

'क्या वूझे ? मैं कानून से अलग पथ पर गया ?'

'तुम क्या करोगे, वह तो मैं नहीं जानता।'

---

1. छान-बीन कर विश्लेषण करने वाला 2. सत्य की हत्या।

'तभी तो कहता हूँ, हरिपाल आधा सान्ताल है। आईन के पथ पर चला, पुलुस लेकर धान कटाये, जमींदार की बात पर विश्वास किया, फिर जेल काटी—ऐसे काम नहीं होगा।'

'तुम बताओ।'

'चलो, बाहर चलो। पानी रुक गया है। वह देखो, चाँद दिखायी दिया, चलो। तुम्हें कनाल दिखा लाऊँ।'

'चलो।'

'अब रात कितनी रह गयी?'

'चार बज रहे हैं।'

'चलो।'

वे लोग कोठरी से निकले। मुसई की कोठरी में आदमियों की गुनगुन थी। बसाई ने पुकारकर कहा, 'विहान हो रहा है, माझिन। उठ पड़ो। हम कनाल की ओर घूमकर आते हैं, आकर चा पियेंगे। मूडी है, या ले आयें?'

'है।'

मुसई की पत्नी ने ज़ोरों से कहा। काली को फिर भी लगा, मुसई टूडू की माझिन की आवाज़ बड़ी मीठी है। तमाम औरतों की-सी, बड़ी मीठी। मुसई का आँगन पार कर उन्होंने गाँव की राह पर पाँव बढ़ाये। आँगन में पानी, राह में पानी था। बसाई बोला, 'जितना पानी देख रहे हो, सब बह जायेगा। तब और भी पानी होगा। बादल उमड़ रहे हैं। हो, पानी हो। सूखा, अकाल, बाढ़—ये तीन चोटें हर बरस मिलती रहती हैं। पर सूखा इस साल से तीन साल पहले हुआ था। हमारी माझिनें पानी के लिए नदी की बालू में थोड़ा टेढ़ा कर उँगली धँसाती हैं।'

'कनाल है न?'

'यहाँ है। चरसा में? जागुला में? बनाटी में? कदमकुआँ में? कहाँ जल नहीं है? चरसा नदी आसरा है।'

भोर का प्रकाश फूट रहा था। चराचर तर हो रहे थे। वर्षा और धरती के आकुल और भूखे मिलन के बाद भोर की शीतलता में धरती सो रही थी। खोयाई[1] और ताड़ के पेड़ों के बीच-बीच में मटमैले पानी का स्रोत था। वे लोग कनाल के किनारे आकर खड़े हो गये। पानी-ही-पानी था। बसाई बोला, 'इतना पानी, वहाँ भी आकाश के पानी में खेती है। साला सूर्य साउ न देगा कनाल-कर, न लेगा जल।'

1. नदी का नाम

'जहाँ कनाल है, वहाँ जमींदार पानी लेने को विवश हो—ऐसा अगर एक कानून होता।'

'ब्बाप रे! वे कर सकते हैं? सारे जमींदार सरकार के खूँटे हैं, जमींदार के खूँटे हैं वटाईदार किसान। खेतमजूर का नहीं। कनाल-कर लेकर खेती क्यों बढ़ायेंगे? कम खेती में जोतदार को दुगना फायदा होता है। खेती कम होगी। वटाई वाले किसानों को कम मिलेगा। खेतमजूर नंगे रहेंगे। इससे साल-भर कर्ज देगा, सूद लेगा।'

'कर्ज मौकूफ करने का कानून आज नहीं, कल बनेगा।'

'उस पर जमींदार हँसेगा। कानून का कानून बन गया, सरकार को उसका पता नहीं चलेगा! कर्ज जिस खाते में लिखा रहता है, उस खाते को अदालत किसी दिन देख सकेगी? जमींदार कर्ज पर सूद लेता है, इस पर कोई बेटा जमींदार के नाम पर केस करेगा? जो जमींदार है, वही महाजन है। साल-भर नंगा किसान उसका रुपया खाता है, धान खाता है।'

'यह भी सच है।'

'वह कानून बना नहीं, इसी से इतना झंझट है। जमींदारों का घमंड, ऊँची जात वालों का घमंड—ना काली बाबू, वैसी किसान-सभा होती, कमनिस-किसानों का फरंट, तो उससे हम सबको बल मिलता। जमींदार, बड़े किसान, मँझोले किसानों को कोई खफा नहीं करेगा—न यूनियन, न फरंट, सरकार भी नहीं—मेरा दिल टूट गया है।'

कनाल के पानी में गर्जन था। बसाई के बाल उड़ रहे थे।

'बात करो, बसाई। मुझे लौटना होगा।'

'साँझ को जाना। लारी पर चढ़ा दूँगा। आज गढ़ैया में नहाओ, कनाल की मछली खाओ।'

'साँझ बीतने पर भी तो जाना पड़ेगा?'

'जाओ। फिर तो आना होगा।'

'क्यों?'

'बा:, सामन्तबाबू मेरा कटा सिर देखना चाहेंगे न?'

'ना, सामन्त को और काम है।'

'ना क्या! भुइयाँ ने कांग्रेस में कहा—चार ठो बस-परमिट लूंगा, उसके लिए उसका कटा सिर पहले लूंगा।'

काली चौंक पड़ा। बसाई की आँखों में और चेहरे पर मुसकराहट थी बसाई बोला, 'क्यों? चौंका दिया न? जानते हो कालीबाबू, परमिट के झगड़े में पार्टी के रतन ने भुइयाँ का खून कर डाला, इसके लिए सामन्त

की तबीयत अब उसका कटा सिर चाहती है। मैं कमरेट था, कमरेट का दिमाग किस फिकर में चक्कर खाता है, यह कमरेट को मालूम न होगा? लेकिन उन्हें मरवाने से आग भड़केगी, खून बहेगा—उसमें पार्टी के नंगे कमरेट और मरेंगे। लीडर सामन्तबाबू को उसमें क्या?'

'यह सब बातें रहने दे, बसाई।'

'यह मालूम हुआ, जो कहा वह सच है। यह अच्छा नहीं है। मैंने ये बातें कहीं, सामन्तबाबू यह जानकर कहेंगे—बसाई कांग्रेसी हो गया है।'

'नहीं भी कह सकते हैं।'

'उससे मुझे क्या? पर उस सामन्त से पार्टी का नाम डूबेगा, मैं यह भी कहे देता हूँ। तुम देख लेना।'

'उससे तुम्हें और कुछ आता-जाता है?'

'ना:! चलो, उधर बैठें।'

उस समय भी भीगे, औंधे लेटे हुए आदमी की पीठ की तरह दिखायी पड़ने वाले एक पत्थर पर वे बैठ गये। यह जगह बड़ी अजीब थी। लाल मिट्टी के चूरे के बीच-बीच में काले-काले पत्थर थे। पश्चिम की ओर जाने पर क्रम से अधिक पत्थर थे। बीच-बीच में जंगल की बेल्ट[1] थी। मोर एँड मोर ट्राइबल विलेजेज।[2] काली ने कभी होमवर्क किया था। गोकुल बाबू को सब मालूम था। बसाई ने गोकुल बाबू से सीखा था।

दोनों बैठे। सूर्य निकला। पहली धूप पाकर गीली मिट्टी से भाप उठी। बसाई बोला, 'खेतमजूरों को लड़ाई में उतार कर देखा, एम० डब्लू० हो रहा है। बरस-के-बरस लेबर डिपार्ट एम० डब्लू० बढ़ाये दे रहा है। लेकिन हमें एक पैसा नहीं मिलता। स्वतन्त्रता के बाद कानून ने तो बुरी बात नहीं कही। बटाई के किसानों को दो हिस्से देने की बात भी। किसान-सभा ने उधर ध्यान नहीं दिया। उस समय किसान-सभा की लड़ाई हुई, बटाई के किसानों को उजड़ने नहीं देंगे। बटाई के लोगों ने जिसके लिए लड़ाई लड़ी वह तिहाई हुव गयी। उस बात को अलग रखकर लड़ाई हुई, बटाई को उजड़ने नहीं देंगे। यह किसान-सभा खेतमजूरों की बात सोचती है? स्वतन्त्रता होने पर मोगा कानफरेंस तक ही हिसाब रहा। खेतमजूर की बात नहीं करेंगे। किसान-सभा मुँह से जो कहे, 'किसान एकता जिन्दाबाद' स्लोगन के अंदर दूसरी बात है। खेतमजूर का अधिकार चाहने पर धनी किसान-मध्यम किसान बिगड़ जायेंगे। उनकी एकता के लिए किसान-सभा

1. पट्टी 2. और अधिक जनजातीय गाँव थे।

चलती रही। छोटे किसान, दो बीघे के किसान, महाजन की जमीन पर खेतमजूर बन रहे हैं, कालीबाबू।'

'यह बात तो हो गयी।'

'और बताता हूँ, झूठ नहीं है। यह बात तुम्हें समझाता हूँ, कानून होने पर भी चारा नहीं, इसके पीछे यूनियन नहीं थी। यूनियन रहने पर भी नहीं होता, कालीबाबू। यूनियन का जोर बेकार होता है। हुगली में हरिपाल बाबू ने दो पैसे की लड़ाई की थी, पता है? पाट धोने-पटकने के लिए खेतमजूर को मिलते थे अट्ठाइस पैसे, उसके लिए लड़कर तीस पैसे किये। बड़ा झगड़ा हुआ। तुम कहते हो, यहाँ पैसे में फायदा नहीं है, लेकिन जो लड़ते हैं उनके कलेजे को बल मिलता है। दो पैसे में कितना खून बढ़ता है? दो पैसों में आज धान-चावलों के बाप के घर वीरभूम-बर्धमान में एक मुट्ठी चावल मिलता है? मिर्च मिलती है? साग मिलता है?'

'फिर रास्ता कौन-सा है?'

'तुम लोगों का रास्ता नहीं।'

'नक्सलवादियों का रास्ता?'

'देखता हूँ कि नक्सल नाम तुम्हारे माथे में घुस गया है। तुम जो कुछ हो वह तुम जानते हो, वही राह पकड़नी होगी। सी०पी०एम० नहीं, सी० पी० आई० नहीं, न नक्सल। यह पथ बसाई टूडू-पथ है।'

'क्या पथ?'

'जिससे काम होगा। कानून की ओर जाने से जहाँ काम होगा वहाँ कानून। जहाँ कानून का अँगूठा जमींदार दिखायेगा वहाँ उँगली टेढ़ी करेंगे। नक्साल मुझे मदत देते हैं तो मदत लूंगा। तुम दो, तो लूंगा।'

'क्या करोगे, तुम क्या करोगे, बसाई?'

'क्यों?'

'तुम अकेले हो।'

'कौन कहता है, मैं अकेला हूँ।'

'अकेले नहीं हो?'

'ना:।'

'कहाँ है तुम्हारी बेस, कहाँ है तुम्हारा काडर?'

'वे रटी बातें छोड़ो। पर याद रखो, हम नक्सलियों की गलती नहीं करेंगे। जिनके लिए लड़ाई है, उन्हें समझायेंगे नहीं—उन्हें मारना नहीं सिखायेंगे—पुलिस गाँव में आने पर सारे घर जला देगी—सबको मारेगी—जमींदार को मारकर पुलिस नाचकर गाँव को लहास से पाट देगी—वहाँ बसाई नहीं है।"

'उनकी राह में तुम्हारा विश्वास न रहने पर भी...?'

'प्रचारित कर देंगे, बसाई नक्सल हो गया। उसमें मेरा क्या ?'

'उन लोगों को मालूम है कि तुम्हारा उनके बारे में क्या भाव है ?'

'ना: काली बाबू। वे मरना जानते हैं। इस तरह मैंने किसी को मरते नहीं देखा। तुम नहीं समझोगे। तुम बिना लाठी का आंदोलन, अहिंसक आंदोलन जानते हो—उन लोगों को यह नहीं मालूम। उनके साथ हमारा कोई झगड़ा नहीं है।'

'ऐसे अच्छे-अच्छे लड़के, और ऐसी गलत राह पर !'

'मैं सान्याल हूँ। कैसे जानूँ, कौन ठीक कर रहा है, कौन गलत कर रहा है ? तुम्हारा सोवियत का पथ ठीक है, उन लोगों को चीनी राह गलत है, यह किचकिच मैं नहीं समझता। जितनी गलती है, सब उन लोगों की है। तुम जो उनको सुअर की तरह छेदकर मारते हो, वह गलती नहीं है न ? ना', तुम तो गलती करना जानते ही नहीं ?'

'बताओ, क्या कहूँ ?'

'कुछ कहने से फायदा नहीं, कालीबाबू ! उन्नीस सौ तिरपन में एम० डब्लू०। उनसठ में रिवीजन।[1] अब सत्तर साल है। अड़सठ का रिवीजन अब भी चल रहा है। मरद, तीन रुपये चौअन पैसे, औरत को तीन रुपये सत्ताईस पैसे—टोक-टाक करने पर दो रुपये दो पैसे। हाथ में क्या आया ? आठ आना—दस आना—एक रुपया अस्सी पैसे—वह देने के वक्त भी छिपा खाता निकलता है। उसमें अँगूठा-निशानी किसने कितना लिया, किसके हिस्से में कितना कटेगा ! जानते हो, हमारे-तुम्हारे राज में खेत-मजूर कितने थे ? सैंतीस लाख से भी बेसी। सैंतीस लाख से बेसी खेतमजूरों को सरकार का घोषित रेट नहीं मिलता, उसमें कमनिस-किसान फरट का कुछ आता-जाता नहीं। अब सत्तर साल है। बसाई को गालियाँ क्यों मिल रही है ? जाओ, जाकर मीटिन बुलाओ। बात चलाओ। कहो, सब जमींदारों को खेतमजूरों को एम० डब्लू० देना पड़ेगा। अच्छे कमनिस हो तुम लोग ! जमींदारों से कुछ कह नहीं सकते। या तुम जोतदारों का हक ज्यादा समझते हो ? कानून पास कराया, चालू नहीं किया ?'

इस बात से काली साँतरा के मन में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। बसाई खफ़ा हो गया है, बात-बात में हवा का गला मरोड रहा है। धूप में तेज़ी नहीं थी। फटे और चमकते बादलों के बीच-बीच में मैली धूप थी। ठंडी हवा चल रही थी। चराचर जाग उठे थे। कनाल का जल महान

1. संशोधन

उल्लास में फेनिल हो रहा था। रामचिरैयाँ झपट रही थीं। उससे पता चल रहा था कि कनाल में मछलियाँ हैं। नहीं तो सफ़ेद फेन और मटियाले पानी में मछली कहाँ हैं, इसका पता नहीं चलता। कनाल दूसरी योजना में बनी। काग़ज़ के हिसाब से 'यह सिंचाई की नहर दोनों ओर, तीनों ओर तीन सौ एकड़ ज़मीन को पानी से सींचती है।' लेकिन सच्चे और विवेकी ज़िला-हाकिम और बी० डी० ओ० का पराजित मन्तव्य है कि ज़मीन ज़मींदारों के अधिकार में है। ज़मींदार सिंचाई के लिए पानी लेने को राज़ी नहीं हैं। बटाई के किसानों या अधिया से ज़्यादा धान पैदाकर बहुत धान होगा। उससे ज़मींदार के स्वार्थ की हानि होती है। कम धान पैदा होने से बटाई के और दूसरे खेतमजूर—सब मुसीबत में रहते हैं। जो ज़मींदार है वही महाजन है। आदमी उससे रुपये और धान उधार लेता है। चक्रवृद्धि ब्याज ज़मींदार और महाजन की लक्ष्मी होते हैं। और कनाल-कर की दर छोटे किसान या मँझोले किसान के बस की बात है कि वह कर देकर पानी ले ?

बसाई गुस्सा हो गया, उससे काली बोल न सका, बसाई की बातों में वह आज का इतिहास सुन रहा है। जो कुछ हो रहा है। होने वाला वर्तमान। प्रेज़ेंट कन्टिनुअस। आज काली को पता है, कि विभिन्न प्रांतों में भले कार्यकर्ता आदिवासियों से एक ही प्रश्न सुनते हैं। उनका दुख और क्रोध 'फ़रंट' पर है। कमनिस नाम से उन्हें आशा थी। 'कांग्रेस' नाम से न थी। इसलिए उनका कहना है कि 'फ़रंट' अब ज़मींदारों के स्वार्थ की रक्षा कर कृषक आंदोलन में मदद दे रहा है। चाहने पर पीड़ित किसान, या खेतमजूर, या अधिया, या बटाई के किसानों को पुलिस का पहरा नहीं मिलता, उनके विरोधी ज़मींदारों को मिलता है। आदिवासियों का कहना है कि नक्सलवादी उन्हें मदद देते हैं, तो वे मदद लेंगे। जो दे वही मित्र है। आदिवासी लोग तो 'फ़रंट' दायें-बायें—दोनों हाथ बढ़ाकर मदद देने से 'ना' नहीं करते ? ना नहीं किया ?

बसाई संभवतः ईश्वर अथवा साइंस-फ़िक्शन का सर्वज्ञ प्राणी था। वह बोला, 'मैं नक्सल नहीं बना। फरंट ने जो चोट मारी, उससे फिर पढ़े-लिखे बाबू लोगों की राह पर अंधे की तरह नहीं जाऊँगा। किंतु जहाँ सान्-ताल-उरांव-मुंडा-बाउरी-तिउर-केउट नक्सली हो गये, क्यों हो गये ? तुम राग-विवाद भूलकर विचार कर देखो। समझना चाहोगे तो समझ सकोगे। किंतु कालीबाबू, फरंट तो समझना नहीं चाहता, अदालत की ओर से फ़ैसला देता है, फांसी का हुक्म देता है।'

'हां।'

'किन्तु करने पर कर सकते थे। लोहा गरम था, हथौड़ी मार सकते थे। मारी नहीं। नक्सल गरम लोहे पर हथौड़ी मारते हैं। खुद मरने से नहीं डरते, उन्हें सब रिस्पेक्ट देंगे। तुम जो मरने से डरते हो, तुम नहीं दोगे।'

हाँ, लोहा गरम था। स्वाधीनता के बाद चौबीसवें बरस में। ट्राइबल वेलफ़ेयर कमेटी के बाद कमेटी। दो-चार सांथाल या अन्य आदिवासी आम प्रशासन में हैं। स्वाधीनता की विशाल, महान कीर्ति है। ग्रेट, ग्रेट, ग्रेट अचीवमेंट! हिसाब लगाने पर देखा जायेगा, यह सब बसाई की भाषा में 'शिक्षित, पास किये सानताल-उराँव' सभी मिशनरी की शिक्षा-व्यवस्था के अवदान हैं। इन्हें नमूने की तरह उठा-उठाकर दिखाया जाता है। जिन्हें नहीं दिखाया जा सकता उनकी हालत चौदह परतों में दबी रहती है। इसलिए उन्हें वंचित रहना पड़ता है—लोहा गरम था।

गरम था लोहा। हरिजन अत्याचार निवारिणी संस्था—भारत के संविधान में छूत-अछूत और जाति-भेद नहीं है। लेकिन ऊँची जाति के सिवा नीची जाति वालों को दिन के अन्त में आज भी अन्न, सिर पर पत्तों की छत नहीं मिलती। 'भारत का गरीब आदमी रिसर्च का विषय है। किस बात की रिसर्च? कितना कम खाकर, सरकार से कितना कम पाकर इंसान जीवित रह सकता है! आश्चर्यजनक देश है।' बाँकुड़ा-पुरुलिया-उड़ीसा में आमानि[1] बिकता है। भात के होटलों की कच्ची नालियों से इंसान माड़[2] इकट्ठा करते हैं। बहुत गरम था लोहा। मोल्टन आयरन[3]। अमरीका-सोवियत का मित्र सागर-पर्यन्त भारत है। लेकिन किसी ने हथौड़ी नहीं चलाना चाही। रिज़ल्ट[4] है बसाई टुडू।

'कहो, नक्सल कहो, कौन—जो दुम नहीं। हम जब बने नहीं, तो जो चैलेन[5] देते हैं, वे टेररिस[6] कहते हैं, कांग्रेसी कहते हैं। सो बाद में कांग्रेसी कहते, चैलेन करते हैं, ये कमनिस हैं। आज फरंट कहता है, ये नक्सल हैं। मुझे भी कहेंगे। कोई दुम नहीं, सब अंधे बन गये हैं, उन्हें कौन समझायेगा?'

'इस बात के जवाब में मैं जो कहूँगा, बसाई... हाँ, तुमने ठीक कहा। ठीक कहा।'

'और बात क्या है, काली बाबू? स्कूल की किताब मुझे रोज पढ़ाई। उसमें तो फरंट की सारी बात मानी गयी है।'

---

1. पानी जिसमें रात-भर भात भिगोया जाता है 2. उबले चावल से निकाला पानी 3. पिघला लोहा 4. परिणाम 5. चैलेंज—चुनौती 6. टेररिस्ट—आतंकवादी।

'हाँ।'

रसूल की किताब। काली साँतरा का होमवर्क। 'खेतमजूरों की विशेष माँगें लेकर आवश्यक आंदोलन और संगठन नहीं हुआ, उसका कारण लगता है—किसान-सभा का नेतृत्व और कार्यकर्ताओं की नैतिक कमज़ोरी, खेतमजूरों के वर्गगत हित के महत्व को मानने में उनका मानसिक और सामाजिक विरोध।' रसूल की किताब। उसी एक ही किताब में, एक ही अध्याय में है, 'बड़े और मझोले किसानों के स्वार्थ की रक्षा के काम की कृषक-सभा उपेक्षा नहीं कर सकती।' उसके बाद है, 'ग़रीब किसान ही कुल किसानों का बारह आना भाग है और वे ही भूमि-क्रान्ति की प्रधान शक्ति हैं।'

'काली बाबू, सामन्त से तुम क्या कहोगे?'

'कहूँगा, बसाई ने नक्सल बनने के लिए पार्टी नहीं छोड़ी। पार्टी छोड़कर भी नक्सल नहीं बना। खेतमजूर की माँगों को बराबर उपेक्षित होते देखकर बसाई पार्टी छोड़ गया।'

'क्या कर रहा हूँ मैं, अगर पूछा?'

'कह दूँगा, पता नहीं। मुझे नहीं बताया।'

'ठीक।'

'एक बात है।'

'क्या?'

'मुझे तुम जानते हो?'

'उससे क्या?'

'मैं जो हूँ, वही रहूँगा।'

'पता है।'

'कभी जरूरत होने पर काली साँतरा को बताना होगी।'

'लो, बताऊँगा नहीं? उठो, माझिन ने चा बना दी होगी।' लौटते-लौटते बसाई बोला, 'इस कनाल से इस हिस्से में आग लं

'क्यों?'

'तुम देख लेना।'

'सच?'

'हाँ, चलो चा पीकर तनी सो लो।'

'तुम क्या करोगे?'

'मुसाई के बच्चे, गाँव के सारे बच्चों से कहता हूँ, कना मारूँगा।'

'जाल फेंकोगे?'

'उस बड़ी-सी धार में जाल ?'

'बंसी तो काम ही नहीं करेगी।'

'टँटा[1] मारूँगा। कलमट[2] के नीचे बड़े-बड़े पत्थरों के ढेर डाल दिये हैं। उसमें माछ रुकेंगी।'

'कह क्या रहे हो ?'

'[illegible]' छापने का [illegible] यहाँ कितना जंगल देखा था। जंगल काटकर बाँस महँगे हो गये। फरेस डिपाट[3] वन लगा रहा है फिर भी वन नहीं लग पाता।"

'लगाये ये ?'

'ग रहा, गेहूँ मिल जाये। खाकर जान आये। हमें कुछ पोटीन[4] खाने को नहीं मिलती। तभी कहता हूँ, गेहूँ लाकर आधे तोड़कर पकाकर खाओ। इन हरामियों को तुम नहीं जानते। कोई साला नहीं खायेगा।'

'मछली पकड़ना देखने मैं भी चलूँगा।'

'हाँ देखो, *बादल उमड़ रहे हैं। आ. ! पानी पड़ेगा। मेघ गये नहीं,* वह देखो, चीलें चक्कर लगा रही हैं।'

चाय और मूढ़ी खाकर वे कनाल की ओर मछली पकड़ने जाते हैं। मुमाई का छोटा बेटा सीधा पाँच बरस का था। वह जाने के लिए रो पड़ा। बसाई ने उसे कंधे पर बैठा लिया। बोला, 'दुनिया में आते ही नाम दिया सीधा। जिसका नाम हो सीधा, वह राह दिखायेगा, उसी को पकड़कर चलना होगा।'

कनाल के पानी के नीचे पत्थर थे। टँटा फेंककर बसाई फुर्ती के साथ मछलियाँ पकड़ रहा था, और बच्चों को पानी में उतरने पर डाँट रहा था। काली के पूछने के लिए आँख उठाने पर बसाई बोला, 'रात की बरखा में कनाल का पानी कच्चा हो जाता है। यहाँ उतरने पर बच्चों को ठंड लग जायेगी।' काली ने देखा कि बसाई की आँखों और चेहरे पर पानी के छींटे थे। उसे लगा, वैसी बात नहीं है कि साँउताल होने ही से बसाई इस तरह एक टोटल पर्सनालिटी हो गया हो। जो जीवन के प्रत्येक स्तर से शिक्षा और जानकारी लेकर, काम में लगकर सब लोग जो नहीं कर सकते, बसाई वह कर सका है। बसाई आँखें मिचकाकर हँसा। मछलियाँ कम

1. मछली मारने की बर्छी 2 कल्वर्ट—पुलिया 3. फॉरेस्ट डिपार्टमेंट—वन विभाग 4 प्रोटीन।

'हाँ।'

रसूल की किताव। काली साँतरा का होमवर्क। 'खेतमजूरों की विशेष माँगें लेकर आवश्यक आंदोलन और संगठन नहीं हुआ, उसका कारण लगता है—किसान-सभा का नेतृत्व और कार्यकर्ताओं की नैतिक कमज़ोरी, खेतमजूरों के वर्गगत हित के महत्व को मानने में उनका मानसिक और सामाजिक विरोध।' रसूल की किताव। उसी एक ही किताव में, एक ही अध्याय में है, 'वड़े और मझोले किसानों के स्वार्थ की रक्षा के काम की कृपक-सभा उपेक्षा नहीं कर सकती।' उसके वाद है, 'ग़रीव किसान ही कुल किसानों का वारह आना भाग है और वे ही भूमि-क्रान्ति की प्रधान शक्ति हैं।'

'काली वावू, सामन्त से तुम क्या कहोगे ?'

'कहूँगा, वसाई ने नक्सल वनने के लिए पार्टी नहीं छोड़ी। पार्टी छोड़कर भी नक्सल नहीं वना। खेतमजूर की माँगों को वरावर उपेक्षित होते देखकर वसाई पार्टी छोड़ गया।'

'क्या कर रहा हूँ मैं, अगर पूछा ?'

'कह दूंगा, पता नहीं। मुझे नहीं वताया।'

'ठीक।'

'एक वात है।'

'क्या ?'

'मुझे तुम जानते हो ?'

'उससे क्या ?'

'मैं जो हूँ, वही रहूंगा।'

'पता है।'

'कभी जरूरत होने पर काली साँतरा को वताना होगी।'

'लो, वताऊँगा नहीं ? उठो, माझिन ने चा वना दी होगी।'

लौटते-लौटते वसाई वोला, 'इस कनाल से इस हिस्से में आग लगेगी।'

'क्यों ?'

'तुम देख लेना।'

'सच ?'

'हाँ, चलो चा पीकर तनी सो लो।'

'तुम क्या करोगे ?'

'मुसाई के वच्चे, गाँव के सारे वच्चों से कहता हूँ, कनाल से माछ मारूँगा।'

'जाल फेंकोगे ?'

'सुनो कमरेट, आज से केनाराम लारी चलायेगा।'

'उसे सूर्य साउ ने फिर ले लिया ?'

'हूँ।'

द्रौपदी गाँव की ओर चली गयी। बसाई बोला, 'केना की लारी में तुम चले जाना। लारी झपताली तक जायेगी। वहाँ से जागुला के लिए हर घड़ी बस मिलती है। जाने में असुविधा नहीं होगी।'

'अब झपताली...?'

'हाँ। मिलटरी की आढ़त हो गयी है। तुम अच्छा कारवार करते हो। नक्सलों को सेदने के लिए आर्मी आयी है।'

इस बात के बाद बसाई ने जो आचरण किया वह बिलकुल उलटा था। काली का पैर पकड़ खींचकर कनाल में उतारा। बोला, 'मैं पानी में हूँ। तुम किनारे पर खड़े देखोगे ? लो, डुब्बी लगाओ।'

'बसाई, धार ..।'

'तुम डूबोगे नहीं, काली बाबू। मैं हूँ।'

पानी में गिरने के पहले काली की समझ में नहीं आया कि उसे कितना अच्छा लगेगा। बड़ा ठंडा पानी था। वे तैरकर धार के ऊपर गये, उतराव में डुबकी लगाते लौट आये। तैरते-तैरते बसाई बोला, 'डाक्टर कमरेट मुझसे कहता था, मुझे पोटीन[1] नहीं मिलती। सो कनाल में इधर-उधर छोड़ दिया है। फिशरी डिपाट[2] ने मछली छोड़ दी है। सब खाते हैं। हम भी खायेंगे। कनाल की यहाँ के लेवर से नहीं बनवाया है, पता है ? बाहर का लेवर लाये थे ? बाद में बहुत फाइट करने से हम लोगों को भी लिया।'

बसाई की पकड़ी मछलियाँ, द्रौपदी का कुम्हड़ा और चावल, मुसाई की बहिन और बहिन की ननद की लायी अरवी, हर घर से लाया चावल, खेसारी की दाल, कुम्हड़ा, अरवी, प्याज, एक लौकी—काफी, काफी भोजन था। पलताकुंडी एकदम सन्थाल गाँव था। औरतें खाना पकाते-पकाते गीत गा रही थीं। एक-दूसरे की जुएँ बीन रही थीं। बसाई जोरों से बोला, 'औरतो, झींगुरों की तरह क्यों चें-चें कर रही हो ? हम बाबू कमरेट हो गये हैं, तुम लोगों की सायाली चिल्लाहट नहीं सुन पाते।'

'तब तू गा न !'

'काली बाबू गायेंगे।'

'ना बसाई, ना।'

'खाओ-पियोगे, कुछ दोगे नहीं ?'

1. प्रोटीन 2. मत्स्य विभाग।

नहीं मिली थीं, कुल छोटी-वड़ी मिलाकर पाँच थीं। मछलियाँ लेकर सीधा और दूसरे लोग भाग चले। सीधा पैर टेढ़े कर दौड़ने लगा। वसाई वोला, 'हमारा लीडर सीधा जनम से ही वीमार है। माझिन के दो हुए। नाम दिया—सीधा और कानू। कानू तीन वरस में क्रिमिज्वर में भागनादिहि के मैदान में गया। इस सीधा के पैर लड़खड़ाते हैं।'

'अस्पताल में दिखाओ।'

'अस्पताल में उसे दिखाऊँ, या माझिन को दिखाऊँ? उसे भी इन जाड़ों में मिशन के अस्पताल में ले जाऊँगा।'

'अच्छे हो सकते हैं।'

'घर में माझिन टोका-टाकी कर मुसीवत किये रहती है। इसी से मैं उस राह नहीं गया।'

'उस वार तो लगा था कि तुम भी...।'

'न—हीं। हमारी लड़कियाँ, तुम्हारी लड़कियाँ सवूत हैं। किन्तु मेरे साथ चल नहीं सकती थीं।'

'कोई मिली नहीं?'

'चाहने पर मिल जाती। सो उस लड़की ने मुझे चाहा नहीं। साली जाकर दुलना से वियाह कर वैठी। वहुत लड़ाकू औरत है।'

'क्यों कमरेट? मेरी वात कह रहे हो?'

थोड़ा भारी, हँसी से उछलता गला। काली ने चौंककर पीछे देखा। आकाश और खोयाई नदी की पृष्ठभूमि में जैसे उसका हो, इस तरह रानी की भंगिमा में एक संथाल स्त्री खड़ी थी। वयस होगी छव्वीस वरस। वहुत काली, वहुत असभ्य, वहुत सुन्दरी।

'यह कौन है? जागुला का तेरा कमरेट?'

'हाँ। देखो काली वावू, यह लड़की दोप्दी है। दोप्दी माझिन। इसकी माँ कह गयी कि मुझे देगी; इससे इसने भागकर दुलना माझी से वियाह कर लिया, मैं वूढ़ा हूँ न।'

द्रौपदी इस वात पर खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसके वाद वोली, 'दुलना और मैं कमाते हैं जी, आ—ठ रुपये।'

'कहाँ चोरी की?'

'सोड़ेन की पिटाई की थी। पुलुस जीप लायेगा सोड़ेन, वह घायल हो गया था। वह उ—धर।'

'वह कहाँ है?'

'चावल-मछली लेकर मुसाई के घर गया है।'

'चल, आ रहा हूँ।'

गया। बसाई ने उसे छाते के नीचे रखा था। काली लॉरी पर चढ़ गया। लॉरी चल पड़ी। अँधेरी रात थी। वर्षा। बसाई चावलों की बोरी पीठ पर लादकर छाता बगल में दबाये गाँव को लौट रहा था। बसाई ने एक बार मुँह फेरा था। हेडलाइट। वर्षा से भीगा हुआ काला चेहरा। हँसी। काली के दिल में डरा हुआ मन अजीब-सा हो रहा था। इस तरह से दो दिन खो दिये। इतनी जल्दी सब-कुछ अतीत हो जाता है। काली ने बीड़ी सुलगाली। बसाई के साथ बहुत दिनों के बाद यह उसकी अंतिम भेंट थी।

7

बसाई के चेहरे पर हेडलाइट का प्रकाश डालकर, बसाई को 1970 में रख काली साँतरा 1977 की बरसात की रात में चरसा के जंगल में लौट आया। बेनूल ने झपटकर उसका हाथ पकड़ लिया।

'क्या है?' काली ने कहना चाहा। बेनूल ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया। दोनों खड़े रहे। दबी हुई मश-मश-मश-मश आवाज आ रही थी। पेंसिल-टॉर्च का पतला तीर अँधेरे को चीर रहा था। काली ने बेनूल का हाथ पकड़ा, दोनों पेड़ से सटे खड़े रहे। आँखों से देखे बिना भी काली कह सकता था कि उनकी यूनीफ़ॉर्म[1] हरे रंग की थी। कामाफ़्लाज[2]। कामाफ़्लाज पैदा करने के लिए हरी वर्दी थी। किन्तु ऑपरेशन एनी फ़ॉरेस्ट[3] की खोज और आक्रमण में लगे सैनिक जो आतंक उत्पन्न करते, उससे कामाफ़्लाज अर्थहीन हो जाता है। यह आर्मी[4] बहुत चुपचाप चलती। कहाँ ट्रेनिंग ली है? काली साँतरा ने बेनूल को समीप घसीट लिया। वे बड़ी सावधानी से लौट चले।

पंद्रह मिनट के बाद बेनूल ने फुसफुसाकर कहा, 'चलिये, एक जगह ले चलूँ।'

काली ने यह नहीं पूछा, कहाँ? क्योंकि जीवित रहने की इच्छा उसमें भी समान रूप से प्रबल थी। जीवित रहने की इच्छा बहुत प्रबल होती है। जीवित रहने की इच्छा ही वह खाद्य है 'जो भारतवासियों को जीवित रखे है। यह ए-ग्रेड युक्त सारे विटामिनों से युक्त खाद्य से भी शक्तिशाली है। अनशन-अर्धाशन-अखाद्य-कुखाद्य जिनकी रोजाना की जानकारी है, वे जीवित रहने की इच्छा से जीवित रहते हैं'—तैंतालीस के दुर्भिक्ष के बाद घूमती हुई यूनिटों में एक का रिपोर्ताज है। रिपोर्ट-लेखक थे सतीश। सांप

1. वर्दी 2. छद्म आवरण 3. किसी भी वन में हमला 4. पैदल सेना।

'मैं गाना गाऊँगा !'

'क्यों ? पैंतालीस में नहीं चिल्लाते थे ?'

'वह कब की बात है !'

'वह धान का गीत !'

'कौन-सा ?'

'उस बार हसन में सुनाया था।'

'ओ !'

'गाओ न। यहाँ नकुल बाबू नहीं हैं, जो गलती पकड़ें। ताल देता हूँ। बोल में साथ दूंगा।'

काली हँसा। उसके बाद उखड़े, दबे गले से शुरू किया—

'हेइ सामालो धान सामालो
हेइ सामालो जान सामालो
हेइ सामालो धान हो
कास्तेटा दाओ शान हो
जान कबूल आर मान कबूल
देबो ना आर देबो ना
रक्ते बोना धान
मोदेर जान हो।'

(अरे, धान की रक्षा करो, प्राणों की रक्षा करो। हँसुए पर धार तेज करो। प्राणों को और प्रतिष्ठा को अंगीकार करो। अब नहीं देंगे, खून से सींचा धान, अपनी जान।)

बसाई बोला, 'गीत अच्छा बनाया है। किन्तु औरतों की ओर देखो। वह उधर—देखो, क्या हो रहा है ?'

आँगन में बैठकर पेड़ के नीचे हरे शाल के पत्तों पर खाना हो रहा था। भात, खेसारी की दाल, अरवी और कुम्हड़े की तेज़ चरपरी तरकारी, मछली। उसके बाद शरीर ढीला छोड़कर नींद आ रही थी। ऊँचे पर, मचान पर लेटे-लेटे नींद ली जा रही थी। औरतें गीत गा रही थीं। मुसाई की पत्नी कह रही थी, 'कमरेट, आलो मोरा भरा भात खाइ।' नींद में कहीं गहरा बाजा था। वर्षा का शब्द। पानी पड़ रहा था। संध्या के बाद बसाई काली को लेकर हाइवे[1] पर चला गया। पेड़ के नीचे कल्वर्ट पर बैठ गया। सफ़ेद छाते के नीचे। साढ़े सात के लगभग केनाराम सूर्य साउ की लॉरी चलाते हुए आया। साथ में उसका भाई था। चावलों की एक बोरी उतार

1. राजमार्ग

के काटने से मर गये। आंध्र में या और कहीं एक दलदल थी। गोंडवाना युग के विस्फोट के वाद प्रकृति की चपलता। दलदल से हीरे निकालने के लिए आदिवासियों की मौत थी। फिर भी वे जाते थे। मरते थे। सतीश वहाँ गया था। अँग्रेजी राज में। मार्श-डायमंड वेल्ट किसी रजवाड़े की एजेंसी की मिल्कियत में थी। सतीश साँप-काटे लोगों की लेक्सिम-चिकित्सा करता था। अपने वक़्त मौक़ा नहीं मिला। उसने फ़ोटो खींचकर रिपोर्ट भेजी थी।

'आ पहुँचे।'

वेतूल बोला। एक कोठरी थी। वेतूल ने बताया, जंगल विभाग जव ठेकेदारों को साल के पेड़ काटने का काम देता, उस वक़्त ठेकेदार के लोगों के रहने के लिए यह कोठरी वनी। बाद में साल के पेड़ों की क़ीमत कम हो गयी तो ठेकेदारों का जोश समाप्त हो गया। कोठरी रह गयी। जहाँ जंगल है, वहीं ठेकेदारों की कोठरी है। काली ने वहुतेरी देखी हैं। सुखनपथरी के जंगल में ठेकेदारों की छोड़ी कोठरियाँ तिभागे में उनके छिपने की जगह थीं।

वेतूल बोला, 'उद्धव यहाँ आता है, मैं भी आता हूँ। कोठरी साफ़ है।' कोठरी छोटी थी। ज़मीन साफ़ थी। वेतूल ने कमर से सहसा पेट्रोल-लाइटर निकाल जलाकर दिखा दिया। वोला, 'साँपों का ठीक नहीं।' उसके वाद वोला, 'सवेरा होने पर नहीं, भोर होने के पहले ही चले चलेंगे?'

'कहाँ?'

'सदर, और कहाँ? जंगल में सिपाही हैं, ज्यादा टिकना ठीक नहीं। उद्धव...ऐसा ख़तरा है।'

'ठीक हो जायेगा। नहीं तो नहीं।'

'लीजिये। वैठ जाइये।'

वे वैठ गये। और अत्यन्त आश्चर्य, वेतूल सो गया। शायद आश्चर्य की वात नहीं थी। शायद इस तरह वेतूल ऐसी हालतों में पहले भी सो जाता था। अभिज्ञता ही मनुष्य को मतलव का डाइमेंशन दे देती है। वेतूल जो था, वह वेतूल नहीं रहा। सारी विचित्र परिस्थितियों में आवश्यक सतर्कता से चल सकता है। इसका कारण क्या है? उसका वेटा उद्धव?

वेतूल आँखें वन्द कर वहुत दूर से वोला, 'वसाई टूडू के मर जाने से हम लोग मर जायेंगे। उसके डर से, पता है काली वावू, महाजन डरते हैं। हमने कृपि-ऋण नहीं चुकाया। उस पर भी वेटा कुछ नहीं वोला।'

'वसाई सदर में है?'

'बताऊँगा नहीं।'

बेतूल सो गया। काली को याद आया, बसाई ने जो कुछ कहा था, वह किया। जो उसके आदमी हैं, उन्हें प्रोटेक्शन दिया। जिन गाँवों में आना-जाना हो सकता, उन गाँवों को अपनी ओर कर लिया। बसाई का तरीक़ा भारतीय स्थिति के अनुसार छापामार युद्ध-प्रणाली है। उस तरीक़े में ऑपरेशन-टेरीटरी-बेस—ग्राम अंचल को अपनी ओर करने की पहली शर्त है। सबसे अधिक आश्चर्य हुआ, बसाई के अंतिम ऐक्शन-ऑपरेशन में। अंचल में सदर गाँव और चरसा की जंगल-बेल्ट, एक सौ चालीस मील उत्तर-पूर्व में। प्रत्येक कारवाई-अंचल के बीच की दूरी चालीस से पचास मील रहती। प्रशासन के सिर पर घर है—यह बसाई को सबसे अधिक सुविधा की बात है। किसी ख़ास गाँव में उसका घर-द्वार नहीं है। पैदा हुआ बाकुली में। पैदा होते ही माँ, दूसरे बरस बाप मर गये। बुआ के पास गाँव में छः बरस तक रहा। बुआ की मृत्यु से गोकुल बाबू की कोशिश से रामता मिशन में गया। उसके बाद जागुला। किसान-फ्रंट का कार्यकर्ता बना। तीस बरसों से ज़्यादा सौ से अधिक गाँवों में घूम-घूमकर काम करने के परिणामस्वरूप सब जगह वह घर का आदमी बन गया। पर उसका रक्त-संबंधी कोई न था। प्रशासन परेशान था।

आज की रात बहुत महत्वपूर्ण थी। तमाम लोग काली सांतरा-बसाई टूडू के बीच चक्कर काट रहे थे। किन्तु सवेरा होने पर?

काली ने निश्चय किया कि सवेरा होने पर भी चारों ओर देखे बिना निकलना न होगा।

बड़ी भूख लग रही थी, प्यास भी लग रही थी। कोई चारा न था। जेब में बीड़ी और बेतूल के पास लाइटर होने पर भी बीड़ी पीने का मौका नहीं था। उन लोगों का बड़ा भाग्य था कि वर्षा नहीं हो रही थी। वर्षा होने से चरसा पगला जाती, जंगल में चलना कठिन हो जाता। बसाई क्या जादूगर है? उसके पास आयेगा, इसलिए शाम से काली ने जो कुछ किया उसकी चौथाई की चौथाई मेहनत करने पर भी आजकल साँस तक लेने में कष्ट होता है। मिनिमाला कहती, 'बीमारी नहीं है, दिखावा कर रहा है।' संभवतः मनुष्य जो मन में करना चाहता है, उसे करने की शक्ति शरीर में आती है। कोठरी में सीलन की बू है। दरवाज़ा-खिड़की, पता नहीं कब, कौन खोल गया? हवा आती है, पर धूप नहीं घुस पाती। चारों ओर पेड़ों का झुरमुट है। आर्मी को पता नहीं है। असल में पेड़ों से भरे जंगलों में पुलिस और आर्मी बहुत दिनों रही। खुद भी बहुत-से शेल्टर बनाये हैं। उनके अलावा, वन विभाग के घर-द्वार जो भी मिले उन पर क़ब्ज़ा कर

लिया। चरसा के जंगल को अभी भी वह महत्व नहीं मिला। अब शायद मिल जाये। वदन में थकान नहीं है। नसें क्या ज़्यादा सतर्क हो गयी हैं? या पुराना काली साँतरा लौटकर आ रहा है? तिभागे के वक़्त काली साँतरा 'एक अत्यन्त अलर्ट काडर' नाम से परिचित था। अब काली से चलता नहीं। शरीर अब अपने वस में नहीं है। वसाई से उसकी उमर ज़्यादा है। हार्निया का ऑपरेशन, प्लूरिसी के एक के बाद एक हमले से इस्किमेटिक, या अजव-सा हार्ट सूख जाता है, या लंबा होकर झूल पड़ा है। आजकल हमेशा थका-थका-सा लगता है, तीस वरस की उमर के बीच बहुत भाग-दौड़, साँस वहुत ऊपर-नीचे करना पड़ा है। उसके बाद से तो अभ्यास, कि बस भागना है। विना विरोध जो भागे—दूसरों के स्वार्थ के लिए कहता हूँ—उसके बारे में संसार में अजीव प्रत्याशा उत्पन्न हो जाती है आजकल काली को वहुत काम करने पड़ते हैं—इसे स्कूल में भरती करान है, उसे अस्पताल में। इसकी किताबों का इंतज़ाम कर दो, उसे उत्सव ̣ लिए हॉल का। मुश्किल है या असुविधा है, कहने से ही सबको वहुत दुर होता है और कहते, 'अपने लिए तो कभी भी कुछ करने को नहीं कह —अर्थात इसके लिए, उसके लिए, मृत शिक्षक के जीवित साले के वेटे लिए तुमको सव-कुछ करने का समय मिला है, मैं उन लोगों में रह जाऊँ जो वंचित हैं? काली किसी वात में कुछ नहीं कह सकता, अव उससे हो नहीं। शरीर साथ नहीं देता। घर में उसे और तरह से कष्ट दिया जात गिनिमाला और अनिर्वाण उसे गृहस्थी का तिनका नहीं तोड़ने देते। व वह निकम्मा है। कभी देश और लोगों की, पार्टी की फ़िक्र में घर-गृहस की उपेक्षा करने का वदला वे इस तरह ले रहे थे। काली को कुछ नहीं क देते थे। काली के लिए भी वे कुछ नहीं करते थे। साठ की उमर पर पहुं कर काली अपना विस्तर खुद विछाता, उठाता, मच्छरदानी टाँग कपड़े धोता। गिनिमाला और अनिर्वाण एक-दूसरे को घेरकर जंगलीप खाते, रेडियो सुनते, हर-एक सिनेमा देखने जाते। काली से मिलने आने किसी को एक प्याला चाय भी नहीं मिलती। कृती कामरेडों को होम पर काली से वहुत अधिक ध्यान दिया जाता। पुराने दिनों वसाई व वीच में कहता, 'सव छोड़ सकते हो, घर नहीं रह सकते?' मोतिया कटने के वाद गिनिमाला का कहना था, 'ज़िंदगी-भर जला-भुना कर वनकर कंधा टेकेगा क्या?' काली को कुछ कहने को न था। सच है गिनिमाला को वह कुछ न दे सका। व्याह के तीन दिन वाद वह जेल सो वह पति के रूप में वेकार ही था।

किन्तु समय वीतता जाता है, समय। काली नहीं जानता कि वस

धोती और मैली ख़ाकी शर्ट, पैरों में पेवंद लगे किड जूते[1], बहुत बड़ा सेंटिनल ! देखते ही सब डर के मारे काँपेंगे। न, न, काली को डर किस बात का है ? काली को यहाँ बैठे देखकर पुलिस शायद हँसे। ग्रेट कॉमिक साइट ![2]

बसाई देखकर न हँसता। स्वर में असंभव अर्जेन्सी लाकर कहता, 'क्यों काली बाबू, यहाँ बैठे क्या रहे हो ? उठो कमरेट, जंगल में आर्मी है। मुझे ढूंढ़ रहे हैं। चलो, तुम्हें सेल्टर में ले चलूं। चले चलो कमरेट, साले दनादन गोली चला रहे हैं।'

काली जानता है कि बसाई चलते-चलते गौरैया के बच्चे को गिरा देखकर घोंसले में रख देता। प्यार ! पहली बार बसाई एक भैंसे के लिए बनारी में मरा था। भैंसे का नाम था भौंरा।

सामन्त आज भी विश्वास करता है कि ऑपरेशन-बनारी की ख़बर काली सांतरा जानता था। पर फ़्रंट सरकार को नहीं बतायी।

काली जानता है कि काली कुछ भी नहीं जानता था। 'उसे नहीं मालूम था,' यह विश्वास करना सामन्त के लिए असुविधाजनक था, क्योंकि वैसा होने पर परिचित और अभ्यस्त विचार के आधार से निकलकर सामन्त को नये सिरे से सोचना पड़ता। वह परिश्रम किसी पुराने पार्टी-मैन के लिए असंभव है। उससे कहीं आसान, रिऐक्शनरी—काउंटर-रिवल्यूशनरी पेटी बूर्ज्वा—नक्सलवादी इत्यादि नाम देकर, लेवल चिपकाकर कंडेम्ड शव की तरह इंसान को मृतक-गृह में भेज देना होता है। 'वह जानता था', विश्वास करना ही सुविधानजक है।

काली इस सब-कुछ के घेरे को छोड़कर ख़ुद जा नहीं सकता। बसा[ई] जा सका था। काली को बहुत प्रसन्नता थी। बसाई जा सका। उससे काल[ी] जैसे कहीं-कहीं जीत गया हो, अजीब-सा लगता था।

बनारी ! ऑपरेशन-बनारी 1970 : वैशाख।

8

हाँ, उसी वैशाख में ही। काली सांतरा के चले आने के बाद ही। ब[...] में। बनारी नाम बहुत ही व्यंजक है और परवर्ती काल में लेवर डिपा[...] कृषक आंदोलन फ्रंट के लिए बहुत परेशानी था। यथार्थ में 'बनारी[...] जिले के नक़्शे से पुंछ जाता तो बहुत-से लोगों को चैन मिलता। इ[...]

1. किरमिच के जूते 2. बड़ा हास्यास्पद दृश्य।

में रहते हैं कुछ संथाल, केउट और चमार। उनका पेशा है खेतमजूरी। संथाल लोग जरूर अपने अंचल में काम न मिलने पर जहाँ मिले वहाँ काटने वालों या ढोने वालों का काम कर लेते। अर्थात खेतमजूर को 'मजूर' —दुनिया के मजदूरों एक हो—वह आजादी आजादी क्या, मजदूर का जिसमें राज न हो—इत्यादि स्लोगन और गानों में उछाला हुआ। धरती के वास्तविक अधिकारी मजदूरों को लेकर लेबर डिपार्टमेंट ने जो एम० डब्लू०, या मिनिमम वेज फॉर ऐग्रीकल्चरल लेबर या खेतमजूर के लिए न्यूनतम मजूरी जारी करे, काटने या उठाने वाले उसके पास नहीं फटकते। वे ऋषियों की भाँति सर्वज्ञ हैं। वे जानते हैं, कानून बनता है, जबर्दस्ती नहीं होती, और जिनके लिए कानून है वे जीवन में भी उसका लाभ नहीं पायेंगे। पूछने पर कहते, 'हाँ, हम खेतमजूर हैं।'

किंतु खेतमजूरों का एम० डब्लू०, जो सरकारी रेकॉर्डों की शोभा है, प्रशासन के पाप-बोध का छुटकारा है, वातानुकूलित कमरों में नेस्काफे युक्त मीटिंगों में विषयवस्तु और कार्रवाई में तत्वहीनता होती है, उसे वे जानते हैं। तमाम अन्नहीन, नंगे लोगों की तरह ये भी सरकार द्वारा नियंत्रित और परिचालित नहीं हैं, भूख द्वारा नियंत्रित और परिचालित हैं। भूख बड़ी अत्याचारी शासक है, प्रजाजन को बहुत छोटा बना देती है। परिणामस्वरूप यही संथाल लोग एम० डब्लू० शब्द के पास न फटककर जमीन के मालिकों के साथ ठेके पर आउस-आमन-बोरो-आइ और उर्द-अरहर-सरसों-पाट के जन्म-वृद्धि-संहार का काम करते। जहाँ जमीन के मालिक खेतमजूरों को मजदूरी न दें इसलिए इन्हें बुलाते हैं, वहाँ बनारी गाँव के संथाल नहीं जाते। परिणामस्वरूप जमीन के मालिक इन्हें 'युधिष्ठिर की जात' कहकर गालियाँ देते। इस एक प्रसंग से ही समझा जायेगा कि क्यों बनारी के संथाल 'पोलिटिकली पोटेंट'[1] नाम से प्रशासन की किताबों में चिह्नित हैं। जो हो, इसी बनारी गाँव का हर्ताकर्ता-विधाता —शीतला और धर्म-ठाकुर—सिवोडल, सभी कुछ प्रताप अढतिया बन गया। प्रताप बहुत ही शान का आदमी था। वह पाँच हजार बीघे जमीन का मालिक था। बनारी में उसका मकान था। उस मकान में डायनमो, तालाब, छः पक्के कुएँ थे। फव्वारे सरकारी खर्च से रिलीफ के रुपयों से बने थे। प्रशासन बहुत ही शिशु-स्वभाव का है। प्रशासनिक मनोवृत्ति इन्फेंटाइल डिसऑर्डर[2] से आक्रान्त है। इसीलिए भूखे-नंगे डेढ़ मील दूर परसा नदी से बालू हटाकर पानी की तलाश में हैं, यह देखकर भी हर बरस

1. राजनीतिक रूप से शक्तिशाली 2. बचकानी गड़बड़।

किंतु ईमानदारी से काम करते चलते हैं, इसलिए प्रशासन की मशीनरी बिगड़ जाती है। यह एक बार मौका देखने जाते हैं। 1968 में घोषणा हुई, मिनिमम वेज—मर्द तीन रुपये चौअन पैसे, औरतें तीन रुपये सत्ताईस पैसे, बच्चे-मजदूर दो रुपये दो पैसे पाते हैं या नहीं ? कमिश्नर पुलिस की गाड़ी नहीं लेते, एक चपरासी और अपने पी० ए० के साथ अपनी गाड़ी चलाकर बनारी पहुँचते। प्रताप अढ़तिये की बैठक में बैठकर मुर्गी, पराठा और प्रसाद नहीं खाते। सीधे खेतमजूरों के पास जाते। जाकर जो सुनते, उसमें लगता कि कोपर्निकस की विश्व-व्यवस्था की हेरेसी, ऐरिस्टॉटल की विश्व-व्यवस्था—सब स्थिर और अटल रूप से सत्य हैं।

सौ में से दस खेतमजूर कहते, उन्हें पता नहीं कि भारतवर्ष स्वतंत्र है। उन्होंने सोचा है कि पहले जिन्हें अँग्रेज कहा जाता था, अब वे ही भारत सरकार कहलाते हैं। सौ-फीसदी कहते हैं कि खेतमजूरों की न्यूनतम मजूरी की बात उन्होंने कभी नहीं सुनी।

सब कहते कि प्रताप अढ़तिया उनको बहुत मजूरी देता है। बड़े लोगों को सैंतीस पैसे मिलते हैं। लेकिन पानी पीने के लिए—मूड़ी और प्याज मिलने से खरपानी का खर्च काटकर हाथ में आते थे पच्चीस पैसे। छोटों को मिलते तीस पैसे। खरपानी का पैसा देकर अठारह पैसे।

सब कहते, रुपये देते समय प्रताप के खाते में अँगूठा-निशानी लगाना पड़ता है। संवत्सर के धान और रुपये क़र्ज़ लेने के समय भी खाते में अँगूठा-निशानी देना पड़ता।

सब कहते, पास के ब्लॉक में जाने पर कुछ ज़्यादा मिल जाता है। लेकिन उस काम में ख़तरा है। प्रताप के काम में अगर कटैया घुस आयें तो जीवन में यह प्रताप के धान न काट सकेंगे। किसी भी तरह प्रताप को खफ़ा करना इनके लिए संभव नहीं है। ऐसा होने पर बरस-भर रुपये और धान कौन देगा ? अफ़सर बाबू ? वे सरकार द्वारा घोषित वेज चाहेंगे ? किसके ज़ोर से ? उन्हें कौन मदद देगा ? उनका कोई नहीं है। नहीं, नहीं, कोई नहीं है।

लेबर कमिश्नर बनारी में आने के पहले तक आत्म-विश्वास से भुगत चुके हैं। दोस्तों से कहा था, 'हाँ हाँ, मैं ब्यूरोक्रेसी के शरीर में नट-बोल्ट बनने जा रहा हूँ। लेकिन जान रखना कि एक अच्छा अफ़सर अपना काम फेयरली करने से देश के लोगों का भला कर सकता है।' अपनी पढ़ाई-लिखाई के घमंड में मंत्री के भाषण का संशोधन कर दिया था। घूस न लेकर बाघ-सिंहों के चक्कर में पड़ गये।

बनारी में आने के परिणामस्वरूप अपने आत्मविश्वास के रेलमश्रीत्व

में अनजाना बम फटा और आत्मविश्वास को चोट लगी। प्रताप की सर्व-
शक्तिमानता ने उसे आंध्र का साइक्लोन बनकर बीस बाँस पानी के नीचे
दबा दिया। पसीने-पसीने होकर वे गाड़ी पर बैठते। कलकत्ता लौटकर
लिखते, बनारी का खेतमजूर 'दैट ही एग्ज़िस्ट्स इज ए मिरैक्ल।'[1] विरोधी
बिल्डिंग में वे एम०डब्लू० चालू करने के लिए मिलखासिंह बनकर भागते,
बस भागते ही थे। हाय ! प्रशासनिक अफ़सर मिलखासिंह होने से भाग्य
का खिलौना होता। भागना होता, बस भागना ही होता, हमारा काम बस
भागते रहना है। नदी की तरह अपने वेग से पागल की तरह भागते और
मन से पूछते, इसीलिए क्या उनके माँ-बाप उनकी सात बरस की उम्र में
'अप-अप नेशनल फ़्लैग—डाउन-डाउन यूनियन जैक' कहकर एक-दूसरे के
हाथों में तिरंगी राखी बाँधकर बयालीस में जेल गये थे ? परिणाम अच्छा
न हुआ। सहसा उन्हें घोर जाड़े में दिल्ली की बदली पर चला जाना पड़ा।
बनारी के लिए भाग-दौड़ के दंडस्वरूप दिल्ली जाकर वे सवेरे मोज़े न
पहने पैर लटकाकर **द स्टेटसमैन** पढ़ते हुए स्नेहमयी दादी द्वारा छोड़ी
हुई तीसरी पीढ़ी की विरासत—गठिया के शिकार हुए। उसके परिणाम-
स्वरूप उन्हें आज भी मेंढकी के गले के काँटे की तरह लँगड़ाकर चलना
पड़ता है। इस अफ़सर की नज़ीर दिखाकर प्रशासन सारे उत्साही अफ़सरों
को समझा सका कि शुद्ध अंग्रेजी जाने, देशभक्त माँ-बाप की संतान बनना,
घूस के नाम पर नाक सिकोड़ना, मिलखासिंह बनकर सत्तर की दशाब्दी
में भाग-दौड़ करना—यह किसी उन्नति का मार्ग नहीं है। परिणामस्वरूप
दाहिने पैर में आर्थ्राइटिस हो सकती है। जो नहीं समझते, वे प्रशासन के
हाथों तरह-तरह की परेशानियाँ भोगते रहते हैं।

अब जैसे बनारी में बसाई टूडू मारा गया। पहली बार जिस वैशाख
में काली सांतरा उससे बातें कर आया था, उसी वैशाख में।

काली जब तक रहा, उन दो दिनों में ही जो वर्षा हुई, वह वर्षा पाँ
दिन और चली। नतीजा हुआ कि चरसा का पानी बढ़ गया। चरसा न
का स्वभाव भूखे आदमी की तरह था। दो दिन खा-पीकर भूखों म
बाल-बच्चों के चेहरों पर चिकनाई आ जाती। कई दिन बरसात होने
चरसा की शकल बदल गयी। इस बार भी उसके चेहरे पर भराव
गया।

'चरसा एक कम पानी की छोटी नदी थी। यह दामोदर से निक
है। बहुत दूर तक, इक्यानवे मील लंबी है। इसकी गहराई कम है,

---

1. यह ज़िंदा कैसे है, यह चमत्कार है।

बालू से भरी है। बनारी और कदमकुआं गाँव के पास नदी कुछ ज्यादा गहरी है। मदर गाँव के पास इसकी गहराई सबसे अधिक है। इसकी विशेषता है कि पिछले तीस बरसों में नदी ने दो बार धार बदली है। गर्मी की तेजी से नदी की धारा सूख जाती है और बरसात में नदी का दूसरा ही रूप हो जाता है। यह नदी दोनों किनारों के दो सौ से अधिक गाँवों के पानी का भंडार है। सिंचाई की नहर रहने पर भी...।'

बरसा में इस बार भयानक बाढ़ आयी थी। बनारी-ऑपरेशन के बारे में दूसरी बातें बताने से पहले यह कह देना अच्छा है कि जब लेबर डिप्टी-कमिश्नर आते तो बनारी के खेतमजूर सब बातें सच-सच नहीं बताते। किसान-वर्ग के लोगों का पढ़े-लिखे शहरी बाबुओं पर अविश्वास सदा से चली आ रही बात है। वे लोग बाबुओं के सामने मुँह खोलना नहीं चाहते। बाबू लोगों के 'क' कहने से कलकत्ता समझते, नहीं तो सात-कांड रामायण सुनने के बाद ऐसा आश्चर्यजनक प्रश्न पूछते जिसका जवाब भली बात में न होता। बाबू लोगों के पास ज्यादा बातें करने से हो सकता है, अदालत में गवाही देनी पड़े, नहीं तो जमींदार के निकट जवाबदेह बनना पड़े। गाँव के किसानों का थॉट प्रॉसेस[1] बहुत टॉर्चुअस[2] होता है। इसलिए वे पेट-दर्द होने पर डॉक्टर से दाँत का दर्द बताते और मसूढ़ों में जेंशन वायलेट रंग लगवाकर चले आते—उसी कारण से उन्होंने भोले बनकर डिप्टी से कहा था, 'एम० डब्लू ? यह क्या नाम बताया, बाबू ? जीवन में नहीं सुना।' लेकिन बात सच न थी। कारण थे माधव और गोपी।

माधव तूरा और गोपी माझी सदा से गुस्सेवर थे। रूखे और मार-पीट करने वाले। प्रताप अढतिये के साथ वे अड़सठ से लगे आ रहे थे। उसके पहले बीरू पाठक था, उस समय वह किसान फ्रंट का डिसेंटिंग यूनिटी[3] लीडर था। इस अंचल में—बीरू पाठक ने, माधव और गोपी और दूसरे के० एम०[4] के पास एकत्रित आँकड़ों के आधार पर किसान-सभा में एक पेपर पढ़ा। उस कागज को लेकर बहुत बहस-मुबाहिसा हुआ और 'बड़े और मँझोले किसानों के हितों की रक्षा के काम की कृषक-सभा उपेक्षा न कर सकी'—इसके आधार पर बीरू पाठक की, किसान-सभा की उपेक्षा कर खेतमजूरों का हित लेकर दिमाग खराब होने के लिए बड़ी निन्दा की गयी। कहा गया कि यूनिटी सबसे बड़ी चीज है।

बीरू पाठक का कहना था, 'यूनिटी का मूल्य क्या अकेले खेतमजूर अदा करेंगे ? मेरे पेपर पर विचार-विमर्श क्यों नहीं होगा ?'

---

1. सोचने का ढंग 2. कुटिल 3. असहमत एकता 4. किसान-मजूर।

उसके इस काम को बड़े नाम दिये गये। इसकी बहुत-सी व्याख्याएँ तलाश की गयीं। बीरू पाठक स्वयं न होकर उसका बाप पंद्रह बीघे ज़मीन का मालिक था। बीरू पाठक का खेतमजूर आंदोलन में जोश बिलकुल थियरिटिकल[1] था। वह सदा से थियरी का आदमी था। लेकिन लीडर लोग यह बात नहीं समझते थे। बीरू को वे मन-ही-मन कंडेम्ड गुड्स[2] मानते। बाद में नितान्त थियरी से परेशान बीरू पाठक जब नक्सलवादी बन गया, तो लीडरों ने दो और दो चार कर डाला और बोले, 'इसीलिए उस बार के० एम० इशू[3] पर चीख़कर सभा भंग करना चाहा था।'

यह बीरू पाठक बनारी-अध्याय में प्रक्षिप्त है। किंतु उसके पास से ही माधव और गोपी एम० डब्लू० नामक जादू-भरा नाम सुन आये। इसके बाद उन्होंने निश्चय किया कि जेठ में धान-बुआई के समय प्रताप को पकड़ना होगा। यह बात दूसरों को समझाने में मुश्किल होती। लेकिन लोहा गरम था, रहे। सत्तर का दशक मुक्ति-दशक में परिणत होने चला था, इसलिए कोपाई और मयूराक्ष के जलमार्ग पर कुछ गाँवों में कुछ जमींदारों का सिर फिर गया। माधव और गोपी ने सबको समझाया कि प्रताप को डराने का यह बहुत अच्छा अवसर है। आदमी उस सिर को ही सबसे अधिक प्यार करता है, जो सिर अपने धड़ से लगा हुआ हो। उसी सिर के बालों में अपने हाथों माँग निकाल सकना सबसे अधिक शांति का काम होता है। कटे सिर के बालों में डाबर आँवला केश तेल चुपड़ने से भी कोई फ़ायदा नहीं। और शरीर का काम ही बिगड़ जाता है। सिर अलग हो जाने से हाथ-पैर काम नहीं करना चाहते, घमंड में अज्ञान हो जाते हैं। इन सब बातों में लोहा फिर तपाना होता है। उसके बाद माधव और गोपी, पास के ब्लॉक के चैतन और मिश्र का दृष्टांत देते। वह एक रुपये के हिसाब से बच्चे व युवा-स्त्रियों को मजूरी देता। जलपान के लिए भात और कुम्हड़ा देता। जलपान के पैसे भी न काटता। माधव का बाप कहता, 'उसके दोनों ओर के गाँवों में जमींदार मारे गये कि नहीं?' इस बात से माधव समझता कि बात सच है। किंतु प्रताप के दोनों ओर जो लोग थे वे ऐसे चालबाज़ थे कि प्रताप अढ़तिये के कंधे पर हगते थे। प्रताप अढ़तिये के दोनों ओर हैं चैतन मिसिर और नकुड़ पात्र। प्रताप के ज्ञान के लिए चैतन और नकुड़ का सिर उड़ा देना बहुत ज़्यादा हो जायेगा। उसके सिवा मानव-मन की विचित्र गति होती है। ऐसा भी हो सकता है कि दोनों सिर गिर जायें, किंतु प्रताप अढ़तिया जैसा था वैसा ही रहे, तब?

---

1. सैद्धांतिक 2. निकम्मा माल 3. किसान-मज़दूर प्रश्न।

माधव ने तभी ठीक किया, गोपी राजी हो तो गोपी और वह, नही तो अकेले वह, बसाई के साथ चला जायेगा।

भौंरी नाम की एक भैंस बसाई की नौका बनी। वन-विभाग जब वन का निर्माण कर रहा था, तब साई बावला पेड ही क्विक फॉरेस्टेशन[1] के लिए अच्छा लगता है। कई कुसुमविलासी फ़ॉरेस्ट-बीट-अफ़सर उसके बाद एकेसिया के पेड लगाते, नीम और यूकलिप्टस लगाते। परिणामस्वरूप जंगल में काफी पेड़ हो जाते और बड़े अच्छे लगते। बसाई यही रह जाता।

इसी बीच गाँव में आ जाता शीतल काउरा[2]। वह गुलाबी का पति है। प्रताप सिउडी में गुलाबी के पति को काम की तलाश में जाने के बहाने गुलाबी की ओर अधिक ध्यान दे रहा था। सिउड़ी में जगत्तारिणी बस सर्विस में बस धोने का काम पाकर वह पत्नी को लेने गाँव आया। गुलाबी की बदज़ाती की बात सुनकर उसने पहले पत्नी को पीटा। उसके बाद प्रताप से झगड़ा कर 'तुमको कतल कर मैं फाँसी चढ जाऊँगा' कहकर पत्नी को लेकर चला गया। डरकर प्रताप आढ़तिये ने थाने पर लिखाने जाकर डाँट खायी। थानेदार बोले, 'नक्सली की गड़बड़ नहीं, पोलिटिकल फ़्यूड[3] नही, यह रिपोर्ट लिखाने आये हैं?'

'उसने कहा है, कतल कर देगा।'

'कतल किया?'

'एँ?'

'कतल करे, तब पकडेंगे।'

'यह क्या बात हुई?'

प्रताप मुसीबत में पड गया। उसे कोई काट डाले तो मुसीबत उसकी है, थानेदार की नही। यह बात कौन किसको समझाये?

थानेदार बोले, 'देखिये प्रतापबाबू, ज़माना बहुत बुरा है। मेरे लिए नक्सली टॉप प्रायर्टी[4] है। आपसे भी कहे देता हूँ, चारों ओर आग लगी है। आपका ब्लॉक शान्त है। गडबड़ी क्यों बुला रहे हैं? गुलाबी के मामले से अगर बड़ी गड़बड़ शुरू हो गयी तो? आपकी भी बलिहारी है। ठाठ से राज कर रहे हैं, कितने लाख रुपये पीट लिये, यह तो आप ही जानें। धान-आन के टाइम पर ग़रीबों से बिगाड़ न करें। जो कहे, मान लें।'

'एँ?'

1. जल्दी वन उगाना 2. एक नाच जाति 3 राजनीतिक झगड़ा 4. सबसे जरूरी काम।

'हाँ।'

'तब तुम लोगों के पास हथियार भी नहीं हैं। तुम कहोगे, हमें कुछ मालूम, बसाई टूडू आदमियों को लेकर आया था, सारी गड़बड़ कर गया।'

'एँ ?'

'एँ नहीं, हाँ कहो।'

'न्-न्-न्-हाँ। किन्तु...।'

'क्या ?'

'तुम ?'

'वह तुम्हारे सोचने की बात नहीं है।'

'हाँ।'

'इसका नाम है ऐक्शन। और काम है।'

'क्या ?'

'ऐक्शन के पहले मैं चला जाऊँगा। तब माधव जाकर प्रताप से कहेगा—बहुत गड़बड़ की, हमारा अपमान किया अनजान आदमियों ने आकर। प्रताप अगर पुलिस में ख़बर दे, तो दे।'

'किन्तु...?'

'डर की बात नहीं है। यहाँ कोई गड़बड़ नहीं है, कोई बीरू पाठक नहीं है। अब पुलिस-अफ़सर अच्छा है। वह रिपोट लिखता है, ब्लाक में गडबड़ी घुसने नहीं दूँगा। इसे प्रताप भी जानता है। सो बाद में मैं ऐक्शन के दिन आ जाऊँगा।''

हँसी हुई और धीमी पड़ी।

'इस साल वर्षा होकर धरती हल चलाने जोग होगी। धीरे-धीरे बाद में तुम बीज डालोगे। प्रताप की तरह अढ़तिये जमींदार की खुशी नाचोगे। तुम जरा भी मत डरो। मैं हूँ। अभी सात दिन यहाँ रह होगा।''

हँसी उठी और धीमी पड़ी।

'और दो बातें हैं। मैं भी बनारी आऊँगा। सो एक नैया चाहिए तो अफसर नहीं हूँ कि जीप गाड़ी चाहूँ। नैया चाहिए। नदी पार आऊँगा न ! चरसा में जल बहुत है। यह एक बात है। दूसरी बात, को मैं मारूँगा। तुम नहीं।'

'अँ ?'

'उसे मारना तो पड़ेगा ! उसके जिन्दा रहने से वह सबको पु पहचनवा देगा न ?'

माधव ने तभी ठीक किया, गोपी राजी हो तो दोनों और वह, नहीं तो अकेले वह, बसाई के साथ चला जायेगा।

भौंरी नाम की एक भैंस बसाई की नौका बनी। वन-विभाग जब वन का निर्माण कर रहा था, तब साई बाबला पेड़ ही क्विक फ़ॉरेस्टेशन[1] के लिए अच्छा लगता है। कई कुसुमविलासी फ़ॉरेस्ट-बीट-अफ़सर उनके बाद एकेसिया के पेड़ लगाते, नीम और यूकलिप्टस लगाते। परिणामस्वरूप जंगल में काफ़ी पेड़ हो जाते और बड़े अच्छे लगते। बसाई यहीं रह जाता।

इसी बीच गाँव में आ जाता शीतल काडरा[2]। वह गुलाबी का पति है। प्रताप सिउड़ी में गुलाबी के पति को काम की तलाश में जाने के बहाने गुलाबी की ओर अधिक ध्यान दे रहा था। सिउड़ी में जगत्तारिणी बस सर्विस में बस धोने का काम पाकर वह पत्नी को लेने गाँव आया। गुलाबी की बदज़ाती की बात सुनकर उसने पहले पत्नी को पीटा। उसके बाद प्रताप से झगड़ा कर 'तुमको कतल कर मैं फाँसी चढ़ जाऊँगा' कहकर पत्नी को लेकर चला गया। डरकर प्रताप आढ़तिये ने थाने पर लिखाने जाकर डाँट खायी। थानेदार बोले, 'नक्सली की गड़बड़ नहीं, पोलिटिकल फ्यूड[3] नहीं, यह रिपोर्ट लिखाने आये हैं?'

'उसने कहा है, कतल कर देगा।'

'क़तल किया?'

'एँ?'

'क़तल करे, तब पकड़ेंगे।'

'यह क्या बात हुई?'

प्रताप मुसीबत में पड़ गया। उसे कोई काट डाले तो मुसीबत उसकी है, थानेदार की नहीं। यह बात कौन किसको समझाये?

थानेदार बोले, 'देखिये प्रतापबाबू, ज़माना बहुत बुरा है। मेरे लिए नक्साली टॉप प्रायर्टी[4] है। आपसे भी कहे देता हूँ, चारों ओर आग लगी है। आपका ब्लॉक शान्त है। गड़बड़ी क्यों बुला रहे हैं? गुलाबी के मामले में अगर वही गड़बड़ शुरू हो गयी तो? आपकी भी बलिहारी है। ठाठ में राज कर रहे हैं, कितने लाख रुपये पीट लिये, यह तो आप ही जानें। धान-आन के टाइम पर ग़रीबों से बिगाड़ न करें। जो कहूँ, मान लें।'

'एँ?'

1. जल्दी वन उगाना 2. एक नाव जाति 3 राजनीतिक झगड़ा 4. सबसे जरूरी काम।

'वात-वात पर ठंडी साँस लेने से काम नहीं चलेगा। मैं रिपोर्ट करूँगा, आप प्रोवोकेशन दे रहे हैं[1]।'

प्रताप घवराये जा रहा था। थानेदार सचमुच घटना को नोट करेंगे। प्रताप दस खेतमजूरों को रोज गोली मारता तो वे ख़फ़ा न होते। अढ़तिया गोली चलायेगा, यह प्रत्याशित है। खेतमजूर मरेंगे, मानी हुई वात है। उसमें उसे कुछ नहीं कहना है। वैसा होने पर वे जाकर खेतमजूरों को पकड़ेंगे। लेकिन औरतों की वातें गंदी हैं। न, कभी नहीं। थानेदार ताराशंकर के 'न' नाटक में नायक वनकर वोले, 'देवी—देवी ! तुम स्वर्ग की देवी हो।' यह वात वे सारी औरतों से कहना चाहते हैं। उसी कारण से औरतों के साथ गंदगी की वात सुनकर वे ख़फ़ा हो गये। यह उनके स्वभाव में उलटी वात है, क्योंकि सभी औरतें स्वर्ग की देवी नहीं होतीं, यह वात पुलिस के आदमी होकर वह अच्छी तरह जानते हैं। कम-से-कम जानना उचित है।

जो हो, शीतल-गुलाबी-प्रताप-थानेदार के चौगड्डे की वात वसाई न जान सके, लेकिन इससे उसके काम में परोक्ष रूप से सुविधा होगी, और प्रत्यक्ष रूप से शीतल को कुछ हैरानी हुई। कुछ करने को न था। 'संसार में राम-श्याम को ढेला मारे तो यदु को कंकड़ी लगेगी-ही-लगेगी', यह आप्त वाक्य है।

प्रताप को लगता है कि आस-पड़ोस के कुछ जमीनों के मालिकों का दिमाग़ ख़राब हो गया है। सात-पाँच सोच-विचारकर उसने छींके पर से पिछले साल का कुम्हड़ा उतार, मछली काटकर भात की व्यवस्था की, और माधव के वाद लवण माझी को तोलकर वीज के धान निकाल दिये।

यह सव शुरू का काम हो जाने पर माधव और गोपी ने तैयार होकर मज़दूरी की वात उठायी।

प्रताप वोला, 'जो देता था वही दूंगा। यह और ज्यादा की कैसी वात? पर हां, भात-मछली चटनी-विउली दाल[2] का जलपान होगा। उसके पैसे नहीं कटेंगे। भरपेट खाओगे तो उसके पैसे काटूंगा? न, प्रताप अढ़तिया वह नहीं कर सकेगा। व्वाप रे ! परलोक में जाकर क्या कहूँगा?'

'वावू? तो फिर रेट दोगे?'

'रेट? कौन-सा रेट रे, माधव?'

'अड़सठ की खेतमजूरी का रेट। मरद-औरत के हिसाव से तीन चौअन, तीन सत्ताइस, दो, दो। आपने पेंचुड़ा, दियाशा, वक, डूवा में माना था।'

---

1. उकसा रहे हैं 2. मोटे अनाज की दाल।

'मैंने ?'

'नोटिस तो कब का हुआ था।'

'तुझे कैसे पता है ?'

'हाट गया था। सुन आया।'

प्रताप के मन में पहले ही स्वतःस्फूर्त निष्पाप वासना उठी, बन्दूक से यार साग गिरा दे। ऐसा लगना ही स्वाभाविक है। 'धरती बाप को नहीं, दाप[1] की होती है', यह बात प्रताप के जीवन में 'वन्देमातरम्' या 'जयहिन्द' थी। फिर भी प्रताप ने यह काम नहीं किया। थानेदार की सावधानी की बात उसे याद हो आयी। जमाना बहुत बुरा था। सहसा उसे याद आया कि सबसे अधिक पास का थाना सोलह मील दूर था। चाताद्वानी गाँव में जमींदार को मारने के पहले उसकी लॉरी और जीप के टायर फाड़ दिये गये थे, साइकिल तोड़ डाली गयी थी। वैसा प्रताप के वक्त भी हो सकता है। कैसी रूखी बातें हैं शीतल की ! अगर वह अचानक आकर कुछ करने के बाद भाग जाये, तो डोर तोड़कर पतंग उड़ जायेगी। इस गाँव में शीतल का कोई नहीं है। आने पर वह गुलाबी के घर ही टिकता है। उसे पकड़ा नहीं जा सकता। गाँव में फिर भी किसी के रहने पर, बाप-भाई को लाठिन कर शीतल को खींचकर लाया जाता। प्रताप इसलिए सावधानी से ताश खेलेगा।

'हाँ रे, नोटिस तो आया था।'

'आपने भी क्यों नहीं दिया ? दो साल बीत गये !'

'अरे ! सरकार के काम का क्या कहना ? जोतदार-महाजन, जिस साले की जमीन है, उन्हीं को नोटिस भेजा। वह तो मैंने भी पढ़कर नहीं देखा। बाद में पता चला कि यह मजूरी बढ़ाने का नोटिस है।'

'दिया क्यों नहीं ?'

[illegible] एकजुट होकर चलते हो। हम [illegible] ला उसे देखकर चलता है। [illegible] सोचा...।'

'दिया क्यों नहीं ?'

'सोचा, हिसाब तो देख नहीं पाया। तुम लोग धान-रुपया करज जो लेते रहे ! और न लेते तो क्या करते ? खाना तो पड़ेगा ही। उससे सोचा, हिसाब तो देख लूं।'

'बाबू ! इस साल जल की हालत अच्छी है। धान उपजाने में धरती

1. रोबदाब।

की कोख फट जायेगी। असीम धान होगा। मैं कहता हूँ, जो होगा, सो होगा। इस साल हमें अड़सठ का एम० डब्लू० क्यों नहीं दे देते ? अड़सठ-उनहत्तर दोनों सालों की सरकारी मजूरी का हिसाब करो, जो काटने का हो वह उसमें से काटना। आपको छोड़कर हम कहाँ जायेंगे ?'

'यह ठीक कहा। देखें। सो मैं तेरी सारी बातें मानकर काम करूँगा, तुम ?'

'हम भी करेंगे।'

'ठीक। तुम सान्तालों के-से ही हो। जो बात कही उसके ख़िलाफ़ नहीं।'

'ना।'

'कौन क्या भड़काता है, सुनकर सब भड़क न जाना।'

'ना:, वे क्या हमें खाने को देंगे ?'

'ना।'

'यह हुई बात।'

'क्यों रे, माधव ?'

'बाबू ! आज नयी खेती के नये बीज बो रहे हो, माँ की पूजा होगी। सो हम क्या कुम्हड़ा ही खायेंगे ?'

'अँ !'

'एक माछ थानेदार लेगा ?'

प्रताप समझता है कि इस समय उसके दिन मन्दे जा रहे हैं। पोखर की मछली थानेदार के घर जा रही है, वह भी ये लोग जानते हैं।

'तुम भी खाओगे।'

प्रताप को लगा कि वह अभिमन्यु की तरह हो रहा है। चक्रव्यूह फँस गया है। ठंडी साँस लेकर मन-ही-मन कहने लगा—चार दिन चोर तो एक दिन साह का होता है। मेरा दिन आयेगा रे, माधव। पोखरे मछली का दाम काट लूंगा।

मछली-कुम्हड़ा-खेसारी-पोस्त से भरपेट खाना-पीना हुआ। खान चुकने पर लवण माझी को लगा कि प्रताप की छाती फटी जा रही दिलासा देते हुए वह बोला, 'फिर बरखा होगी रे, इस बार तेरा अच्छा खुला है।'

सचमुच रात से फिर वर्षा हुई। भौंरा की पीठ पर चिपककर पार कर बसाई माझीपाड़ा आया। बहुत ध्यान से सब सुनकर बोल आज चला जा रहा हूँ। ऐक्शन की पहली रात को चला आऊँगा।

कोई भी दिन रहते, गामटा[1] की तरह दिन रहते कुछ नहीं करोगे। सांझ लगे, न लगे, कि ऐक्शन।"

लवण माझी डरते हुए बोला, 'अगर प्रताप अढ़तिया सब दे दे? फिर भी ऐक्शन?'

'ना। पर मुझे लगता है, वह देगा नहीं।'

'दिन-दिन का लेंगे।'

'देखो।'

'देखें।'

'इस बार जिला में ऊँच-नीच की बाढ़ ले आयेंगे। ब्लाक-ब्लाक में पुलिस फिर रही है। जहाँ गड़बड़ है वहाँ सबको गाँव से निकाल बाहर कर रही है। अच्छा जमाना आ रहा है।'

'पता है।'

'जितने दिन राज सरकार के हाथों है उतने दिन पुलिस है।'

'उसके बाद।'

'बाघ पर टाघ है। बाघ का सिर खुजलाने पर आर्मी आयेगी। तब सब भूने जायेंगे।'

'क्या कहा?'

'आर्मी।'

'जैसी लड़ाई के दिनों आयी थी?'

'वे गोरे थे। सफेद। ये काले होंगे।'

'हमारी-तुम्हारी तरह?'

'थोड़े-बहुत ऐसे ही। पर वे सान्याल-बयाओरा-केउर नहीं हैं। आर्मी में हम लोगों को नहीं लेते। आर्मी हम लोगों को मारने के लिए है।'

काम के वक्त, मौके ने बसाई को मदद दी। बीरू पाठक ने बड़े जोश में, गाँव के खेतमजूरों को दूर कर पुलिस के रोब से कटैयों से बीज बिजाकर, बीस मील दूर के ब्लॉक की गड़बड़ रोकी। और समय के, नियम से सोमानगढ़ के जमींदार का धड़ खोजकर उसका सिर पके कद्दू की तरह लोट रहा था। खबर पाकर थानेदार अपनी फ़ौज के साथ भागे और उस हालत में थाने में कम आदमी जानकर बसाई बनारी में आ गया। प्रताप को तीसरे पहर खबर मिली कि खेतमजूर चरसा के किनारे बैठे हैं। सरकारी धान के बीजों का क़ीमती ढेर वे नदी में फेंक देंगे। वह कई दिनों की मजूरी अभी चाहते हैं।

1. गंध मार्जार, कस्तूरी बिलाव।

प्रताप कमर कस, शू जूते पहन, बग़ल में बंदूक दबाकर भागा। उसका
ाई साइकिल लेकर थाने की ओर भागा। पुलिस न बुलाकर खेतमजूरों
े काम कराने की नासमझी के लिए बड़े भाई को गालियाँ देता सेन-रैले[1]
पर बैठ भागते-भागते उसे सहसा रोशनी कौंधी। पुलिस लेकर लौटने में
बड़े भाई का सिर अगर धड़ से अलग हो जाये, तो? उसका दिल उछलने
लगा। तब वह मालिक बन जायेगा। बड़े भाई की तरह वह जड़ नहीं काट
देगा। चार देगा, चार खा लेगा। आजकल बुरा वक़्त है। अच्छा समय
आने पर माधव आदि की राह में बन्दर का बच्चा घुसा देगा। थाने पर
पहुँचकर जब उसने सुना कि थानेदार शोंसानगढ़ में हैं, तो वह थाने पर
रुक गया। मुक्ति-फ़ौज बिना लिये फ्रंट पर लौटना ठीक न होगा। उसने
एक बार भी 'नक्सल' नाम नहीं कहा। लेकिन मुंशीजी रोबट[2] की गति से
नक्सलवादी, समाजविरोधी और प्रताप अढ़तिया मिश्रित एक रोमांचक
क़िस्सा लिखते रहे। प्रताप का भाई कड़वा होकर बोला, 'जहाँ नक्सल
नहीं वहाँ आप नक्सली लिख रहे हैं। यह कैसा नक्सली बाँस घुसा रहे हैं?
वे अगर आ जायें, तो?' सहसा मुंशीजी को लगा कि बात ग़लत नहीं है। वे
लोग अगर थाने को अरक्षित जानकर थाने पर बंदूक छीनने चले आयें,
तो? डरकर उन्होंने रिपोर्ट काट दी और थाने का दरवाज़ा बन्द कर बैठ
गये।

प्रताप चला था युद्ध करने। लेकिन जाकर देखा कि परिस्थिति बहुत
ही शान्त है। प्राचीन स्टील एन्ग्रेविंग में चित्रित बंगाल के शान्त गाँव में
शान्तिमय प्रकृति चित्र में कुछ मनुष्यों का मैनग्राफ़ था। धान के बीजों की
बोरियाँ बीच में रखे माधव आदि बूढ़े वट के नीचे बैठे हैं। बी० डी० बा
के पास से उठाकर लाया गया बढ़िया ए-वन बीज धान था। बीज-खा
कृषि ऋण—सरकारी प्रयत्न में त्रुटि नहीं थी। ऐसा न होता तो क्या प्रत
सामान्य पाँच हज़ार बीघा ज़मीन संभाल कर गृहस्थी चला पाता? ल
बहुत शान्त थे। आराम के साथ बैठे हुए थे। प्रताप और उसका दाहि
हाथ बयँहत्या महिन्दर घबड़ा गया। उनका प्रवेश नाटकीय क्यों था,
कि और अभिनेता शान्त और निरस्त्र हैं? प्रताप नाट्य-आंदोलन की
ख़बर न रखकर भी ऐब्सर्ड नाटक का ऐब्सर्ड नायक बन गया। उसके
तौर पर अनदेखा, अनचीन्हा एक संथाल साफ़ धोती की लाँग कसे
जाँघ पर ताल ठोंककर गा रहा था, 'उ घाटे जेयो ना बेउला आमार

1. एक बाइसिकिल कम्पनी का नाम 2. यांत्रिक मानव।

चाँदिर बेटा दुशमन नथा देखनो छाड़बू ना।'[1] प्रताप को आते देख वह आदमी आँख मार मजाक में बेसुरा गाने लगा, 'ओनो किचकिन्दे निमि, करचू इ कि मशकरा? बलछु आमू भेड़िया आबू, मोके लबो जेठु गुनकरा![2] सब एक साथ मिलकर हँसने लगे। प्रताप को लगा, उसने क्या गलती कर दी? धानेश्वर गुस्से से लाल हो जायेंगे। लेकिन पास आते ही समझा कि वातावरण बहुत तनावपूर्ण है। डायनमो छूट रहा है। हवा में बिजली का झोंक है।

'यह क्या है, माधव? लखन ने मुझसे वादा किया था कि गड़बड़ नहीं होगी।'

गानेवाले आदमी ने हाथ उठाकर लखन मांझी को जवाब देने में 'ना' कह दिया और बोला, 'यह छः दिन से काम कर रहे हैं।'

'तुम कौन हो?'

जो शख्स था जिसके डर से प्रताप का रात में बिस्तर पर पेशाब निकल जाता, यह क्या वही है? नक्सल नहीं, यह तो संथाल है। बाबू लड़का नहीं है, पढ़ा-लिखा नहीं है, नक्सल नहीं है।

'बसाई टुडू। शहर में थाने के सामने रिलीफ को लेकर तुमसे-मुझसे मार हुई थी। लँगड़ा महिन्दर पहचानता है, पीछे घूमो, उसे पकड़ो। पुलिस पहचानती है। लखन की मालिन को कमर में सालों ने लाठी मारी थी।'

'यह क्या?'

प्रताप बैठ गया। हाय! बगल की बंदूक किसी ने छीन ली। बसाई टुडू बोला, 'इन लोगों की मजूरी कहाँ है, प-र-ता-प-बा-बू?'

'दूँगा। दूँगा, भाई।'

'वही सनातन पाल से कहते आये, धान बोने को इन्हें लगाया, धान रोपने को, धान निराने को, धान काटने को, मजूरी नहीं दी? कहते आये, हर एक को चालीस पैसे, जलपान के लिए, मजूरी देगा?'

'अभी देगा...।'

'रुपया कहाँ है?'

'रुपया?'

'आज का काम खतम हो जाये। मजूरी कहाँ है? छ दिन से दे रहे हो, न? तुम दोगे? फिर सारा रुपया बैंक में कल क्यों रख आये?'

'ना दूँगा।'

---

1. मेरी माँ बेहुला, उस ओर मत जाना, चाँद का पुत्र दुश्मन के सामने देखकर भी नहीं छोड़ेगा 2. ओ काली बुआ, यह क्या मजाक कर रहे हो? कहती हो, मैं भेड़िया बन जाऊँगा, मुझ पर खफा हो रही हो!

माधव बोला, 'अबे साले ! बैंक गया था ? कह गया, डाक्टर के पास जा रहे हैं।'

'सुनो तो, माधव...!'

'बहु—त सुनी है ! थाने गये थे ?'

'वह दूसरे काम से।'

अब लँगड़ा महिन्दर रोने लगा और बोला, 'बाबू ! कितनी बार कहा, इस साल सनातन पाल ने मजूरी बढ़ा दी है, सो तुमने सुना नहीं। कल सवेरे रुपया बैंक ले गये, थाने गये...।'

बसाई टूडू बोला, 'काम अच्छा नहीं किया, प्रताप बाबू ! धान तुम्हारा होगा, किंतु उस धान का भात तुम्हें खाने को नहीं मिलेगा।'

'तुम मुझे छोड़ दो...!'

'घर में कितना रुपया है ?'

'नहीं भाई—जो है, सब दे दूंगा...।'

बसाई बोला, 'चलो, चलकर देखें।'

'हो...हो...हो' करते हुए वे प्रताप अढ़तिये को पैदल घर ले गये। गन-पायन्ट'[1] पर प्रताप का संदूक खोलकर नौ सौ तैंतीस रुपये निकाले, सतर्क तेज़ी से। दीवार पर की बंदूक, प्रताप की लाल खैरे रंग की बही ली। बसाई ने बही खोलकर कहा, 'ब्बाप रे, लूला-लँगड़ा पाकर अँगूठा-निशानी ली हैं...एँ ? इस साल की मजूरी ढूंढ़ो ? सब लोगों के नाम पर तुम्हारा हजार-ग्यारह सौ पावना है ?'

कचहरी के कमरे में गड़बड़ सुनकर प्रताप की घरवाली 'ओ ठाकुरपूत, पुलिस ले आये ?' कहकर बाल छितराये फूहड़पन से कमरे में आकर हक्का-बक्का खड़ी रही और अब प्रताप से कुछ कहने को ही न रहा। घुसते ही प्रताप की पत्नी फ़ौरन पलटकर चीखते-चीखते अंदर की ओर ग़ायब हो गयी। तब बसाई फिर प्रताप को पैदल नदी-किनारे के बूढ़े वटवृक्ष के नीचे ले आया, महिन्दर को भी। बंदूकों को नदी में फेंक चिल्लाकर बोला, 'इसे पहचानते हो न ? यह तुम्हें मजूरी नहीं देता था। खाते में लिखा जितना पावना है, उसका है, भाइयों को थाने भेजता था, मजूर खोजता था। उसके आसरे और कुछ दिनों रहते तो सब जेहल जाते या बनारी छोड़ते।'

'मार साले को !' सब बोल पड़े। बसाई के हाथ से भाला छूटा, उसने छेदा, निकला, फिर छूटा। प्रताप और महिन्दर धरती पर लोटने लगे।

---

1. बन्दूक की नोंक पर।

अंधकार हो गया। वे लोग प्रताप और महिन्दर को छोड़कर प्रताप के घर गये। दरवाज़े-खिड़कियाँ बन्द थे। बसाई ने आवाज लगायी, 'एक आदमी का नाम पुलिस में गया तो दो-दो लहास गिरेंगी। अढ़तिया वंस में कोई नहीं रहेगा। चिड़ी का पूत भी नहीं। साँप का बच्चा साँप ही होता है।'

इसके बाद सब झटपट बिखर गये। बूढ़े वट के नीचे आकर माधव और गोपी बोले, 'हम तुम्हारे साथ चलेंगे। यहाँ नहीं रहेंगे।' कठोर व्यंग्य में बसाई बोला, 'यह अच्छा है। पुलिस समझेगी, तुम दोषी हो और सब गड़बड़ कर दोगे। अभी तुम जाओ, जाकर घर बैठो। पुलिस के आने पर कहना, पता नहीं किसने मारा है? डरना मत, मैं फिर आऊँगा।'

तभी धरसा के उस पार से आवाज आयी, 'हो बसाई, हो!' पुकार कई लोगों की थी।

'काम निपटा रहा हूँ, आया।'

बसाई बोला, 'तुम लोग जाओ। लहास हटा रहा हूँ। उनसे कह देना, कोई आकर अढ़तिये को खींच ले गया। लहू के दाग ढक देना। लाश जितनी दूर चली जाये उतना ही अच्छा है।'

इसके बाद प्रताप और महिन्दर को एक-एक कर भौंरा की पीठ पर नदी पार हुआ, और नदी के दूसरे किनारे जाकर, बनारी छोड़ उत्तर की ओर चार मील चल एक गहरी दलदल में डाल दिया। इस काम में बसाई की राह देख रहे बनारी के बाहर के मार्गदर्शकों ने सहायता की। बसाई जेम्स बाँड या आतंकवादी बंगाली फ़िल्मों का हट्टा-कट्टा विचित्र काम करने वाला नायक नहीं था। इसलिए उसने कोई विचित्र काम नहीं किया। मार्गदर्शकों से बोला, 'तुम लोग चले जाओ, उधर जंगल में राह देखना। मैं आ रहा हूँ।'

'कहाँ जा रहे हो?'

'भौंरी ने, इस भैंस ने इतने दिनों तक बड़ी सर्विस दी। उसे घर पहुँचा आऊँ। वह भी कमरेड बनकर काम करती है न?'

'चल भाई, कमरेड' कहकर बसाई ने भौंरी की पीठ पर थाप लगायी। भौंरी ने इन कुछ दिनों से बसाई के साथ बड़ी दोस्ती से अभ्यास किया था। स्त्री-स्वभाववश उसने बसाई की ओर सिर बढ़ा दिया। बसाई ने उसका गला खुजला दिया। मौन दोस्ती थी। पूँछ से भौंरी मच्छर भगा सके, इसलिए जंगल में भौंरी के बदन में तेल मल दिया था। भौंरी को मुट्ठी-भर घास खिलायी थी। लेकिन आज रक्त-गंध से लिपटी दो लाशों को ढोने में, अनभ्यस्त और डरावनी गंध से भौंरी डर गयी थी। बसाई उसे लेकर जब पानी में उतरा तो मार्गदर्शक बोले, 'चलो भाई, एक आदमी

पूंछ पकड़ो, उसे पकड़े दूसरा आदमी, हम भी चलें। पूरब आकाश में दिन निकल रहा है। वैसे ही उधर दिखायी दे रहा है। उस पार से लगकर भागेंगे।"

'चलो।'

वे पानी में उतरे। भोर हो रही थी। उस पार पहुँच घुटनों-पानी में खड़े होकर बसाई ने भौंरी को किनारे की ओर ठेल दिया। तब किनारे से पुलिस ने आवाज़ लगायी 'हाल्ट' और गोली चलायी। कारतूस की तीखी गंध। भौंरी डर से आँ-आँ-आँ रंभायी और पानी में ही निरापद आश्रय समझकर पानी में उतरने लगी। पुलिस ने अब भैंस को निशाना बना किसी अज्ञात पुलिस-कारण से गोली चलायी और बसाई, जिस ढँग की गठन का था उसी ढँग से तेज़ी से भैंस को बचाने के लिए 'पानी में उतर जा भौंरी, डरने की क्या बात है?' कहकर भौंरी की सहायता के लिए गया। और गोलियाँ। गोली के बाद गोली। पानी में फटाफट। डुबकी मारकर तैरना। उस पार पहुँच बहाव की ओर बढ़ पानी से निकल झुककर जंगल में भागना। धीरे-धीरे प्रकाश होता है और एक भैंस को, एक आदमी को पानी में तैरते देखा जाता है। फिर गोली। आदमी का चेहरा कुचल जाता है। पुलिस किनारा पकड़कर भागती है।

लाश किनारे उठा ली जाती है। गाँव के रहने वाले लोग पुलिस की आवाज़ पर एक-एक कर निकलते हैं। सब लोग बूढ़े वट के नीचे। न। वे कुछ भी नहीं जानते। प्रताप बाबू के साथ उनका कोई झगड़ा नहीं है। सब को दिन के दिन की मजूरी मिल गयी है। जलपान भी। रात में उन्होंने गड़बड़ सुनी ज़रूर थी, निकलने की हिम्मत नहीं पड़ी। दिन जैसे ख़राब चल रहे हैं, उसमें क्या-से-क्या हो जाये, कौन जाने? वे किसी दिन झगड़े में नहीं पड़ते। प्रतापबाबू का काम कर बरस बिता देते हैं, दूसरे ब्लॉक की ख़बर उन्हें नहीं रहती। प्रताप बाबू और महिन्दर ग़ायब हैं? कैसी मुसीबत है! वे भी खोजने जायेंगे।

सब-कुछ सुनकर थानेदार को पक्का विश्वास हो गया कि सब खेतों में बीज बो दिये गये हैं, इनमें कोई भी प्रताप का दुश्मन नहीं है। इसलिए किसी ने मौक़ा पाकर औरतों के झमेले का बदला लिया है।

लाश देखकर लवण चिल्ला पड़ा, 'माधव! गोपी! तुम लोग देखो तो? यह वह बसाई टूडू नहीं है? हमें होशियार करने आया होगा?'

अब गुमनाम लाश को एक नाम मिल गया और थानेदार लाश लेकर चले गये। लाश का नाम न पाने तक सारा झमेला था। नाम मिल जाने पर सरकारी मशीनरी मुस्तैद हो जाती है, फ़ाइल और रेकर्ड की उलट-

पलट और तलाश—कौन पहचानता है, इत्यादि। थानेदार उधर देखते रहे और बनारी में शायद प्रताप के घर दो सीधे-सादे पुलिस वालों को रख गये। अब प्रताप के भाई को सब लोगों को दुरुस्त करने की बात कह कर जाकर तड़पती हुई भावज से और पत्नी से डीज़ल ट्रेन की सीटी की तरह डाँट मिली। तीसरे पहर तक गिद्धों की सहायता से प्रताप और महिन्दर के मिल जाने से प्रताप का भाई भी समझ गया कि इस वक़्त चुप रहना ही ठीक है। इसके पीछे औरतों-लड़कों का मामला भी हो सकता है, इसका प्रताप की रोदनमुखी, स्फीत स्तनद्वय की उपत्यका को पीटने में रत पत्नी ने भी अनुमोदन किया और देवर को अभियुक्त बनाकर बोली, 'तुम नहीं जानते थे? मियाँ के लड़के के लालच में वह क्या करता फिरता था?' इसमें केस बुरी तरह उलझ गया। लगता कि इसे लेकर इधर-उधर करने में कोई फ़ायदा नहीं। सबसे अधिक रहस्यमय बात हुई कि इसके साथ सारे कुकर्मों के क़ाज़ी नक्सलवादियों को नहीं जोड़ा जा रहा है। कुछ उकमाने वाले अगर कहें भी कि प्रताप के मरने की रात को नक्सलवादी बेस[1] के एक गाँव से बाजी-पटका में खुशी की लहर उठी थी—तो जाँच करने पर देखा गया कि गाँव नक्सलवादियों का बेस नहीं था। और उक्त आतिश-बाज़ी असल में एक दारोग़ा के बेटा पैदा होने के उत्सव का हिस्सा थी। परिणामस्वरूप भड़काने वाले पर डाँट पड़ी और थानेदार ने जब टेलीफ़ोन पर सुना कि मुर्दे को जागुला ले आइये—तो क्षण-भर में लाश टॉप प्रायटी बन गयी। प्रताप बहुत ही गौण हो गया और वह चरसा के किनारे घी-चंदन-काठ में जलने लगा।

लाश की हालत वैशाख की आबोहवा में किसी देहातीत अहंकार में फूल कर डबल आकृति की हो गयी। अब थानेदार को पहले डाँट पड़ेगी कि इस वी० आई० पी०[2] लाश को बरफ़ में क्यों नहीं रखा गया? सुनते हैं, यह बसाई टुडू अत्यन्त इम्पॉर्टेंट, वेटेरन[3] फ़्रंट कार्यकर्ता, दुर्दान्त व्यक्ति था। अनुमान लगा सकते हैं कि इसकी मृत्यु से बहुत-से लोगों को चैन आया है। अब इस लाश को 'बसाई टुडू' नाम से, संदेह से ऊपर भाव से शनाख़्त होना चाहिए। किंतु हाय! लाश अब प्रचलित व्याकरण के एक पदीकरण नियम के अनुसार शनाख़्त करने लायक़ नहीं है। सड़ती हुई, फूली, पुलिस की नर्वसनेस से चेहरा छिन्न-भिन्न है (पुलिस अवांछनीय व्यक्ति की मृतदेह को स्टेशनरी टार्गेट पाकर गोलियों से झँझरा कर ही देगी), अतएव सभी परेशान हो उठे हैं।

1. अड्डा 2 अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 3. महत्त्वपूर्ण, पुराना।

वसाई बड़े आनन्द से सड़ी, गंदी बदबू फैला रहा है। उसकी जान-पहचान के गाँव से लोगों को लाकर शनाख़्त कराना अब संभव नहीं था। मैन इज़ मॉर्टल।[1] लाश और भी क्षणस्थायी होती है। बसाई चवालीस बरस में मरा, लेकिन लाश चवालीस घंटे में ही विद्रोही हो गयी। इसलिए स्थानीय लोगों को लाना होगा। 'ज़िला वार्ता' ऑफ़िस से काली साँतरा को प्रायः भगाकर लाना होता था। काली जब सूखे गले से कहे, 'बसाई। बसाई टूडू।' तो लाश जलाने में फिर झमेला नहीं रह जाता। जीवित बसाई ने पासपोर्ट नहीं बनवाया, या बैंक में डाका नहीं डाला जिससे उसकी हुलिया का रेकर्ड नहीं है। इस लाश की नाप-जोख ही लिखी गयी और बसाई सहसा एक वेल-रेकर्डेड आइडेंटिटी बन गया। उसकी ऊँचाई पाँच-सात, बाल घुंघराले, माथे पर चोट का दाग़। काली साँतरा चेहरे पर विचित्र मुसकराहट मिली फ़ेवरिट मुद्रा-दोष सप्लाई कर गया, उत्तेजना में जीवित बसाई हवा का गला मरोड़ता था। तब पुलिस ने कहा, 'हाँ जिसने उस पर गोली चलायी उसके दोनों हाथों ने नदी में से उठकर हवा का गला मरोड़ा था, ऐसा उसे अब याद आ रहा है।'

बहुत शांति मिल रही थी। सामन्त भरे गले से बोला, 'ज़िला वार्ता' समाचारपत्र में शोक-समाचार होना चाहिए। वह बरसों हमारा कामरेड था।"

'निश्चय।' कहकर काली चला गया। सामन्त ने मन-ही-मन नोट किया, इस मामले में काली बहुत शोकाकुल है और उसने निश्चय किया कि काली पर नज़र रखना होगी।

काली अत्यन्त उत्तेजित होकर लौट आता है और अपने निजी तरीक़े से ऑपरेशन-बनारी की खबर को जितनी दूर तक संभव हो सका जमा किया और जो पता चला, उससे उत्तेजना में प्रत्यंचा चढ़े धनुष की तरह बैठा रहा।

इसके बाद चौदह-पंद्रह दिन पर जागुला का छमाही धर्मराजा का मेला लगता है। इस धर्मराजा के दोनों पुजारियों के सम्मिलित होने के लिए बहुत पुराने समय से दो बार मेला लगता है। मेले के उपलक्ष में जागुला में बहुत ही सरगर्मी छा जाती है। किसी को किसी की खबर नहीं रहती। उन दिनों संध्या के समय कई लोग, गाँव के कुछ सिकुड़े चेहरे के आदमी आकर काली साँतरा के दफ़्तर में घुसते हैं और कहते हैं, 'मैं पलताकुड़ि का सोहन हूँ। बसाई टूडू के लिए यह दवाई लाने को कहा है। आप चलें

चलिये। वह दिशाई गाँव में है—माझीपाड़ा में।' वह एक कागज देता है। उसमें बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा है : 'टेरामाइसिन कैप्सूल।'

'क्या हुआ है?'

'गोली से उसे चोट लगी है।'

काली सांतरा घर में ताला लगाकर सदर जाता है और टेरामाइसिन कैप्सूल, बैंडेज, रुई, डेटॉल इत्यादि लेकर रवाना हो जाता है। जागुला के बहुत पास दिशाई गाँव में माझीपाड़ा में सभी फ्रंट के सेम्पर हैं। बसाई निरापद ही है। काली सोच नहीं पाता कि बसाई में इतना साहस कहाँ से आया? फ्रंट के सदस्यों के बीच फ्रंट छोड़ने वाला रेनीगेड[1]? बसाई उसे देखकर पुलिस को गाली देता है और कहता है, 'ये सान्याल हैं। बाबू कमरेड होते तो सामन्त की चाल मानकर मुझे काट डालते।' उसके बाद कहता, 'अब नहीं काली बाबू, अब अंत है।'

गोली से लगे घाव में सेप्टीसीमिया[2] हो गया है। सस्ती दवाइयों से घाव भरा नहीं। इस तरह के केस में टेरामाइसिन देते हुए बसाई पहले देख चुका है। चान्स लिया। काली दिशाई गाँव में रह न सका। रात बीतने पर पानी गरम कर बैंडेज बदल, छः घंटे बाद कैप्सूल खिलाकर चला आया। उसकी डनाम्फ्त और साज की नाप-जोख सुनकर बसाई बोला, 'एँ? पाँच-सात कर दिया? एक इंच और कहाँ से मिलेगा? मैं तो छः इंची ही हूँ। माथे में चोट का निशान? ना, वह भी कहाँ मिलेगा? चलो, रंग तो गोरा नहीं कर दिया?'

काली लौट आया।

इसके बाद बहुत दिनों तक कोई हाल-चाल नहीं मिला। काली भी जैसे हर रोज मन-ही-मन मरा रहता।

लेकिन बहुत दिनों के बाद रोड[3] अब आर्मी-मार्च[4] से प्रतिदिन पीड़ित था, तो एक दिन खुद जागुला के समीप गोल-माल उठ खड़ा हुआ। सुना गया कि बसाई टुडू इज इन ऐक्शन अगेन।[5] प्रशासन के सिर पर आसमान टूट पड़ा।

सूखे पत्तों पर किसी प्राणी के पाँव पड़ रहे हैं। जैसे मनुष्य से कोई हलका जीव हो। मनुष्य हो तो आर्मी या पुलिस होगी। वे लोग और भी सावधानी से श्वापद जंतु की सावधानी के-से पाँव रखते। जब लक्ष्य मिल जाता तो सतर्कता न रहती। जंगल पैदल छान मारते, झाड़ियों में बया के घोंसले तोड़ते, बच्चों और अंडों को पैरों से रगड़ कर बढ़ जाते। एक गीदड़ था। बड़े कुतूहल से दरवाज़े के आगे आकर उसने काली को देखा। आदमी! जिससे सबसे ज्यादा डरना पड़ता है। सियार ऐसा सिर पर पाँव रखकर भागा, मानो वह आया ही न हो। आर्मी या पुलिस के आने पर काली क्या करता? यह उमर, यह स्वास्थ्य, यह क्षीण दृष्टि लेकर? वह कुछ भी तो न कर पाता। हो: ! करने वाला इंसान करता है, न करने वाला इंसान दूर, निरापद बैठकर अध्ययन-विश्लेषण करता और निष्कर्ष निकालता रहता है। काली को वह इल्म भी नहीं है। वह केवल मन-ही-मन व्यर्थता के बोध से, जीवन की व्यर्थता के बोध से दुखित हो सकता है। बहुत ही बेकारी और व्यर्थता का बोध। जीवन-भर समस्याओं की परिधि में घूमता रहा। मार्क्स एंगेल्स, लेनिन—किसने यह करने को कहा था? बड़ी-बड़ी समस्याओं का समाधान? जाति-भेद की समस्या नहीं मिटी। प्यास के लिए पानी और भूख के लिए अन्न—परियों की कहानी बने रहे। फिर भी कितने दल, कितने आदर्श, दल में सब लोग सब लोगों से कहते 'कामरेड'। 'कामरेड, आज अन्तिम युद्ध का आरंभ है'—गाने में कैसा असीम आनन्द था! सेन्स आफ़ बिलांगिंग[1]—'यह भारत भूमि अपनी-अपनी-अपनी है!' स—ब ख़तम हो गया। फूटे बर्तन में पानी भरा गया था। लेकिन बाहर चेहरे पर दूसरा भाव लेकर रहना पड़ेगा। नहीं तो बेईमानी करना पड़ेगी। बड़ा बोझ है, तनाव है। इन्सान को खतम कर डालता है। क्षय कर देता है। इरोजन। फेफड़े का-सा रोग।

बसाई टूडू इन ऐक्शन अगेन।

किस समय? वह कौन समय था? उन दिनों के तेरह मास पहले बरानगर में लोगों की हत्या हुई थी। 1972 के नवंबर के आते-आते।

ढेर-के-ढेर गट्ठे धान काटने का काम हर गाँव में चल रहा था। अभी भी अड़सठ की एम० डब्लू० जारी होने की रिपोर्ट रेकर्ड में ही थी।

1972 की घटनाएँ ऑपरेशन-जागुला नाम से नत्थी हैं, किंतु असर घटनास्थल जागुला-सदर से छः मील दूर काँकड़ासोल गाँव में थ रामेश्वर भूआँ, प्रसिद्ध भूआँ राजघराने का एक वंशज था, पंद्रह हज़

1. अपनेपन का बोध।

बीघा जमीन का बेनामी मालिक, स्थानीय कांग्रेस का प्रभावशाली व्यक्ति था। जागुला में उसका बाजार है। कांकड़ासोल का धान का कारखाना भी उसका है। उसका मकान किले की तरह ऊँची दीवारों से घिरा है। मकान के अहाते के बीच एक हिस्सा दीवार से अलग किया हुआ है। उसमें है बँगला, बार, स्वीमिंग पूल, मछली मारने का पोखरा। होली के दिन रामेश्वर अपनी अन-आफिशल जीवन-संगिनी बुटू रानी को लेकर, दोनों ही जन्म-समय की पोशाक में उस पोखरे में रबड़ के टायर पर तैर कर केलि करते। होली-उत्सव कृष्ण का है। किंतु रामेश्वर शाक्त है। 'जो काली वही वनमाली', यह उसे मालूम है इसलिए वह सूना जन्माष्टमी पर कृष्ण की मदद करता। सूने की शाम को स्थानीय बी० आई० पी० और सूबे के हाकिम को बुलाकर वह जिन लेबुलों की शराब पिलाता, वह बहुतों ने आँखों से न देखे होंगे। और शाक्त उत्सव नाम से उसके घर बरस में बार बार काली-पूजा होती। उस समय बैंड-पार्टी में रामप्रसादी धुन बजती और उस निरासक्त-दीन भक्त के वैराग्य के गीतों के स्वरों में रामेश्वर अपने हाथ में तलवार लेकर सटासट बकरे काटता। इस उपलक्ष में एक सौ आठ बकरों की बलि चढ़ायी जाती और उनके रक्त को जमा करने के लिए पक्का चहबच्चा था। बलिकाठ खड़ा करना मुश्किल था। रामेश्वर के पिता ने पचास बरस के लगभग पहले एक विद्रोही प्रजा को पकड़कर उसी बलियूप में नर-बलि पर दे दी थी। तब शूद्र के रक्त से माँ अत्यन्त तृप्त हुई और मुंड के लोभ में रामेश्वर के बाप को स्वप्न न देकर—देवताओं की लीला मनुष्य क्या समझे—माँ काली ने शूद्रों के मुहल्ले के कई लोगों को स्वप्न दिया। वे घर छोड़कर रामेश्वर के शत्रु जमींदार के गाँव चले गये। किंतु काली माता ने वहाँ भी स्वप्न में उनकी फटी चटाई की सुख की नींद हराम कर दी। ये शूद्र लोग माँ की बात ठीक से नहीं समझते, और सभी गलत समझकर नासमझी का काम कर बैठे। खुद अपना मुंड काली को दे सकते थे। वह न कर उन लोगों ने रामेश्वर के पिता शिवेश्वर को शिकार से लौटते वक्त गिरफ्तार कर लिया और उनकी कोई बात न सुनकर सिर काट, धड़ की कमर में बालों सहित बाँध, घोड़े पर बिठा, घोड़े के पुट्ठों वाले नितम्ब पर चाबुक मारकर उसे घर की ओर भगा दिया। उसके बाद काली ने फिर सपना दिया। डर के मारे वे बोरिया-बिस्तर समेत दूर सरहद मिशन में जाकर क्रिस्तान बन गये।

इस प्रकार के पिता के औरस से रामेश्वर का जन्म हुआ। आश्चर्य कि वह नीची जात को नहीं देख सकता था और लठैतों मजदूर भगाकर नाम-मात्र के दामों पर आदमी बुलाकर धान

कराता था ! पत्नी से उत्पन्न कई लड़कियाँ थीं। बुटू रानी के घर दो लड़के थे। लड़कों को भी उसने छोटी जाति पर अविश्वास करना सिखा दिया था। बुटू रानी को उसने दो बसें और एक 'सिनेमा हाउस' बनवा दिया था। 72 साल में कांग्रेस का ज़ोर-शोर था। जागुला के पड़ोस में, काँकड़ासोल में नक्सलवादियों की गड़बड़ नहीं हुई, होना संभव भी नहीं था। जागुला की सेक्यूरिटी बहुत टाइटेंड थी। नक्सली बदजातों को 'खोजकर नष्ट करने' के लिए चारों ओर पुलिस-जीपों के आने-जाने की सड़क थी। इस तरह की सुरक्षा में रामेश्वर को जो करना स्वाभाविक था, उसने वही किया। उसने बटाई के किसानों को भी क़र्ज़ से झँझरा कर दिया था। और उनके हिस्से में से मनमाना काट लेता। खेतमजूर हों, कटैया हों, उनके रेट—बड़ों का तीस पैसे, छोटों के बीस पैसे थे। जलपान का ख़र्च रामेश्वर का रहता। वह किसी दिन भी मजदूरों की मुसीबत में न पड़ा, क्योंकि वह घर पर बीस बिहारी लठैत पाले रहता। जरूरत-बेजरूरत कांग्रेस के लड़के और थाना उसे मदद देते रहते। सत्तर के बाद उसको सुविधा अधिक हो गयी। एक बीघा जमीन में जितना अनाज उत्पन्न होता, बीघा-भर धान काटने के लिए उससे भी अधिक संख्या में मजूर मिल जाते। सत्तर और इकहत्तर—दोनों बरस जमींदार-महाजन के लिए आशीर्वाद बनकर आये थे। अगर एक जमींदार का सिर जाता, तो प्रशासन उसके बदले एक सौ सिर लुढ़काकर बदला लेता। जो विरोध करते वे सारे बखेड़ा खड़ा करने वाले खेतमजूर गाँव से भगा दिये जाते। वे तमाम लोग जिंदगी-भर भी लौट पायेंगे या नहीं, कोई नहीं जानता। परिणामस्वरूप जिले में दिखायी पड़ने वाली बड़ी भारी जनसंख्या फुटकर में किसी भी रेट पर धान काटने को घूमती फिरती। जो लोग उचित मजदूरी माँगने के अमार्जनीय अपराध के अपराधी होते उन्हें इस प्रकार निकाल बाहर करना ही प्रशासन को उद्दिष्ट था। प्रशासन का एक और गहरा, गोपनीय और महान उद्देश्य है। प्रशासन भारतभूमि में एक और नया गोंडवाना-युग लाना चाहती है। उस गोंडवाना भारत में केवल डाइनोसर[1] और मेरुदंडहीन जीव रहेंगे, अर्थात् एक ओर रहेंगे रामेश्वर गूँया, और दूसरी ओर रहेंगे 'लाठी की चोट से खोपड़ा फटे पर मुँह न खुले' इस तरह के सदा लाचार रहने वाले नंगे किसान। अफ़सोस की बात तो यह है कि कुछ रीढ़वाले जीव इन भूमिहीन खेतमजूरों के बीच भी पैदा हो गये हैं। नक्सलवादियों की मदद से भी कुछ मेरुदंडी पैदा हो गये हैं। वे पैदा होते रहें। जन्म और देश में भगवान का

1. दीर्घकाय रेंगनेवाले प्रागैतिहासिक पशु।

हाथ है, वह हाथ कोई काट नहीं सकता। जन्मदान ही गरीबों का सोल रिक्रीयेशन[1] है, अपने अस्तित्व का जस्टिफ़िकेशन[2]। जो पैदा होते हैं उनमें प्रति वर्ष के एक भाग रानेश्वर आदि के रोकड़-खाते में जमीन लिखकर भूमिहीन खेतमजूर या देनदार कुछ-न-कुछ बन जाता है। होता रहे। जिसे जो होना है वही होगा। प्रजातान्त्रिक स्वतंत्रता किसी किसान के महाजन का शिकार होने का अधिकार नहीं छीन लेती। आज के खेतिहर से कल के खेतमजूर बनने का अधिकार भी नहीं छीनती। भारतीय संविधान में अपनी हिम्मत से जो चाहे बनने का अधिकार अत्यंत सम्मानित है। इन सब दूसरों की जमीन जोतकर जीवित रहने वाले मनुष्यों को कोई सरकारी या शक्तिशाली संगठन की मदद नहीं मिलती। इनको कोई मदद न देने का प्रजातान्त्रिक अधिकार सरकार और कृषि-संगठनों को है। उसके बाद है रीढ़वालों के एलिमिनेशन[3] की बात। प्रशासन चाहता है कि रीढ़वाले समाप्त हो जायें। हमेशा डाइनोसर-बनाम-मेरुदंडीय संघर्ष में गोली चला-कर मेरुदंड वालों को मारना अच्छा नहीं लगता। विशेष रूप से 72 के वर्ष में, जबकि कांग्रेस की नीति ही अहिंसा की है। इसीलिए खेतमजूरों को बेघर होकर निकालने से ही प्रशासन का उद्देश्य पूरा होता है। वे धान काटने जायेंगे। जमींदार लोग उन्हें मनमानी मजूरी देंगे, न होगा तो कटैया ले लेंगे। तब कटैया लोगों के साथ खेतमजूर झगड़ा करेंगे। लड़ेंगे कौन? जो रीढ़वाले हैं, जो उद्दंड हैं, जो विरोध में विश्वास रखते हैं, संघर्ष में अपने को मारकर समाप्त होंगे। ऐसा होते-होते एक दिन सारे उपद्रवी तत्त्व समाप्त हो जायेंगे। बच जायेंगे डाइनोसर, रहेंगे बिना रीढ़वाले। यह हाल सब सरकारों को काम्य है। लेकिन डाइनोसर हमेशा यह नहीं समझते। इसीलिए खुद भी लड़ने वालों को समाप्त करने को बढ़ते हैं और प्रशासन को असमंजस में डाल देते हैं। हो सकता है कि जमींदार लोग प्रशासन को खुश करने वाला दूसरा पक्ष हों, किंतु सर्वदा प्रत्यक्ष मदद देना क्या अच्छा है? प्रेम-प्यार जितना छिप-छिपकर हो, उतना ही क्या अच्छा नहीं होता? जमींदार यह नहीं समझते। जिस काम को छिपा-छुपाकर करने की जरूरत है, उस काम को करने में नक्सलवादी, या जे०पी०-मार्गी, या किसी दूसरे नाम की ओट की जरूरत है, उस काम को जमींदार लोग प्रत्यक्ष रूप से करने को कहेंगे। कैसी मुसीबत की बात है! जैसे किसी को जलंधर या अंड-कोषवृद्धि हो, तो ऐसे आदमी से बहुत अनुरोध कर नादान प्रेमिका कहे, 'तुम सबके सामने सब-कुछ उतार कर स्नान करो, नहीं तो मैं

1. एकमात्र मनोरंजन 2. औचित्य समर्थन 3. मिटा देना।

भोजन नहीं करूँगी।' जमींदारों के इस तरह के व्यवहार के लिए प्रशासन बिलकुल तैयार नहीं है। ऊपरी तौर पर अहिंसक रूप की इससे क्षति होती है। लेकिन कौन किसको क्या समझाये ? जमींदार कुलांगना हैं, उनके घर से आँगन विदेश है। अपनी जमीन, मजूरी बिना दिये धान कटाना, मजूरी माँगनेवालों का सिर काट लेना, उपद्रवियों के लिए 'मीसा', इसके सिवा वे कुछ नहीं समझते। कुलांगना की भाँति ही वे जमींदारी जीवन से संतुष्ट हैं, पढ़ना-लिखना नहीं समझते, क-अक्षर गोमांस के समान है। भारत के बाहर प्रशासन की इमेज बिगड़ेगी इसलिए वे अभिमान के साथ सोचते हैं, 'यह क्या ? इसके लिए इतना अँग्रेजी बोलने की क्या जरूरत ?' हाय ! मालिक लोग जिस तरह दूसरे पक्ष को समझा नहीं सकते, 'सुनो, हमारा एक क्षमाहीन कर्मजगत है।' प्रशासन भी जमींदारों को समझा नहीं पाता, 'भाई, हमारा जाल पकड़ने के लिए एक क्षमाहीन प्रेस है। हमारा जाल छपने पर ख़ुशियाँ मनाने वाला एक दूसरा भारत है।' सब-कुछ होने के बाद भी प्रशासन जमींदारों का स्वार्थ ही देखता है। महात्मा लोग भी दूसरे पक्ष की बात पर उठते-बैठते हैं, कैकेयी का दृष्टांत स्मरण रखने योग्य है।

तभी रामेश्वर इस बहत्तर में बेहद जिद पकड़े है कि इस बार वह आस-पास के किसी को काम न देगा। सब काम बाहर के कटैयों को देगा। रामेश्वर पर मानो बहत्तर छा गया हो। बहत्तर साल बुरा नहीं है। बहुत-से जाले प्रशासन में घुस आये हैं। तमाम केनाराम[1] मंत्री-उपमंत्री बन गये हैं। चुनाव के बाद की हवा में ख़ूब नोट उड़ रहे हैं। उत्तर जागुला थाने का एस० आई० छूत मानने वाला नहीं है। रामेश्वर और बुटू रानी को होली के दिन ताज़े बच्चे की तरह रबड़ के टायर पर तैरना अच्छा लगता है और लगता है कि पृथ्वी पर कहीं-कहीं भोली, निर्मल ख़ुशी रहे। फूल खिलना, तितलियों का उड़ना, बुटू रानी का पानी में तैरना—यह सब भूलकर केवल नीरस बनने से क्या फ़ायदा ? किंतु रामेश्वर की ख़ातिर अगर वही समस्या रोके तो यह बात वह रामेश्वर से सोच देखने को कह देते हैं। रामेश्वर से सविनय कहते हैं। रामेश्वर इतना बड़ा जमींदार है कि पश्चिमी बंगाल में उसके-से धनी ज़मींदार बहुत नहीं हैं। सच कहने में क्या, रामेश्वर को बीच-बीच में अकेलापन लगता। बिहार होने पर, हाँ ! दो रेल-स्टेशनों के बीच दोनों ओर की सारी जमीन उनकी, इस तरह के जमींदार बहुत हैं।

1. जो ख़रीदे जा सकें।

रामेश्वर तेज होकर कहता, 'तुम कह क्या रहे हो, मशाय ? पता है ? यहाँ के किसने एक खेतमजूर-लड़ाकू दल बना लिया है ? वे अगर आयें ? इन्हें भड़कायें ?'

'भड़काने पर देखा जायेगा।'

'नहीं जी ! तब गड़बड़ हो जायेगी। मैं उनमें नहीं हूँ, मशाय। पहले कटैया लाऊँगा, जरूरत हुई तो बैठाकर खिलाऊँगा। नक्साली लोगों से गाँव में परेशानी है, आजकल मच्छरों से ज्यादा हैं।'

'देखिये,' कहकर एम० आई० ने मामला साफ किया, 'फ़ौरन सदर शहर जाकर डी० एस० पी० से बातचीत की रिपोर्ट करेंगे। कांग्रेस के कमलापति बाबू को भी कान्फिडेंट ऑफ फैक्ट्स[1] कर आयेंगे। ये खेतमजूर कौन-कौन हैं, यह जानने के लिए डी० एस० पी० ने उन्हें धमका दिया है।' एम० आई० उनके विशाल भवन को घुरच कर भी कुछ न जान सके।

इसी से, कॉकड़ामोल में गड़बड़ जानकर वह बहुत घबड़ा गये। उनको खबर देने वाले ने बताया, 'बसाई टुडु इन ऐक्शन।' उससे उनके मन में कोई खास बात न हुई, क्योंकि बसाई टुडु की मौत और लाश को शनाख्त करने में वह नहीं थे। उस वक्त वह उस थाने में नहीं थे। 'बसाई' के संबंध में किसी ने उन्हें कुछ बताया नहीं, क्योंकि मृत्यु और लाश की शनाख्त के बाद फ़ाइल बंद रही। किंतु देउकी मिसिर ने आगे बढ़कर ऊँट की गरदन की तरह झुककर पढ़ने के बाद कहा, 'क्या कहते हैं ?'

'कोई एक बसाई टुडु !'

'लीजिये, लीजिये, जाइये। चले जाइये सदर। जाकर फिर डी०एस० पी० को रिपोर्ट कीजिये।'

देउकी मिसिर ने एस० आई० को फाँद कर खुद फ़ोन किया और टेलीफोन की बातचीत सुनकर एस० आई० समझे कि यह साइंस-फ़िक्शन की रियालिटी है। उन्होंने जोजेफ हेलर या भारतीय दर्शन भी नहीं पढ़ा था। इसी से बसाई टुडु जीवित है, या बसाई टुडु मृत है, इस रहस्य को वह न समझे। बसाई टुडु का चेकर्ड केरियर[2] सुनकर उन्हें चक्कर आ गया। डी० एस० पी० ने उन्हें फोन पर बुलाया और बोले, 'फ़र्दर इन्फार्मेन्ट[3] जा रहा है। आप चले जाइये। मिसिर को दीजिये।' मिसिर ने फिर फ़ोन लिया और जो सारी बातें कहीं उन्हें सुनकर एस० आई० के शरीर और मन पर जैसे प्रक्षेपास्त्रों की वर्षा हुई हो। 'बसाई—हाँ-हाँ, आइडेंटिफाई—काली सांतरा—मैं बिलकुल विश्वास नहीं करता—इस बार सामन्त

---

1. तथ्यों से अवगत 2. बहुविध जीवन 3. आगे की सूचना देने वाला।

को ?—सामन्त तो जेल में है—देखता हूँ—।' मिसिर ने फ़ोन छोड़कर देखा कि एस० आई० उस वक़्त बटरफ़्लाई मूँछों के नीचे ताज्जुब से मुँह खोलते हैं और वंद करते हैं। उन्हें ठंडी साँसें लेते देखकर मिसिर को दया आयी। यह क्या समझ रहा है, किसके ख़िलाफ़ घटनास्थल पर जा रहा है? किसान-सभा के कार्यकर्ता के रूप में लगते हुए जागुला थाने का त्रास था। जागुला थाना अब ज़रूर वालिग़ और हिम्मतवर हो गया है। लेकिन यह मच्छर-सा मरियल सद्गोप[1] एस० आई० (मिसिर जाति पहले देखता था) क्यों जा रहा है? मरने को यह बेटा मरेगा, डी० एस० पी० नाम कमायेगा; हटाओ, इसी नियम से दुनिया चलती है। उसने एस० आई० से कहा, 'चले जाइये। यह वसाई आदमी बुरा है। वर्छी मारे, या तीर छोड़े! होशियार रहियेगा। अगर उसे मार सके तो आप डी० एस० पी० हो जायेंगे, मैं आपको सलाम वजाऊँगा।' ये बातें सुनकर एस० आई० के मन में घोर निराशा दिखायी पड़ी। देउकी मिसिर ने जितने एस० आई० लोगों से कहा, 'आप डी० एस० पी० वनेंगे, मैं सलाम वजाऊँगा'—वे सभी लोग ख़िले जाते थे। एक आदमी गया वीरू पाठक के साथ असली एनकाउंटर[2] में। दोनों ओर की गोलियों की बौछार में वीरू पाठक के हाथों एस० आई० और पुलिस के हाथों वीरू पाठक मारे गये। दोनों लाशें थाने के बरामदे में आस-पास रखी गयीं। एक और आदमी इकहत्तर में अचानक प्रमोशन पाकर मात्रा से अधिक आनंद में चैत की गर्मी में शिव-भक्त बन-कर गाँजा और भाँग पीकर नाचने से गर्मी से मर गया। तीसरे आदमी को जिस तरह जान से हाथ धोना पड़ा, वह अत्यंत शोचनीय, मर्मान्तिक और अफ़सोस का क़िस्सा है। यह एस० आई० थोड़ा पगलैट और देहतत्ववादी था। पेट की बीमारी में हल्दी-चीनी खाने को कहे जाने पर उन्होंने गाकर कहा था, 'हल्दी-चीनी खाऊँ न भाई! हल्दी क्या भाई साथ जायेगी?' वीरू पाठक की मौत के वाद कोई फ़ॉलो-अप ऑपरेशन में इस एस० आई० ने वैष्णवों की तरह. उन लोगों पर जो घंटा भोंपू-गोले-पटाखे लिये शोभा-यात्रा पर काँस के जंगल से निकल कर आक्रमण किया, एक ग्वालों की बारात ने डर के मारे अनगिनत गोले और पटाखे एक साथ छोड़ दिये। उस मिले-जुले शोर में घबरायी पुलिस ने घबराहट में अपने ही लोगों पर ख़ुद गोलियाँ चलायीं। उससे बहुत-से फूलदार काँस के डंठल, एस० आई० और एक ढोलक मारे गये। तब एस० आई० को ही देउकी मिसिर ने डी० एस० पी० बनते देखा! एस० आई० संताप से लाचार हो गये और

1. अहीर 2. मुठभेड़।

पत्नी की बात याद कर एक 'कांच-काटे हीरे' के डिजाइन की साड़ी, एक ब्लाउज़ दुकान से लेकर घर लौटे। उसके बाद आँखों में आंसू भर पत्नी को प्यार कर कौकडासोल की ओर रवाना हुए।

रास्ते में ही रामेश्वर के साले से भेंट हुई। उसने कहा, 'सत्यानाश हो गया। साले कई सान्यालों ने आकर घेरा डाल दिया है। सालों के कटैये लोग भी सान्याल हैं न? उस पार जाकर बसाई टूडू के साथ शामिल हो गये हैं। वे कह रहे हैं, अड़सठ की मजूरी कटैयों को भी देना होगी। भाले खेतमजूर को भी।'

'हथियार हैं?'

'हथियार? ब्याप रे, इतने हथियार आपने भी नहीं देखे होंगे। ये साले कटैये, ब्याप रे, सब सांप के बच्चे हैं—वे अच्छी तरह से भीतर आये, रहे, खूब खाया, बोले—इन गठरी-मुटरी में हमारी चीजें हैं। वे भी बसाई के आदमी थे। सारी गठरियों में हथियार थे। जमाई दादा को उन लोगों ने अंदर घेर लिया, बाहर बसाई था।'

'लठैत?'

'बसाई ने उनके कोठे में घुसकर ताला लगा दिया, मशाय। कांग्रेस के लौंडे मजा देखते रहे।'

'क्या कहा बसाई टूडू ने?'

'जाकर सुनिये।'

एस० आई० और बारह कांस्टेबल जब पहुँचे तो एक असामान्य दृश्य देखा। सारे पात्र बाहर थे। मंच हेमन्त के धान का खेत बना था। रामेश्वर बीच में था। कांग्रेस के छः युवक बड़े आराम से खड़े थे। एक जवान बौना-सा संथाल रामेश्वर के सामने था।

'फायर मत कीजियेगा।' पहले कांग्रेसी युवक ने जोर से कहा। सैकड़ों संथाल तीरकमान, हँसुआ, कुल्हाड़ी, बर्छे, कोंच भाले, बल्लम इत्यादि आदिम हथियार लिये खड़े हैं। सुनहरे धान, काले आदमी, नीला आकाश, धान के खेतों में हरे तोतों के झुंड। यह युवक कांग्रेस के उच्चाभिलाषी, तरुण, बिलकुल खराब न होकर, जो रामेश्वर को पसंद नहीं करते थे, उनमें से एक था।

'क्या बात है?' एस० आई० ने पूछा।

'ये लोग एम० डब्लू० चाहते हैं। देना पड़ेगा।' आदमी ने कहा।

'तुम कौन हो?'

'बसाई टूडू! आप कहो दारोगा। तुम से बड़े अफसर मुझे 'आप' कहते हैं।'

'क्या कह रहे हैं ?'

'एम० डब्लू० नहीं दिया। इन्होंने दस दिन काम किया, दस दिनों की मजूरी न देने पर कोई खेती नहीं उठायेगा, किसी को धान काटने नहीं देंगे। न, नहीं काटने देंगे।'

कांग्रेसी युवक बोला, 'मुझे कहने दीजिये। ये लोग उचित बात कह रहे हैं। इनके वेज[1] देना होंगे।'

'मर जाऊँगा।' रामेश्वर बोला।

कांग्रेसी युवक बोला, 'न ! मरेंगे नहीं। भारी मुनाफ़ा रहेगा। मैं दिशाई-ब्लॉक में अपने चालीस बीघा जमीन पर एम० डब्लू० दे काम करा कर अभी आ रहा हूँ। नुक़सान नहीं हुआ।'

'मर जाऊँगा।'

'तब धान नहीं काटने देंगे।'

कांग्रेसी युवक अब व्यक्तिगत बात करता है, 'मैंने पहले नहीं दिया, अब दे रहा हूँ। देना पड़ेगा। नहीं तो पार्टी-इमेज नष्ट हो जायेगी। आप भी देंगे।'

बसाई बोला, 'वह बेकार की बात छोड़ो। रामेश्वर भूँया वादा करे। पुलिस के रहते धान काटे जायें। कोई गड़बड़ न होगी। नहीं तो, धान काटने नहीं देंगे। तुम क्या कहते हो ?'

'तुम जो कहो हे, बसाई।'

'मैं नहीं दूँगा।'

'दोगे। नहीं तो लहास गिरा दी जायेगी।'

'ना, ना, डोंट टेक टू वॉयलेंस[2]।' कांग्रेसी युवक बोला।

'लहास गिराना बुरा लगता है ? तभी बरानगर में नाच आये ?'

'आ : !'

'बेकार बातें रहने दो। फ़ैसला करो।'

रामेश्वर बोला, 'दारोग़ा, खड़े-खड़े मज़े ले रहे हो ? मैं तुमको थाने का सिपाही बनवा दूँगा। वह बसाई मेरे सोने के-से धान के खेतों में पेट्रोल छिड़क आया है। यह मालूम है ?'

अचानक एस० आई० की समझ में आया कि रामेश्वर और कांग्रेसी युवक एक ही खेल खेल रहे हैं। बात बढ़ाकर और एन्फ़ोर्समेंट[3] आने की राह देख रहे हैं। या कम पुलिस आयी है, यह देखकर समझे हैं निशाने ज़्यादा हैं, मारने वाले कम हैं। इसलिए फ़ैसला कराने का प्रयत्न कर रहे हैं। संतोष-

---

1. मजदूरी 2. हिंसा पर मत उतरो 3. सहायता कुमक।

द्वैत है वही अद्वैत है, प्रकृति और पुरुष, सीमा और असीम, शिव और शक्ति इत्यादि। विशालकाय रामओतार नाम का सार्जेंट बोला, 'उतरो वैन से।'

'हम कांग्रेस के लड़के हैं।'

'तेरी कांग्रेस की ऐसी की तैसी, उतर साले !'

उसने धमकाया और लड़के धमकी खाकर उतर पड़े और आँखों में आँसू भरकर बोले, 'ठहरो, मज़ा चखाऊँगा।'

'हाँ-हाँ, सब सालों ने चखाया, तू भी चखायेगा।'

रामओतार स्थिति का कर्णधार बना। अब यात्रा शुरू हुई। वैन में ज़िन्दा, मुर्दा और सांस लेने को तड़फड़ाता रामेश्वर, डी० एस० पी०, बसाई, मृत एस० आई० और दो संथाल चढ़े। रामओतार बोला, 'और गोली मत चलाओ, तलाश करके जितने मिलें, सालों को उठा कर ले आओ।'

तीर खाये हुए पुलिस-जीप में चढ़े। दो संथाल भी थे। उसके बाद जीप चली गयी।

बाद में पता चला कि डी० एस० पी० और एस० आई० के न रहने से कौन हुकुम देता, कौन मेन्टल नोट लेगा कि इन लोगो ने जान लड़ाकर काम किया—इसीलिए पुलिस चली आयी। यह काम ग़लत हुआ, यह भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ले आने से डी० एस० पी० और रामेश्वर को सदर अस्पताल में भेजा गया, बसाई को भी। बसाई को बचाने के लिए भी जी-जान से कोशिश हुई। यह प्रशासन का एक और रहस्यमय व्यवहार है। बसाई को जिस बात के लिए बाद में फांसी दी जायेगी, इसीलिए अभी उसे बचाने की जी-जान से कोशिश हो रही है। जेल के अत्याचार के बाद भी यह होगा। जेल के अमानुषिक अत्याचार से शरीर का कीमा बना, बाद में इंसान सब तरह से रिबिल्ड[1] किया जाता है। फिर अत्याचार। रिबिल्डिंग। प्रशासन नामक विश्व-शिशु का यह एक अनमना-सा खेल है। लेकिन संगीन की चोट से छिन्न-भिन्न बसाई अस्त होता रहा। इस वक़्त अस्पताल को पुलिस से घेरकर रखा गया। अब काली सांतरा को और लोगों के साथ फ़ौरन लाया गया। बसाई की नाक में ऑक्सीजन की नली थी। पेट की पट्टी ख़ून से भीगी जा रही थी। मुंह के कोने से ख़ून मिला फेन निकल रहा था।

'पास जाइये,' ए० पी० बोले।

---

1. पुनर्निर्माण।

कालो पास गया।

'झुकिये।'

काली झुका।

'पुकारिये।'

'बसाई! बसाई! बसाई!'

बसाई ने आँखें खोलीं। समय बीत रहा था। बसाई की आँखों में मुसकराहट खिली। काली ताकता रहा। बसाई की आँखें धूमर हो रही थीं, मौन से। काली की आँखें मैली हो रही थीं, आँसुओं से। दोनों एक-दूसरे की ओर देखते रहे। बसाई के दोनों हाथ हिले, काँपे, ऊपर उठे। हवा का गला मरोड़ा। गिर पड़े। उँगलियाँ हवा को खुश्क कर कुछ लिख रही थीं। जाने क्या लिख रही थीं? पुलिस-फोटोग्राफ़र, फ़्लैश-बल्ब। 'हट जाइये, काली बाबू! येस, फ़ट फ़ेम।'

काली आच्छन्न-सा निकल आता है। वह यन्त्राविष्ट है। बसाई उँगलियों से क्या लिख गया? वह तो लिखने में विश्वास नहीं करता था।

'काली बाबू, कम टू थाना।'

थाना। तेज रोशनी। थानेदार थके हुए। उज्ज्वल, कठिन, पाइप-सुरभित एस० पी० विनम्र हैं।

'हाँ।' काली अभी बहुत दूर था।

'पिछली बार भी यही कहा था।'

काली हँसता है। धूमर, तनाव की हँसी। कहता है, 'देखिये, पिछली बार...,' वह मुँह घुमा लेता है। आँखें मिचमिचाकर दीवार की ओर देखता है। ना। इनके सामने नहीं। एस० पी० समझ गये।

'देखिये, पिछली बार मुझे दिखायी गयी थी एक विकृत, फूली, आधी सड़ी बॉडी। पुलिस ने कहा, 'मरने के पहले इसने हवा ..इसने.. हवा. . इसने हवा का गला दबाकर मरोड़ दिया था दोनों हाथों से। उसके सिवा...।'

काली आँखें उठाता है। साफ़ आवाज में कहता है, 'उस वक्त फ्रंट की रेजीम[1] थी। वह होने पर भी एस० आई० ने मुझसे कहा था कि मैं उसे 'बसाई' बताकर ही आइडेंटिफ़ाई[2] करूँ।'

'इसीलिए?'

काली थोड़ा करुणा से भरकर देखता रहता है। यह आदमी क्या जाने, किसकी बात कह रहा है? बोला, 'नहीं। मैं काली सांतरा हूँ। झूठ बात

---

1. राज्य या 2. शनाख्त।

नहीं कहता। मुझे भी लगा था कि वसाई था। उसकी हाइट में, चेहरे की गढ़न में, बालों में अगर समानता रहे। शरीर अगर विकृत हो जाये, तो मैं समझ सकता हूँ कि वह वसाई टूडू है।'

एस० पी० थोड़ा वक़्त बीतने देते हैं। उसके बाद कहते हैं, 'हाइट? हाइट, काली बाबू?'

'पता नहीं। मैंने नापी नहीं।'

'अः।'

'मेरे जाने का इंतज़ाम कर दीजिये।'

'आज थाने में रहिये। कल उसका बॉडी खुले बरामदे में रखवाकर आइडेंटिफ़िकेशन-परेड कराऊँगा। उसके बाद जाइयेगा। सेन बाबू, काली बाबू के कम्फ़र्टेब्ली[1] रहने का इंतज़ाम कर दीजिये। मच्छरदानी दे दीजियेगा। चाय, बाथरूम—किसी बात की असुविधा न हो। इट्स एन ऑर्डर[2]।'

सवेरे। थाने का बरामदा। वसाई। प्रशासन सब कर सकता है। सवेरे आठ के बीच बस संथालों को लाने चली।

'हैं! टूडू?'

'वसाई बेशक।'

'वसाई टूडू।''

'हैं, वह है बेशक।'

'वसाई।'

'टूडू।'

'हाँ, वसाई टूडू।'

'वसाई टूडू बेशक।'

'पैर में घाव?'

'गोली की चोट से।'

'पुरानी चोट।'

'माथा कट गया था साइकिल से गिरकर।'

एक बस और। पलताकुड़ी के उस पार से। चाताडोर और सरदह और नुराट् और...आइडेंटिफ़िकेशन-परेड वेंट ऑन एंड ऑन एंड ऑन...।[3] पुरुष और स्त्रियाँ बस से उतरकर पैदल आ रही हैं, मँडराती नज़रों से, यथोचित, गंभीर, पक्के क़दमों से। पलताकुड़ी से संथालों के आने के बाद शवदेह की प्रदक्षिणा करके जाने के समय दाहिना हाथ ऊपर उठाते हैं और

1. आराम से 2. यह हुक्म है, यह आदेश है 3. शनाख़्त-परेड चलती ही रही।

इसी तरह हाथ उठाये वन की तरफ चले जाते हैं। पीछे नहीं घूमते। मैस्ट्रो की तादाद मौन कष्ट में है। कोई बोल नहीं रहा है। बच्चे रोते नहीं हैं। बाकुली से एक और बस आयी। सबसे आगे उतरकर बढ़ी आ रही है एक आश्चर्यजनक रमणी। वह बहुत ही काली है, जिस तरह संथाल औरतें हुआ करती हैं। वह बहुत अद्भुत थी, क्योंकि उसका शरीर बहुत आश्चर्यजनक था। पत्थर-सा गढ़ा। वह बहुत ही आश्चर्यजनक थी, बहुत आश्चर्यजनक, क्योंकि उसका चेहरा अभिव्यक्तिहीन नहीं था। एक आश्चर्यजनक व्यक्तित्व था। वह स्त्री इस तरह उतरी और बढ़ती गयी जैसे वही वहाँ एकमात्र स्त्री हो। एकमात्र पुरुष के पास जा रही हो। वह स्थान जैसे थाने का बरामदा न हो। काली ने लक्ष्य किया कि औरत के बालों में कोई जंगली फूल है। औरत ने सामने देखकर पीछे हाथ बढ़ाकर एक युवक का हाथ पकड़ा। दोनों हाथ पकड़े बढ़ रहे थे। फिर भी औरत अकेली थी, वह अकेली, निर्जन में, किसी पुरुष से मिलने आयी थी। कनान का गर्जन। सबेरा था। आकाश में फटे हुए, पानी-भरे अप्रतिम बादल थे, अपराधी बालक की तरह मानो किसी का ध्यान खींचने के लिए उड़े आ रहे थे। वैशाख के हिसाब से हवा ठंडी थी। बसाई पानी में घुटनों तक डूबा पत्थरों के बीच में मछलियाँ खोज रहा था। 'क्यों कमरेड! मेरी बात कह रहे हो?' ज़रा भारी उच्छ्वसित स्वर था। काली ने चौंककर पीछे देखा था। आकाश और धरती खोयाई नदी की पृष्ठभूमि में जैसे सब-कुछ उसका हो, इस प्रकार रानी के ढंग से एक रमणी खड़ी थी। बसाई ने उससे शादी करना चाहा था, लेकिन उसने अपनी पसन्द के आदमी से ब्याह कर लिया। औरत आगे बढ़ गयी। खड़ी हुई। बसाई को देखा। आँखें उठायीं। गरदन घुमाकर एम० पी०, पुलिस—सबको देखा। बसाई को देखा। काली संतिरा को। आँखों में कोई भी पहचानने का चिह्न न था। बसाई को देखा। सिर को ऊपर से नीचे हिलाया। लड़के ने भी। लड़के के चेहरे पर बहुत ग़ौर करने लायक भौंहों का जोड़ा था। वे चले गये। सीधे पैदल।

एम० पी० बोले, 'दोमुदी माझिन। दुलना माझी।' उनका गला सूख गया था। नीचे 'बाकुली' था।

मुसाई टुडू, उसकी माझिन, दोनों बेटे गिधा और सीधा माँ-बाप के हाथ थामे हुए थे। हर-एक का मुँह तनाव से भरा था, निर्वैयक्तिक। उन्होंने काली को नहीं पहचाना। और बहुत-से आदमी। और बसें।

सबेरे सात बजे से शाम सात तक दो सौ इक्यावन लोगों ने बसाई की लाश की शनाख़्त की। कोई मृत-देह के पास नहीं जाता। मृत-देह के पास पुलिस का पहरा था। लेकिन सात बजकर पन्द्रह से लाश के अंतिम संस्कार

के लिए ले जाने के समय देखा गया कि लाश के पैरों के पास मुट्ठी-भर धान हैं। किस तरह ये धान आये, इस बात पर बहुत बहस हुई और रात को आठ बजकर बत्तीस पर देह का पुलिस के पहरे में संस्कार कर दिया गया।

पुलिस-वैन में काली सांतरा जागुला वापस आया। इस बार ऑबिट[1] नहीं। 'काली बाबू कुछ नहीं लिखेंगे।'

कलकत्ते के बड़े अस्पताल में कठिन अस्त्रोपचार के बाद डी०एस०पी० और रामेश्वर बच गये। एस० आई० को मरने के बाद वीरचक्र मिला और उनकी पत्नी को हाइवे के तेज़ बस-जंक्शन पर एक कोकाकोला-कम-कोल्डड्रिंक की दूकान दी गयी। दूकान के उद्घाटन के समय एस० पी० आये और 'कांच-काटे हीरे' की डिज़ाइन वाली साड़ी पहने सद्य-विधवा एस० आई० की पत्नी ने बहुत रो-पीटकर सफ़ेद साड़ी न पहिन, रोते हुए इस साड़ी के पहनने की कहानी बतायी। परिणामस्वरूप उनकी तसवीर 'वही साड़ी पहनी गयी' हेडिंग देकर सबसे अधिक बिकने वाले एक बंगला दैनिक में छपी। अश्रु-सजल कहानी लिखी गयी। उस चित्र में एस० आई० की पत्नी को बहुत ही सुन्दर दिखाया गया था और प्रसन्नता का भाव दिखायी नहीं पड़ा।

रामेश्वर को बचा लिया गया, लेकिन उसके जड़हन धान नहीं बचे।

कांकड़ासाल में उसके घर के सामने सुनहरे धान तो जले ही, उसके अतिरिक्त दूर-दूर तक उसके खेत के बाद के खेतों में पता नहीं क्यों जैसे पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी गयी। आस-पड़ोस के गांव वालों की 'हाय-हाय' के आंतरिक विलाप से सिद्ध हुआ कि उन्होंने घर-घर में नये अन्न से नवान्न होने की संभावना का त्योहार नहीं मनाया। प्रशासन के विशेषज्ञों ने निश्चय किया कि पश्चिम के नमूनों का-सा यहां भी कोई पाइरो-मैनियक[2] हो जायेगा। इससे रामेश्वर को बहुत निराशा हुई और बकरे के साथ भैंसे की बलि देकर प्रायश्चित-पूजा की। अफ़सोस कि इस बार वह शीर्ण देह से अपने हाथों बलि न दे सका। और आधी रात को बूटू रानी से बोला, 'इस बार चलकर बक्रेश्वर के अघोरी बाबा के चरण पकड़ूंगा। महापापी हो गया हूं, क्यों?'

बूटू रानी बोली, 'तो चलेंगे।'

कांग्रेसी युवक छः बसें, राशन की दूकानें, किरासिन का कंट्रोल इत्यादि का लाइसेंस, परमिट इत्यादि मंजूर कराकर अकुशल रामेश्वर के हाथों

1. आबिचुएरी—मृतक का परिचय 2. ऐसा सनकी जिसे आग लगाने में आनन्द मिलता हो।

लौटकर शहर से कट गये।

10

चरमा के जंगल में अँधेरे कमरे में काली सांतरा अब भी बैठकर सोच सकता है, कितने दिनों से उसे सोने में कष्ट हो रहा था? कितने दिनों से 'जिला वार्ता' समाचारपत्र में मन नहीं लगता है? बसाई की बात सोचते ही कलेजे में हूक उठती। पहले लगा था कि वह भावावेग था। बाद में क्लोरोड्रल ने परीक्षा कर उसे तेल-घी या गरिष्ठ पकी चीजें खाने को मना कर दिया। पता नहीं, क्यों एस०पी० उसके पास जल्दी-जल्दी आवाजाही करने लगे? किन्तु इस रेजीम में 'जिला वार्ता' समाचारपत्र में केवल धान की खेती—मैक्सोल क्रिस्म के कीड़े, और साँप के काटने से मृत्यु के समाचार निकलते हैं, इसलिए उनका जोश ठंडा हो गया है।

हालत बहुत शान्त और व्यवस्थित हो गयी है। जिस ढंग पर स्वतंत्रता के बाद भारतभूमि चली थी, वही ढंग चल रहा है—उसी गीत की तरह: 'केकरा-केकरा नाम बतायें? दुनिया में सब चोर हो। मालिक लूटें, महाजन लूटें, और लूटें भगवनवा हो।' इस बीच जागुला में अशांति का कुछ भी नहीं हुआ। बूटू रानी सहसा उग्र ज्वर में मर गयी और थाने के रामभरोसे पांडे की गाय ने छ पैर का बछड़ा जना। यही समाचार हैं।

काली सांतरा जैसे रोजाना जरा-जराकर मरता जा रहा हो। जाते-जाते एक जगह पहुँचकर मन-ही-मन मृतप्राय होकर जीवित रहता है। सर्वदा मन में गंदा और मैला लगता। यह कौन-सी गन्दगी है, जो [illegible] से दूर नहीं होती? यह कैसी अपवित्रता है, जो काम में लगे रहने पर दूर नहीं होती? पार्टी के काम, 'जिला वार्ता' की छपाई—बेकार लगते। इसी समय उसकी पार्टी के लड़कों पर शासन का हमला और व्यापक गिरफ्तारियाँ होने लगीं। उस कारण से दौड़-भाग करते-करते और लड़कों के 'असाइलम'[1] की व्यवस्था करते-करते कुछ दिन बीत गये। [illegible] उम्मीद थी कि उसे ही पकड़ेंगे, वह बेकार हो गयी। और इस बार की प्रजातंत्र-दिवस पर काली सांतरा को हाकिम के पास बैठने का निमंत्रण मिला। हाकिम बोले, 'आप हम लोगों के ही आदमी हैं।'

बाजार में आलू के दाम अचानक चढ़ गये। [illegible] कि कहने की बात नहीं। चीजों के भाव को रोकने की कमेटी ने [illegible]—

1. शरण-स्थान।

के लड़कों ने उन्हें भी बुलाया। उसमें जायें, या न जायें—यह सोचते-सोचते जब 1973 के ज्येष्ठ में एक मध्याह्न में काली सांतरा तेल-मालिश कर रहा था (गर्मी में उसका बदन सूख जाता था और तेल-मालिश करने पर ठीक रहता था) तो थाने से जीप लेकर देउकी मिसिर आये और बोले, 'चलिये।'

'क्यों ?'

'चलकर सुनेंगे।'

'नहाने जा रहा था।'

'नहा लें, नहाकर खाना खा लें।'

काली ने समझा, वह गिरफ़्तार हो गया। स्नान समाप्त कर उसने जल्दी-जल्दी भात खाया। लेकिन जीप उसे थाने नहीं ले गयी। सदर-शहर ले गयी। थाना। एस०पी० रूखी आवाज़ में बोले, 'बसाई टूडू फिर ऐक्शन कर रहा है। बाकुली में। इस बार का मामला पानी है। चलिये! चलते-चलते बताऊँगा।'

'मैं क्या करूँगा ?'

'शनाख़्त करेंगे।'

'वह क्या ?'

'क्या है, यह तो मुझे भी नहीं पता। मोस्ट बैफ़लिंग[1]। सिपाही-विद्रोह के बाद चारों ओर नाना साहब, यहाँ चारों ओर बसाई टूडू। और कुछ पता है ?'

'क्या ?'

'दो लाशें भाग गयीं।'

'लाशें ? भाग गयीं ?'

'हाँ! आर्मी ऑपरेशन। भागने की बात नहीं। गिनती में कम पड़ रही हैं। बेड, वेरी बेड। क्या कर रहे हैं ?'

काली ने अचानक जेब में हाथ डाला था। एस० पी० की आँखों में डर था। जीवन में किसी भी हालत में काली मीर न हो सका। अब वह हो सकता है, क्योंकि जब तक उसका हाथ जेब में है, तब तक एस०पी० को डर है कि काली रिवॉल्वर निकालेगा। सत्तर और इकहत्तर साल में एक ओर जिस तरह ट्रैफ़िक पुलिस के हाथों में रिवॉल्वर दे दिये थे, दूसरी ओर उसी तरह प्रशासन ने पुलिस के मन में डर भर दिया था। रिवॉल्वर का हत्था उनके हाथ में, नली निशाने की ओर, इसी में पुलिस अभ्यस्त

1. बहुत अधिक चकरा देने वाली बात।

हो गयी थी। यही कायदा था। लेकिन सब बातें हमेशा कायदे से नहीं होतीं। पृथिवी और सौरजगत तो एक ही महाविश्व की दुर्घटना के परिणाम हैं। सब-कुछ कायदे से होने पर डी० एस० पी० के पेट में घाव क्यों लगा था? काली को हँसी आयी। टार्गेट के हाथ में रिवॉल्वर का मुट्ठा, नली पुलिस की ओर—सोचकर भी पुलिस को डर लगता है, और अधिक डर। हमेशा नली के मुँह की ओर लगे टार्गेट से डरते पुलिस को नहीं देखा। स्लोगन देते सुना था। उद्धत अस्वीकार देखा था। हाँ, मौत से डर नहीं लगता। मार साले। पुलिस तुम जितना ही मारो, महीना का वेतन तुम्हारा एक सौ बारह रहेगा। काली सिगरेट और दियासलाई निकालता है। एस० पी० आश्वस्त होता है। काली झुककर, हवा-बचा सिगरेट सुलगाता है। पूछता है, 'क्या हुआ था? क्या बात है?'

जागुला और बाबुली की दूरी मोटर-रोड से इक्कहत्तर मील है। एस० पी० चट से चेहरे पर और आवाज में पदमर्यादा का फ़ासला ले आते हैं। कहते हैं, 'मैं कह रहा था, पान खाया जाये। खायेंगे? इस दूकान पर अच्छा पान लगता है!'

जीप रोकी जाती है। पान ख़रीदे जाते हैं। एस० पी० गाड़ी पर चढ़ जाते हैं। जीप चलती है। एस० पी० को बसाई के फिर प्रकट होने पर डर लगा है, वह उनके बात करने के ढंग से पता चलता है। काली समझता है। 'बसाई टुडु इन ऐक्शन अगेन' सुनने के साथ-साथ उसके अंतर में मैल धुलता जाता है, अपवित्रता। बहुत सफ़ाई, अपने को निर्मल और बलिष्ठ मन का लगता है। काली इस जीप, इस एस० पी० को फेंक सकता है, क्योंकि बसाई इन ऐक्शन अगेन। यद्यपि वह बसाई की लाश ही देखने जा रहा है। ना, इस बार की तरह, इस जीवन की तरह, जीवन तो एक ही है—बसाई काली साँतरा को जीवित छोड़ गया। पिछली बार की मौत को मृत्यु में और शनाख़्त करने में फ़ाइनल[1] थी।

एस० पी० ने पान की पीक थूकी। सब-कुछ चल रहा है। गरम! चिलचिलाती धूप। एस० पी० बातें कर रहे हैं।

इस वैशाख में भयंकर गरमी थी। वैशाख में जिस वर्षा की आशा थी वह न हुई; जेठ में भी नहीं हुई। नक्सली आग ठंडी हो गयी। ज़मींदार लोग शासन के प्रोटेक्शन[2] में आंदोलनकारी तत्वों को गाँव से भगाने में ख़ुश हैं। सत्तर-इक्कहत्तर के रिएक्शन[3] में राढ़ और बंगाल के बटाई वाले किसान घूमते-फिरते चिड़ियाघर बन गये। कहीं जगह न मिली और धान

1. अंतिम 2. सुरक्षा 3. प्रतिक्रिया।

के मौसम में 'मज़दूर चाहिए ? पेट-भर भात के लिए काम करेंगे, पैसे नहीं चाहिए।' यह कातर और करुण पुकार सुनहरे पंख की चीलों की तरह धान के खेत के मालिकों के दोनों ओर उड़-उड़ कर फिर रही थी। गँदली दृष्टि लेकर आदमी, औरतें और बच्चे चले जाते। ज़िंदा रहने लायक़ मजूरी माँगी थी, प्रशासन के विरुद्ध फिरते सूखे हाथों खड़े थे, यही उनका अपराध था। रुकावट का अपराध कोई प्रशासन कभी माफ़ नहीं करता। विरोधियों को प्रशासन समझा देता है कि कुल्हाड़ी और तीर और हँसुए से गोली कितनी शक्तिशाली है! कितना सर्वशक्तिमान प्रशासन का खून का, बिना दाग़ का अप्रत्यक्ष पीसना होता है! क़ानूनी कर खेतमजूर को मिलेगा। क़ानून को काम में मत लाओ। ज़मींदार मजूरी न देकर अदालत जा सकता है। है हिम्मत? प्रशासन चुप है। विरोध करोगे? ज़मींदार सरकार से नहीं डरता। उसे सहायता की ज़रूरत होगी, तो मदद मिलेगी और पुलिस की सहायता भी मिलेगी, इसलिए, 'मज़दूर लगा लो' दरवाज़े-दरवाज़े की करुण पुकार है। हवा के झपट्टे की तरह, शून्य आकाश में दुपहरिया की चीलों की चीख की तरह। मन की खिड़की बंद कर देते ही आवाज़ सुनने की परेशानी से बचा जा सकता है।

इस जेठ में भयंकर गरमी थी। आकाश जल रहा था, धरती चटख रही थी और आदमियों को पानी की ज़रूरत थी। कनाल का पानी गरज के साथ छोड़ा गया था। बाकुली गांव में सूर्य साउ कनाल से पानी नहीं ले रहे थे। खेती नहीं कर रहे थे। अपनी आँखों, बिना क्षोभ के देख रहे थे—उनके धान के खेत फट रहे हैं, दरारें पड़ रही हैं, दरारें बड़ी हो रही हैं। देख रहे थे, सवेरे और रात में कनाल के रास्ते पानी के लिए लोगों का अटूट आना-जाना लगा रहता। चारों ओर धरती जल रही थी। गढ़ैयाँ तक सूख गयी थीं। जल के ऐसे अभाव में वह गरज कानों को बहुत लगती, कान से मन में, मन से रक्त में।

बाकुली का ज़मींदार सूर्य साउ है। उसकी ज़मीन डेढ़ हज़ार बीघा है। स्वाभाविक नियम से ही उसकी किरासिन की कंट्रोल की दुकान, मा फुल्लरा बस-सर्विस—ये सब-कुछ उसके हैं। नक्सलवादी दिनों में उसके दो गोशाल के छप्पर जल गये। नतीजा हुआ कि इस राज में उसने परेशानी और ग़रीबी की हालत में सरकारी क़र्ज़ लेकर बाकुली में एक बल्ब बनाने का कारखाना बनाना चाहा था। वही बताकर रुपये ले कुछ ऊँची क़िस्म की लिकर-डिस्टिलरियाँ क़ायम करना चाहता था।

बाकुली बहुत समय तक बड़ा अव्यवस्थित क्षेत्र रहा। बसाई मरता है और जी उठता है, फ़्रंट के कार्यकर्ता के रूप में बहुत समय तक वह इस

अंचल के गाँव-गाँव में घूमा था। प्राक्-स्वाधीनता युग में बसाई ने यहाँ बेस बनाया था। बाकुली यहाँ प्रसिद्ध जगह है, इसलिए बाकुली ब्लॉक में इन मारे अफसरों को भेजकर ही प्रशासन हाथ धो बैठता है, उन्हें भेजता है जो अच्छे और घूस-विरोधी हैं। मरते मर जाओ, या शेर की माँद में जाओ। इस बार सूखे की हालत देखकर सूर्य साउ रिलीफ़ के रुपयों का हिसाब लगाता है और बी० डी० ओ० बाबू के पास जाता है। बी० डी० ओ० सूर्य को निराश कर कहते हैं, 'रिलीफ़ मैं खुद दूँगा।'

'मुझ पर विश्वास नहीं करते हैं?'

'व्यक्ति-विशेष को रिलीफ बाँटने का भार नहीं दूँगा। ऑर्डर नहीं है। इस बारे में और कुछ न कहें।'

'आँ! इस साल मेरा विश्वास चला गया?'

'हर साल आप ही तो रिलीफ का रुपया लेते रहे हैं।'

'उसमें क्या कुछ बात हो गयी है?'

'बाप्त! आपने रख लिया, इसलिए हम बचे हैं। बात कौन कहेगा? धड़ पर सिर तो सब के ही है?'

'ना, ना, बिट्टू बाबू, रिलीफ़ के रुपयों की बात से समझ लो कि इस बार मैंने ख़ुद ही गाँव का कुआँ खुदवाया।'

'वह तो खुदवाना ही पड़ेगा। आपकी बिरादरी के घरों की चौहद्दी में कुएँ हैं, आप ही उनका इस्तेमाल करते हैं।'

'कौन साला कहता है? सभी को पानी नहीं देता हूँ?'

'पानी देने के मालिक तो आप नहीं हैं। सरकार के रुपयों से कुआँ बना है। पानी तो सबको मिलने की बात है।'

'ना-ना, बात में बहुत शोरगुल है, मेरे कलेजे में लगता है। आप भी मेरे बेटे की तरह हैं, उसी तरह से बात कीजिये।'

'देखिये, हाकिम स्वयं शिड्यूल्ड कास्ट हैं। आप लोग नीची जाति के लिए जो पॉलिसी चलाते हैं, संथालों को पानी नहीं देते, इस बात की उन्होंने रिपोर्ट माँगी है।'

'हटाओ! पानी लेंगे, तो लें।'

'आप लोगों के तो घर-घर सरकारी रिलीफ़ के कुएँ बने, डीपबोर का ट्यूबवेल बैठाया गया, और क्या चाहते हैं?'

'ना, और कुछ न कहूँगा।'

'नहीं कहेंगे न?'

'ना।'

'तो मैं कहता हूँ।'

'कहिये।'

'वेज तो दिये नहीं, न देंगे। कनाल-कर देकर पानी क्यों नहीं ले रहे हैं ? ज़मीन तो सब आपकी है।'

'यह देखिये। मेरी ज़मीन है। मैं पानी नहीं लूंगा, उसमें आपका क्या ?'

'न, मेरा क्या ? पूछ रहा था।'

'तो सुनिये।'

'कहिये।'

'यहाँ एक बसाई टुडू था, नाम सुना है ?'

'हाँ।'

'वह सान्याल था, साँप का बच्चा। वह बटाई के लिए, अधिया के लिए लड़ाई करता था, पता है ?'

'सुना है।'

'मेरी धान की बटाई की खेती है। कनाल से पानी लेकर खेती जितनी अधिक करूँगा, वह उतना ही हिस्सा लेगा।'

'आपको भी तो मिलेगा।'

'धान में कितना मिलेगा, मशाय ?'

'रेट तो बुरा नहीं है ?'

'कितना मिलेगा ? दस हज़ार मन धान हुआ तो पाँच हज़ार मन धान किसान लेगा। मैं क्या अँगूठा लूंगा ?'

'क्यों ? आप धान के रुपयों का क़र्ज़ नहीं काटेंगे ?'

'बाबू, तुम भी बच्चे हो। वह खाता तो हमारी लक्ष्मी है। सुनिये, खेती नहीं बढ़ाऊँगा, पानी नहीं लूंगा। उससे उन्हें आकाश से जो जल मिले उससे खेती करें।'

'पानी नहीं है न ?'

'तो खेती भी नहीं है।'

'उसके बाद ?'

'वे उधार लेंगे, मैं उधार दूंगा। चक्रवृद्धि सूद। सब साले खरीद लिये जायेंगे।'

'ऋण मौकूफ़ी का क़ानून भी बनेगा।'

'बनेगा कद्दू ! तुम्हारी गौरमेन मेरा कद्दू करेगी। लिखा रहे सूद ? याद रहेगा। और, सरकार जितना परेशान करती है, उसी तरह मदद भी देती है। मैंने क्या दिया, वे क्या निदान चाहते हैं, सारी मीमांसा तो अदालत की होगी, यही न ?'

'हाँ।'

'कौन साला महाजन के नाम पर नालिश करेगा ? करके जायेंगा क्या ? गौरमेन खिलायेगी ? ना, कनाल का पानी नहीं लूँगा।'

इन्हीं बी० डी० ओ० बाबू को हमदर्द समझकर बटाई के किसानों का एक डेपुटेशन उनके पास गया। वे बोले, 'सूर्य साउ को कनाल का पानी लिये बिना खेती न होगी। फेमीन[1]।'

बी० डी० ओ० बाबू ने सूर्य साउ के साथ अपने कथोपकथन का सारे-का-सारा जैसे-का-तैसा कह सुनाया। उनके करने को कुछ नहीं है। बटाई वाले किसान बोले, 'बाबू, इन जमीन के मालिकों के ये हथकंडे हैं। ये लोग किसी तरह कनाल का पानी नहीं लेंगे। इसी से तो कनाल में इतना पानी है।'

वे लोग बहुत खिन्न हुए। लौट आये। बी० डी० ऑफिसर को, खुद को भी लगा कि बहुत परास्त हुआ है। सूर्य साउ की हर बात सही है। किसी को कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं है। कनाल-कर दिया जा सकता है। लेकिन आकाश की हालत देखकर बरसात का अभाव—सूखा-दुर्भिक्ष की आशा में सूर्य साउ खुश हो रहा था। खेती नहीं। अकाल। क़र्ज। क़र्ज माने सूद। कर्ज-माफी का कानून भी मजाक है। जिस खाते को दिखाकर सूर्य सूद लेगा वह खाता सरकारी अदालत में कभी नहीं जायेगा। अगर खाता रहता है, तो वह छिपाकर रहता है। खाता न रहना स्वाभाविक है। सैकड़ों लोगों पर सैकड़ों तरह का पीढ़ियों से चले आने क़र्जों का हिसाब याद रखने की अत्यंत आश्चर्यजनक सामर्थ्य सूर्य साउ में है, सैकड़ों सूर्य साउओं में है। बी० डी० ओ० सोच नहीं पाते कि किस तरह वे प्रशासनिक शक्ति लगाकर मनुष्य का भला कर सकते हैं, सूर्य साउ, एक सूर्य साउ, प्रशासन की सारी फ़ाइलों की शुभेच्छा को अब निष्फल कर देने की क्षमता रखता है ?

इसके बाद बटाई के किसान जैसे-तैसे बिलकुल चुप्पी साध रहे। उनका कोई भी अता-पता न चला। लगभग पंद्रह दिन चुप रहकर सहसा एक संध्या को सूर्य साउ के पास गये। सीधे उसके घर।

'यह क्या ? तुम लोग क्या चाहते हो ?'

'कनाल से पानी लो।'

'नहीं लूँगा।'

'पानी लो, सब सूख गया।'

---

1. दुर्भिक्ष, अकाल

'क्यों लूं ?'

'हम खायेंगे क्या ?'

'मैं क्या जानूं ?'

द्रौपदी माझिन आगे बढ़ी और बोली, 'क्यों नहीं लोगे, सूर्य बाबू ? क्यों ?'

'पानी लेकर खेती नहीं बढ़ाऊँगा।'

'उधार देकर सूद खाओगे ?'

'जा, निकल जा यहां से।'

'बताओ, क्यों नहीं लोगे ?'

'तुझे बताऊँ ?'

'हमें बताओ जी,' कहकर एक संथाल आगे आया।

'तुम कौन हो ?'

'बसाई टूडू।'

'ना, टूडू नहीं हो। उसे मैं पहचानता हूँ।'

'मैं बसाई टूडू हूँ।'

'तुम टूडू हो ?'

'हां।'

'टूडू मर गया।'

'किसने कहा ?'

'मरा नहीं। हां दोप्दी, तूने जाकर लाश पहचानी थी न ? एक दिन तुम लोगों के घर-घर चूल्हा नहीं जला था ?'

'वह हम लोगों का परब था।'

'अँ, टूडू ?'

'हां, मैं टूडू हूँ।'

'तू देखने में टूडू है ?'

'हां जी, सूर्य बाबू।'

द्रौपदी खिलखिलाकर हँसी और बोली, 'तू उसका पुराना यार है। तुझसे मिलने के लिए नया बनकर आया है। कमरेट, वह भली बात नहीं सुनेगा।'

यहां की कहानी यहीं रही। एस० पी० के पहुँचने पर काली सांतरा बोला, 'इतनी बातों का पता आपको कैसे चला ?'

'सूर्य का भाई रतनी साउ है, उसने सब बताया।'

'उसके बाद ?'

'उसके बाद बसाई बोला—यह बहुत ही जमा हुआ घी है। टेढ़ी उँगली

से निकालना होगा। पानी नहीं लेगा?'

'न।'

सूर्य ने नहीं सोचा था कि 1973 में वायलेंस[1] हो जायेगा। 1973 तक तत्कालीन शासन में भारत के मुक्ति-सूर्य का लक्ष्य करोड़ों फ़ारेनहाइट ताप-विशिष्ट प्रकाश था। उस प्रकाश के प्रभाव में सारे जमींदार सुरक्षित थे। अत्यंत नान्-वायलेंट[2] यह शासन है। वायलेंट ऐक्ट सबूतों का जेलखाना बन गया है।

उन्होंने सूर्य साउ को पकड़कर उठाया। बेल खोल दिये और उन्हें गाड़ी में बांध दिया। खींचकर कनाल की ओर ले चले। बलि के पशु की तरह कनाल में फेंका और कसाई ने वार किया। उसके बाद तमाम हाथों में बहुतेरे हथियार थे। रतनी थाने भागा।

समाचार ऐसा आकस्मिक और अप्रत्याशित था कि थाने से सदर को खबर की गयी। उसके बाद आर्मी।

आर्मी की जीप और वैन बाकुली तक नहीं जाती। बाकुली के आस-पास ऊँची-नीची, टूटी-फूटी जमीन है। कंकड़ियां दब जातीं। शांच-शांच-शांच। मार्च-मार्च-मार्च फ़ारवर्ड—आगे चल भाई। भारत के गर्वीले जवान कैप्टन अर्जुनसिंह के नेतृत्व में बाकुली के चहक बैठने के स्थान[3], पाकड़ के पेड़ को घेर लिया। वे लोग पाकड़ के पेड़ के नीचे इकट्ठा हुए थे। अर्जुनसिंह ने पहले हुक्म दिया, 'क्लोज़ कनाल अप्रोच।'[4] पानी को लेकर झगड़ा है, इसलिए पानी की राह बन्द कर दो। बन्द कर दिया गया। इसके बाद रात के अँधेरे में पानी की तलाश में कनाल की ओर जाते देखा कि कई छिटपुट लोगों के गोली लगी है। और लोग पेड़ की झूलती जड़ों की ओट में थे। इसके बाद, जवानों के आगे बढ़ने पर पेड़ की झूलती जड़ों के स्वाभाविक दुर्ग में तीर आये। सारी जगह कॉर्डन[5] कर सारी मशीनगनें चलायी गयीं। जवानों ने तब रोना सुनकर समझा कि केवल मर्द नहीं, औरतें और बच्चे भी हैं। लेकिन तब रुकना संभव न था। इस तरह के ऑपरेशन में होता यह है कि पहले पुलिस या जवान बन्दूक चलाते हैं, उसके बाद आग्नेयास्त्र ही उन्हें चलाते हैं। यंत्र। यंत्र में कोई विवेक नहीं होता। मशीनगन ही जब किलर[6] हो तो निशाने पर कौन पुरुष है, कौन नारी, कौन शिशु—यह हिसाब रखना संभव नहीं रहता। मशीनगन माउंटेड-गन मेकेनिकली लोडेड ऐंड फ़ायर्ड, डेलिवरिंग कंटिन्युअस फ़ायर।[7] हेड़

1. उग्रता, हिंसा 2. अहिंसक 3. शिवपूजा का स्थान 4. नहर के रास्ते बन्द कर दो 5. घेरकर 6. हत्यारा 7. यांत्रिक रूप से गोलियाँ भरकर चलायी मशीनगन निरंतर गोलियाँ छोड़ती है।

दिन तक रुक-रुककर फ़ायरिंग चली। उसके बाद आर्मी घुस पड़ी फ़ोर्ट द ओल्ड पाकड़ में। इकतालीस लाशें मिलीं। अर्जनसिंह बोला, 'कल सुबह लाश उठाना। अभी गिनती करो।' फिर से गिनती शुरू हुई। दस बच्चे-बच्चियाँ थे।

दूसरे दिन सवेरे गड़बड़ शुरू हुई। बाल या पैर पकड़कर लाते-लाते चित रखने में कई लाशों ने बिलकुल ऐसे ढंग से जो लाश के लिए उचित न था, एक सिपाही का पैर पकड़ लिया और रक्तपातजनित दुर्बल हाथों से सिपाही के गले की नली को हँसुए से काटने की कोशिश की। इस आचरण से सारे जवान घबरा गये और लाश उठ बैठी, दोनों हाथों से निरन्तर हवा का गला मरोड़ा और बोली, 'मैं बसाई टूडू हूँ। कौन आता है, आये! लड़े।'

इसके बाद उसे पाकड़ के पेड़ की लटकती एक मोटी जड़ से बाँधा गया और अर्जनसिंह ने बसाई टूडू को गोलियों से छलनी कर दिया। इस ऑपरेशन बाकुली में सब लोग पहले दिन आमने-सामने के संघर्ष में मारे गये। दूसरे दिन, हाथ-पैर-शरीर जकड़े हाथ में एक आदमी ही सम्मुख संघर्ष में मारा गया। क्वांटम थियरी द्वारा जिस प्रकार पदार्थ-विद्या में प्रत्येक चीज़ की व्यवस्था मिल जाती है, 'सम्मुख संघर्ष' में, या एनकाउंटर में, या बसाई की भाषा में 'काउंटर' उसी तरह की एक क्वांटम थियरी है। मृत व्यक्ति के हाथ-पैर तोड़कर वैन के पहिये में बाँधा जा सकता है—पीछे हाथ या पेड़ से हाथ-पैर बाँधे जा सकते हैं—नाख़ून उखाड़ना, आँखें निकाल लेना, यौनांग छिन्न हो सकते हैं—गुदामार्ग में छड़ घुसेड़ना, सारी पसलियाँ चूर-चूर हो सकती हैं—कॉमन गुण हैं, पूरे शरीर में अनगिनती गोलियाँ रहेंगी—समस्त मृत्यु की व्याख्या ही इस प्रकार करनी होगी, 'सम्मुख संघर्ष के परिणामस्वरूप।' बसाई टूडू भी सम्मुख संघर्ष में मारा गया। बालक-बालिका-शिशुओं की मृतदेह भी 'सम्मुख संघर्ष' की थियरी द्वारा समझायी जाती है। समाचारपत्रों में ख़बर प्रकाशित होने से बहुत शोरगुल होता है। इसीलिए इस तरह समाचार गढ़ा जाता है, 'ज़मीन की गड़बड़ में दो दलों में झगड़ा हुआ और तीन आदमी मारे गये।'

उसके बाद लाश को लाकर लिटाने में और भी गड़बड़ हुई। देखा गया कि लाशें उन्तालीस थीं। सूर्य साउ का भाई रतनी साउ डरकर बोला, 'दोपदी माझिन? दुलना माझी? वे कहाँ हैं?'

'एँ?'

'क्या बोलता है?'

'वे कहाँ हैं ?'

'थे, या नहीं थे ?'

'थे जी, थे। वे मातबर हैं। वे नहीं रहे ?' रतनी साउ बहुत परेशान हो गया।

द्रौपदी या दुलना का हिसाब नहीं मिल रहा था। बसाई टूडू की लाश लाकर सूर्य साउ के घर के सामने रखी गयी।

सब-कुछ सुनकर काली साँतरा बोला, 'मुझे क्यों ले आये ? वह बसाई टूडू है या नहीं, इसे खुद तय कीजिये।'

'किस तरह, काली बाबू ?'

'क्यों ?'

एस० पी० कुछ देर तक अस्त होते सूर्य की आकाश को लाल करने की रोज़ की भ्रकुटि देखते रहे। उसके बाद ठंडी साँस लेकर बोले, 'काली बाबू ! मैंने कभी उस आदमी को नहीं देखा। पहली बार मैं एस० पी० नहीं था। बनारी की घटना की रिपोर्ट पढ़ी थी। तसवीर देखी थी। लेकिन उस तसवीर को देखकर कुछ समझना किसकी ताकत थी !' मानो उस तसवीर की याद से ही वे काँप उठे।

'हाँ, डिस्टॉर्ट[1] भी हो गयी थी।'

'प्रोसिजर क्या है, काली बाबू ? कोई मारा जाता है। जान-पहचान के लोगों को लाकर शनाख्त करायी जाती है, फ़ोटो ली जाती है। मृतदेह की नापजोख, डिटेल्स[2] लिखे जाते हैं। अच्छा, पहली बार म्यूटिलेटेड बॉडी[3] देखकर शनाख़्त करने में आप लोगों से भूल हो सकती है। दूसरी बार ?'

'देखिये, बसाई को शनाख्त करने के मामले में मुझे ही आप लोग खींच लाते हैं। उसे शनाख्त करूँ। उसके बाद आप लोग कहते हैं, फिर बसाई टूडू मर गया है। मुझे क्या करना चाहिए ?'

'मैं ही क्या करूँगा ?'

काली के मन में आया कि कहे—ट्रांसफर करा लीजिये।

एस० पी० बोले, 'मशाय, मैं ट्रांसफ़र कराकर भागूँ, यह बहुत गड़बड़ लगता है। हो सकता है कि बसाई टूडू मरा ही न हो। एँ ? उसकी तरह लगने वाला कोई इंपर्सनेट[4] कर रहा है ?'

'कैसे कहूँ ?'

'आपको बुलाया गया है..।'

1. विकृत [redacted] विवरण 3. विकृत शव 4. वेष बदल रहा है।

'क्यों ? कोई और उसे नहीं पहचानता ?'

'पढ़े-लिखे लोगों का कहना है, सत्तर के साल तक देखा...।'

'क्या मुश्किल खड़ी कर दी, पता है ?'

'क्या ?'

'मुझे भी लग रहा है कि जिसे देखा है, उसे बसाई मानने के सब कारण मिल गये हैं, पर वह बसाई नहीं है।'

'यह क्या बात है ?'

कहकर एस० पी० चुप हो गये। मन-ही-मन नोट बनाने लगे। खुद ही दोहरे-तिहरे बसाई की जो बात उठायी, उसे मिटा रहे हैं। नोट कर रहे हैं, काली सांतरा खुद ही कह रहा है कि उसने जिसकी शनाख्त की वह बसाई टूडू नहीं था।

जीप रुकती है। दूकान से चाय पी जाती है। समोसे। पुलिस की गाड़ी है। एस० पी० ड्राइवर से कुछ कहते हैं। ड्राइवर उतर जाता है। काफ़ी दूरी रखकर दूकानदार से बात करता है। पैसे देने की कोशिश नहीं करता और लौटकर कहता है, 'पैसे नहीं लेगा।'

बाकुली क़रीब आ रही है। लोगबाग, कुछ दूकानें, आज बाजार का दिन है, राह में हाट करने वाली जनता है। पुलिस की गाड़ी देखकर सब लोग हट जाते हैं और चेहरे भावशून्य हो जाते हैं। किसी गोपनीय और गूढ़ संतोष से एस० पी० कहते हैं, 'सिस्टर-विलेज पलताकुड़ी से हर एक को लाकर बाकुली में रखा है।'

'मर गया क्या ?'

'हाँ-हाँ, आर्मी के साथ फ़ेटल एन्काउंटर[1] !'

एक और प्रान्तर। बीच में होकर एक रास्ता है। उसके बाद घनी छाया की शान्ति का नीड़ मँझोला गाँव बाकुली दिखायी पड़ता है। गहरे नीले रंग का दोमंजिला मकान। संध्या लगभग आ चुकी है। विवाह के रंग में सुनहला आकाश लाल हो रहा है। दो ट्रकों पर कौन है, या किस-किसकी लाशें हैं ? सरकारी विवरण के अनुसार तीन मृत लोगों से दो ट्रक भरे हैं और तिरपाल लगे हैं। दोनों ट्रकों को असंख्य सिपाही घेरे हुए हैं। ऊपरी अधिकारियों से ऐसा करने का अधिकार पाकर आर्मी मृतकों को पुलिस के अधिकार में दे देगी। असंख्य पुलिस वाले भी हैं। असंख्य पुलिस भी है।

सम्मुख-संघर्ष में मारा गया बसाई टूडू एक मचान पर है। मचान के दोनों ओर खूँटियों में गैस-बत्ती के हंडे। हंडों की तेज़ रोशनी में ठीक बाहर

1. सामने-सामने की मुठभेड़।

की ओर काले-काले चेहरे। एक बच्चे के गले का रोना, एँ-एँ-एँ-एँ। पलताकुड़ी के लोग बैठे हैं। एस०पी० के आगे बढ़ने पर कई पुलिस-अफ़सर बोले, 'इन्होंने शनाख्त कर ली है।'

'क्या कहते हैं? तुमने क्या कहा? तुम्हारा क्या नाम है? एँ? क्या कह रहे हो?'

'मैं पलताकुड़ी का मोदन घटी हूँ।'

कुछ बातों ने काली सांतरा को बेचैन कर दिया। बसाई की पहली मौत के बाद 'जिला वार्ता' ऑफिस में एक शाम को: 'मैं पलताकुड़ी का मोदन घटी हूँ। बसाई टूडू के लिए यह दवाई लाने को उसने कहा है...।' यही मोदन है।

'क्या कहते हो?'

'यह बसाई टूडू है।'

'पिछली बार जागुला में अस्पताल में किसको देखकर शनाख़्त की थी? एँ?'

'बसाई को।'

'इसके मतलब? मज़ाक कर रहा है?'

'ना बाबू, मैं मज़ाक नहीं जानता। उस बार जिसे देखा था, उसके मुँह नाम की कोई चीज नहीं थी। सब-कुछ बसाई की तरह था, कह दिया— बसाई है। यह जो दिखाया, इसके मुँह नाम की भी कुछ नहीं है, सारे शरीर में गोलियाँ छिदी हैं। हमारा बसाई खफा होने पर बतास में हाथ मरोड़ता था। उसने भी मरोड़े, इसने भी मरोड़े—तुम बताओ बाबू, चेहरे में कुछ नहीं, मरने के समय बतास में हाथ मरोड़े, फिर भी उसे बसाई न कहूँ? मुँह देख पाता तो कहता।'

'हूँ, काली बाबू, देखिये।'

काली आगे आता है और देखता है। एक उँगली, दाहिने हाथ की तर्जनी में पीतल के तार की अँगूठी थी। मुसाई ने जब उसे और बसाई को चाय दी थी, उस समय काली ने देखा था। मुलायम बाल। 'हमारा मुसाई पानी और हवा का पंडित है, काली बाबू।' मुसाई की प्रेममयी मालिन, गिधा और सीधा, दो नंगे बच्चे और बेशुमार दारिद्रय था। मुसाई ने बसाई के लिए सब-कुछ छोड़ दिया था। भीरु, डरपोक व्यक्ति बसाई का अनुगत था। उसने सूर्य साउ को कुल्हाड़ी मारी और काट डाला? काली सूखे गले में बोला, 'लगता है, बसाई है।'

'लगता है?'

'क्या कहूँ? चेहरा कहाँ है? क्या देखकर पहचानूँ? हर बार

पहचानने में मुश्किल, आप लोग एक-एक बॉडी दिखायेंगे...मुद्रा-दोष मिल जाये...आइडेंटिफ़िकेशन पाइंट है।'

काली की आवाज में बहुत गुस्सा था। बहुत, बहुत अधिक गुस्सा। मरे हुए आदमी का चेहरा देखकर बहुत गुस्सा आ रहा था। गोली, गोली, स्टॅमक रिप्ड ओपेन।[1] आंत निकल पड़ी थी। कमर में एक ओर चूर-चूर, दबाया हुआ। काली ने कहना चाहा—बूट से जब कुचला गया उस समय क्या वह ज़िंदा था? लेकिन कहा नहीं। कोई आदमी, किसी इन्सान पर पुलिस—आर्मी—उसके बाद 'मुठभेड़ में मरा'—मानव-देह अत्यंत सुंदर होती है। कहीं किसी पुस्तक में देखा माइकेल एंजेलो का 'पियेता'—असाधारण सुंदरी मेरी की गोद में निर्दोष युवा शरीर के लेटे मृत यीशु! मानवदेह अत्यंत सुंदर हो सकती है। बसाई की तीसरी मृत्यु में 'एनकाउंटर' नाम के लिजलिजे शब्द के अर्थ काली के भीतर घुस जाते हैं। उसकी संपूर्ण सत्ता में इन्जेक्ट हो जाती है पुलिस और आर्मी की क्रांतिकारी विनाशक घृणा।

तभी नारी और शिशु-कंठ का रुदन 'हूँ-ऊँ-ऊँ-ऊँ' इस दृश्य की प्रत्यक्ष संगीत-रचना करता है। काली बिना मुंह फेरे बता सकता है कि वह मुसाई टूडू की माझिन और किसी लड़के का रोना है। समस्त आशाएँ, जीवित रहने का उद्देश्य, आकाश का सूर्य—सब मानो समाप्त हो गये हों। रुदन पृथ्वी के गर्भ का है।

'कौन रो रहा है?' एस० पी० पूछते हैं।

'मुसाई टूडू की माझिन,' सोदन कहता है।

'बसाई टूडू के कोई है?'

'ना।'

'तब ?'

'बसाई—उसे बच्चे बहुत प्यार करते थे।'

एस० पी० मुसाई की माझिन की ओर देखते हैं। काली भी। मुसाई की पत्नी के रूखे बाल जूड़े की तरह गोल बँधे हैं, सस्ती-सी मोटी सफ़ेद धोती पहने है। बच्चों का मुंह अपने कलेजे से लगाये, दूर हटकर अँधेरे की ओर चेहरा कर लेती है। एस० पी० फिर मृतदेह के समीप आते हैं और कहते हैं, 'बॉडी ले जाऊँगा।'

काली सांतरा घनी रात में छुटकारा पाता है और जीप में चढ़कर

---

1. पेट फट गया था।

बैठ जाता है। बसाई—तीसरी मृत्यु। बसाई—तीसरी मृत्यु। लगा था कि नींद नहीं आयेगी। लेकिन जोप में वह सो गया।

11

बाकुली के बाद काली के मन में संदेह न रहा कि बसाई फिर मरेगा। अब वह बहुत शान्त हो जाता है। अपने शरीर और स्वास्थ्य के बारे में ध्यान देता है। एम० पी० उनके बारे में बहुत ही गड़बड़ रिपोर्ट देते हैं। काली के हर बार बसाई को 'बसाई' बताकर शनाख्त करने में कोई छिपा और गहरा मतलब है। हिसाब लगाने से बसाई टुडू की उम्र चवालीस होनी चाहिए। लेकिन बाकुली की मृतदेह की उम्र चालीस से अधिक न होगी। जिसका बसाई 'नहीं' होना ही स्वाभाविक है, उसे काली सांतरा 'बसाई' क्यों बता रहा है? काली सांतरा वह व्यक्ति है जिसे सेफ्टी से अपने पास आने को बसाई ने अलाऊ किया था। याद रखने का कारण है, बनारी-ऑपरेशन की कहानी काली को पता थी। कहने का मतलब है कि काली सांतरा का अपनी पार्टी-सर्किल में ही बहुत विश्वास नहीं है।

प्रशासन के सोचने का ढंग दुर्बोध और सुदूरगामी होता है। उस समय प्रशासन सोच लेता है कि काली सांतरा का जिंदा न रहना ही ठीक है। काली सांतरा की इमेज जागुला में बहुत अच्छी है। सब शासनों के लोग उसे बहुत महत्व देते रहे। प्रशासन चाहते ही काली को मीसा में गायब कर सकता था। वह अच्छा नहीं होता। सबसे ज्यादा मुश्किल तो यह हुआ कि काली को 'गुप्त नक्सलवादी,' 'गुप्त नक्सलवादी,' 'नक्सल को सहानुभूति देनेवाला' नहीं कहा जा सकता है। काली नाम में जो गुण है उसकी तरह 'नक्सल' नाम में क्या गुण है, कि पकड़ा जाये, मारा जाये, एनकाउंटर करना पड़े। काली प्रशासन को वह गुण नहीं देता, इसलिए काली को रखकर उसके चारों ओर के, उसकी पार्टी के सबको घेर रखना अच्छा है। परिणामस्वरूप पार्टी-सर्किल में काली के प्रति घोर अविश्वास उत्पन्न होगा।

काली यह सब बिलकुल समझ न सका। प्रशासन उसे शहर के सारे आयोजनों में खुलकर बुलाता रहता। पार्टी में चुगलखोर तत्त्व काली पर चिढ़ता रहता। एक दिन ऐसी हालत हुई कि वे काली को मारने चले। तभी काली नल के नीचे फिसल गया और फ्रेक्चर होने से अस्पताल में पड़ा रहा। उससे गिनिमाला को बहुत चैन मिला और काली के अस्पताल में रहने के महीने को कुछ स्पेशल पर बेटे सहित कश्मीर-भ्रमण को

काम में लगाया। घर ख़ाली रहने से काली अस्पताल से बाहर आ घर न जाकर सदर-शहर में ममेरी बहिन के घर रह गया। इस तरह शरारती लोगों की काली-हत्या की योजना कार्यान्वित हुई और प्रार्थित कार्य में उनका अनाड़ीपन देखकर प्रशासन ने चिढ़कर सबको मीसा में बंद कर दिया। इससे उनका बड़ा उपकार हुआ। कभी भी अच्छे काडर[1] की तरह लिख-पढ़कर वे पार्टी के लोग न थे। नारे लगा कर जेल में भरकर वे वैगन-ब्रेकर, छिन्ताई गैंग[2] इत्यादि समाज-हितैषी लोगों को पाकर वे बिजली की तेजी से काम-काज सीखकर भविष्य-जीवन के विषय में निश्चित होकर जेल की रोटी तोड़ते हैं।

गिनिमाला और काली साँतरा—दोनों अलग-अलग डेस्टिनेशन से घर वापस आये। उसके बाद पता नहीं किस तरह, जागुला के हरिभक्ति प्रदायिनी दल ने कॉलरा महामारी-सेवादल बनाने में काली को कमेटी का सभापति बना लिया। कॉलरा और चेचक के सेवा-कार्यों में काली को बहुत प्राचीनकाल से दक्षता थी। कॉलरा से उसने देउकी मिसिर के दामाद को भी बचा लिया जिसके परिणामस्वरूप देउकी के मन में टेंपरेरी कृतज्ञता-बोध जागृत हुआ और उसने भरे गले से 'ज़िला वार्ता' ऑफ़िस में आकर कहा, 'आपके नाम से कितनी बातें कहीं, अच्छा नहीं किया। बहुत रिपोर्टें दी हैं। उस बसाई टूडू के दल में काम करते हैं संथाल लोग। उसमें भी आपका नाम शामिल कर दिया है, काट दूंगा।'

काली जानता है कि इसी तरह काम हुआ करते हैं। कहीं भी। लेकिन वह न तो जानना चाहता है, न कोशिश करता है। किंतु जीर्ण जीवन में कहीं मरूद्यान की प्रतिश्रुति रह जाती है। चौहत्तर साल बीत जाता है। पचहत्तर में इमरजेंसी होने से अचानक प्रेस गैग्ड[3] हो जाता है। किंतु काली का संघर्षशील इतिहास ऐसा उपेक्षणीय है कि 'ज़िला वार्ता' के सैकड़ों अर्थात दो सौ सर्कुलेशन पर प्रभाव नहीं पड़ता। और किस तरह कृषि-ऑफ़िस और मत्स्य-अधिकारी 'ज़िला वार्ता' समाचारपत्र में विज्ञापन देकर काली को पैसे दिला देते हैं? जीवन-भर बिना पैसे पाये, जान लगाकर समाचारपत्र चलाकर, बान्धव प्रेस और सदानन्द बोड्डया के बर्तनों की दूकान और बसंतिका आलता[4] का विज्ञापन बैशाख में छापकर उन विज्ञापनों के पैसे पौष में पाने का वह अभ्यस्त है। सहसा सरकारी विज्ञापन पाकर उसका दिमाग़ चकरा गया और हाथ में रहने से कहीं नयी चप्पलें और शर्ट ख़रीद न डाले, इस डर से उसने सारे रुपये दुखित पार्टी कार्यकर्ताओं को दे दिये।

---

1. कार्यकर्ता 2. छीन कर भाग जाने वाले 3. बंद 4. महावर, अलता।

इससे कृषि-विभाग और मत्स्य-अधिकारी खफ़ा हो गये और फिर विज्ञापन नहीं दिया। परिणामस्वरूप पार्टी में काली की इमेज फिर ऊँची हो गयी। जेल में बैठकर बातचीत के दौरान सामन्त चिढ़ जाता है। और जेल के कई कामरेडों से कहता है, 'बहुत-से ढोंगी देखे हैं, पर काली-सा ढोंगी नहीं देखा।'

अज्ञता ही वरदान है। काली को पता नहीं कि मरियल पार्लमेंट्री अस्तित्व को लेकर वह प्रशासन-पुलिस-पार्टी, सबके लिए कितनी असुविधा पैदा कर रहा है और अचानक उसने एक दिन सिनेमा देखने जाकर मुसीबत कर दी। अचानक उसकी गरदन में दर्द हुआ, गरदन और सिर झनझना उठे। काली कुर्सी पर लुढ़क गया। उसकी रक्तचाप की अधिकता का इसी से पता चला और काली फिर बिस्तर पर पड़ गया। इसके बाद ब्लडप्रेशर के बारे में काली को विशेष चिंता दिखायी पड़ी और खुद ही बेंत का थंभ कूटकर रस निकाल पीकर वह रक्तचाप को कंट्रोल में रखने की कोशिश करता। इस अवस्था में उसने रक्तचाप के बारे में बहुत-कुछ पढ़ डाला। इसी समय सहसा अनिर्वाण ने एक स्कूल की अध्यापिका से शादी कर ली। इस ब्याह से काली फिर आश्चर्य से देखने लगा कि वह दुनिया द्वारा एकदम परित्यक्त है। बहुत आयोजन के साथ बहूभात[1] हुआ। तमाम लोग आये थे। काली को कुछ दिनों के लिए 'जिला वार्ता' ऑफ़िस में ही रहना पड़ा और अब पता चला कि शिनिबाला सूद पर रुपये देती है। मुहल्ले के बहुत-से लोग उसके देनदार थे। ब्याह के बाद नये शादी के घर के प्रभाव से शिनिबाला ने साईं बाबा को पकड़ा। अब काली को लगा कि विवाह, विवाहित जीवन कुछ नहीं। उसका जीवन, उसका आदर्श, उसके विवाहित और संयुक्त जीवन के परिप्रेक्ष्य में क्या था! शाखा नदी? जो नदी किसी भी दिन मूल नदी की धारा से नहीं मिली? ऐसा सपाट उसका जीवन है? किसी भी दिन किसी बिंदु से न मिला! किसी भी मध्यवर्गीय की तरह बिसमिल्ला का रेकर्ड फिट कर नन्हे-नन्हे बल्बों से घर को सजा कर काली के बेटे का बहूभात हुआ और काली अनभ्यस्त उजली धोती-कुर्ता पहन, चेहरे पर दीन मुस्कराहट लाकर सबसे अधिक बाहरी व्यक्ति बना गेट पर खड़ा था। काली समझा कि दौड़ तभी ठीक रहती है जब दौड़ के अंत में जीतने का लक्ष्य रहे। सारा संग्राम भी यही है। लक्ष्य रहना चाहिए। काली जीवन-भर भागता रहा, क्योंकि जवानी में उसने समझा था कि एक समाज-व्यवस्था बदलकर एक दूसरी समाज-व्यवस्था लाने का लक्ष्य उसके

1. विवाह के बाद नववधू के हाथ के भोजन की दावत।

सामने है। गिनिमाला और अनिर्वाण ने लक्ष्य के रूप में अपने आगे कोई समाज-व्यवस्था नहीं देखी। काली ही उनका शत्रु था। उन हर चीज़ों का जो काली के लिए लक्ष्य थीं, उनके विरुद्ध उनका यही संग्राम था। क्रुद्ध, ज़िद्दी संग्राम। यह क्रोध-ज़िद-हिंसा सांसारिक उन्नति को जन्म देती है। काली ने बहुत-कुछ देखा था, उन्होंने केवल अपनी जाति-बिरादरी, परिवार की धन-दौलत, शिक्षा-दीक्षा देखकर और बड़े होने की कामना से हिंसा में असाध्य साधन किया था। हिंसा-क्रोध-ज़िद मनुष्य की उन्नति करते हैं, यह सोच कर भी हार-सी लगती है। लगता है कि जिसे हराना होगा वह 'समाज-व्यवस्था का परिवर्तित' रूप ऐब्सट्रैक्शन[1] होने पर काली की तरह जीर्ण, हारा, मोतियाबिन्द लिये, मोतियाबिन्द कटा कर, केले के थंभ का रस पीकर पराजित और वैलियेंट फ़ाइटर फ़ॉर द काज़[2] बनना पड़ता है। जिसे पराजित करना हो, वह अगर बराबर आँखों के आगे सीधा-सादा और निरीह (माँ कहा करती थी कि मेरा काली, गौ बेटा है) पति और पिता हो तो शक्ल कैंडिलयुक्त रेक्सोना साबुन की तरह दिन-पर-दिन गिनिमाला और अनिर्वाण-सी चमकती है। ऐब्स्ट्रैक्शन और कंक्रीट। ब्रह्म-वादी और मूर्तिपूजक। क्या ताज्जुब है कि मूर्तिवादियों की चिकनाहट संघबद्धता, शोरगुल बहुत अधिक है? मुकुन्द के सिवा कोई रवीन्द्रनाथ के गान की तरह घेरे को छोड़कर चलने के आनंद में नहीं चल सकता। मुकुन्द काली सांतरा का ममेरा भाई था। वह ज़ीरा और तेजपात ख़रीदने को निकलकर डेढ़ महीने-दो महीने उड़न-छू रहा। पहली बार के बाद फिर थाना-पुलिस नहीं हुआ, क्योंकि वह कोई अपराध न करता था। पैदल-ही-पैदल चला जाता शिउड़ी, कटुआ, बड़रवा। डेढ़ सौ-दो सौ मील। किसी तरह से खाने का जुगाड़ करता और पेड़ के नीचे सो जाता। क्यों जाता, इसका कोई ढंग का जवाब न दे सकता। पागल भी तो नहीं था। मुकुन्द इस समय सदर के स्कूल में बाबू है।

जो हो, इसी तरह इमर्जेंसी का दमघोंटू पचहत्तर साल बीता। इस बीच काली निरन्तर खेतमजूरों के बारे में चिन्तित रहा। लेबर-विभाग द्वारा प्रकाशित 1973 साल की एक रिपोर्ट उसके हाथों पड़ गयी और जिस लिए काली मन-ही-मन एक दुःसाध्य व्रत में लगा था, बसाई की ओर से खेतमजूर समस्या से उत्पन्न क्रोध की बात को समझने की कोशिश में काली खेतमजूर संबंधी समाचारों को उत्सुकता से पढ़ता। काली की यह समझने की कोशिश बहुत ही आरोपित बात थी। वह बसाई की बात को

1. अलगाव, पृथक्करण 2. लक्ष्य के लिए लड़ने वाला वीर योद्धा।

चमाई-सी नहीं समझ सकेगा, क्योंकि वह आदिवासी नहीं है। आदिवासी होकर अगर कोई उत्पन्न हो तो वह जिस वंचना को लेकर जन्म लेता है उसका सहभागी कोई ऊँची जाति का हिन्दू नहीं हो सकता। यही वंचना बोध डेट्स फ़ार बैक[1]। कृष्ण भारत के कृष्ण आदिवासी प्रथम संतान हैं। सब और उनके बाद हैं। उस आदिवासी को वंचित कर सबने सब-कुछ ले लिया, बाँट लिया। उसी वंचना-बोध से आरंभ है। उसके बाद प्रतिदिन। शक-हूण-पठान-मुगल—सभी भारत की देह में लीन हुए। और आदिवासी समस्त शासन-व्यवस्थाओं में ही वंचित होते रहे। अच्छे शासक, बुरे शासक, सकल मुनि से एजामम[2] कहने वाले अशोक, सर्वस्वदाता हर्षवर्धन, बंगाब्द प्रचलित करने वाले शशांक से आरंभ कर शेरशाह-अकबर, वणिक मानदंड हाथ में लिये अंग्रेज—किसी ने इस समस्या की बात न सोची और सारे शासनों में ही आदिवासी समस्त मौलिक अधिकार सरेंडर[3] करते-करते अत्यन्त कमर-टूटे, हीन-बल, नशे में चूर, महाजन के सूद और बेगार के शिकार बनकर जिस आशा से मिशन की ओर भागते, पर सफल न हो पाते। प्राचीन प्रोत्साहित करने वाली बलिष्ठता जीवित रहने की प्रहसन-भरी चेष्टा में होली के दिन शिकार पर निकलते और आदिपुरुषों के बलिष्ठ हाथों से बर्छी या तीर की चोट खाये बाघ, भालू की याद में मछली की तिल्ली लिये, साही या वनबिलाव मारकर घर लौट आते, और खूब शराब पीकर स्वास्थ्य को तिलांजलि देते। अन्त में भारत की स्वतन्त्रता और आदिवासी कल्याण में प्रशासनिक प्रयत्न उनका अन्तिम संस्कार कर देता। आदिवासी सत्ता अणिमाडव्य[4] है। राह में अन्याय का काँटा मध्य में है। उसे निकालने की कोई राह नहीं है। दो-एक सयाल उपमंत्री या मुंडा आई० ए० एस० देखकर किस तरह लाखों-करोड़ों आदिवासी जीवित रहें? न, बसाई के मानसिक वंचना-बोध के ओरियेंटेशन[5] का भागीदार होना काली के लिए संभव न था। वर्ण—हिन्दू, उसी समाज-व्यवस्था में उत्पन्न जिसने आदिवासियों को समस्त अधिकारों से वंचित किया है। किन्तु बीच-बीच में मृत बसाई को शनाख्त करना पड़ता है, इसलिए खेतमजूर के बारे में परिचित रहने की जरूरत काली के अमाशय को न छोड़ने वाले दर्द की तरह दुखती रहती है। इसलिए वह 'जिला वार्ता' ऑफिस की सुरक्षा के लिए किरासिन की लकड़ी के शेल्फ पर यह संबंधित कागज-पत्र सजा कर रखता और पढ़ता। पढ़ने बैठता तो बहुत

---

1. बहुत प्राचीन है 2. सब मेरी प्रजा हैं 3. उत्सर्ग 4. एक ब्राह्मण ऋषि, जिन्हें कहा जाता है कि सूली चढ़ा दिया गया था 5. निर्धारण।

दुःख से लगता कि बसाई जिस राह गया है उस राह मुक्ति नहीं मिलेगी। बसाई बार-बार क्यों मरता है और जलाया जाता है? अपनी शक्ति-भर जो कर सके वही करके अपने को पर्ज कर रहा[1] है? यह क्या रोमांटिसिज्म नहीं है? आज स्टेन, ब्रेन, मशीन-गन के युग में प्रिमिटिव वेपन[2] देकर कहां गोरिल्ला[3] युद्ध सफल हो सकता है? लेकिन बसाई यह न सुनेगा। हां, वह रोमांटिक बन जायेगा। लास्ट सर्वाइविंग एलिफ़ेंट[4]। वह तथाकथित सभ्यता का परित्याग करेगा, यह नहीं कहता, पर करता है। बसाई को किसी तरह बदला नहीं जा सकता। बदले में तो उसे कुछ दिया नहीं जा रहा है। बसाई की हालत क्या अमरीका के आदिम अधिवासी नवाजो या दूसरे रेड इंडियनों की तरह होगी? कंज़र्व: संरक्षण। म्यूज़ियम[5]। आओ, देखो। संरक्षित बस्तियों में ये मुंडा हैं, ये संथाल हैं, ये मारिया हैं।

सोचकर भी दिमाग़ भन्ना उठता है। केले के थंभ के रस से क्या दबाव कम नहीं हो रहा है? 73 के साल की लेबर डिपार्टमेंट की रिपोर्ट। मंत्री महोदय का वक्तव्य है, 'हमने लेबर डिपार्टमेंट की ओर से आर्गनाइज्ड सेक्टर में मजदूरी के ढांचे को उठाने की ओर पूरा ध्यान दिया।...किन्तु यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उद्योग के इन्फ़ॉर्मल सेक्टर में, विशेष रूप से ऐग्रीकल्चरल सेक्टर में हमारा काम संतोषजनक नहीं है...कंट्रीसाइड की मेहनतकश जनता के आर्थिक उत्थान के बारे में कुछ न कर सकने पर ग्रामीण वायलेंस रोक रखना, या सामाजिक व्यवस्था का वर्तमान रूप क़ायम रखना कठिन होगा।'

इसके बाद काली सोच सकता था कि यह मालूम होने पर बसाई कहता, 'मैंने कहा था न? कोई साला कुछ नहीं करेगा।'

अब छिहत्तर साल है। चौहत्तर के साल में फिर खेतमजूरों की मजूरी संशोधित हुई। पश्चिमी बंगाल में सब जगह एक रेट चालू हुआ। प्रशासन समानता के गीत गाता और उसकी नजर में स्त्री-पुरुष का कोई अंतर नहीं रहता। परिणामस्वरूप पुरुष और स्त्री श्रमिकों के लिए निश्चित होती प्रतिदिन की मज़दूरी पांच रुपये साठ पैसे और बच्चे-मजदूरों (कम-से-कम 14 वर्ष) के लिए चार रुपये। माहवारी बंदोबस्त में बड़ों के अस्सी रुपये साठ पैसे और छोटों के लिए उन्तालीस रुपये निश्चित हुए। और भी कहा गया कि एक नॉर्मल वर्किंग डे की डेफ़िनीशन हुई कि बालिग़ काम

1. छल रहा है 2. आदिम शस्त्रास्त्र 3. छापामार युद्ध 4. अंतिम अवशिष्ट हाथी 5. अजायबघर।

करेगा साढ़े आठ घंटे और बच्चा साढ़े छः घंटे। सबको आधे घंटे का विश्राम मिलेगा। यह आधा घंटा श्रम के समय में से काटा जायेगा। खेत-मालिक के भरपेट खाना देने पर खाने का खर्च काटा जायेगा। नोटिफिकेशन में साफ़ कहा गया था कि जिन जगहों में मजदूरी कुछ धान में और कुछ नकद देने की प्रथा है वहाँ भी निश्चित मिनिमम वेज से कम नहीं दिया जायेगा।

छिहत्तर वर्ष आ पहुँचा। अब सरकार की ओर से मिनिमम वेज या एम० डब्लू० नाम की चीज़ केवल कागज़ों की शोभा बढ़ाये जाती और प्रशासन की विवेक तुष्टि जैसी लगती है। यह जानने के लिए एम० डब्लू० कार्यान्वित करने के कागज़ी उद्देश्य के लिए पश्चिमी बंगाल में 15 जिलों में प्रायः 75 लाख खेतमजदूरों के लिए सोलह इन्स्पेक्टर नियुक्त हुए। इन्स्पेक्टरों में से कोई भी कलकत्ते के दो सौ मजे और भाग्य के लाटरी-हाउस, राइटर्स बिल्डिंग[1] छोड़कर ज़िले में नहीं गया और खेत-मजदूर पहले की तरह ही आठ आने-एक रुपया-दो रुपये पाते रहे।

1974 के अन्तिम नोटिफिकेशन ने वेज-रेट को कन्ज़्यूमर प्राइस इंडेक्स फ़ॉर ऐग्रिकल्चरल लेबर के साथ जोड़ दिया और कहा, 'द मिनिमम रेट फ़ॉर वेजिज़ सो रिवाईज़्ड एबव आर ऑन द बेसिस ऑफ़ प्राइस इन्डेक्स (60-61 = 100) फॉर 1972-73 एट 233 पाइंट्स, द मिनिमम रेट्स ऑफ़ वेजिज़ विल बि एडजस्टेड एट द रेट ऑफ़ 62 पैसे पर मंथ पर पाइंट-राईज़ ऑर फ़ॉल ऑफ़ द कन्ज़्यूमर प्राइस इंडेक्स एबव ऑर बिलो 23 प्वाइंट्स फ़ॉर द एडल्ट्स एण्ड एट द रेट ऑफ़ 45 पैसे पर प्वाइंट फ़ॉर द चिल्ड्रन। बट इन एनि केस द मिनिमम रेट्स ऑफ़ वेजिज़ विल नॉट बि लेस दैन द रेट्स मेन्शन्ड एबव।'[2]

यहाँ यह बता देना उपयुक्त होगा कि नोटिफ़िकेशन के मसविदे में ग़लती रह गयी। वह 233 नहीं, 217 होगा। गलती रह जाना ही स्वाभाविक और प्रत्याशित था, क्योंकि ग़लती न रहे इसलिए सरकार बहुत खर्च कर लोगों को नियुक्त करती है। ये लोग वेतन, महँगाई भत्ता, हाउसिंग अलाउंस, चिकित्सा खर्च पाते हैं, इसीलिए 217 का 233 हो

1. पश्चिमी बंगाल सरकार का सेक्रेटेरियट।
2. इस प्रकार से ऊपर संशोधित न्यूनतम मजदूरी की दरें 233 बिंदु पर 1972-73 के कृषि उपभोक्ता मूल्य सूचक अंक (60-61 = 100) पर आधारित हैं। मजदूरी की न्यूनतम दरें 233 बिंदु से उपभोक्ता मूल्य के चढ़ाव या उतार के अनुसार 62 पैसे प्रति मास से वयस्क के लिए व्यवस्थित होगी और बच्चों के लिए 45 पैसे प्रति बिंदु होगा। किंतु किसी भी दशा में मजदूरों की न्यूनतम दरें उपर्युक्त दरों से कम न होंगी।

। इन सोलह नंबर के अंतर के बाद भी सैंतीस लाख से अधिक मनुष्यों भाग्य का नियंत्रण करते और सरकार के बाप बनकर रहते हैं।

उक्त नोटिफ़िकेशन के आधार पर 1976 साल के अप्रैल में एम० डब्लू० रेट दो बार संशोधन के बाद टिका, वयस्कों के बारे में दैनिक मजूरी पाँच रुपये साठ पैसे + दो रुपये पचास पैसे = आठ रुपये दस पैसे। मासिक मजदूरी बेसिक अस्सी रुपये साठ पैसे और महँगाई भत्ता पैंसठ रुपये दस पैसे = एक सौ पैंतालीस रुपये सत्तर पैसे। बच्चों के लिए दैनिक मजूरी चार रुपये और महँगाई भत्ता एक रुपया बयासी पैसे = पाँच रुपये बयासी पैसे। मासिक मजदूरी उन्तालीस रुपये और महँगाई भत्ता में सैंतालीस रुपये पच्चीस पैसे = छियासी रुपये पच्चीस पैसे। मिनिमम वेज के बारे में खेत-मालिक लोग तीन रजिस्टर रखने को विवश थे—मस्टर रोल, इंप्लाईज वेज रजिस्टर, जुर्माना-डिडक्शन-ओवरटाइम का रजिस्टर।

इतनी बातें पढ़ने के बाद, जैसा कि उसका स्वभाव है, काली को लगा कि इस बार जमींदारों की हार हुई। बड़ी खुशी में वह सदर गाँव में बेतूल के घर गया।

बोला, 'अब जो क़ानून बना है उससे भूयाँ भी हारा।'

बेतूल सूखे चेहरे पर गढ़े में धँसी सवेरे के तारे-सी आँखें झपकाते हुए काली को बड़ी करुणा के साथ देखते हुए बोला, 'कैसे ? काली बाबू, कैसे ?'

'एम० डब्लू० वेज, समझे, बेतूल ?'

'समझेंगे क्यों नहीं ? उससे हमें क्या ?'

'तुम्हें मिलेगा ?'

'कुछ नहीं समझते ! इसीलिए मिली हुई जमीन खोदी। कुछ भी नहीं समझते।'

'क्यों ?'

'क़ानून से क्या होगा ? देंगे नहीं।'

'नहीं देंगे ?'

'न।'

अपार, असीम, प्रतिकाररहित, निरुपाय, दुःख के साथ बेतूल बोल 'एक तो उद्धव ने दुनिया-भर में पुलिस घुसा दी है। भूयाँ के धान हर व काटते थे, उसे उस बार बसाई जो कुछ कर आया, उससे वह रास्ता नहीं रहा। सुमुन्दि की ससुराल गोलचाँपबेड़ा गाँव में है। वहाँ जा था।'

'ताराचाँद भूयाँ वहाँ है ? रामेश्वर का सगोती।'

'सब लंका जाकर रावण हो जायेंगे, काली बाबू।'

मन मे दुःखी होकर बेतूल ने काली की फेंकी सिगरेट का टोंटा उठा लिया, जलाया और दो-तीन बार जोरों से दम लगाकर सिगरेट बिलकुल ख़त्म कर दी। उसके बाद बुलाकर बडे लड़के से कहा, 'काली बाबू चाय-चीनी लाये हैं। माँ से कह, बना दे।'

उन लोगो ने कपड़े के किनारे से पकडकर अल्यूमिनियम के गिलासों मे चाय पी। बेतूल बोला, 'हमारे उद्धव पर गाँव के लोगों को गुस्सा है। महीने के अंत मे राशन की चीनी देना थी, वह नहीं दी। चाय पी सकें, इसका भी ठिकाना नही।'

'क्या कह रहे हो?'

'अरे, हमारी मजूरी के लिए बसाई तीन बार मरा। सो बाद में इस साल क्यों तुम्हारी पार्टी के गोरा बाबू के सिर में खुजली उठी है कि वह इस बार बहुत घूम-फिर रहा है।'

हाय। किसान-मजदूर प्रश्न पर एक ही जगह से गोरादास भाग-दौड़ कर रहा है, काली को पता नही।

'क्या कहा?'

'लड़का बतायेगा।'

बेतूल का बड़ा लड़का बाप की ही तरह था, टूटी कमर। गोखरू या करैत नहीं, बिना जहर का ढोंडा साँप। कमर टूटी, जिसका परिणाम यह हुआ कि हालत बहुत पतली थी। लड़का उकड़ूँ होकर बैठा और बोला, 'वह बड़ी बातें हैं। मजूरी नही दी, मैं लूंगा, वकील से, या मजूरी निसपेट्टर से, ट्रेड यूनियन मे नाम लिखा के, आज ही बताऊँगा, लेबर डिपाट को। न, न, गलत कहा, जिला जज के यहाँ अर्जी दूंगा। तब मुकदमा चलेगा। जज को बहुत राइट दिये हैं। जज, जमीदार को पाँच सौ रुपया फाइन कर सकता है, छ. महीना जेहल भेज सकता है। हम फाल्स अर्जी देंगे तो हमें भी फाइन होगा। मजूर नालिस करेगा तो निसपेट्टर जमीदार को नोटिस देगा—क्यों यह काम किया, सबब बताओ! वह जवाब न दे तो केस लड़ा जायेगा।'

काली की टेम्परेरी खुशी खतम हो जाती है। बेतूल कहता है, 'अब तुम बताओ, कौन खेतमजूर जमीदार के नाम पर केस करेगा? रुपया कहाँ है? वकील कहाँ है? दीवानी केस मे फैसला होता है? उसमे जो जमीदार, वही महाजन। उधार देता है। अगर उधार न दे? ना काली बाबू, अब मरना पड़ेगा।'

उपसहार मे बेतूल का लड़का बोला, 'ताराचाँद इस बार मटर मोल ले रहा है। बाप रे, क्या हार्न बजा रहा है!'

काली पराजित होकर चला आया। वह ख़ुद ही गोरादास के पास गया। किसी भी दिन मीसा में बंद होने की संभावना में गोरा एक ओर हताश हो रहा था। दूसरी ओर बिगड़े मिज़ाज का था। वह काली से बोला, और जब बोलता तो इस तरह चिढ़कर बोलता था जैसे काली उसकी पार्टी का भला काडर न होकर शोषक कांग्रेस का सदस्य हो। उसने उँगली उठाकर कहा, 'गरीब खेतमजूर जिस हाथ से खेती करता है, एग्रो-इकानमी का बेस-आर्किटेक्ट उसे बेज न देगा? बदमाशी? क़ानून बनाया, काम में नहीं लाया गया? सैंतीस लाख लोगों के लिए सोलह इंस्पेक्टर? तुमसे कहे दे रहा हूँ कि पीछे शक्तिशाली संगठन नहीं है, इसीलिए इन पर यह अत्याचार है। समझ लो कि इतिहास इस अन्याय को क्षमा नहीं करेगा।'

'वह तो हमने भी नहीं किया, गोरा।'

'प्रतिक्रियावादी राय देने से कोई फ़ायदा है?'

'किससे लाभ है?'

'तुम क्या समझोगे? नक्सलवादी लोगों के सिम्पैथाइज़र! बसाई तुम्हारा हीरो है। रेनिगेड!'

'इतना ख़फ़ा होकर, चीख़कर क्यों बोल रहे हो?'

'बोलूँ नहीं? तुम्हारी तरह पेटी-बूर्ज्वा लोगों के लिए ही तो...।'

'इमर्जेंसी हुई?'

'इमर्जेंसी में तुम्हारे तो पौ-बारह हैं।'

'क्यों?'

'सरकारी विज्ञापन मिलता है। हरिसभा करते हो। बेटे के बहूभात में शहर-भर को न्योता देते हो। देउकी मिसिर मिलने आता है।'

'यह तुम्हारा कहना है, या पार्टी का अभियोग है?'

'मैं नहीं बताऊँगा।'

'क्यों?'

'तुम अपार्चुनिस्ट हो।'

इस बात पर काली ने बहुत ही स्वभाव-विरोधी काम कर डाला। आगे झुककर गोरादास के भरे गाल पर ज़ोरों से थप्पड़ मारा। गोरा ऐसा भौंचक्का रह गया कि वह कुछ भी न बोल सका। बड़े ग़ुस्से में काँपते हुए काली बोला, 'कभी मेरे दिन आयेंगे। पूरी कमेटी के आगे मैं तुमसे जवाब तलब करूँगा और तुमसे माफ़ी मँगवाकर छोड़ूँगा।'

इस तरह के काम से फिर काली का प्रेशर बढ़ गया और डॉक्टर के

कहने से उसे एडेल्फेन[1] की टिकिया खानी पड़ी। पता नहीं क्यों, अनिर्वाण की पत्नी उसकी सेवा करती और बहुत ही संकोच से काली वह सेवा लेता। सौभाग्य से इस बार काली आसानी से चंगा हो गया और गोरा सीसा में बन्द हो गया, बेनूल की पत्नी को सहसा डोमनाचिती साँप ने काट लिया। इस साँप के काटने से आदमी बचता नहीं। कहावत है कि 'जो काटे डोमना बुलाओ बाम्हना'—अर्थात् पुरोहित को बुलाकर शव को बहाकर क्रियाकर्म करवा दो। किन्तु काली एक उद्देश्य पाकर फिर चेत उठा और बेनूल की पत्नी को चंगा करने के काम में लग गया। डोमनाचिती अच्छी तरह काट न सका था, इसी से बेनूल की पत्नी अस्पताल में जी गयी। उसे गाँव पहुँचाने जाने पर काली ने सुना, 'इस साल गाँव में साँपों का उपद्रव बहुत है।' वह फिर सदर-शहर लौट गया और मुकुन्द से रुपये उधार लेकर लेक्सिन लाकर सदर-गाँव में दो दिन-दो रात रहकर बेनूल के बेटे और दो युवकों को साँप के काटने पर लेक्सिन के प्रयोग की शिक्षा दी। सब लोगों ने स्नेह और विनम्रता के साथ जिस तरह उसकी बातें सुनीं उससे यह समझने को नहीं रह गया कि फिर डोमना के काटने पर देहाती ओझा को ही बुलायेंगे। जागुना लौटने पर एम० आई० ने उन्हें बुलवा भेजा और अफ़सरी आवाज़ में बोले, 'सदर ग्राम इज़ ऐन इल रेप्यूटेड विलेज। वहाँ आप क्या कर रहे थे?' काली के सच उत्तर पर उन्होंने विश्वास नहीं किया और बोले, 'डोन्ट ट्राई एनीथिंग सिली। ज़माना अच्छा नहीं है। थाने के पास इस समय बहुत ताक़त है। याद रखियेगा।' 'लेकिन मैं तो लेक्सिन लेकर...।' काली को यह बात कहने पर फिर डाँट पड़ी और समझा कि पश्चिम के दामों पर बनी सोसायटी के शून्यवादी लेखकों द्वारा प्रचारित 'ऐलिएनेशन'[2] को पूँजीवादी बुद्धिजीवियों का अपप्रचार कहकर उड़ा देना ठीक नहीं। सब सबसे 'एलिएनेटेड' हैं। द्वीपवासी। द्वैपायन[3] सभ्यता। वह जो कुछ कहे सब सच, लेकिन वह, गोरा, एम० आई०, शिनिमाला—सभी समानान्तर पथ पर चल रहे हैं। कोई भी कॉमन प्वाइंट ऑफ़ एग्रीमेंट नहीं है, इसीलिए काली सारी मनमनमाहट लेकर सबके निकट अबोध्य है। वह बहुत ही आंतरिक अभिलाषा से बोला, 'विश्वास कीजिये, बेनूल की पत्नी ...।' एम० आई० बोले, 'हाँ, हाँ, उसी का लड़का तो नक्सलवादी है।' काली समझ गया कि अब वह कुछ भी समझा न सकेगा। उद्धव नक्सलवादी नहीं है। उसे बेकार में चमारहाट-कामारहाट केस में फाँसकर पुलिस तंग कर रही है। इसी

1. रक्तचाप-रोग के निदानहेतु दवा 2. अजनबीपन, परायापन 3. ऋषि वेदव्यास का जन्म एक द्वीप पर हुआ था, इसलिए भारतीय सभ्यता को द्वैपायन कहा जा सकता है।

एक केस में पुलिस आंध्र, दिल्ली, बिहार—सब जगह से बंगाली लड़कों को पकड़ लाकर चामारहाट-कामारहाट केस में फँसा रही है। इस केस में शेर और हिरन—सभी साम्यवादी नीति में एक हो गये हैं। यह सब बात कह-कर वह एलिएनेशन या द्वीप की विच्छिन्नता बढ़ाये, या उठ जाये ! उसी दिन तड़के फिर कांस्टेबल आकर उसे पकड़ लेता है, इस बार पूरे मीसा में। लेकिन कांस्टेबल उसे जीप में बैठा लेता है और एस० आई० बिलकुल भिन्न अंदाज़ में कहते हैं, 'बसाई टूडू ज़िन्दा है। एक बार चलिये, ज़रा हेल्प कीजिये।'

क्षण-भर में काली इस सिचुएशन के कंट्रोल में चला जाता है और कहता है, 'कपड़े बदल लूं, घर कह आऊँ।' अनिर्वाण की पत्नी पुलिस की जीप में ससुर जा रहे हैं, देखकर एकदम रो पड़ती है और काली उसके सिर पर हाथ फेरकर कहता है, 'रोओ मत रेवा, कुछ नहीं होगा। मैं लौट आऊँगा।' नींद टूट जाने से गिनिमाला खीझकर कहती है, 'तुम्हारी नज़र तो उसने देखी नहीं है। इसी से रो रही है। लो, चप्पल बदल लो।'

काली जीप पर बैठा है और जीप चल पड़ती है। दिन जून के हैं, किंतु मानसून अभी तक गांगेय पश्चिमी बंगाल नहीं पहुँचा है। ड्राइवर बोला, पेड़ों को देख रहे हैं, सर ? चैत के नये पत्ते झर गये हैं। आम तो इस बरस आ ही नहीं। घर पर जो बारहमासी बैंगन लगाये थे, वह और कुम्हड़ा—ब ख़ाक हो गये। ज़माना अच्छा नहीं है, सर। उस दिन मरा कौआ घूरे र पड़ा हुआ था।'

'निताई की दूकान पर रोकना, चाय पिऊँगा।'

निताई की दूकान बस के रास्ते में हाईवे पर थी। रात-भर बसें और ें चलती रहतीं, ख़रीदार मिलते रहते। दूकान चौबीसों घंटे चलती ती। निताई की दूकान का तला मांस, तड़का, पराठा, मटर-पनीर, सी आदि डेलीकेसी पंजाबी नमूने पर बनतीं और ट्रक रोककर पंजाबी वर उन्हें खाकर जिस तरह तारीफ़ें करते, उससे समझा जाता कि ई परीक्षा में डबल पास है। जागुला अंचल नक्सलवादी सवाल पर स—आर्मी—गुंडे—राजनीतिक गुरु और गुरु के मानने वाले संप्रदाय ने-जाने की राह के किनारे स्थित होने से निताई के दिन गाने में बीत ।। नौकर दूकान का काम देखते। निताई गाना गाता रहता। एक किशोरकुमार की वह बहुत अच्छी तरह नक़ल कर लेता है कहकर ान क्यों पुकारे' गाकर स्थानीय आयोजन जमा दिया। आजकल ज़ोरों पर है। ख़ास बिजनेस है अन्दर के कमरे में—जुआ और का ज़ोर। इमर्जेंसी के धन से निताई तरह-तरह से लाभान्वित हुआ

और एशिया के मुक्ति-सूर्य के सुपुत्र की फ़ोटो पर वह माला पहनाए रहता। आजकल उसने दो शौकों में प्राण अर्पण कर रखे हैं। एक, मुर्दा फूँकना। एक सौ आठ मुर्दे फूँककर निताई स्वर्ग जाना चाहता है। उसका मुर्दा फूँकने वालों का एक दल है। जिसकी जितनी सामर्थ्य हो, रुपये देने पर निताई बाक़ी रुपये सूद देकर लाश फूँकने वालों का साथ देता, 'फिर कहो हरिबोल ! प्रेम से बोलो हरिबोल !'[1] स्लोगन ठीक हो रहा है या नहीं, यह देखकर और अपनी कमर में गमछा बाँधकर 'चाँद के सूने घर जा रहा है कौन रे' गीत बड़े स्वर से साथ गाकर वह लाश के पीछे-पीछे चलता। परिणामस्वरूप हरिबोल दल की निःस्व वृत्ति उक्त गीत का हृतकारक गहरी दार्शनिकता द्वारा काउंटरबैलेंस हो जाता। शव के जलने तक सफ़ाई करने वाले पुलिस और आर्मी की लाशें निताई को नहीं मिलतीं। किन्तु सब आगजनी के मुर्दों की सफ़ाई की युवक लाशें पाकर उसका कोटा पूरा हो गया था। निताई का दूसरा शौक़ तरह-तरह के भावगीत गाने अपने गले से गाना था। तबले ढोलक और मादलों के बीच-बीच में वह मुकेश के सामान्य नकली स्वर में 'एक दिन बिक जाएगा माटी के मोल' की प्रैक्टिस करता। निताई इस अंचल का एक प्रभावशाली व्यक्ति था। पुलिस चाय माँगती तो वह तला नाश्ता भी दे देता। वह भी बिना पैसे के। एम० आई० और आर्मी गामरा को देखकर ही वह तबके की पवित्रता को सोचकर सामने माँस नहीं लाया। दूध, चाय, सिगरेट, बिस्किट ले आया।

चाय पीकर भी एम० आई० का टेंशन दूर न हुआ। वे अन्यमनस्क भाव से आकर जीप पर बैठ गये, सिगरेट सुलगायी, 'चलाओ' कहा और कई कश लगाकर सूखे गले से बोले, 'उस वक्त क्या कहा था, भूल जाइये। इस वक्त आपकी हेल्प चाहिए।'

'क्या हेल्प ?'

'वगाई टुडू को शनाख्त करना होगा।'

'मर गया ?'

'न ! सीरीयस हो गयी है। बचेगा नहीं।'

'उसके बाद ?'

'मुझे डर लगता है।'

'क्यों ?'

'उस बार एम० आई० ..!'

'ओः !'

1. बंगाल में 'राम नाम सत्य' के स्थान पर कहा जाता है।

'देखिये, ऐक्शन में जाने पर...मेरी फ़ैमिली है।'

'मुझे क्या करना है?'

'आप दया कर उससे सरेंडर करने को कहें।'

'उसके मतलब?'

'कदमकुआँ गाँव जानते हैं?'

'नाम सुना है।

'गॉड फ़ारसेकन जगह। नियरेस्ट पुलिस आउटपोस्ट पचादी से ग्यारह मील अन्दर। दो बार चरसा पार करना पड़ता है। वहाँ नदी ने दो बार मोड़ लिया है। नदी पारकर अन्दर तीन मील जाने पर गाँव है।'

'अरे, हमारे एमेले[1] का गाँव न?'

'हाँ मशाई, एमेले का गाँव है, उससे क्या? मोस्ट नेगलेक्टेड गाँव। एमेले का घर तो गाँव के बाहर है।'

'ओः!'

'लगा तो है एमेले के बाप के साथ। उस ख़ित्ते का बड़ा महाजन है। ज़मीन भी है। लेकिन महाजनी कारबार में बड़ा आदमी है।'

'पता है न कि बांडेड लेबर समाप्त हो गया है?'

'क़ानून बन गया है।'

'अच्छा बताइये तो! कोई ऐक्ट बने तो और किसी को पता नहीं हो सकता है, लेकिन पतितबाबू को पता न रहने का कोई आर्गुमेंट है? तुम्हारा बेटा एमेले है। तुमको तो पता होना ही चाहिए?'

'उससे क्या हुआ?'

एस० आई० बड़ी मुसीबत में थे। लड़के थे। डर गये। जीप की तेज़ी से ठंडी हवा का झोंका लगा। सिर में तरावट आ रही थी। फिर भी एस० आई० पसीना पोंछ रहे थे। काली ने समझा कि एमेले के बाप के बांडेड लेबर ऐक्ट न जानने की बात पर उन्हें विश्वास हो गया है। विश्वास कर परेशान हो गये है।

'सब सुने बिना नहीं समझेंगे।'

बात यों ही थी कि फिर सिगरेट सुलगाने में एस० आई० की उँगलियाँ काँप गयी और वह माथे का पसीना पोंछने लगे। उसके बाद बोले।

कहानी संक्षिप्त और व्यंजक थी।

इस साल बरसात नहीं हुई माने, अधिकांश जगहों में नहीं हुई। कदम-

1. एम० एल० ए० का।

कुआँ से सोलह मील उत्तर में आमनोड ब्लॉक में कैनाल के पानी से सेंची हुई। आमनोड में हबीबखाँ और इरफानमुल्ला दो बड़ी जमीनों के मालिक हैं। पचादी पुलिस-आउटपोस्ट, आमनोड और कदमकुआँ के बीच में है। पचादी और कदमकुआँ और लगा हुआ नदी-बेल्ट जमींदारी अबॉलिशन के पहले तक एमेने पतितपावन सोहारी के पितामह की जमींदारी में था।' कदमकुआँ उसी जमीन के टुकड़े के अन्तर्गत है जिस जमीन की गोद में घरमा नदी ने कई बार अपने बहाव का रास्ता बदला था। नदी जब धार मोड़कर दूसरी ओर चली जाती तो, जो अपने किनारे छोड़ जाती उसमें कुछ पानी रह जाता। कुछ दिनों में वह पानी रिसकर जमीन के नीचे चला जाता और वन के रूप में शोभित होता है। वन माने वृक्ष। वृक्ष के अर्थ होते हैं भूगर्भ में जलसंचय। उसके बाद कुछ काल के पश्चात वहाँ एक मनोरम वनभूमि उत्पन्न हो जाती है। बबूल, पारुल, शाल, सियाल के और आँवले के उस जंगल में सोहारी जमींदार शिकार खेलते। उस समय भी कुछ जंगली सुअर, हिरन, चीते, कभी-कभी रॉयल बेंगाल। साही बहुत अधिक थीं। जाड़े की बलुही धरती की गोद के निकट का वन यायावर पक्षियों से भर जाता। बीच-बीच में डी०एम० या कलेक्टर, या कमिश्नर, या पड़ोसी जमींदार सोहारियों के प्रसिद्ध पौष काली-पूजा में आमंत्रित होते और शिकार करने आते। इसलिए इस वन में सोहारी बाबू लोगों ने एक बँगला भी बनवा दिया था। सरकार के जमींदारी ले लेने के बाद वन और बँगले को बाद में वन-विभाग ने ले लिया। स्वॉइल-टेस्ट[1] में मिट्टी को उपयोगी बनाने के लिए अनगिनत खैर के पेड़ लगाये गये। पेड़ हुए। खैर को कैद बनाकर कोई कुटीर उद्योग नहीं बना। जब तक आजादी नहीं आयी, जंगल डाकुओं का अड्डा था। यद्यपि जंगल बहुत-सा काट डाला गया है, फिर भी अब तक उसका नाम अच्छा नहीं है।

पतितपावन के पितामह अन्यायी थे। लड़का जगत्तारण भी उसी परंपरा का पालन कर रहा है। जमींदारी चले जाने पर, राज खोने पर, महाजन बनने की अकल सबमें नहीं रहती है। पर जगत्तारण में थी। यथार्थत उन्होंने इस प्रकृत सत्य को जल्दी समझ लिया कि जमींदारी चलाने का झंझट बड़ा भारी है। पचास बीघे से लगभग जमीन गुसाई धान के लिए रखकर उन्होंने सारी जमीन निकल जाने दी। पहले रुपये देकर बस, दूकान, ठेकेदारी के काम—इस तरह के कुछ प्राइवेट एन्टरप्राइज को सहारा दिया। उसके बाद जिसने चाहा उसे खुले हाथों उधार दि

---

1 धरती का परीक्षण।

से उन्होंने एक चक्रवृद्धि ब्याज के साम्राज्य की स्थापना कर ली।

आमतोड़ के हबीबखाँ और इरफ़ानमुल्ला जमींदार, महाजन न थे। नक्सल ज़माने में उन्हें पुलिस के हाथों बहुत-कुछ नुक़सान उठाना पड़ा और इस्लाम के प्राचीन मूल्यबोध में विश्वास रखने के कारण आश्रित दो घर काउराओं[1] को पुलिस के हाथों न देकर पुलिस और प्रशासन की आँखों का काँटा बन गये। यही एकमात्र आंचलिक जमींदार थे जिन्होंने घोषणा कर इस बार छिहत्तर में संशोधित न्यूनतम मजदूरी दी। दे रहे हैं। मतलब था प्रशासन की अच्छी नज़रों में फिर से आ जाना। उसका परिणाम हुआ कि कुछ खेतमजूर जी उठे। आमतोड़ भी कदमकुआँ जागीर में था। इस बार मज़दूरी देने के वक़्त हबीबखाँ और इरफ़ानमुल्ला ने खेतमजूरों से बात कर ली। हाँ, वे रिवाइज्ड रेट देंगे। लेकिन ज़्यादा लेबर नहीं लेंगे। दोनों परिवार मिलकर सतत्तर लोगों से काम करायेंगे।

जगत्तारण लोहारी के गाँव में केउटपाड़ा के दो आदमी, संथाल या माझीपाड़ा के दो आदमी उक्त सतत्तर लोगों में शामिल थे। वे भी भागकर सम्मिलित हो गये।

काली बोला, 'भाग क्यों गये?'

'वे जगत्तारण के बांडेड लेबर थे। जगत्तारण के पितामह ने उनके पुरखों को धान, रुपये आदि उधार दिये थे।'

'कितना धान! कितने रुपये?'

'धान हो सकता है मन-भर होंगे और रुपये शायद बहुत हुए तो सौ के लगभग होंगे। मुझे पता नहीं।'

'उसके बाद?'

'चार पीढ़ियों में भी असल नहीं चुका, सूद भी नहीं। जो हो, जगत्तारण के बाप के ज़माने से वे अँगूठा-निशानी देकर लेबर देते थे। माने, जिन लोगों ने शुरू में लिया था, वे तो थे नहीं। उनके वंशज अँगूठा लगाते। जब तक मूल सहित सूद अदा न हो वे आकर बेगार देंगे।'

'ठहरिये, ठहरिये, जगत्तारण के पितामह ने कहा था न?'

'हाँ।'

'ज़मींदार और प्रजा हैं यह?'

'जगत्तारण के पितामह भी महाजन थे। बाद में ज़मींदार बन गये। उनका लड़का भी ज़मींदारी कर ही गया।'

'यह कहिये। मैं कन्फ्यूज़ हो रहा था कि ज़मींदारी चले जाते ही

---

1. एक नीच जाति।

जगतारण महाजन कैसे बन गया ? अब समझा कि दादा का खून उसकी नसों में था।'

'आप तो मशाई, खून देख रहे हैं। उधर...हटाइये, बांडेड लेबर का मजाक तो जानते हैं। सात पुश्तों में भी उधार नहीं चुकता। जगतारण अच्छा गेम खेलता है। उसकी जमीन को उसके बांडेड लेबर की बारह फ़ैमिली खेती करती हैं। माने पर।'

'न मजदूरी, न बटाई, तो खेतमजूर ?'

'नॉथिंग।'

'उसके बाद ?'

'जितनी फ़ैमिली बांडेड लेबर हैं, वे कभी बेज बेन्ट में जाने की हिम्मत नहीं करती। लेकिन इस बार एक कैउट फ़ैमिली, तीन मासी फ़ैमिली के छः आदमी, वे घोषित मजदूरी मिलेगी, यह सुनकर आमनोड चले गये। जगतारण ने पहले तो उन्हें धमकाया। उन्होंने कहा कि बांडेड लेबर ऐक्ट बन गया है, उसमें ही लगता है कि उसके पीछे बसाई टुडू मार्का कोई आदमी है। इस पर जगतारण ने फिर धमकाया। उस पर उनमें से आठ आदमियों ने कहा कि घर-द्वार छोड़कर चले जायेंगे।'

'उसके बाद ?'

'जगतारण गुस्से में आ गया। उसके घर बात करने आने पर आठ कैउट और मान्ताल लोगों को रोककर घर में बांध रखा। उनके घर जला दिये।'

'वाह, पुलिस को पता था ?'

'न।'

'उसके बाद ?'

'तीन दिन के बाद उसके घर पचास-साठ आदमी आये। उन्होंने डिक्लेयर किया कि बेगार नहीं देंगे, उन लोगों को छोड़ो। तीर छोड़कर जगतारण के लोगों को घायल कर उन्हें छुड़ाया। सारी बांडेड फ़ैमिली जाकर उस जंगल में घुस गयी। जगतारण ने नेपुरली बेटे को बताया था। लड़के ने जोड़-तोड़ बिठाया। पचादी आउटपोस्ट की पुलिस और जगतारण के आदमी एक ओर थे। दूसरी ओर बसाई था। वहीं ऐक्शन हो रहा है।'

'बसाई टुडू है, यह कैसे मालूम हुआ ?'

'अरे, वह गेट लीड करके गया था। सुना कि वह घायल है। अब तक सरेंडर नहीं किया है।'

'पुलिस के पास तो बंदूकें हैं।'

'मालिनें बच्चे लिये आगे बैठी हैं, मशाई। पुलिस...मक्सम टाइम तो

नहीं है...औरतें, बच्चे, बच्चियाँ—पुलिस के बढ़ते ही वे तीर छोड़ते हैं। कहते हैं कि तुम्हारे साथ हमारा कोई झगड़ा नहीं है। जगत सोहागी गैर-क़ानूनी काम कर रहा है। उसे पकड़ो। पुलिस को घायल नहीं करते। पुलिस भी कहती है कि औरतें कुछ नहीं करतीं। इतने गवाहों के आगे गोली से औरतों, बच्चों, बच्चियों को नहीं मारेंगे। गोलियाँ कई राउंड चलीं ज़रूर, पर अब नहीं चल रही हैं।'

'गवाह माने ?'

'तमाशा देखने वाले लोग तो हैं।'

'ज़ोरों से खाँसिये।'

'ठहरिये, चाय पिऊँगा।'

फिर जीप रुकी। छोटी-सी दूकान थी। चाय, पान, साबुन, मोमबत्ती। दूकानदार की मनहूसों की-सी शकल थी। पुलिस की गाड़ी देखकर दूकानदार की शकल भावहीन और निष्फल क्रोध से बिगड़ गयी। संभवतः उसकी दूकान सौ रुपये पूँजी की थी। गाँव के लोग पैसे देकर चाय पीते थे। पुलिस पैसे देती नहीं। सवेरे से पुलिस चाय पीकर दूकान की बोहनी करे तो दिन ख़राब बीतता है, यह इन लोगों का विश्वास है। काली को पता है। एस० आई० के जानने की बात न थी। काली ने आगे बढ़कर चाय के पैसे दिये। वह आदमी देखने लगा। काली ने सिगरेट और दियासलाई ख़रीदी। जीप में आकर बैठा। जीप चल दी।

एस० आई० फिर दुःखी स्वर में बोलने लगे, 'आमतोड़ और कदमकुआँ गाँव के सारे लोग, एमेले भी तो नार्थ बंगाल का टूर कैंसिल कर वहाँ थे। सभी दूर खड़े देख रहे थे।'

'मुझे क्या करना है ?'

'बसाई टुडू से सरेंडर करने को कहें।'

'वह क्यों सुनेगा ?'

'मुझसे किसी ने कहा है, आपकी बात मानेगा।'

'चलिये। फ़ायदा नहीं है। बीच में खड़े होकर तीर खाऊँगा।'

'अच्छा, काली बाबू ?'

'कहिये।'

'इस बसाई टुडू का काम क्या है ? पता है, उसके बारे में जिसे कहते हैं, मुझमें एक सुपर्सिटणस डर है। उसके विरुद्ध ऐक्शन लेने जाने में एस० आई० जिन्दा नहीं रहता।'

'यह कैसे ?'

'देखिये न, मेरे पहले के एस० आई०...।'

'मुझे आप लोग क्यों खींच रहे हैं?'

'आप उसे जानते हैं।'

'और बहुतेरे लोग जानते हैं।'

'आपके साथ लास्ट मुलाक़ात हुई थी।'

'जोर देकर क्या कुछ कहा जा सकता है? मैं ही किस तरह कहूँगा?'

'मुझे क्या लग रहा है, जानते हैं? असली बसाई टुडू मरा नहीं है। उसे कोई इपर्सनेट कर रहा है।'

'बार-बार, तीन बार?'

'कौन जाने, मशाई? सारे सथालों को अगर जेल में भरा जा सकता।'

'क्या ऐसा हो सकता है?'

'क्यों नहीं हो सकता? मान लीजिये, सब सालों को एक जगह रखा जाये और चारों ओर से दीवारें उठा दी जायें। उसके बाद . '

'बुरा खयाल नहीं है।'

'न, मेरी फ़ेमिली है . .।'

जीप बेढब जगह पर पहुँच गयी। कदमकुआँ पहुँचने में दो बार चरमा पार करना होता है। कदमकुआँ में जीप पहुँची। पैदल का रास्ता। 'वर्क मोर, टॉक लेस' और 'द नेशन इज़ ऑन द मूव' लिखी दो बसें खड़ी हैं। उनमें भी निश्चय ही पुलिस आयी है। घटनास्थल नजदीक ही है। बहुत अजीब-सी एक तसवीर क्रम से दिखायी देती है।

चरमा नदी को छोड़कर आधा मील जाने पर चरमा की छोड़ी हुई पतली-सी धार है। धार के बाद वह थोड़ी साफ़ है। उसके बाद वन-भूमि है। वन और बालू के तट की सीमा-रेखा पर बैठे हैं स्त्रियाँ और बच्चे। [illegible] है। [illegible] दूरी [illegible] लिया है। साल के पत्ते और कागज के दोने हैं। बालू के किनारे बैठी औरतें काफ़ी थकान दूर किये हुए हैं।

काली और जागुला के एम० आई० बातों के झगड़े में जा पड़ते हैं। पुलिस गोली क्यों न चलाये, इसको लेकर पतितपावन संभवत: पचादी के एम० आई० से कुछ कह रहा है। इस एस० आई० का भी कांग्रेसी खूँटा रहना स्वाभाविक था। वह बहुत जोरों से डपटकर बोले, 'आप एमेले हैं। लेकिन मैं आपके आगे जवाबदेह नहीं हूँ। एस० पी० का ऑर्डर ले आइये, गोली चला दूँगा। आपको बात पर हाट में गोली चलाकर हाजरा का डिमोशन हो गया न? जितना हमला है सब पुलिस पर।'

'ऑर्डर मैं ले आऊँगा।'

'हाँ-हाँ, उस वक़्त भी किया था। गोली तो परसों चली थी। उनके तीरों से कोई घायल हुआ था?'

'इसलिये, पालपुर से पुलिस आ रही है। डी० एस० पी० हैं।'

'आयें। तब प्रोटेक्शन दिलाऊँगा।'

'मेरे बाबा को प्रोटेक्शन नहीं देंगे?'

'नहीं दूँगा माने...?' तभी किनारे से जैसे किसी ने ललकार कर कहा।

'जगत लोहार कहाँ है? प्रोटेक्शन किसे देगा? ओ एगोले! तुम्हारा नाम तो घर घर बज रहा है।' जनता इस बात पर 'हाः हः हः' कर हँसने लगी। बालू-तट की औरतें भी हँसने लगीं।

जामुला के एस० आई० को देखकर पचादी के एस० आई० आगे आये। दोनों में कुछ बातें हुईं। बिचवई का सिद्धांत हुआ। पचादी के एस० आई० ने मुँह के आगे एक भोंगा लगाकर जोरों से कहा, 'बसाई टुडु, बसाई टुडु, बसाई टुडु!'

कुछ देर बाद एक औरत अन्दर चली गयी और लौटकर बोली, 'टुडु कह रहा है कि पुलिस को हटाओ, नहीं तो कोई बात नहीं होगी।'

'तीन दिन हो गये, हमें पता है कि तुम घायल हो।'

'यह बात नहीं सुनेंगे।'

पतितपावन आगे आता है और कहता है, 'किसी को बेगार नहीं देना होगी। मैं वादा करता हूँ।'

इस बार अंदर से गरजने की आवाज आयी, 'इन लोगों के घर जला दिये, हरजाना कहाँ है?'

एस० आई० पचादी: 'सब होगा। तुम बाहर आओ।'

'पुलिस का विश्वास नहीं है।'

'किस बात से विश्वास करोगे?'

'कौन हो?'

'हबीबर्रा, इरफ़ानमुल्ला, आसतोष स्कूल के हेडमास्टर—किससे बात करोगे?'

जवाब नहीं कोई, आवाज नहीं।

एस० आई० जामुला: 'मैं एस० आई० जामुला हूँ। काली सांतरा से बात करोगे? वह आये हैं।'

ख़ामोशी। ख़ामोशी। चुप्पी का बड़ा दबाव। उस दबाव से काली का कलेजा फटा जा रहा था।

'काली सांतरा अकेले आये।'

काली और एस० आई० एक-दूसरे की ओर देखते हैं। जागुला बोले, 'आप बढ़िये, पीछे फ़ोर्स रहेगा।'

'ना, कोई नहीं जायेगा। मैं अकेले जाऊँगा।'

'अकेले? यह नहीं कर सकते।'

'कौन कहता है?'

चुप्पी। दोनों एस० आई० लाचार हैं। जागुला: 'अच्छा, आप उसमें बाहर निकलने को कहेंगे।'

'उसकी बात सुनूँगा। नहीं तो, कुछ नहीं कह सकूँगा।'

काली ने ज़ोरों से कहा, 'बसाई, मैं काली सांतरा हूँ। मैं आ रहा हूँ। अकेले, अकेले आ रहा हूँ।'

दुबला-पतला, झुकी कमर, लम्बा-चौड़ा, मोटा चश्मा पहने आदमी रेत पार कर चला। वह बालू के तट पर पैर रखता बढ़ रहा था। शोरगुल। पैरों की आवाज़। 'पु—लिस! पुलिस!' चिल्लाहट। 'पाकपुर से पु—लिस।' डी० एस० पी०। बीस पुलिस वाले। 'फ़ायर! फ़ायर!' कहते-कहते पुलिस वालों के साथ डी० एस० पी० तेज़ी से बढ़े। दो एस० आई० और दस स्टेशनरी पुलिस सहसा ऊपर वाले के आ जाने से सक्रिय हो उठे। सब गोलियाँ दागने लगे। भयंकर शोरगुल, 'मा—रे!' 'स्टॉप शूटिंग।' सब रुक गये। चुप्पी। कराहने की आवाज़। एस० आई० जागुला बालू पर चले जाते हैं।

'बेटन चार्ज!'

जंगल में पुलिस। औरतों और बच्चों का करुण चीत्कार। 'कहाँ है बसाई?'

'यहाँ, कमरेड।'

काली सांतरा आगे बढ़ता है। पेट में छिद्र। बायाँ पैर बुरी तरह से सूजा हुआ है, बैंगनी हो रहा है, नाभि के नीचे पेट का हिस्सा फूला हुआ है, बायाँ पैर अस्वाभाविक रूप से लटका है। पुलिस ने घेर लिया। युवक शरीर। भौंहों का जोड़ा। बसाई की दूसरी सनाख्त से द्रौपदी के हाथों में हाथ थे। चमकती काली आँखें एकाग्र थीं। युगों-युगों-युगान्त आगे। जोड़ी भौंहें। बसाई टुडु ने आँखें उठायीं। तरुण कंठ में मृत्यु का कफ़ था। बोला, 'मैं मर कर लाश हो गया हूँ। इसीलिए सनाख्त करने आये हो, कमरेड?' कहकर उसने बड़े गुस्से में हवा का गला मरोड़ा, पीस डाला। उसके बाद निकटतम पुलिस वाले की ओर इशारा कर थूका।

बसाई को पचादी आउटपोस्ट लाया गया। पाकपुर अस्पताल।

गैंग्रीन। डेथ ऑफ़ द पार्ट ऑफ़ द टिशूज़ ऑफ़ द बॉडी। सामान्यतः कम ख़ून मिलना गैंग्रीन का कारण होता है, किंतु बीच-बीच में इसका कारण प्रत्यक्ष चोट होता है (बसाई के बारे में गोली)। कम रक्त मिलने से हो सकता है कि ब्लड-वेसल दवाव के कारण (इस मामले में एक जोड़ा 303 लगी थीं), गीले गैंग्रीन में टिशू सारे फ़्लूड से स्फीत होकर वेन्स का ड्रेनेज अपर्याप्त हुआ। पैर को अलग नहीं किया जा सकता। गैंग्रीन पेट के निचले हिस्से में भी फैल गया। मरने तक बसाई ने फिर एक बार भी मुंह न खोला और 'जगत्तारण ने बेगार-लोगों को छोड़ दिया' जानकर मुंह मोड़ लिया। मर गया। आइडेंटिफ़िकेशन-परेड में द्रौपदी नहीं रही। ग़ायब थी।

12

बसाई की चौथी मौत के बाद प्रशासन ने एक निश्चय किया और काली को कुछ भी नहीं बताया गया। एस० आई० पुलिस की गोली से ही मारे जाने के परिणामस्वरूप ऑपरेशन-कदमकुआं की ख़बर फ़ाइल में रह गयी। इस समय प्रेस पर भारी सेंसर था, इसलिए ख़बर सीधे नहीं निकली और ख़बर को घुमा-फिराकर भी प्रकाशित नहीं किया गया। किंवदन्ती के अनुसार 'समाज-विरोधी और पुलिस के सम्मुख-संघर्ष में कर्तव्यपरायण पुलिस के वीरोचित मृत्युवरण' समाचार में भी प्रकाशित नहीं हुआ। कारण एमेले था। पहले से औरतों और बच्चों पर गोली न चलाने के परिणामस्वरूप उसके मन में हुआ कि पुलिस जन-विरोधी, अविश्वसनीय और अन्यायी है। उसने राइटर्स बिल्डिंग में जो कुछ क़िस्से फैलाये, उनसे डी० एस० पी० बहुत ही फूल गये। इस बारे में कुछ किया भी नहीं जा सकता था, क्योंकि एमेले बहुत वोटों का कंट्रोलर था। नतीजा यह हुआ कि डी० एस० पी० को किसी पुलिस प्रशिक्षण संस्था में चला जाना पड़ा। वहाँ वह पुलिस को खड़े किये फूस के बने आदमी पर गोली चलाना सिखाते और मन-ही-मन राज्य के बदलने की प्रार्थना करते।

उसके पहले बसाई टूडू के बार-बार मृत्यु-पुनरुज्जीवन-ऐक्शन और शनाख़्त करने को लेकर कलकत्ता में एक उच्चस्तरीय आलोचना हुई। वह बहुत ही गोपनीय है—इस तरह का समाचार निकल गया। निश्चित हुआ कि असली बसाई जीवित और सक्रिय है। काली सांतरा की भूमिका बहुत ही उछाली गयी और निश्चय हुआ कि बसाई किसी दिन पकड़ा जायेगा ही। काली सांतरा का जीवित रहना ज़रूरी है। बसाई को, असली बसाई

को जीवित पकड़कर काली सांतरा से लड़ाया जायेगा। तब एक विस्फोटक योजना निःसंदेह उद्घाटित होगी। उसके बाद दोनों को सीसा और बेनिश[1] एक को सीसा, दूसरे को बेनिश। बसाई को एमेले, काली को बेनिश। काली को म्युनिसिपैलिटी का चेयरमैन, बसाई को बेनिश, या मौके के मुताबिक किया जायेगा। पर जगत्तारण लोहारी को बेगार लेने देना ठीक न होगा। इससे जगत्तारण को दुःख होगा, इसलिए पतितपावन को फ़ौरन नाड़ के गुड़ के कुटीर उद्योग के उपलक्ष्य में स्मॉल स्केल इंडस्ट्री या कुटीर उद्योग, या मछली की ट्रॉली खरीदने के अव्यवहृत फ़ंड से कुछ लाख रुपये देना उचित होगा, इस प्रस्ताव पर सबके सिर सम्मिलित रूप से हिले।

काली को कुछ पता न था।

बसाई की चौथी मृत्यु से बाकुली गाँव के माझीपाड़ा में कुछ अधिक दिनों तक शोक की छाया घायल बाघ की तरह गुस्से में घुमड़ती रही और शायद छलना माझी की माँ कुछ दिनों तक रोती-रोती फिरती रही।

इसी बीच 1976 साल के धान काटने का मौसम आ पहुँचा। काली सांतरा के दिमाग़ में जड़हन के पके धान की पृष्ठभूमि में बसाई के गैंग्रीन के पैर और मोंछों का जोड़ा और मृत्यु-भय से फँसी आवाज़ में 'क्यों कामरेड'-सी कुछ बातें पर्मानेंट हो गयी हैं। इसी से धान के मौसम में वह अपनी कोशिश से एम॰ डब्लू॰ संबंधी खोज-ख़बर लेता रहता। जागुला में पानी की बहुत ही कमी थी। आई॰ आर॰-एट धान में काफ़ी पानी की ज़रूरत होती है। 'जागुला में यह धान होना संभव नहीं,' कहकर जो हाल में जवान एमेले हैं, और जिन्होंने नक्सल के सिवा कुछ नहीं पढ़ा है वे हार मानने से इनकार करते हैं और कहते हैं, 'क्या? हमारी कांस्टीट्यूएंसी पीछे रहेगी? यहाँ के किसान ग़रीब बने रहेंगे?' जोश में आकर वह मुस्तैद होते हैं और शिशु-मत्स्य-मोटर वेहिकल-हाउसिंग, तरह-तरह के दफ़्तरों में घूंसा मारकर रुपये लाते हैं। कल्याणी विश्वविद्यालय के एक लड़के को कृषि-दफ़्तर में घुसा दिया। वह लड़का बड़ा अच्छा है। वह अपने डरपोक स्वभाव के कारण विनीत भाव से समझाना चाहता था कि 'इस स्वाइल में आई॰ आर॰-एट नहीं होगा, सर!' उसमें एमेले उसे 'प्रतिक्रियावादी, भारत की उन्नति में रुकावट, डिसलॉयल' इत्यादि जो कुछ अंग्रेज़ी-बंगला जानते—सब-कुछ कहकर धमकाते। लाचार होकर लड़का तीन एकड़ ऊँची ज़मीन में एक डीप-बोर ट्यूबवेल लगाकर 'सुफला' और 'दूरिया' और सरकारी रुपयों का श्राद्ध करता है और मौके के वक़्त (उसके लिए हर वक़्त

1. दान कर देना।

मौक़े का वक़्त था) कितावें और अख़वार पढ़कर वक़्त काटता। 'ज़िला वार्ता' अख़वार में वह 'आई०आर०-एट की प्रोग्रेस' के वारे में सूचनाएँ देने आता और इस तरह उसकी काली से पहले वातचीत और वाद में गहरी दोस्ती हो गयी। लड़के को करने को कुछ रहता नहीं था, इसीलिए वह काली के प्रभाव में खेतमजूरों की मजूरी के वारे में उत्सुक हुआ। उसका कलकत्ता आना-जाना होता रहता, इसी से काली उससे ज़रूरी समाचार मँगाता रहता। लड़का खुद भी मौक़ा मिलते ही कलकत्ता आता-जाता रहता। एमेले उसे आई० आर०-एट में उलझाकर उस वात को भूल गये और एक दिन जागुला आकर धान का खेत देखकर ताज्जुव में आ उस लड़के से वोले, 'वाह, खेती की अच्छी कोशिश कर रहे हैं। क्या यह सव आप खुद ही देखते हैं?' उसके परिणाम में लड़का काफ़्का[1] की मिनेस्ड रियलिटी से उत्पन्न हलूसिनेशन के-से संसार में चला जाता है और डर जाता है। वह जल्दी-जल्दी कलकत्ता जाता रहता है और संवंधित दफ़्तर में आवाजाही कर कलकत्ता से वदली कराने की कोशिश करता है। यह निश्चय करता है कि मौक़ा मिलते ही नौकरी छोड़कर वैंक में चला जायेगा। एम० डव्लू० संवंधी खोज-ख़वर वह सीधे लेवर डिपार्टमेंट से ले आता और काली को दे देता। काली क्रम से इस विषय में वहुत ही जानकार हो गया और एम० डव्लू० के संवंध में सरकारी नीति के स्वरूप की असलियत निकालकर उसकी मानसिकता दिखा देता। नीति का स्वरूप वहुमुखी दैत्य के समान था। उसके लाख से अधिक हाथ और लाख से अधिक पैर थे। गंगा के हृदय वंगभूमि के पैर सारे क्षेत्र में धँसे थे। लाखों से अधिक हाथों से वह खेतमजूरों को पकड़कर सैकड़ों मुँहों से उनका खून पी रहा था और उसका और अधिक निगल जाने वाला मुँह शरीर के ऊपर उठ रहा था। सिर से लगा मुँह फैला हुआ था।

लड़के ने उसको जो वताया उससे वहुत वातों का पता चला। वहुत हाल में ऐग्रीकल्चरल मिनिमम वेज इंस्पेक्टर के पद पर तीन सौ पैंतीस लोग रखे गये। अर्थात्, औसतन ग्यारह हजार अड़तालीस खेतमजूरों पर एक इंस्पेक्टर हुआ। व्लॉक और सव-डिवीज़नल स्तर पर तीस असिस्टेंट लेवर कमिश्नर के पद खोले गये। इंस्पेक्टरों का वेतन-क्रम 300-600 रुपये तथा अन्यान्य भत्ते थे। इनकी नियुक्ति में स्टेट पव्लिक सर्विस कमीशन का कोई हाथ न था। इनका पद वनने के पहले कई शर्तों पर आलोचना हुई। वह ज़वानी आलोचना तक ही सीमित रही। फिर

---

1 एक जर्मन लेखक; जन्म से चेकोस्लोवाकियन।

गम्भीर कारण से वह रेकर्डेड नहीं हुई।

ये शर्तें थीं —(क) निर्वाचित कर्मचारी किसी भी दशा में जमीन के मालिकों के परिवारों के व्यक्ति नहीं होंगे। (ख) जहाँ तक संभव हो, वे डिप्रेस्ड कम्यूनिटी के लोग होंगे। (ग) सरकार द्वारा घोषित खेतमजूरी प्रभावपूर्ण करने के काम में उनका पूर्तोजिकल मोटिव[2] रखना होगा।

कार्यकाल में दो सौ पैंतीस पदों पर लोग लिये गये। अधिकांश इन्स्पेक्टर जमीनों के मालिकों के परिवारों के आदमी थे। सामान्य कुछ लोग डिप्रेस्ड कम्यूनिटी के आदमी थे। नियुक्तियों का स्वरूप राजनीतिक था और इन्स्पेक्टर लोग अधिकांश कांग्रेस-युवा-शाखा के व्यक्ति थे।

तीस असिस्टेंट लेबर कमिश्नर के पदों में दो पदों पर लोग लिये गये।

कोई-कोई मंत्री इन्स्पेक्टरों के कामों में अकारण व्यक्तिगत दिलचस्पी दिखाते रहते। सामान्य प्रशासनिक चैनल को चुटकियों में उड़ाकर बहुत कुछ मंत्री और बहुत कुछ इन्स्पेक्टर आपस में गर्म होने की व्यवस्था बनाते। एक विशेष जिले के इन्स्पेक्टरों के प्रति राजनीतिक सर्कुलर था 'डॉंट रश मैटर्स फॉर द न्यू रेट्स ऑफ वेजिज (8-10 रु०)। इट्स ए न्यू थिंग एण्ड विल टेक ए लॉंग टाईम टु बि एक्सेप्टेड बाई द लैंड-ओनर्स बट सी टु इट दैट द खेतमजूर्स गेट ए लिटल मोर दैन व्हट दे गेट एट प्रेजेंट।'[1]

डिप्टी-लेबर कमिश्नर इन्चार्ज ऑफ एन्फोर्समेंट लॉ एण्ड ऐडमिनिस्ट्रेशन ऑफ मिनिमम वेजिज ने बात को बड़ी सहानुभूति के साथ देखा और इन्स्पेक्टरों से कहा, 'निडर होकर काम करो। मैं पीछे हूँ।' नतीजा यह हुआ कि उसकी दूसरे पद पर बदली कर दी गयी और छिहत्तर के नवम्बर में उन्होंने इस्तीफा दाखिल कर दिया।

लड़का बोला, 'समझ रहे हैं न, काली बाबू? एम० डब्लू० एक्ट को सरकार ने किसी भी दिन काम में नहीं लाना चाहा।'

'तुम भाई, इस बारे में और किसी बात का पता चले तो मुझे बताना न भूलना।'

खबर आ जाती है। सब लोगों के जड़हन धान खलियों में जाने के पहले ही। रामेश्वर मुइयाँ का साला जीप से उतरकर भागा-भागा आगे आया। बोला, 'आपने बताने को कहा था, जमाई दादा।'

'क्या?'

'उस बार जिन लोगों ने मारा था, सब लोगों को दंगे के मुकदमे में

1. मजूरी की नयी दरों (रु० 8-10) के विषय में जल्दी मत करो। यह नयी चीज है और भूस्वामियों को मानने में बहुत समय लगेगा। लेकिन इसका ध्यान रखिये कि खेतमजूरों को उससे कुछ अधिक मिले जितना अब मिल रहा है।

फँसा दूंगा। इस बार भाग न सकेंगे।'

'क्या हुआ ?'

'सब लोगों को फाँस दूंगा।'

रामेश्वर का साला जल्दी ही चला गया। आई० आर०-एट पर लड़के के आकर रोशनी न डालने तक काली बहुत ही परेशान रहा। लड़के ने कहा, 'ऑल ओवर।'[1]

'ओवर ?'

'हाँ।'

'इसके मतलब ?'

'गुन आया। पियासोल गाँव के जमींदार हरिधन सरदार, जानते हैं न ?'

'नाम मालूम है। बहुत बदमाश आदमी है। छः हजार बीघा जमीन है। लठैत रखता है।'

'बीरू पाठक ने उस वक्त उसे मारा था।'

'मरा नहीं ! जिंदा लौट आया था।'

'वह कलकत्ता जाकर बैठा है। वकील लगाये हैं। उसे यह अक्ल दी है जगत्तारण लोहागी और उसके बेटे ने। वह पमेले ही इणू को परखू करता है। उन्होंने बहुत उथल-पुथल कर 1974 के ऑर्डर की शब्दावली में एक ग़लती निकाली है। उसमें लिखा था : एग्रीकल्चरल कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स 233 पाइंट है। असल में यह ग़लत है। 217 पाइंट सही है। इसके आधार पर हरिधन सरदार ने एम० डब्लू० के खिलाफ इंजंक्शन चाहा था। हाईकोर्ट ने इंजंक्शन दे दिया। इसलिए सरकार किसी तरह इंजंक्शन के दौरान एम० डब्लू० देने को किसी को बाध्य न कर सकेगी। इतने दिनों से जहाँ-जहाँ एम० डब्लू० लेकर खेतमजूर खुद या कोई यूनियन लड़ी थी वहाँ-वहाँ अब ज़मींदार धड़ाधड़ केस कर रहे हैं। खेतमजूर और यूनियन के कार्यकर्ताओं को फ़ौजदारी में फाँस रहे हैं।

'तब ?'

'तब काली बाबू, यह इंजंक्शन वेस्ट बंगाल में एम० डब्लू० का एपिटाफ़[2] बनेगा।'

'एपिटाफ़ !'

'एपिटाफ़।'

'एपिटाफ़ !'

---

1. सब समाप्त 2. समाधिलेख।

'हाँ एक छोटी-सी अच्छी खबर सुनाना हूँ। मुझे बैंक में काम मिल गया है। जा रहा हूँ।'

'एक बात तो बता जाइये।'

'क्या बात ?'

'जवाब मुझे भी मालूम है। फिर भी आपके मुँह से सुनना चाहता हूँ। अपनी सफ़ाई के लिए।'

'कहिये न।'

'एक ज़मींदार है, उसने एक मोस्ट वाइटल ऐक्ट की वर्डिंग में ग़लती निकालकर गवर्नमेंट के ख़िलाफ़ इंजंक्शन ले लिया। ले ले। सरकार क्या यह वर्डिंग सही कर बात को रिइस्टेट[1] नहीं कर सकती ?'

'ज़रूर कर सकती है। सैंतीस लाख लोगों के भाग्य का विचार ज़रूर कर सकती है। कौन कहेगा ? सरकार हृदयहीन है। ठीक। असल में किसी ने सरकार से किसी के लिए कुछ करने की अपेक्षा नहीं की। लेकिन आप लोगों का किसानों का संगठन ? वे कहाँ हैं ? कुछ कह क्यों नहीं रहे हैं ?'

'शायद सैंतीस लाख लोग एक्सपेंडेबल[2] हैं। एक ज़मींदार एक्सपेंडेबल नहीं है।'

'काली बाबू ! यह और आपके मुँह से ?'

'कुछ ग़लत कहा ? मुझे सीरियसली न लें। इस शहर में कहीं कोई मुझे सीरियसली नहीं लेता। सभी मुझे पागल समझते हैं, जानते हैं न ? प्लीज़, प्लीज़, डोन्ट टेक मी सीरियसली।'

अत्यन्त अभिभूत होकर लड़का चला गया। काली बहुत देर तक मेज़ पर सिर टिकाये बैठा रहा। हाथ में जलन लगते ही चौंककर देखता है कि दो उँगलियों के बीच में जलती सिगरेट जलते-जलते बढ़ आयी है। और आग की भाषा में छौंक लगाकर वक़्त की याद दिलाकर कहती है—'काली सांतरा, बहुत देर से बैठे हो।'

13

उस दिन काली के शरीर और दिमाग़ का संबंध टूट गया था। मानव-शरीर के प्रत्येक ऐच्छिक और अनैच्छिक आचरण के पीछे दिमाग़ चलाने वाला रहता है। लेकिन हाथ में जलन लगने पर भी काली ने सिगरेट फेंकने में देर की। फेंक देना उचित ज्ञान में और हिलने में चेष्टा करने, पर न कर

1. फिर से कहना 2 बेकार।

सके। सिगरेट कुछ देर अपेक्षा कर ज्ञान की परवाह न कर खुद ही फ़र्श पर गिर गयी और कागज़ के एक टुकड़े को जलाकर उससे भी काली को झकझोर न सकने पर खुद ही जलकर राख हो गयी। ब्रेन ! एनसेफ़लान[1]। केंद्रीय स्नायुतंत्र का वह भाग जो करोटि के गह्वर में है। उसमें सेरिब्रम, सेरिबेलम, पोन्स वेरोलाइ, मेसेन-सेफ़ेलान एंड मेडुला ओब्लॅगेटा है। शेष तीन विभाग बी० स्ट० बनाते हैं।

यह ब्रेन कुछ देर, कुछ ज्यादा ही देर परेशान और विवश था। ऐच्छिक और अनैच्छिक पेशियों को उसने कोई सूचना नहीं दी और काली बहुत देर तक कुर्सी को छोड़कर उठ न सका। कुछ देर में अँधेरा घना हो गया। काली के पैरों को मच्छर काट रहे थे। चाय की दूकान का जो लड़का प्रेस का कमरा साफ़ करता था, वह कमरे में आकर बोला, 'यह क्या ? बाबू नशे में बैठे हैं ?' पर काली उठ न सका। सहसा शिशु-कंठ से, 'माँ कहाँ गयी ?' रोने से उसे होश आया। अहीरों की लड़की रो रही थी।

इसके बाद छिहत्तर का मन्वन्तर समाप्त हुआ। सतत्तर का वर्ष आया। पीपुल्स मैंडेट[2]। फिर विधान सभा। पीपुल्स मैंडेट। पश्चिम बंगाल में चुनाव के बाद की कोई खुशी नहीं। बहुत गंभीर टोन। इस बार वे टिकने आये हैं। सामन्त, गोरा, नकुल—सभी को मार्च के बाद मुक्ति मिल गयी। सामन्त जागृना का हीरो था। रामेश्वर भुइयाँ की गाड़ी से घर आया और उसी की जीप में चुनाव-अभियान किया। रामेश्वर और काली अब एक ही पार्टी में हैं। पार्टी माँ। सब तरह के लड़कों के लिए ही उन्होंने गोद फैला दी है, यह समझा गया। सामन्त जीत गया।

सब-कुछ थिर जाने पर पहले के शासन की तरह एक ही रँग-ढँग में प्रशासन चलने लगा। सत्तर-इकहत्तर-बहत्तर-तिहत्तर के बंदी लड़के बंदी ही बने रहे। धीरे-धीरे तेल दुष्प्राप्य हो गया, दाल और दूसरी खाने की चीजें ऊँचे चढ़ गयीं, लोकल ट्रेनें बेवक्त हो गयीं, सड़कों पर बसें कम हो गयीं और गैरेजों की शोभा बढ़ाने लगीं। न्याय और व्यवस्था अपने ढँग से चलने लगे, गुंडे, लफंगे मामूली तौर पर दबे रहे। बिजली बंद होना लोगों के लिए बंधन से मुक्त होने का साधन बन गया। काली साँतरा ने डरते-डरते एक दिन अख़बार में पढ़ा कि सरकार ने कहा है कि हाईकोर्ट के एक इंजंक्शन से एम० डब्लू० देना इस समय संभव नहीं है। काली साँतरा सरकार के रुख को देखता रहा। जिस दिन देखा कि सरकारी न होने पर भी सरकारी डिरेक्टिव हुआ, इंजंक्शन रहा, खेतमजूर जो जिस तरह से हो

1. दिमाग, मस्तिष्क 2. जनता का आदेश।

अपना हक लें, तो विप्लव पूरा हुआ। काली ने मामलू से मुलाकात का समय लिया और मामलू के घर गया। लम्बी बातें हुईं। तमाम शब्दों का लोंग मार्च था। मार्च के अन्त में जो जहाँ था वह उसी स्थिति में रहा। काली सांतरा घर लौट आया।

'क्यों काली, कैसे हो?'

'ठीक ही हूँ।'

'लड़के की शादी कर दी?'

'शादी की।'

'बड़ा अच्छा लड़का हुआ।'

'हाँ।'

'बताओ तो क्या चाहिए? तुम्हारा अखबार...?'

'पर्सनल काम से नहीं आया हूँ।'

'गोरा ने तुमसे क्या वाही-तबाही की थी?'

'पर्सनल नहीं था।'

'ओह, अच्छा कहो, क्या है?'

'एक काम करना होगा।'

'क्या काम?'

'मेरे मन में कई सवाल हैं।'

'कहो।'

'एस० डब्लू० को लेकर जागुला ब्लॉक में भी तो...।'

'हाँ, नक्सलवादी उपद्रव हुआ है।'

'देखो मामलू, इशू साफ इशू है। कहते हो, नक्सल उपद्रव हुआ है। कहते हो, वह हुआ है। तो अगर हुआ भी है, तो इशू नक्सलवादियों का बनाया नहीं है। उन लोगों ने मौजूदा समस्या की बेल्ट में समस्या लेकर उपद्रव किया है। अब वे नहीं हैं। लेकिन इशू मौजूद है।'

'कहो न, तुम हमारी पार्टी के मॉरलिस्ट हो।'

'पार्टी का एजेंट, नक्सल-सपोर्टर नहीं?'

'नहीं काली, पर्सनल बात...।'

'वह बात रहने दो। इतने दिनों बाद मैं अपने को डिफेंड[1] करने नहीं आऊँगा। मुझसे अधिक गोरा, तुम, पार्टी के लिए अधिक मूल्यवान बनकर रहो। मुझे उससे कोई ईर्ष्या...ईर्ष्या नहीं, कोई रुचि नहीं।'

'हाँ, सांतरा दा, मैं तुम्हारे लिए कितना लड़ता हूँ... चाय पियोगे?'

---

1. समर्थन करने।

'नहीं।'

'कहो।'

'एम० डब्लू० रुका हुआ है एक इंजंक्शन पर। कांग्रेस रेजीम में पियासोल के हरिधन सरदार ने हाईकोर्ट से इंजंक्शन लिया था। इंजंक्शन की ग्राउंड 1974 के एम० डब्लू० रिवीजन में एक नंबर में गड़बड़ थी।'

'पता है।'

'अब तो हमारी सरकार है।'

'निश्चय। और हम टिकने आये हैं।'

'टिको सामन्त, टिको। लेकिन क्या यह सरकार उस ग़लत शब्दावली को संशोधित कर इंजंक्शन को हटवा नहीं सकती? एम० डब्लू० की रुकावट, न देने पर सब्जेक्ट टु सीवियर पेनाल्टी करने की? यही बात तुम विधान सभा में उठाओ। मैं यही चाहता हूँ।'

'संभव नहीं है।'

'संभव नहीं है? क्यों?'

'संभव नहीं है।'

'सैंतीस लाख खेतमजूरों के मुक़ाबले में कई हजार जमींदारों के हित के राज्य में ज्यादा जरूरी हो सकता है। अब भी वही है? सामन्त, अब भी वही है?'

'संभव नहीं है।'

'इस सरकार के इस रुख़ के माने क्या हैं?'

'कौन-सा रुख़?'

'खेतमजूर लड़कर हक़ लेंगे?'

'सरकार उन्हें मदद देगी।'

'दूसरी पार्टी खेतमजूरों को लेकर उनको हक़ दिलाने में बराबर मदद पायेगी?'

'निश्चय।'

'पुलिस नहीं जायेगी? वे विक्टिमाइज्ड[1] नहीं होंगे?'

'नहीं।'

'मेरा डिडक्शन[2] क्या है, जानते हो?'

'क्या?'

'जिस पार्टी के झंडे-तले भी जायें, खेतमजूर खेतमजूर ही रहेंगे। वे ही लड़ेंगे, जो शोर मचाने वाले हैं, अगरड़ हैं। सामन्त, क्या सरकार

1. शिकार, अन्याय-पीड़ित 2. निष्कर्ष, विशेष अनुमान।

चाहती है कि जो उपद्रवी हैं वे मारपीट कर मरें, चोर-बदमाश, दंगा फौज-दारी के अपराध हों, पुलिस उन्हें पकड़े, जमींदार बड़े आराम से कायम रहें ?'

'काली, तुम ऐंटी-पार्टी[1]...।'

'ऐंटी-पार्टी, रिऐक्शनरी, डीविएशनिस्ट, नक्सलवादी, जिस नाम से चाहो पुकारो, लेकिन मेरी हर बात सच है। तुम जवाब नहीं दे सके।'

'जवाब नहीं होता, काली। फिर भी मैं बात भूलूँगा नहीं।'

'चलूँ। तुम्हारा बहुत वक्त लिया।'

'फिर आना।'

काली चला आया। धान-बुआई के समय उसकी अपेक्षा या अनुमान को पूरा कर जेठ के आमन फसल की बुआई के वक्त गड़बड़ हुई, लाशें गिरीं, पुलिस आयी, दस समझकर उन लोगों को पकड़ लिया गया। काली समझा, यह तो अभी शुरुआत है। धान के खेत लाल-लाल हो जायेंगे। अगहन के धान के समय। 'और न देंगे, और न देंगे, खून से सींचा धान, हमारी जान हो'—यह बात काली के जीवन-विश्वास में गीत ही बनकर रह गयी।

बरसों के जंगल में रात काटी। बेतुन उठ बैठा। बोला, 'चलिए, बहुत सो लिये। निरदरा में जब-जब सपना देखे, उधर की माँ रो रही थी, माँ पुकार रही थी। पेट की ज्वाला से मन का सपना, समझे? बहुत देरा।'

बाहर निकलकर बेतुन ने काली साँतरा को दिशा-निर्देश दिया। बोला, 'उधर उत्तर की ओर चले जाना। उसके बाद एक के बाद तीन पाकड़ के गाछ हैं। उसके बाद ज़मीन नीची हो गयी है। उत्तर से पश्चिम का किनारा पकड़ना होगा। पहले ही किनारे तीन कदम चलकर एक बगार्दी का ठिकाना है। कुछ कहे बिना घुस जाना।'

'तुम नहीं चल रहे हो ?'

'ना। मैं भी लेकर नहीं चल सकूँगा। घर जाकर कुछ खाकर फिर आऊँगा। साँझ होते-होते। रात भी आसानी बिना खाये कटेगा। कोई भारा नहीं। साँझ होते वहाँ पहुँचेंगे। आपको ले आऊँगा। और हाँ, उधर की देखकर कुछ समझाना। ओझा-ज्ञानी की तरह देखकर कुछ उनकी भी लिख जाये। बड़ी बहुत गंदी है।'

'ठीक है।'

'मैं चला, काली बाबू। [illegible] बिल्कुल [illegible] जायेंगे।'

---

1 पार्टी-विरोधी।

बहुत सुन्दर, बहुत युवा, बहुत, बहुत, बहु—त ! नींद आ रही है ।

काली जड़ों से टिककर सो गया । मुंह थोड़ा खुला, गले की हड्डी उठ रही है, बैठ रही है, मोटे और घिसे चश्मे के शीशों के पीछे आँखें मुंदी हैं । नींद के बाद भी शरीर टेन्स था, रहता है, उसके बाद धीरे-धीरे शरीर में ढीले होने का आत्मसमर्पण आता है । नींद के बाद ही काली उठेगा और चला जायेगा । इस बार वह सोंराल की जड़ ठीक से तलाश कर सकेगा । सारा दिन किसी तरह बिता देगा । शाम होने पर बेतूल तो आयेगा ही । इस बार उद्धव की बात द्रौपदी से नहीं कही गयी । न सही । उस बात को पूछने, कहने का अवसर काली को इसी जीवन में मिल जायेगा ।

काली सो रहा है । पूरब की ओर से, सूर्य की ओर पीछे लौटकर एक छोटी पुलिस की टुकड़ी जंगल में घुसती है और असाधारण, अमानुषी दक्षता से जहाँ काली है उस ओर बढ़ती है । उनके पांवों की चाप से गीली धरती पर कोई शब्द नहीं होता ।

द्रौपदी

नाम दोपदी माझिन, उमर सत्ताईस, पति दुलन माझी (निहत), निवास चिरायन, थाना बाँकड़ाझाड़, कंधे पर चोट का निशान (द्रौपदी के गोली लगी थी), जीवित या मृत पता देने पर और जीवित अवस्था में गिरफ्तारी में सहायता देने पर एक सौ रुपये ..!

दो तमगे लगाये वर्दी वालों में बातचीत।

एक तमगेवाला : संथालिन का नाम दोपदी, क्यों ? मैं जिन नामों की लिस्टी लेकर आया हूँ उसमें तो ऐसा नाम नहीं है ? लिस्टी में न हो, ऐसा नाम कोई रख सकता है ?

दूसरा तमगेवाला : दोपदी माझिन। उसकी माँ जिस साल बाकुली के सूर्य साउ (निहत) के घर में धान कूटती थी, उस साल उसका जन्म हुआ। सूर्य साउ की पत्नी ने उसका नाम रखा था।

एक तमगेवाला : अहलकारी अफसर केवल अँगरेजी लिखना जानते हैं। इसके नाम को ऐसा लिखते हैं ?

दूसरा तमगेवाला : मोस्ट नटोरियस लड़के-लड़कियाँ। लांग वांटेड इन मेनी।

डासियर[1] : दुलन और दोपदी ठेके पर काम करते थे, बिट्वीन बीरभूम-वर्धमान-मुर्शिदाबाद-बाँकुड़ा रोटेट[2] करते-फिरते। 1971 साल में प्रसिद्ध ऑपरेशन-बाकुली में जब तीन गाँव बुरी तरह घेरकर मशीनगन किये गये उस समय ये दोनों भी मरे हुए का बहाना कर पड़े रहे। असल में यही प्रमुख अपराधी थे। सूर्य साउ और उसके बेटे का खून, सूखे के समय ऊँची जात का कुआँ और ट्यूबवेल के दखल करने में, सबमें ही ये प्रमुख थे, उन तीन लड़कों को पुलिस के हाथ सरेंडर न कराने में भी। और

---

1. मिसल, प्रमाणपत्र [illegible] चक्कर लगाते।

ऑपरेशन-बाकुली के आर्किटेक्ट कैप्टेन अर्जनसिंह के, सवेरे लाशों की गिनती करने जाने पर, पति-पत्नी को न पाकर, फ़ौरन ब्लड-शुगर से पीड़ित होकर फिर प्रमाणित हुआ कि बहुमूत्र सचमुच फ़िकर और घबराहट की बीमारी होती है। बहुमूत्र की बीमारी बारह-भतारी होती है। उसका एक भतार दुश्चिन्ता है।

दूलन और दोपदी बहुत दिनों तक नियानडरथल[1] अंधकार में ग़ायब रहे और विशेष फ़ौज ने उस अंधकार में सशस्त्र खोज में पकड़ने जाकर पश्चिमी बंगाल के विभिन्न जिलों में बहुतेरे मज़दूर संथाल-संथालिनों को उनकी अनिच्छा से सिबोंगा के पास जाने को विवश किया। भारत के संविधान में जाति-धर्म-निरपेक्ष सभी मनुष्य पवित्र हैं, यह होने पर भी यह घटित हो गया। कारण दो तरह के हैं: एक—ग़ायब दंपति के अपने को छिपाये रहने में असाधारण होशियारी। दूसरा—विशेष फ़ौज की आँखों में संथाल ही क्यों, अस्ट्रो-एशियाटिक मुंडा कुल की सारी संतानों की ही शकल एक लगना।

यथार्थ में, बांकड़ाझाड़ थाने के अंडर (कनखजूरा भी इस भारत में किसी-न-किसी थाने के अंडर है) स्थित बदनाम झाड़ियों के जंगल के चारों ओर, और-तो-और आग्नेय और नैऋत्य कोण में भी, थाना-आक्रमण, बन्दूक छीनना (जिसलिए छीनकर अधिकार में करने वाली पार्टी विशेष रूप से सुशिक्षित नहीं है इसलिए बंदूक के बदले में 'चँवर ही दे दीजिये' भी कहते हैं)—खलिहान के मालिक, ज़मींदार, महाजन, शान्ति-रक्षक, कागज़ वाले बाबू उस छुरा भोंकने वाली हत्या आदि का अपराधी बताकर जिन पर संदेह किया जाये, उनके संबंध में जमा किये हुए प्रत्यक्षदर्शी के बयान से पता चला कि बहुत कुछ बढ़ा-चढ़ाकर कही बात है। दो काले स्त्री-पुरुषों ने घटना के पहले साइरन के शोर में शोर मिलाया था। कितने ही असभ्य संथालियों के पास दुर्बोध्य भाषा में उन्होंने मारे हुओं को घेरकर उल्लास संगीत गाया था। जैसे—

'सामारे हिजूले नाको मार् गोयेकोपे'

और

'हेन्दे राम्‌रा केचे केचे
पुंडि राम्‌रा केचे केचे।'[2]

1. मानव-विकास की आदिम अवस्था
2. अपने सामना करने वालों को मार दो।
काले उदं टेड़े-टेड़े
सफ़ेद उदं टेड़े-टेड़े।

इससे निस्सन्देह प्रमाणित होता है कि यही कैप्टेन अर्जुनसिंह के बहुमूत्र के कारण हैं। प्रशासनिक कार्यपद्धति की संस्था के आदमियों, या गुड़े दर्शकों की नजरों में अन्तोनियोनी की पहले की फ़िल्मों की तरह दुर्बोध्य समझकर प्रशासन फिर अर्जुनसिंह को ही ऑक्सीजन-फॉरेस्ट-झाड़ग्राली को भेजता है और गुप्तचर दफ़्तर के पास उक्त कत्लकत्ल करने और नाचनेवाले दम्पति ही भाग जाने वाली दो लाशें हैं, यह जानकर अर्जुनसिंह कुछ देर "ओम्बों"[1] हालत को पहुँच जाता है और कृष्णांग लोग उसमें ऐसा अकारण डर पैदा कर देते हैं कि लँगोटी लगाये काले आदमी देखते ही वह 'जान से ली' कह मग्न होकर जल्दी-जल्दी पेशाब करता और पानी पीता। क्या चूनीक्रामें, क्या ग्रंथ साहब उसका इस अवसाद में कोई भी उद्धार नहीं कर पाता। इसके बाद प्रिमेच्योर फ़ोर्स्ड रिटायरमेंट का डर दिखाकर उसे बंगाली, प्रौढ़, समर और वामपंथी उग्र राजनीति में स्पेशलिस्ट सेनापति की मेज के सामने हाजिर किया गया। सेनानायक विरोधियों के रंग-ढंग और शान की दौड़ विरोधियों से भी अच्छा जानते थे। इसीलिए उन्होंने अर्जुनसिंह की पहले मिश्र जाति की युद्ध-प्रतिभा के संबंध में प्रशंसा की। बाद में समझा दिया कि क्या केवल विरोधियों के समय ही बंदूक की नली *क्षमता का स्रोत है? अर्जुनसिंह की क्षमता भी तो बंदूक के मेल आर्गन से* निकलती है। हाथ में बंदूक न रहने पर इस युग में 'पंच ककार' तक निकम्मे और बेकार हैं। यह सारी वक्तृता वे औरों के आगे भी करते, जिसके परिणामस्वरूप लड़ने जाने वाली वाहिनी के मन में फिर 'आर्मी हैंडबुक' की किताब में विश्वास लौट आता। किताब सामान्य लोगों के लिए नहीं थी। उसमें लिखा है, आदिम अस्त्रादि लेकर गोरिल्ला पद्धति[2] में युद्ध सबसे अधिक निन्दनीय और घृणित है। उक्त पद्धति से योद्धा के दर्शनमात्र से निधन होना सेनामात्र का परम कर्तव्य है। दोपदी और दूलना उक्त योद्धाओं की कैटेगरी में आते हैं, क्योंकि वे भी कुल्हाड़ी, हँसुआ, तीर, धनुष इत्यादि लेकर मृत्यु का काम करते हैं। यथार्थ में उनकी शिकारी क्षमता बाबू लोगों से अधिक होती है। सारे बाबू चेम्बर बेधने में निपुण नहीं होते, वे सोचते हैं कि बंदूक पकड़ने से ही क्षमता आप-से-आप निकलेगी। यहाँ यह बता देना ठीक होगा, कि इस सेनानायक को विरोधी तुच्छ मानता हो, लेकिन यह मामूली आदमी नहीं था। यह प्रैक्टिस में चाहे जो करें, थियरी में विरोधियों के आदर्श पर श्रद्धा करते हैं। इसलिए श्रद्धा करते हैं कि 'वह कुछ नहीं, सिरफिरे लड़के बंदूक लेकर खेलते हैं'—यह

1. शव, जो मन्त्र-शक्ति से परिचालित हो 2. छापामार तरीका।

प्रवृत्ति लेकर चलने पर उनको नहीं समझा जायेगा। दुश्मन को खत्म करने के लिए, एक दुश्मन बन जाओ। इसी से वे उनमें से एक होकर (थियरी में) उन्हें समझते हैं। और भविष्य में इसे लेकर लिखने-लिखाने की कामना रखते हैं। तब (उस लिखे में) बाबू लोगों को ध्वस्त कर कटैया-मजूरों के वक्तव्य को बढ़ायें-चढ़ायेंगे, यह भी उन्होंने तय कर रखा है। उनके सोचने की और सारी प्रक्रिया शुरू से उलझी लग सकती है, लेकिन असल में वे बहुत ही सरल हैं और केउटे साँप का मांस खाकर अपने सँझले दादा की तरह ये भी खुश रहते। असल में उन्हें मालूम है कि प्राचीन गणना गीत की तरह ज़माना करवट बदलेगा। और सारे जमाने में उन्हें सम्मान-सहित क़ायम रहने लायक काग़ज-पत्तर चाहिए। जरूरत हुई तो वे भविष्य को दिखा देंगे कि उन्होंने ही चीजों को कितने उचित पर्सपेक्टिव[1] में देखा था। आज वह जो कुछ कर रहे हैं वह भविष्य का मनुष्य भूल जायेगा, इसमें उन्हें जरा भी संदेह नहीं है; और एक ज़माने से दूसरे जमाने में सबके रंग में जो मिल सके वही उस जमाने के प्रतिनिधि बन सकेंगे, यह भी वे जानते हैं। आज 'ऐप्रिहेंशन ऐंड इलिमिनेशन'[2] कर वे युवकों को समाप्त कर रहे हैं जरूर, लेकिन मानव-रक्त की स्मृति और शिक्षा शीघ्र ही भूल जायेगी, यह भी वे जानते हैं। और एक साथ ही वे भी शेक्सपीयर की तरह युवकों के हाथों में पृथ्वी की लीगेसी[3] उठाकर देने में विश्वास करते हैं। वे भी प्रास्पेरो हैं।

जो हो, इसके बाद पता लगा कि बहुत-से युवक-युवती जत्थे के बाद जत्थे में जीप पर चढ़कर एक के बाद दूसरे थाने पर हमला बोलकर अंचल को एक ही समय संत्रस्त और उल्लसित कर झाड़खानी के जंगल में ग़ायब हो गये। जिसलिए बाकुली से ग़ायब होने के बाद दोपदी और दूलना प्रायः सारे जमींदारों के घर में काम करते, उसी लिए वे हन्तव्य लोगों के बारे में मारनेवालों को फ़ौरन सूचना देते और गर्व के साथ घोषणा कर वे भी सेनानी, रैंक ऐंड फ़ाइल बने थे। अन्त में दुर्भेद्य झाड़खानी जंगल सेनाध्यक्ष द्वारा चक्रव्यूह में डाल दिया गया, आर्मी अन्दर घुसी और रणभूमि को फाड़-फाड़कर भागनेवालों की तलाश करती। साथ ही नक्शेवाले जंगल का नक्शा बनाते रहते और सेनाएँ पानी के सहारे झरनों और गढ़ैयों की ओट में रहकर पहरा देतीं, आज भी देती हैं, आज भी तलाश करती हैं। उसी तरह की एक खोज में सेना के खोजी दुखीराम घड़ारी ने देखा कि समतल पत्थर पर औंधे होकर लेटा एक संथाल युवक मुँह डुबोये पानी पी रहा

---

1. परिप्रेक्ष्य 2. गिरफ़्तार कर समाप्त कर देना 3. विरासत।

है। उसी हालत में उसे गोली मार दी गयी और वह 303 की चोट से उठकर जाते दोनों हाथ फैलाकर बड़े गरज के साथ 'मा—हो' कहकर फेनिल रक्त फेंककर निश्चल हो गया। बाद में मालूम हुआ कि वही कुख्यात दूलन माझी था।

इस 'मा—हो' शब्द के माने क्या हैं? यह क्या आदिवासी भाषा में उग्रपंथी नारा है? इसके माने क्या हैं, यह सोचकर शान्तिरक्षक दफ़्तर को बहुत-कुछ सोचकर भी उसकी गंभीरता का पता नहीं चला। आदिवासी-विशेषज्ञ दो व्यक्तियों को कलकत्ते से तुरंत लाना हुआ और वे हाफ़मन जेफ़र-गोल्डेन पामर आदि महोदयों द्वारा रचित कोश लेकर परेशान रहे। अन्त में सर्वज्ञ सेनानायक ने चमरू को बुलाया। कैंप का पानी ले जानेवाला संथाल चमरू दो विशेषज्ञों को देखकर फुसफुसाकर हँसने लगा, बीड़ी से कान खुजाते हुए बोला, 'वह मालदा के संथाल लोग उन्हीं गांधी राजा के समय लड़ाई में जाते हुए बोले ये जरूर! वह लड़ाई की ललकार है। सो यहाँ कौन साला 'मा—हो' कह रहा है? मालदा से कोई आया है?'

समस्या साफ़ हो गयी। उसके बाद दूलन की शव-देह उस पत्थर पर डालकर सेना वाले हरी वर्दी के कामोफ़्लाज में हर पेड़ पर चढ़कर पेन देवता की तरह पेड़ को पत्तों सहित आलिंगन में लपेटकर असभ्य स्थान पर पेड़ के चींटों का तलाश करके काटना सहते-सहते इंतज़ार करने लगे। देखा कि मृत-देह को लेने कोई आता है या नहीं? यह जिस तरह शिकार का तरीक़ा है, उसी तरह युद्ध का नहीं। किन्तु सेनानायक जानते हैं कि किसी भी जाने-बूझे तरीक़े से ही उपद्रवियों को समाप्त नहीं किया जायेगा। इसीलिए उन्होंने लाश का चारा दिखाकर शिकार को खींचकर लाने को कहा। वे बोले, सब साफ़ हो जायेगा। दोपदी ने जो गीत गाये थे उनके माने भी निकाल लिये।

उनकी बात मानकर सेना मुस्तैद हो गयी। लेकिन दूलन की मृतदेह लेने को कोई नहीं आया। इसके अतिरिक्त रात के अँधेरे में खिचखिच सुनकर सेना के गोली छोड़ने पर उतरकर देखा कि उन्होंने सूखे पत्तों के विस्तर पर संगमरत साही-दम्पति को मार डाला है। जंगल में सेना को रास्ता दिखाने वाले खोजी दुखीराम घड़ारी ने विरक्त के समान दूलन माझी की बख़्शीश लिये बिना मानो गले को किसी के हँसुए में दे दिया हो। दूलन की लाश को उठाकर लाते-लाते सेना को लाश के खाने में रुकावट मिलने पर चींटों के काटने से साँप के ज़हर-सा दर्द हुआ। लाश लेने 'कोई नहीं आया' सुनकर सेनानायक पेपरबैक वाली एंटी-फ़ासिस्ट 'डेयूटी' किताब को ज़ोरों से बन्द कर 'व्हॉट' कह चीख़ उठे और तभी एक आदिवासी-

विशेषज्ञ ने आर्किमिडीज की तरह नंगे और शुभ्र आनन्द में आगे आकर कहा, 'उठिये, सर ! उस हेन्द्रे रामब्रा के माने निकाल लिये हैं। वह मुंडारी लैंग्वेज है।'

इसलिए दोप्दी की तलाश चलती रही। झाड़खानी जंगल-बेल्ट में ऑपरेशन चलता रहा—चलता रहा—चलेगा। वह प्रशासन के नितम्ब में फोड़ा था। वह अच्छे मरहम से दूर होने वाला नहीं, तुख़्ममलंगे से फूटनेवाला नहीं। पहले फ़ेज़[1] में पलातक जंगल की टोपोग्राफ़ी न जानने से धड़ाधड़ पकड़े गये और आमने-सामने के संघर्ष के नियम से उनके शरीर करदाताओं के ख़र्च या श्राद्ध कर गोली से मारे गये। सम्मुख-संघर्ष के नियम के अनुसार उनके शरीर के चक्षुगोलक, पॉष्टिक नली, पाकस्थली, हृत्पिंड, जनन-स्थान आदि सियार, गिद्ध, लकड़बग्घा, वनविड़ाल, चींटे और कीड़े-मकोड़ों के भोजन हुए और बिना मांस का शुभ्र कंकाल लेकर खुश होकर डोम उन्हें बेचने गये।

बाद के फ़ेज़ में वे सम्मुख-संघर्ष में पकड़ में न आये। उससे अब लगता है कि उन्हें कोई विश्वस्त करियर[2] मिल गया था। वह दोप्दी थी। यह संभावना रुपये में नब्बे पैसे थी। दोप्दी दूलन को जान से ज्यादा चाहती थी। अब वही उन्हें निश्चित रूप से बचा रही है।

'उनकी बात भी हाइपॉथेसिस[3] ही है।'

'क्यों ?'

'ओरिजिनली कितने लोग गये थे ?'

उत्तर चुप्पी। इस विषय में बहुत कहानियाँ गढ़ी गयीं, बहुत-सी किताबें छप रही हैं। सारी बातों पर विश्वास न करना ही ठीक है।

'छः बरसों में कितने लोग सम्मुख-संघर्ष में मारे गये ?'

उत्तर नीरवता।

'सम्मुख संघर्ष के बाद कंकालों के हाथ टूटे या कटे क्यों थे ? लूले क्या सम्मुख-संघर्ष कर सकते हैं ? गले की हड्डी झूलती हुई और पसलियों की हड्डियाँ पिसी हुई क्यों थीं ?'

उत्तर दो तरह का। चुप्पी। आँखों में अभिमानपूर्ण तिरस्कार, 'छिः ! ये सब बातें क्या कहने की होती हैं ? जो होना था वह तो...।'

'इस समय कितने लोग जंगलों में हैं ?'

उत्तर नीरवता।

'ये क्या लीजन[4] हैं ? उनके कारण करदाताओं के ख़र्च से एक बड़ी

1. प्रावस्था 2. संदेशवाहक 3. परिकल्पना 4. असंख्य।

फ़ौज हमेशा उन जंगल के बन्द-परिवेश में नियुक्त रखना क्या [illegible]
है?'

उत्तर : ऑब्जेक्शन। 'बन्द-परिवेश' बात ठीक नहीं है। नियुक्त फ़ौजी को उत्तम खाद्य-चिकित्सा के फ़ायदे में होने की सुविधा है विविध-भारती सुनना और 'यह है ज़िन्दगी' फ़िल्म में संजीवकुमार और [illegible] को आमने-सामने देखने के अवसर की सुविधा रहती है न? परिवेश 'बन्द' नहीं है।

'कितने लोग हैं?'

उत्तर चुप्पी।

'कितने लोग हैं? ऐट ऑल कोई है?'

उत्तर बहुत बड़ा।

मसलन : खेल, ऐक्शन चल रहा है। महाजन, ज़मींदार, [illegible] के मालिक, कलवार-वेश्यालय के बेनामी मालिक—[illegible] आज भी डर रहे हैं। भूखे-नंगे आज भी उद्दंड हैं और [illegible] नहीं हैं। कटैया किसी-किसी पॉकेट में अच्छा वेज पाते हैं। [illegible] सहानुभूतिशील गांव आज भी चुप हैं और दुश्मन हैं। इन सारी बातों को याद रखने के कारण हैं...।

इस तसवीर में दोपदी मांझिन कहाँ रहती है?

वह निश्चय ही पलातक लोगों के साथ है। डर की बात [illegible] है। जो हैं, वे बहुत दिन से जंगल के आदिम [illegible] में हैं। [illegible] दरिद्र मजदूरों और आदिवासियों का। इस साहचर्य के [illegible] निश्चय ही किताबी शिक्षा भूल गये हैं। [illegible] साथ शायद किताबी शिक्षा का ओरियेंटेशन कर [illegible] और जीने के नियम सीख रहे हैं। बाहरी किताबी शिक्षा और [illegible] उत्साह, यही जिनका सम्बल है, उन्हें लोगों ने [illegible] है। जो लोग अभ्यास और प्रशिक्षण से काम करते हैं [illegible] समाप्त होने वाले नहीं हैं।

इसलिए ऑपरेशन-झाड़खानी फ़ारेस्ट [illegible] हैंड-बुक की सावधान वाणी है।

1. न्यायसंगत 2. नवीकरण।

2

'दोप्दी माझिन को पकड़ो, वह उन्हें पकड़ा देगी।'

दोप्दी धोती में भात बाँधे धीरे-धीरे चल रही थी। मुसाई टूडू की पत्नी ने भात राँध दिया था। बीच-बीच में दे देती थी। ठंडा होने पर दोप्दी ने धोती में भात बांधा और धीरे-धीरे चली। चलते-चलते वह सिर के बालों में उँगली फिरा जुएँ निकालकर मार रही थी। थोड़ा-सा मिट्टी का तेल मिल जाये तो सिर पर लगाने से जुएँ ख़तम हो जातीं। उसके बाद सोडा से सिर रगड़ लिया जाता। लेकिन हरामी लोग झरने के हर मोड़ पर चक्कर लगाते रहते हैं। पानी में मिट्टी के तेल की गंध पाकर वे सूंघते-सूंघते चले आयेंगे।

'दोप्दी !'

दोप्दी ने जवाब नहीं दिया। अपने नाम से बुलाये जाने पर कभी जवाब नहीं देती थी। अपने नाम के ईनाम की घोषणा का काग़ज़ आज पंचायत ऑफ़िस में देख आयी है। मुसाई टूडू की पत्नी कह रही थी, उसने क्या देखा ? कहाँ की दोप्दी माझिन ! उसको पकड़ा देने पर रुपये।

'कितने रुपये ?'

'दो—सौ !'

बाहर आकर मुसाई की पत्नी बोली, 'इस बार अच्छी तैयारियां की जायें। स—ब नयी पुलिस है।'

'हूँ।'

'तू अब न आना।'

'क्यों ?'

मुसाई की पत्नी सिर झुकाकर बोली, 'टूडू ने बताया है कि वह साहब फिर आया है। तुझे पकड़ने पर गाँव-बस्ती...।'

'फिर परेशान ही करेगा।'

'हूँ। और दुखीराम की बात...।'

'साहब को पता है ?'

'सोमई और बुधना ने हरामीपन किया है।'

'वे कहाँ हैं ?'

'ट्रेन पकड़कर भाग गये हैं।'

दोप्दी ने कुछ सोच लिया। उसके बाद बोली, 'घर जा। पता नहीं क्या होगा, मैं पकड़ी जाऊँ तो तुम लोग पहचानना मत।'

'तू भाग नहीं सकती ?'

'ना: । कितनी बार भागूंगी, बता ? पकड़ ही लेंगे तो क्या करेंगे, बता ? काउंटर[1] कर देंगे, कर दें ।'

मुसाई की पत्नी बोली, 'हमें कहीं जाना नहीं है ।'

दोपदी धीमे-से बोली, 'किसी का नाम न बताऊंगी ।'

दोपदी जानती है, इतने दिनों में सुन-सुनकर सीखा है, किस तरह दमनकारियों का सामना किया जाये ? यदि दमन-ही-दमन में शरीर और मन टूट जाये तो दोपदी अपनी जीभ दांतों से काट डालेगी । उस लड़के ने अपनी जीभ काट फेंकी थी । उस पर काउंटर कर दिया । काउंटर करने पर तुम्हारे हाथ पीछे बंधे रहते हैं । शरीर की हर हड्डी चूर-चूर रहती है, गुप्तांग में बहुत-सी चोटें—किल्ड बाई पुलिस इन एन एनकाउंटर . अननोन मेल . एज ट्वेन्टी-टू.. ।[2]

यह सब सोचते-सोचते राह चलते-चलते दोपदी ने सुना कि कोई उसे बुला रहा है, 'दोपदी !'

उसने जवाब नहीं दिया । अपने नाम से बुलाये जाने पर वह जवाब नहीं देती । यहां उसका नाम उपी माझिन है । लेकिन कौन बुला रहा है ?

उसके मन में संदेह का कांटा बराबर चुभता रहता । 'दोपदी' सुनकर संदेह का तीखा कांटा साही के कांटे की तरह खड़ा हो गया । चलते-चलते वह मन-ही-मन पहचाने हुए चेहरों की फ़िल्म-रील खोलते हुए चली । कौन ? सोमरा नहीं है, सोमरा पलातक । सोमई और बुधना पलातक, दूसरे कारणों से । गोलक नहीं है, वह बाकुली से है । यह कोई बाकुली का है ? बाकुली छोड़कर निकलने के बाद से उसका और दुलना का नाम हो गया था—उपी माझिन, माता माझी । यहां एक मुसाई और उसकी पत्नी के सिवा असली नाम कोई नहीं जानता । बाबू लड़कों में पहले के दल के सभी को नहीं मालूम था ।

वह वक्त बहुत गड़बड़ का था । दोपदी को सोचने से परेशानी होती । बाकुली से ऑपरेशन-बाकुली । सूर्य साउ ने विट्टी बाबू के साथ सांठ-गांठ कर दो बरस में घर की चहारदीवारी में दो ट्यूबवेल बैठा लिये, तीन कुएं खोदे । कहीं पानी नहीं, वीरभूम में सूखा था । सूर्य साउ के घर अथाह पानी था, कौए की आंखों की तरह निर्मल ।

'कनाल टैक्स देकर पानी लो, सब जल गया ।'

'टैक्स के पानी से खेती बढ़ाकर हमें क्या फ़ायदा ?'

---

1. प्रत्याक्रमण—आमने-सामने की लड़ाई 2. मुठभेड़ में पुलिस द्वारा मारा गया... अज्ञात पुरुष...आयु बाईस...।

'सब जल गया।'

'जाओ, जाओ। तुम लोगों की पंचायती बदमाशी को मैं नहीं मानता। पानी लेकर खेती बढ़ाऊँगा? आधा धान अधियार लेगा। कम धान से सब मुट्ठी में हैं। तब धान घर दो, रुपये दो, हें! तुम्हारे लिए अच्छा काम कर हमें सीख मिल गयी है।'

'तुमने क्या अच्छा काम किया?'

'गाँव को पानी नहीं दिया?'

'भगुना समधी को दिया था।'

'तुमको पानी नहीं मिलता है?'

'ना:। डोम-चंडालों को पानी नहीं मिलता।'

इस बात पर झगड़ा हो गया। सूखे में सहन-शक्ति सहज ही जल जाती है। गाँव के सतीश-युगल बाबू लड़के हैं, शायद राना उनका नाम है, वे बोले, 'ज़मींदार-महाजन कुछ न देंगे, ख़तम करो।'

सूर्य साउ का मकान रात में घेर लिया गया। सूर्य साउ ने बंदूक निकाली थी। बैलों की रस्सी से सूर्य पीछे से बाँध दिये गये थे। आँखों के डेले सफ़ेद, डबडबा रहे थे, कपड़े फट रहे थे। दुलना ने कहा, 'पहली चोट मैं मारूँगा। मेरे बाप के बाप ने सूद बढ़ाने का धान लिया था, वह उधार चुकाने में आज भी बेगार दे रहा हूँ।'

दोपदी ने कहा था, 'मेरे शरीर को देखकर उसके मुँह में लार आती थी, उसकी आँखें मैं निकालूंगी।'

सूर्य साउ! उसके बाद सिउड़ी से टेलीग्राफ़िक मेसेज। स्पेशल ट्रेन। आर्मी। जीप बाकुली तक आती नहीं। मार्च-मार्च-मार्च। नालदार बूटों के नीचे कंकड़ियों की किच-किच-किच। कॉर्डन अप[1]। माइक पर आदेश—युगल मंडल–सतीश मंडल--राना बनाम--प्रवीर बनाम दीपक--दुलना माझी–दोपदी माझिन--सरेंडर, सरेंडर! नो सरेंडर-सरेंडर। मो—मो—मो डाउन दि विलेज[2]। खटाखट-खटखट–हवा में कार्डाइट[3]–खटखट-राउंड द क्लॉक--खटखट। फ़्लेम थ्रोअर[4]। बाकुली जल रहा है। मोर मेन ऐंड वीमेन, चिल्ड्रेन...फ़ायर—फ़ायर। क्लोज कनाल एप्रोच। ओवर-ओवर-ओवर बाई नाइटफ़ॉल। दोपदी और दुलना पैदल भाग रहे थे।

बाकुली के बाद वे पलताकुड़ी नहीं पहुँच सकते थे। भूपति और तपा ले गये। उसके बाद निश्चय हुआ कि दोपदी और दुलना झाड़खानी बेल्ट के आस-पास काम करेंगे। दुलना ने दोपदी को समझाया, 'यही अच्छा है

1. घेरा डाल दो 2. गाँव को रौंद डालो 3. कारतूस 4. आग का गोला।

दूर पर कैम्प की रोशनी। दोप्दी उधर जा ही क्यों रही है? तू ठहर, फिर मोड़ घूम जाता है। आः—हा! रात-भर मैं आँखें मूँदे फिरती रहती हूँ। जंगल में नहीं जाऊँगी, राह नहीं भटकूँगी। दम नहीं निकल जायेगा। तू साले खुचड़िये, दुनिया-भर की माया में मरेगा, तू घूमेगा? दम निकाल कर तुझे गड्ढे में फेंककर खतम कर दूँगी।

कुछ नहीं कहा जाता। दोप्दी नया कैम्प देख आयी है। बस-स्टेशन पर बैठकर बीड़ी का दम लगाकर पता लगा आयी है कि कितने कानवाय[1] पुलिस आयी, कितने वायरलेस-वैन। चार विलायती कुम्हड़े, सात प्याज़, पचास मिर्च, सीधा हिसाब है। कुछ भी पता नहीं चलेगा। वे जरूर समझ लेंगे कि दोप्दी माझिन काउंटर हो गयी। तब भागेगी। अरिजित की आवाज़: 'अगर कोई पकड़ा गया, टाइम समझकर दूसरे हाइड-आउट चेन्ज[2] कर देंगे। कमरेड दोप्दी अगर देर से आती है, तो हम यहाँ नहीं रुकेंगे। कहाँ जा रहे हैं, निशानी छोड़े जा रहे हैं। कोई कमरेड अपने लिए दूसरे को ख़तम नहीं होने देगा।'

अरिजित की आवाज़। जल का कल-कल शब्द। पत्थर उठाकर नीचे रखे लकड़ी के टुकड़े के तीर का फल जिस ओर है, उधर के हाइड-आउट में जाना हुआ है।

यह दोप्दी की पसन्द है, समझ की बात है। दुलना मर गया। किसी को मारकर नहीं मरा। पहले से यह सब दिमाग़ में नहीं आया, इसलिए वह उसके कारण हमले पर जाकर काउंटर में मारा गया। अब बहुत-से निष्ठुर नियम हैं, सहज और समझ में आने वाले हैं। दोप्दी लौटे तो अच्छा है, न लौटे तो बुरा। हाइड-आउट बदल दो। निशानी ऐसी होगी कि अपोज़ीशन[3] देख न पाये, देखकर समझेगा नहीं।

पीछे पैरों का शब्द। दोप्दी फिर घूमी। यह साढ़े तीन मील के विशाल टीले और घने जंगल में घुसने की अच्छी राहें हैं। दोप्दी यह सब पीछे छोड़ आयी है। सामने थोड़ा समतल है। उसके बाद फिर ऊँचा-नीचा। ऐसे ऊँचे-नीचे में कभी आर्मी कैंप नहीं लगाया गया। इधर सूना है। भूल-भुलैयाँ। सारे टीले देखने में एक-दूसरे की तरह हैं। ठीक है, दोप्दी सियार को मरघट ले जायेगी।

पतितपावन को तो श्मशान काली के नाम पर बलि दिया गया था।

'ऐप्रीहेंड!'[4]

एक टीला उठ खड़ा हुआ। एक और। और एक। प्रौढ़ सेनानायक

---

1. दस्ते 2. छिपने की जगह बदल देंगे 3. विरोधी 4. हिरासत में ले लो।

लक्ष आलोक-वर्ष के बाद द्रौपदी ने आँखें खोलीं, बड़े आश्चर्य से आकाश और चाँद को ही देखती रही। धीरे-धीरे उसके मस्तिष्क से ललछौंहा आलपीन का सिरा खिसक-खिसक जाता था। हिलने पर वह समझती थी कि अभी भी उसके दोनों हाथ दो खूंटों में और दोनों पैर दो खूंटों में बँधे हैं। कूल्हों और कमर के नीचे कुछ चिपचिपा-सा था। उसी का खून था। सिर्फ़ मुँह में कपड़ा न था। बड़ी प्यास। कहीं 'पानी' न कह उठे, इस डर से वह दाँतों को भी ओंठों से दाबे है। समझ गयी कि योनिद्वार से रक्तस्राव हो रहा है। बहुत-से लोग उसे ठीक कर लेने आये थे !

शर्म से उसकी आँखों के कोरों से आँसू बहने लगे। मटमैले चाँद के प्रकाश में धुंधली आँखें नीचे की ओर झुकाने पर अपने दोनों स्तनों पर उसकी नजर गयी। वह समझ गयी कि हाँ, उसे अच्छी तरह ठीक किया गया है। अब वह सेनानायक को अच्छी लगेगी। दोनों स्तन काटकर क्षत-विक्षत और दोनों वृन्त छिन्न-भिन्न थे। कितने लोग थे ? चार-पांच-छः-सात—उसके बाद द्रौपदी को होश न रहा।

एक ओर आँखें फेरकर उसने कुछ सफ़ेद-सफ़ेद देखा। उसका ही कपड़ा था। और कुछ नहीं देखा। उसने सहसा दैव-कृपा की आशा की। संभवतः वे लोग उसे फेंक गये हैं, यह सोच कर कि सियार नोचकर खा जायेंगे। लेकिन उसके कानों में पैरों के घिसटने की आवाज़ आयी। गरदन घुमाती है और बेनेट पर झुका संतरी खड़ा उसकी ओर देखता है और मुसकराता है। द्रौपदी आँखें बन्द कर लेती है। बहुत देर इन्तजार नहीं करना पड़ा। फिर ठीक करने की प्रक्रिया शुरू हुई। चलती रही। चाँद कुछ चाँदनी को उलटी कर सोने चला गया। रह गया सीधा अंधकार। थोड़ा लाचार होकर पैरों को फैलाकर शरीर निश्चल होकर चित पड़ा रहा। उसके ऊपर सक्रिय मांस का पिस्टन उठता था और गिरता था, उठता था और गिरता था।

उसके बाद सवेरा हो गया।

उसके बाद द्रौपदी माझिन को तंबू में लाया गया और सूखी घास पर छोड़ दिया गया। शरीर पर कपड़ा डाल दिया गया।

उसके बाद ब्रेकफ़ास्ट, अख़बार पढ़ना, रेडिओ मेसेज, 'द्रौपदी माझिन ऐप्रिहेंडेड' खबर भेजना इत्यादि हो जाने पर द्रौपदी माझिन को लेकर आने का हुक्म होता है।

लेकिन यहाँ पर सहसा गड़बड़ शुरू हो गयी।

'चल' कहते ही द्रौपदी उठ बैठी और पूछती है, 'कहाँ चलने को कहता है ?'

'बड़े साहब के तंबू में।'

'तंबू कहाँ है?'

'वह।'

द्रौपदी लाल-लाल आँखें निकालकर पास ही तंबू देखती है। कहती है, 'चल, मैं आ रही हूँ।'

संतरी पानी का लोटा बढ़ा देता है।

द्रौपदी उठ खड़ी होती है। पानी का लोटा ज़मीन पर उलट देती है। धोती दांतों से खींच-खींचकर फाड़ती है। इस तरह की हरकत देखकर संतरी 'बावली हो गयी'—कहकर भागा हुआ हुक्म लेने जाता है। वह क़ैदी को ले जा सकता है, लेकिन क़ैदी अगर नासमझ हरकत करे, इसे वह नहीं जानता। इसीलिए ऊपर वालों से पूछने जाता है।

जिस तरह जेल में पगली घंटी बजने पर होता है, भाग-दौड़ शुरू हो जाती है, उसी तरह फ़ौज का अफ़सर ताम्बुव से निकलकर देखता है कि सूर्य की तेज़ रोशनी में नंगी द्रौपदी सीधे उसी की ओर आ रही है। संत्रस्त संतरी उससे कुछ दूर पर है।

'यह क्या?' कहते-कहते वह कुछ रुक जाते हैं।

द्रौपदी उनके आगे आकर खड़ी हो गयी। नंगी। अरू और योनिकेशों में थक्के-के-थक्के रक्त। दोनों स्तन घायल।

'यह क्या?' उन्होंने डाँटा।

द्रौपदी और पास जाती है। कमर पर हाथ रखकर खड़ी हो जाती है, हँसकर कहती है, 'तेरी तलाश का मानुस, दोपदी माझिन। ठीक कर लाने को कहा था, सो किस तरह ठीक किया है, देखेगा नहीं?'

'उसकी धोती कहाँ है, धोती?'

'पहन नहीं रही है, सर। फाड़ डाली है।'

द्रौपदी का काला शरीर और समीप आता है। द्रौपदी दुर्बोध्य है, फ़ौज के अफ़सर के निकट एकदम दुर्बोध्य हँसी से काँपती है। हँसने में उनके विक्षत होंठों से ख़ून बहता है और वह ख़ून हथेली से पोंछकर द्रौपदी कल-कल की आवाज़ लगाने की-सी भीषण, आकाशभेदी, तीखी आवाज़ में बोली,'धोती, क्या होगी धोती? नंगा कर सकता है, कपड़े क्यों पहनायेगा? तू मरद है?'

चारों ओर देखकर द्रौपदी ख़ून से सने थूक को थूकने के लिए फ़ौजी अफ़सर की सफ़ेद बुशर्ट चुन लेती है और उस पर थूककर कहती है, 'यहाँ कोई आदमी नहीं जो शर्म करूँ। धोती मुझे पहनने को मत देना। और क्या

करेगा ? ले, काउंटर कर ले, काउंटर कर...!'

द्रौपदी दोनों मर्दित स्तनों से फ़ौज के अफ़सर को धकियाती रहती है और यह पहला अफ़सर निरस्त्र टार्गेट के सामने खड़े रहने में डर रहा है, बहुत डर रहा है।

जल

आदमी का नाम था मघई। जात से डोम था। उमर अस्सी वर्ष। चेहरा जले हुए पुराने ठूंठ बरगद की तरह पुराना और झुलसा। चरमा गांव के डोमपाड़ा में आज भी उसका सम्मान है। उससे पूछे बिना कोई किसी कामकाज को नहीं करता है।

मघई का शरीर दुहरा हो गया था, छाती के बाल सफेद, बांस चीरकर टोकरी, सूप, फूल रखने की डलिया, छोटी टोकरियां बनाने के सिवा दुनिया में वह अधिक फैलाव न कर सका। फिर भी वह इस प्रकार से लोगों का आदर पाता कि लगता कि सहज अधिकार से राजा राज कर ले रहे हों। मघई की आंखों में वही सहज अधिकार की दृढ़ता रहती।

मघई गुणी था। उसे पाताल के पानी का पता था। रात-भर उपवास कर सवेरे स्नान कर धुला कपड़ा पहनता, पलाश के पत्ते पर चावल-घी-चीनी लेता, मंत्र पढ़ता और चलता रहता। उसके बाद जहां रुककर अंजली खोलकर चावल छिड़कता वहां डाइनामाइट से उड़ा देने पर पानी निकल पड़ता, कुआं बन जाता।

चरसा सूखे और अनावृष्टि की धात्री भूमि था। चारों ओर धूप से जली, ललछौंही, हिंस्र और वन्ध्या भूमि थी। क्षितिज तक लेटेराइट ज़ोन[1], बीच-बीच में क्रिस्टलाइन रॉक फोल्ड[2]। गरमी की रातों में अमावस्या में भी काला नहीं दिखायी देता था। धूमिल आकाश। आदिवासी कहते . 'सिवोंडा ने धरती सिरजते समय चरसा को गलती से बना दिया।'

चरसा ब्लॉक की छाती पर से बहती थी चरसा नदी। आषाढ़-श्रावण और भादों में वह बाढ़ में डुबा देती। शरत् में पानी की कमी, जाड़ों में पतली धार, वैशाख और ज्येष्ठ में वह नैरंजना रहती।

---

1. सौहवत भुरभुरा पीला रंग-मंडल 2. रवादार पत्थर ।

चरसा में हर बरस रिलीफ़ आता। रिलीफ़ के रुपये लेता सन्तोष पुजारी। तीन पीढ़ियों से रिलीफ़ ही उसका पेशा था। रिलीफ़ के रुपयों से हर साल इस गाँव में बहुत-से कुएँ खुद गये।

बहुतेरे कुएँ थे, बहुत-सा पानी था। चैत-वैशाख में पानी बहुत कम हो जाता था, फिर भी रहता ही था। आषाढ़-श्रावण में पानी अगाध रहता।

कुओं की बात सोचकर मघई के कलेजे में दर्द होने लगता। पेट की सन्तान को जन्म देने के बाद उसे दूसरों को दे देने की-सी व्यथा। हर बार कुआँ खोदने के पहले सन्तोष पुजारी उसके पास आता था।

'चलो भाई, गाँव के भगीरथ!'

'क्यों, ठाकुर?'

'पानी का पता लगा दो।'

मघई ने पूछा, 'कहाँ कुआँ बनेगा?'

'वह तो तुम बताओगे, भाई।'

'कुआँ! कुएँ से हमें पानी मिलेगा?'

'क्या तुम्हें पानी नहीं मिलता है?'

मघई इस बात का जवाब न दे सका। पानी न देकर अगर सन्तोष पुजारी जान-बूझकर कहे, 'तुम्हें क्या पानी नहीं मिलता?' तो मघई जवाब न दे सका।

लेकिन मघई का लड़का धूरा बोला, 'हमें पानी नहीं मिलता, आप लोग पानी देते नहीं, फिर बेकार की खोज का काम क्यों किया जाये, ठाकुर?'

सन्तोष पुजारी की आँखें लाल हो गयीं। बोले, 'पानी नहीं देते? किसे पानी नहीं देते?'

'डोम, चमार, चंडालों को पानी नहीं मिलता।'

'पानी के बिना कीड़े-मकोड़े तक नहीं जिन्दा रहते। तू पानी के बिना ज़िन्दा है, धूरा?'

'न। चरसा की छाती फोड़कर सोता निकालते हैं, उसमें रात-भर पानी जमा होता है, उस पानी का हमें पता है। पंचायती कुआँ, सबका कुआँ, उससे पानी नहीं मिलता। दिन में तुम लोग गाय-भैंसों को नहलाते हो, वहाँ से रखवाला लाठी लेकर भगा देता है। रात को जायें तो बाल्टी की आवाज़ सुनकर तुम कुत्ते लगा देते हो। पानी लेने के लिए, ठाकुर, रात में चोरी करना पड़ती है। फिर भी...।'

धूरा गुस्से में भरा, रूखी आवाज़ में कह रहा था, 'फिर भी सारे कुएँ मेरे बाप ने दिखाये थे। उससे बने थे।'

'इसीलिए तू इतना मगन हो रहा है?'

'नाः। उससे मगन नहीं, ठाकुर। गुस्सा मुझे अपने आप पर है। इतना होने पर भी इसे अक्ल नहीं आती। फिर भी यह तुम्हारे कहने पर पानी दिखाने चला आता है।'

मघई बोला, 'चुप हो जा, बुरा।'

प्यार-भरे स्वर में नहीं, वह समाज के शीर्ष-स्थान मघा डोम की आवाज में बोला था। वह आवाज दबाने, डराने, धमकाने वाली थी।

बुरा चुप हो गया।

मघई उसी आवाज में सन्तोष से बोला, 'तुम घर जाओ, ठाकुर। बुरा झूठ नहीं कहता है। पानी तुम नहीं देते, दोगे भी नहीं, फिर इस पर बात क्यों बढ़ायी जाये?'

'तुम नहीं चलोगे?'

'जाऊँगा। यह मेरे वंश का काम है, यह काम करूँगा। नहीं तो पुरखों का अपमान होगा।'

मघई फिर गया। चरसा गाँव के लोगों ने मघई की 'जल की खोज' बहुत देखी थी। हर बार आश्चर्य में पड़ गये थे। इस बार भी देखी, नये सिरे से ताज्जुब में पड़े।

ताज्जुब में आने की ही बात थी। चारों ओर आग फूंक रही है। धरती हो, खेत हो—सब जैसे धूप में जलकर राख हो गये हों। पेड़ तक बदरंग, बौने, बिना पत्तों के हो रहे थे। ऐसे में पानी कहाँ रह सकता है, यह किसी की कल्पना में नहीं आ सकता।

सवेरे से पहले ही चरसा के लोग आकर जमा हो गये। जमा हो गये 'पहाड़ों' के ऊपर।

किसी दिन शायद मघई की जवानी में चरसा की छाती में बड़े जोर की बाढ़ आयी थी। मटमैले पानी के पहाड़-के-पहाड़ बड़े क्रोध में चले आ रहे थे। गाँव की अधिष्ठात्री देवी बड़ाम्मा भाग कर न रोकतीं तो बाढ़ चरसा गाँव को डुबा देती। सवेरे देखा गया कि बड़ाम्मा की नाक में नथ नहीं है, आँचल खिसका हुआ है।

इस बार पानी उतर जाने के बाद शरत् में मघई आदि ने तय किया कि बाढ़ रोकने के लिए गाँव के पश्चिम की ओर पाड़ उठायेंगे। तभी बाँध या 'पहाड़' बनाना शुरू हुआ। कातिक से चैत तक काम चला। बैसाख-जेठ में 'पहाड़' सूखता। बरसात में जो मिट्टी बह जाती उसे जाड़ों में ठीक कर देते। कुछ दिनों में मिट्टी सूख कर पत्थर-सी हो जाती। फिर वह मिट्टी बरसात में न गलती।

'पहाड़' बनाने में मघई जो मिट्टी खोदता, उसके गड्ढे में पानी भरकर कुआँ-सा हो जाता। वह गड्ढा बहुत दिनों तक मघई के काम आता। उसके बाद बरसात में मिट्टी खिसक कर गड्ढे में भर जाती। कीचड़-मिला पानी रह जाता। उसमें डोमपाड़ा के सुअर लोटते रहते।

'पहाड़' लड़के-बच्चों और बकरी के बच्चों की उछल-कूद करने की अच्छी जगह थी। उन्हीं 'पहाड़ों' पर सवेरा होते ही गाँव के सब लोग आकर जमा हो जाते। उसके बाद डिम्-डिम्-डिम् और सिंगी की आवाज़ सुनायी देती। एक छोटा-सा जुलूस डोमपाड़ा की ओर से आ रहा था। आगे नथुनी दुसाध ढोल पर चोट लगा रहा था, पीछे पारस डोम सिंगी बजा रहा था। बीच में मघई था। वह साफ़ धोती पहने था जो आगे दो हाथ फैली थी, हाथों की अंजुली में पलाश का पत्ता था। पत्ते में चावल, घी, चीनी थी।

मघई की आँखें आधी खुली थीं। माथे पर पसीने की बूंदें थीं। वह ऐसे सीधा चल रहा था जैसे कोई आदमी सपने में चलता हो, सुबकता हुआ घूमता है, घूमने की थकान की मेहनत से पसीना बहता है और वह दीन होकर प्रार्थना करता चलता है :

'हा मा पाताल-गंगा
इतना पुकारता हूँ, उत्तर दे।
बोल तो मा पाताल-गंगा
तेरे हाथ में है राखन-पालन,
रक्षा-सिरजन-जीवन-मरण।'

इस मंत्र से वह पाताल-निवासी जल को पुकारता और दया करने को कहता। वह जानता था कि बाहर की यह सूखी, जली, गेरुआ मूर्ति पाताल-गंगा की छलनामात्र है। इस दग्ध श्मशान के नीचे रूपान्तरित शिला और बाढ़ की मिट्टी की बनी शिला कहाँ बहकर सबटरेनियन[1] नदी, कहीं पेरेनियल[2] जलस्रोत है—वह मघई को मालूम है। वह जल की अधिष्ठात्री निराकार पाताल-गंगा देवी हैं। वह ही सारे गुप्त जल की धात्री हैं और संरक्षयित्री हैं। मघई डोम उनका भगीरथ है।

मघई की पुकार पर देवी प्रसन्न होती हैं। मघई खड़ा हो जाता है। उसकी अंजुली से चावल-घी-चीनी गिर पड़ते हैं। मघई थरथर काँपने लगता है। काँपते-काँपते स्थिर हो जाता है। उसके बाद लड़के के हाथ से सब्बल लेता है। धरती में तीन चोट मारता है और वहाँ एक पत्थर रख

1. भूमि के नीचे बहने वाली 2. सदा बना रहने वाला।

दिया जाता है।

मघई सूने गले और सूखे होंठों से कहता है, 'यहां पूजा करके धरती खोदना।' धरती को पूजा कर 'जल के लिए खोद रहे हैं मां, बुरा न मानना' कहकर माफ़ी मांगी।

मघई की भूमिका यहां समाप्त हो जाती है। परवर्ती भूमिका संतोष के साले ठेकेदार की है। वह आदमी लाकर मिट्टी ड्रिल कर डाइनामाइट ब्लास्ट करता है। ब्लास्ट करते ही पानी निकलने लगता है।

इसके बाद आती है राज-मिस्त्री की भूमिका। कंट्रैक्टर संतोष का चचेरा भाई था। कुआं बना। पक्का कुआं, कुएं के नीचे का हिस्सा भी पक्का। उस कुएं में बहुत पानी था।

मघई रात में कुदाली लिये चरसा की छाती में सोता खोदने चला। चरसा और उसका संबंध अद्भुत है। सोंत खोदते-खोदते मघई को अंधेरे में दिखायी दिया कि चरसा नदी नहीं है, कुलबुल करती व्यक्तित्वमयी प्रणयिनी युवती है। चरसा खिलखिला कर हंस रही है और शब्दहीन भाषा में कह रही है :

देहौं न सहज ही जल
पताले रखे हौं जल।
पहिले हमार छाती फोड़ौ
तब ही देहौं जल।
देहौं नाही तोहे
तोरे बहू-बिटियै दे हौं।

मघई बड़बड़ा कर बोला, 'वे लोग जल नहीं देते, इसमे तेरे पास आये हैं। तू ऐसा क्यों कर रही है? एं? कलेजे में जोर से चोट मारूं? ले:, कुदाली चलाऊं?'

धूरा एक और स्रोत खोदते-खोदते बाप का प्रलाप सुन रहा है और कहता है, 'पानी-पानी-पानी करते-करते पागल हो गये हो। किससे बातें कर रहे हो?'

मघई अंधेरे में मुसकराता है।

रात-भर में चरसा के सोते से बूंद-बूंद कर पानी निकलता है। सवेरा होने के पहले डोम-चमार-चंडाल लोगों की लड़कियां, पत्नियां, माताएं वह पानी भर लेती हैं। पूर्व के आकाश को लाल करते हुए तेज गरमी का सूर्य दहकता हुआ उदय होता है। गरमी से सोतें का पानी सूख गया। पहाड़ से औरतें बर्तन लेकर लौटने लगीं। आकाश की पृष्ठभूमि उन्हें भ्रान्ति लगी।

आषाढ़ के अंत में चरसा में बाढ़ न आने तक पानी

प्रागैतिहासिक परिश्रम चलता रहता।

आषाढ़ में चरसा में वाढ़ आने पर मघई पहाड़ पर बैठकर बाढ़ देखता और स्वर्णरेखा नदी को गालियाँ देता।

2

जितेन माहिती ने मघई को पहली बार इसी हालत में देखा।

वे चरसा ब्लॉक के बुनियादी प्राइमरी स्कूल के मास्टर थे। चरसा में बुनियादी स्कूल चलाने आकर धीरे-धीरे उनके दिमाग़ में कुरेदन हुई कि भारत पर शासन करना मुश्किल काम है। अलगाव और भेदाभेद ज्ञान मनुष्य के रक्त में है।

संविधान जो भी कहे, जितना भी कहे, संविधान की दृष्टि में सुजात-कुजात में कोई अन्तर नहीं है—काम के समय उनकी झोपड़ी में पतित, संतोष-पवन के बाल-बच्चे पढ़ने नहीं आते। वे तेनूखाली ब्लॉक के स्कूल में जाते हैं। उस गाँव में ऊँची जात के हिन्दुओं की संख्या अधिक है। उनके बाल-बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं।

उनके स्कूल में आते डोम-चमार-चंडाल-दुसाध। बाल-बच्चों की एक समस्या और थी। छात्र-छात्री आज आते, कल बकरियाँ चराने चले जाते, परसों लकड़ी जमा करने जाते, तरसों पढ़ने आ जाते। दूसरे दिन चरसा के किनारे केकड़े पकड़ने चले जाते।

कभी-कभार कोई लड़का वज़ीफ़े की परीक्षा देता। वह गाँव, स्कूल, विद्यार्थी, अध्यापक—सबके लिए ऐतिहासिक घटना होती। लेकिन इस तरह की एक घटना से इतिहास तो आगे नहीं बढ़ता। जितेन माहिती ने देखा कि लड़के अशिक्षित रहने पर खेती-बारी या ऐसा ही कुछ करते। थोड़ा-कुछ सीखकर वैसा नहीं करते और गाँव के लिए अनुपयुक्त हो जाते। बहुत अधिक पढ़-लिखकर कुछ न करने पर देखा कि पीछे से सहारा देने वाला न रहे तो उनके लिए संरक्षित काम मिलना भी संभव नहीं।

परिणाम यह हुआ कि जितेन माहिती को दोनों ओर से कष्ट मिला। इनमें सबको 'वन में रहता बाघ, पेड़ पर रहता पाखी' पढ़ना-लिखना सिखाने में विद्यार्थी का भविष्य अँधेरा, न सिखाने पर उस पर अन्याय करना होता। न सिखाने पर बहुत अनुचित काम, सिखाने पर गड़बड़। इसलिए संशय में पड़े मन को 'चुप रहो' डाँट लगाकर वह प्राइमरी चलाते रहे।

स्कूल सरकारी योजना का परिणाम था। सरकारी योजना बीज-

धान खाद्य शस्य, खाद, कुटीर उद्योग में प्रोत्साहन मघई आदि को तो नहीं मिलता, लेकिन इसलिए स्कूल की सुविधा क्यों न मिले ?

बरसात में विद्यार्थी पानी में छपछप करते, मछली पकड़ने भागते। तब जितेन माहिती भी निकल पड़ते। अभ्यास था। बहुत दिनों तक ग्राम-सेवक थे। बयालीस में जेल काटी थी। छियालीस में दंगा-विरोधी जुलूस निकाला था, सैंतालीस से ग्रामसेवक समिति बनायी। वहाँ रहने वाले बहुत लोग रहने पर भी बुनियादी शिक्षा के मामले में अपने को समर्पित कर सबको छुटकारा दे दिया था। सब लोग उनसे खुश थे, क्योंकि बयालीस में एक बरस जेल में रहने का रेकर्ड रहने से जितेन माहिती ठेकेदारी, बड़ी नौकरी, जो भी चाहते वही कायदे से देना पड़ती। कुछ भी न माँगकर साधु की भाँति उन्होंने देश के लिए फिर अपने को समर्पित करना चाहा। कैसी शान्ति है, कैसी शान्ति है ! खद्दर नहीं पहनते। डबल शान्ति। खद्दर पहने कोई साधु आदमी भागे और लड़कों को पकड़ लायें और 'वन में रहता बाघ' पढ़ायें, अपने हाथों भात और जंगली तरकारी पकाकर खायें, इससे दूसरे खद्दरधारियों की मुसीबत होती।

इस तरह जितेन माहिती ने मेघावृत आषाढ़ की एक सवेरे देखा कि उनके सारे विद्यार्थी कोठरी के बाहर चले गये। काले-काले बादलों से चरसा के उस पार अँधेरा था। वे भी निकले। पहाड़ी पर चढ़कर चरसा की बाढ़ देखेंगे। सहसा देखा कि पत्थर के टूटने से बनी मूर्ति की तरह फटे हुए चेहरे वाला एक बूढ़ा, खजूर के पत्तों के बने छाते के नीचे बैठा अनार्य भाषा में चरसा नदी को 'आवारा' कहकर गाली दे रहा है।

जितेन बाबू की लिखाई-पढ़ाई विद्यार्थी-जीवन में समाप्त हो गयी थी। उस समय उनको जो कुछ अच्छा लगता, आज भी वही अच्छा लगता है। चारों ओर प्रकृति की अपार रूप लहरी बहते हुए भी वह मन-ही-मन वर्ड्सवर्थ और रवीन्द्रनाथ का पाठ कर प्रकृति-लाभ की पुनरावृत्ति करते रहते। यहाँ सुनकर मन-ही-मन 'फॉर हर द विलो वेन्ड' बोले। मन की दशा हिलकोरें ले रही थी। ऐसे समय एक ऊबड़-खाबड़ बूढ़ा नदी को 'आवारा' कह रहा है, सुनकर वह बहुत अधिक चौंक उठे।

परिवेश अनुकूल था। पहाड़ी से चरसा बहुत अच्छी दिखायी दे रही थी, आकाश और चारों ओर सीमाहीन हो रहे थे। जितेन माहिती क्षण-भर में मघई की ओर आकर्षित हो गये। दूर से देखा था। मघई माने जल। वह पाताल-गंगा का भगीरथ था। उन्हें देखकर मघई बोला, 'बीड़ी पिऊँगा, लेकिन साली दियासलाई नहीं लाया। एक तीली देंगे ?'

मघई ने उन्हें मोल ले लिया। जन्म से साधु जितेन माहिती

प्रसार का पराजित योद्धा था। मघई पानी के मामले में पराजित योद्धा था। जितेन माहिती का युद्ध आधुनिक मानव की सृष्टि था। मघई का संग्राम प्रागैतिहासिक था। बड़े बाघ ने छोटे बाघ को अधीन कर लिया।

दोनों ने आस-पास बैठकर अत्यन्त सौहार्द से बहुत-सी बातें कीं। पृथ्वी के नीचे का जल, चरसा का जल, गढ़ैया का पानी—तमाम जलों के बारे में मघई की बातें सुनकर जितेन माहिती समझे कि वह एक छाते के नीचे बैठकर एक दुर्लभ आदमी से सोंधी बीड़ी पी रहे हैं। मघई दुर्लभ व्यक्ति है, क्योंकि वह ओरिजिनल है। इस भारत में लगता है कि उस ममक्ष को लेकर केवल गोंडवाना युग के डाइनोसार[1] के लिए ही जिंदा रहना हो सकता है, क्योंकि सबके लिए रहने पर भी प्रामिथियस का आग का युद्ध जिस प्रकार उसके अकेले का था—जल के साथ मघई के ये प्रेम-भक्ति-राग-दुःख-निराश जटिल संबंध, उसके अकेले के हैं।

जितेन माहिती से मघई ने बहुत दिनों तक मसले की व्याख्या की, क्योंकि उनमें बहुत दोस्ती हो गयी थी। बहुत दिनों से जितेन माहिती डोमपाड़ा में आते-जाते हैं। मद्यपान की बुराइयों के बारे में व्यर्थ उनका ध्यान खींचते है। उनका भोजन सुअर का मांस खाते। पारस डोम के बेटे को साँप के काटने से मरने-मरने होने पर उसे थप्पड़ मारकर लेकिसन के प्रयोग से जिला लिया और सारे लोगों की नजर में देवता बन गये। डोमपाड़ा-दुसाधपाड़ा में आग लगने पर उनके पहले हाथ लगाने पर पंचायती कुएँ के पानी से आग बुझायी गयी, जिसका नतीजा हुआ कि सन्तोष पुजारी के बिगड़ने और सदर में चुगली खाने से हाकिम की डाँट पड़ी। उसके नतीजे में एक घटना और हुई।

रात के दस बजे मघई धान की शराब पीकर अपनी शक्ति के नशे में जितेन माहिती के पास आकर बैठा और अपने मन की जटिल कंदराओं से निकालकर एक स्यमन्तक मणि के प्रकाश में मघई ने मास्टर को जल-दान के बारे में प्रकाश दिखाया।

वह बोला, 'मास्टर! तुम क्या सोचते हो? सन्तोष हम लोगों को पानी क्यों नहीं देता है?'

'क्यों?'

'पाकिस्तान बनने के बाद से सरकार ने जात-पाँत उठा दी है, क्या जानते हो?'

'हाँ।'

---

[1] आदियुगीन पशु।

'उन अखबारों और रेडियो के बाबू लोगों से कहता हूँ।'

मघई ने अखबार और रेडियोवालों को 'आवारा रंडी के बीमार बच्चे' कहकर गाली दी। उसके बाद नशे में कुछ देर बेहोश रहकर बोला, 'जात-पाँत की हेकड़ी में वे हमें पानी नहीं देते हैं। फिर भी हाकिम कह गया है, वह सब गलत बात है। सरकारी रेकर्ड में लिखा है कि पच्छिम बंगाल में हरिजन निकाले नहीं गये हैं। यह मदराज नहीं है।'

'मद्रास नहीं, तमिलनाडु।'

'वही होगा। मैंने साला पुरुलिया शहर नहीं देखा। किसी के लड्डू से मुझे क्या?'

'और क्या कहा?'

'और भी बातें हैं।'

मघई चतुर और तीखी हँसी हँसा। बोला, 'वह इकहत्तर की बात है। मेरा लड़का धूरा बिगड़ा हुआ, बिसखोपड़ा था। चरसा के मोड़ पर बाँस के जंगल में कुछ शहरी लड़के पुलिस से भागे हुए आये थे। वह जाकर उनको खाना-पानी दे आता। उसके बाद अँधेरे में उन्हें ले जाकर स्टेशन पर चढ़ा आया करता। उसके बाद खुद जाकर स्टेशन पर मेरी फुफेरी बहन के घर शराब पीकर नशे में पुलिस को ठेंगा दिखाकर लौट आता। लौंडा कैसा बेवकूफ है!'

'वे नक्सल थे?'

'वह नकसल-अँकसल नहीं जानता। लो, नशा उतार दिया न। नशा रहते-रहते बताये दे रहा हूँ।'

'बताओ।'

'उस पर सन्तोष को बड़ा गुस्सा था। उसे भी वह पानी नहीं देता था।'

फिर मघई धूर्त और तीखी हँसी हँसा। उसके बाद बोला, 'धूरा ने कहा—पानी मत दिखाओ। देखो मास्टर, अपने पुरखों का सिखाया काम है। यह काम न करने से हमें पाप लगेगा, करने पर भी पानी नहीं मिलता। पानी की परेशानी, बहुत परेशानी है।'

'तुम लोग कुआँ क्यों नहीं खोदते?'

'जल दिखा सकते हैं। कुआँ नहीं खोद सकते। दो हजार रुपये! कौन देगा?'

जितेन माहिती ने मघई के चले जाने के बाद पानी के बारे में सोचना शुरू किया।

पानी—धरती के भू-स्तर का सत्तर भाग पानी है। पानी के आने-

जाने से भूमि बराबर कटती रहती है, धँस जाती है, फिर जमा हो जाती है। और मघई आदि को पानी नहीं मिलता। आबोहवा में जल की भूमिका महत्वपूर्ण है। मघई आदि को पानी नहीं मिलता था। मेंह, नमी और बरसात आबोहवा को प्रभावित करते हैं। मघई जल दिखाता है। जल जीवन-धारण के लिए आवश्यक है। कुआँ खोदा जाता है। जीव और उद्‌भिद् के प्रोटोप्लाजम[1] का बड़ा अंश पानी है। प्लांट-सैप[2] और जीव-रक्त में जल का रहना और फ़ोटोसियेसिस[3] आवश्यक हैं। कुआँ खोदा जाता है रिलीफ़ के रुपयों से। जमा किया पानी निर्मल होना अनिवार्य है। शहर के पानी के वितरण की व्यवस्था में विशुद्धिकरण की प्रक्रिया...।

रिलीफ़ मिलती है अंचल के लिए, लेकिन रिलीफ़ का काम कराके अंचल के आदमियों को मज़दूरी देने की शर्त रहने पर भी सन्तोष के रँग-रुटी कंट्रैक्टर बाहर से मजदूर लाते। उससे भी गाँव के रहनेवालों को जलन थी।

कुओं पर ऊँची जाति के हिन्दुओं ने क़ब्ज़ा कर रखा था। थियरी, रेकॉर्ड, अख़बारों की रिपोर्ट में पश्चिमी बंगाल में हरिजनों पर अत्याचार नहीं है; जाति के विषय में सहनशीलता है।

जितेन माहिती का दिमाग़ फिर गया था।

वह जागने पर पानी पीते। एक गिलास पानी उन्हें बहुत ताज़गी देता। जल जब निर्मल होता है, तो वह गंधहीन, स्वादहीन, स्वच्छ तरल पदार्थ होता है। थोड़ी मात्रा में जल वर्णहीन होता है, बहुत जल होने पर गहराई में निलछौंहा होता है।

बाहर जल का शब्द केवल थप्-थप्-थप् होता है।

तमाम जल देखा है जितेन माहिती ने। वर्षा के बरसने में इतना जल, चरसा की बाढ़ में बहुत जल, हिमालय की निर्जन गहनता में बर्फ़ के गलने से बने सैंकड़ों-हज़ारों झरनों की बाढ़ से बरबादी—मघई आदि को पानी नहीं मिलता ! जितेन माहिती को मघई की कही बातें याद आयीं।

'पहले सिंबोङा ने धरती सिरजी। उन्होंने धरती पर पाप सिरजा—यह संथालों की बात है। उसके बाद धरती जल गयी। उसके बाद पानी में डूब गयी। उसके बाद केंचुए के मुँह और पिछले भाग में जो मिट्टी रहती है उससे नयी धरती बनी। सो इतना पानी जायेगा कहाँ ?

'अब हमारी बात। पाताल-गंगा ने सारा जल लेकर धरती में जमा कर लिया। मनुष्य ने उसे देखा नहीं। इसी से देवमूर्ति नहीं गढ़ी। इस

1. प्राण-रस 2. पौधों का शक्तिधारक रस 3 पौधों को हवा, धूप और पानी मिलना।

धरती की गहराई में पत्थरों के नीचे बहु—त जल है। मुझे पता है। मेरे पुकारने पर जल आवाज देता है।

'तुम पूछोगे, कैसे मालूम? मालूम है रक्त से। किंतु इत—ना जल! इत—ना जल! हमें जल क्यों नहीं मिलता? पानी मिलेगा या नहीं, यही सोचने में जीवन बीता जाता है, कब दूसरी बातें सोचें? वे शहरी लडके तो धूरा से तमाम बातें सोचने के लिए कह गये। बदमाश मुझसे नहीं बताता।'

जितेन माहिती समझे कि वे मघई की ओर झुक रहे हैं। उन्होंने निश्चय किया कि सदर में स्कूल की ग्रांट के लिए प्रयत्न करने के लिए जाने पर एस० डी० ओ० से बात करेंगे।

3

एस० डी० ओ० बोले, 'नॉनसेंस?'

'नॉनसेंस क्या?'

'देखिये, इस जिले में बहुत समस्याएँ हैं। ड्राउट-ड्राउट-फ्लड-फ्लड-ड्राउट-ड्राउट-फ्लड। चरसा ब्लॉक को *नियमित रूप से रिलीफ मिलती है।*'

'ब्लॉक को नहीं मिलती, एक आदमी को मिलती है।'

'सरकार रिलीफ किसके हाथों में दे? ब्लॉक में पढ़ा-लिखा कहने को वही आदमी है।'

'इसी से रुपये खा जाता है।'

'ओहो, मालूम है, मालूम है। इसे बी० डी० ओ० को देखना चाहिए। लेकिन सिस्टम ऐसा ही है।'

'मैं कहता हूँ, जात का मामला है।'

'नहीं।'

'नहीं?'

'ऑफ़िशली जब नहीं है, तब नहीं है।'

'मैं देखता हूँ कि है।'

'ओहो, अनऑफिशली कहता हूँ कि रहेगा ही। आदमी के खून का संस्कार क्या कानून से चला जायेगा?'

'इतज़ाम कीजिये।'

'कैसे?'

'दबाव डालिये।'

'मशाई, कुछ होना नहीं है। कानून से कृषि-ऋण समाप्त

बेगार उठ गयी। असल में हुआ क्या ?'

'क्या हुआ ?'

'वही महाजन-ज़मींदार उधार दे रहे हैं। वही अनरिकॉर्डेड नियम सूद खाते हैं। आदमी मरता है।'

'इंतज़ाम कीजिये।'

'मशाई, मैं कौन हूँ ? आप क्या कहेंगे, क्या मुझे मालूम नहीं है ? ज़िले के करोड़ों रुपये सूद में जा रहे हैं और उसका हिसाब नहीं।'

'तो फिर ?'

'हमारे करने को कुछ नहीं है। आपकी आँखों को अगर देखने में तकलीफ़ होती है, तो पातुल चले जाइये। अच्छा गाँव है, कास्ट हिन्दू मेजॉरिटी है। बस-रूट पर है। स्कूल पक्का है, अलग सैनिटरी-पैख़ाना मिलेगा।'

'नहीं, मशाई।'

'लेकिन उन्हें भड़काइये मत।'

'नहीं।'

यथासमय ख़बर सन्तोष पुजारी को मिली। यह ख़बरों के आने-जाने का काम बड़ी तेज़ी से होता है। हुआ यह कि सन्तोष ने एक दिन जितेन माहिती को बुलाकर दावत दी। खिला-पिलाकर बोला, 'आप मेरे पीछे क्यों पड़े हैं ?'

'आपके पीछे ?'

सन्तोष पुजारी ने अत्यंत विनम्रता से कहा, 'देखिये, इस ज़िले के लोगों से 'क्या करते हो' कहने पर कहते हैं—'रिलीफ़ करते हैं'। अनावृष्टि में सूखा, अधिक वर्षा होने पर बाढ़, यही हमारा रोजगार है। आप उसमें अड़चन डालते हैं। क्यों डाल रहे हैं, यह अच्छी तरह समझता हूँ। दूसरे की रिलीफ़ के दस आना-छः आने में क्यों आते हैं ?'

जितेन माहिती की उम्र पचास बरस थी। वे अठारह बरस की उम्र से बेकार के काम करते रहे हैं। पहले उनका ख़याल हुआ कि सन्तोष पुजारी मज़ाक कर रहा है। उसके बाद जब समझे कि मज़ाक नहीं है तो कुछ देर आश्चर्य में पड़े रहे।

उसके बाद बिगड़कर बोले, 'कह क्या रहे हैं ? रिलीफ़ चोरी करने को कह रहे हैं ? मुझसे ?'

सन्तोष पुजारी उनको बिगड़ा देखकर हक्का-बक्का हो गये। उसके बाद अत्यंत सरलता से बोले, 'मशाई ! रिलीफ़ न होती तो खाता क्या ? ? बहन का ब्याह, लड़की का ब्याह, तीस लोगों का खाना

होता ? इस बीहड़ गाँव में नौकरी मिलेगी नहीं, रोज़गार होगा नहीं। रिलीफ हमारे पुरखों का दिया काम है। आपको इसमें बुरा क्यों लगा ? मैं कहता हूँ, इसलिए मन में जलन हुई हो तो हाकिम के कान क्यों भरे ? मेरे माय आयें ! ऐं ? बुरी बात कही ?'

सन्तोष पुजारी का लड़का और भाई दोनों ही जितेन माहिती से ज़िद करने लगे—उन्हें भी आना होगा, रहना पड़ेगा। पढ़े-लिखे लोगों के हाथ में रिलीफ न जाने से लोगों का नुकसान है। इस बड़े गाँव में बहुत सुविधाएँ है। हाकिम की नजर नहीं पड़ती। बीच-बीच में कोई छोकरा आई० ए० एस० अफसर बन जाता है। वह कौन अच्छा है कौन बुरा, कुछ भी नहीं समझता, और अपने हाथों रिलीफ बाँटने का भार लेकर अपना ही नुकसान करता। यह गाँव उनकी हद के बाहर है।

जितेन माहिती बोले, 'देखो, सन्तोष बाबू ! काम तुमने बुरा किया है। मैंने सभा की, गाँव को बचाया, बयालीस में जेल काटी, कांग्रेस में काम किया, ग्राम-सेवा की, कभी भी चार पैसे चोरी नहीं किये।'

सन्तोष पुजारी बोले, 'फिर डोमपाड़ा के धूरे को क्यों नचा रहे है ? लौंडा बिसखोपड़ा है ?'

'अच्छा कहा, सन्तोष बाबू। इस बार डोमपाड़ा में कुआँ क्यों नहीं बना ?'

'वह आप नहीं समझेंगे।'

'क्या होगा ?'

'सो क्या बताया जायेगा ? आप उन्हें नचा क्यों रहे हैं ? गाँव में क्या कम कुएँ है ?'

'उन लोगों को पानी नहीं मिलता ?'

'खूब मिलता है। वह हम-आप नहीं देख पाते। रात में वे लोग पानी चुराते है।'

जितेन माहिती ने हाकिम को अर्जी लिखी, 'यह आन्ध्र या दूसरा कोई राज्य नहीं है, इसी से यह नहीं कहा जा सकता कि हरिजनों पर अत्याचार हो रहा है। लेकिन हो वही रहा है। आपकी निष्क्रियता सन्तोष पुजारी के लिए सहायक हो रही है।

'यह सन्तोष पुजारी 'शिक्षित सज्जन' है। इसका परिचय क्या है ? वह इलाके का सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति है। उसकी निजी जायदाद की आमदनी बरस में आठ हज़ार रुपये है। उसकी बहुत-सी बेनामी ज़मीन है। उसकी सम्पत्ति का ज़रिया वंशानुक्रम से प्राप्त रिलीफ है।

'चरसा स्टेशन गाँव से तीन मील दूर है। वहाँ बिना लाइसेंस के

चुआई शराब बेचने के लिए एक बार, एक कुली लड़की के बेचने के लिए दूसरी बार वह पकड़ा गया और दोनों बार छूट गया।

'सत्तर-इकहत्तर में गांव में धान-कटाई को लेकर जब गड़बड़ हुई तो दोनों ही बार जांच के लिए आया हुआ इंस्पेक्टर सन्तोष के घर पर ठहरा, यद्यपि सन्तोष दंगा करने वालों के एक दल का सरगना था। उसके पास गैरकानूनी बंदूक थी। दारोगा को यह मालूम था।

'यह आदमी किस तरह ब्लॉक के रिलीफ़-मनी...?'

एस० डी० ओ० ने चिट्ठी नोट की और फ़ौरन जितेन माहिती के बारे में तथ्य जमा किये। रिपोर्ट देखकर लगा कि देखने में यह जितना सीधा लगता है उतना सीधा है नहीं। हालत बदलने की तिकड़म, बयालीस में जेल काटने की प्रमाणित सूचना रहने पर भी यहां कारगुजारी करने की क्या जरूरत है? संदेहजनक बात है। खद्दर नहीं पहनता। और भी संदेह-जनक है। डोमपाड़ा से इतना घुलना-मिलना क्यों है? औरतों और शराब से निरासक्त क्यों है? संदेहजनक है।

एस० डी० ओ० ने जितेन माहिती का नाम नोट कर रखा, उनका जिला अच्छा है। सूखे में और बाढ़ आने पर रिलीफ़ मिलती है। क़र्जदार क़र्ज लेता है, महाजन क़र्ज देता है। रिलीफ़ के रुपयों से किसी-किसी ब्लॉक में मंदिर जरूर बन रहा है, लेकिन मंदिर-मसजिद अच्छी चीजें हैं। धर्म आदमी को अपनी ओर खींचे रहता है।

इस समय अवांछित शिड्यूल कास्ट बेल्ट में कोई गड़बड़, कोई चिंगारी उड़ी तो कहां आग लगेगी, कौन कह सकता है!

जितेन माहिती संदेहजनक है। वह ऐसा कुछ शुरू कर सकता है कि जिसको क़ाबू करने में एस० डी० ओ० की जान निकल जायेगी। इमरजेंसी के दिन गये।

4

'अच्छे दिन च—ले गये मास्टर! लो, रस पियो।'

वर्षा-शरत्-हेमन्त बीत गये। शीत में ताजा खजूर का रस बर्तन में उंड़ेल कर गणई ने जितेन माहिती से यह बात कही।

एस० डी० ओ०, सन्तोष पुजारी—सब उसका पीछा करते रहे, वह पीछा किया हुआ हिरन था। यह न जानते हुए जितेन माहिती भोले हिरन की तरह आनंदित था।

खजूर का रस पीकर और चोंगा हाथ में लिये दोनों जाड़े से सिकुड़े

चरसा के किनारे-किनारे चल रहे थे। धूप की गर्मी अब अच्छी लग रही थी। खिले फूल की तरह मघई को भी जानु-भानु-कृशानु शीत से मुक्ति देने वाले थे। चलते-चलते मघई बोला, 'साली छिनाल ! सारा पानी खींच रखा है। आः ! असाढ़ में जितनी बाढ़ थी उतना पानी अगर बाँध रखना आता !'

जितेन माहिती के मन में बात चुभ गयी। क्यों चुभी रह गयी, किस जरूरी काम में—यह उन्होंने नहीं समझा।

स्कूल की छुट्टी थी। बिना दूध की चाय बना और पीकर जितेन माहिती गुड़ की तलाश में पराग के घर जायें कि सहसा उनके दिमाग में विस्फोट हुआ। वे उसी समय मघई के घर गये।

'मघई हो ? घूरा हो ? सुनो, सुनो ! बड़ा जरूरी काम है, जल्दी करो।'

'क्या हुआ ?'

'चलो न।'

उन्हें लेकर जितेन माहिती चरसा का किनारा पकड़कर बालू को ठेलते हुए बहाव से उलटे चलने लगे। नदी में जहाँ पानी था, वहाँ यायावर पक्षियों का कलरव था। घूरा बोला, 'धनुक ठीक कर लूँ, आपको पक्षियों का मांस खिलाऊँगा। ओः, कितनी चर्बी रहती है ! भूनकर खाया, फिर भी हाथों में चर्बी लग गयी। जाड़ा और बढ़े तो और पाखी आयेंगे। तब अंडे खाऊँगा, मांस खाऊँगा।'

जितेन माहिती ने कुछ न सुना। जैसे कि सामने एलडोरेडो[1] देखा हो। खोये हुए-से बढ़ते रहे।

मघई को ताज्जुब हुआ।

चरसा गाँव से डेढ़ मील चलकर नदी पतली हो गयी थी। आधा मील पर उसके दोनों ओर तट ऊँचा था, जमकर खोवा, मिनी गिरिमाला की तरह था। उस पर्वतमाला की कन्दराओं से केवड़े के गुच्छे नदी की ओर जड़ें लटकाये हुए झुके थे।

घूरा बोला, 'यहाँ सूखे के दिनों में बहुत-से साँप रहते हैं, और बरसात में यहाँ पानी कैसा टकराता है ! गम-गम-गम आवाज होती है। ओः ! पानी टकराता है, लेकिन किनारों पर नहीं फैल पाता। इसी से यहाँ सन्तोष ने जमीन ली है।'

जितेन माहिती बोले, 'ठहरो।'

---

1. काल्पनिक सोने की खान।

उत्तेजना में साँस खींचकर हाँफते हुए वह बोले, 'मघई, इंतज़ाम कर लिया ?'

'किसका ?'

'पानी का। बारहो मास जल मिलेगा।'

घूरा खुशी से उछल पड़ा। बोला, 'बाबा ! कहा था न कि तुम्हारा मास्टर पागल हो जायेगा ? पागल हो गया। अरे ब्बाप रे, अब पानी देगा !'

जितेन माहिती बोले, 'मघई ने अक़ल दी। तो सुनो ! उसने कहा था, इतना पानी बांधकर रखना अगर आता !'

'तो उससे क्या हुआ ?'

'सुनो, इधर देखो। हजारीबाग जेल में अघोरीलाल ने बताया था कि इसी तरह तारा नदी से पानी लेते हैं। ठहरो, बालू में बनाकर दिखाता हूं। य—ह समझ लो कि यह चरसा की जगह है। य—ह दोनों ओर किनारे ऊँचे हैं। इसी से ज़मीन नहीं डूबती। य—ह आधा मील है।'

'सो समझा। पर उससे क्या ?'

'य—ह दोनों किनारे हैं। देखो, झांवा पत्थर के ढेर हैं। उन्हें लाकर एक के ऊपर एक पांत में दोनों ओर पाड़ की तरह ऊँचा कर रखें।'

मघई जल-शिकारी, जल-व्याध था। वह समझ गया। हाथ की बीड़ी रेत में फेंक दी। साँप देख कर जैसे नेवला एकाग्र हो जाता है, उसी तरह एकाग्र हो गया। बोला, 'उसके बाद ?'

'वहाँ पानी है।'

'उसमें सूखेगा न।'

'पहले बरस में भी सारा नहीं सूखेगा। अगर पत्थर के टुकड़ों से नदी की तली को पाटो, बाद में बालू आयेगी, कीचड़ आयेगी। पत्थरों के बीच कीचड़ से दरार करेगी। बांध हमारे हिसाब से सात फुट ऊँचा होगा। तीन फुट पानी सूख जाने पर भी चार फुट पानी तो रहेगा। उसे बाद में सरकार से लिखा-पढ़ी कर अगर सिमेंट से पक्का कर सके, तब ?'

'कौन करेगा ?'

'तुम लोग करोगे, जिन लोगों को पानी नहीं मिलता है। सब बेगार दो, सबको पानी मिलेगा। अभी से लग जाओ। चैत में गर्मी हो जायेगी।'

मघई बोला, 'अभी लगते हैं।'

दोनों हाथ जोड़कर मघई भागा। किनारे पर चढ़ झुक कर नदी से बोला, 'अब तेरा छिनालपन ठीक हुआ। पानी देने में कितना छिनालपन था ! यह देखो मास्टर, कुदाल से छाती फाड़कर सुसरी के नीचे से पानी खींच लूंगा। देखो, कैसे !'

धूरा बोला, 'धान काटने के समय।'

'धान काटेंगे, बांध भी बनायेंगे। धूरा, तू मुझे धान मत दिखा। अबकी पानी बांधूंगा। उसके बाद रेत मे कंकड़ विछाऊँगा, मास्टर, कंकड़ विछाऊँगा।'

जितेन माहिती बोले, 'चलो, सबसे बतायें। सबको खोदना होगा।'

धूरा बोला, 'जो साला नही आयेगा उसे सूअर की तरह पीटूंगा।'

मघई बोला, 'लेकिन माँ की पूजा करेंगे।'

सन्तोष पुजारी को यह सब अच्छा न लगा। बोला, 'बड़म-माँ की पूजा? असमय क्यो? कुछ मिल गया है क्या? लाटरी?'

मघई बोला, 'तुम्हें उससे क्या? बड़म-माँ की पूजा तुम जब-तब नही किया करते हो?'

'कुआँ खोदने पर करता हूँ।'

'हम पानी लायेंगे।'

'कहाँ?'

'देख लेना।'

'अच्छा! चलो, गुड़, बताशे, चावल—सब ले आयें। तो चलो।'

सन्तोष ने खुद आकर देखा। बोला, 'वाह-वाह मास्टर! यह इंजीनियरिंग अकल आपकी है, ऐं? वाह-वा, ऐसे चार बाँध बँध जायें तो ब्लॉक की तकलीफ़ दूर हो जाये। फिर रिलीफ न लेना पड़ेगी।'

'तुम्हारा तो पेशा है न?'

'ओ हो हो, वह मज़ाक की बात कह रहे हैं? यह क्या बात है, मास्टर? बाँध बनने से तो सबके लिए अच्छा है।'

मघई बोला, 'अपनी ज़मीन मे पानी लोगे न?'

'क्यो? यह बात क्यों पूछ रहे हो?'

'तुम न पानी दोगे, न पानी लोगे, साफ बात है।'

'पानी नहीं दिया। तुम लोगों को? तुम्हारा भला हो।'

धूरा बोला, 'धान काटने के लिए आदमी बुलाते हो या नही?'

'नही रे, तू काटेगा? तेरे रहते मैं आदमी बुलाऊँ?'

मघई बोला, 'यह रामराज हुआ, भाई मास्टर। सन्तोष अच्छी बात क्यो करता?'

'गुस्से में सब बुराई ही मत देखो, मघई।'

शीत की हलकी गर्मी मे डोम-चमार-चंडाल-दुसाध [illegible] बड़े-बड़े पत्थर उठाकर लाये और जमा किये।

वे गा रहे थे :

हेइ लंका। जेइ लंका !
मारे ढिवा, मारे ढिवा !

उनके उस गाने की इकट्ठी तान शीत की हवा में सूखे पत्तों के साथ बहुत दूर तक गयी। सन्तोष पुजारी के दोमंजिले घर में। वहाँ से स्टेशन पर, स्टेशन से सदर, सदर में एस० डी० ओ० के घर पहुँची।

जवाब में एस० डी० ओ० के घर मीटिंग हुई। वहाँ से निर्देश आया। सन्तोष पुजारी गाँव में है। इसीलिए लोअर कास्ट स्त्री-पुरुष जितेन माहिती के नेतृत्व में चरसा की छाती पर क्या कर रहे हैं, यह जानने के लिए जाँच के लिए आदमी तैनात करने की ज़रूरत न हुई।

मतलब का निर्देश पाकर सन्तोष को बहुत ही अफ़सोस हुआ। अहा, हा, फन्दे में मघई भी फँसेगा। आदमी गुणी था। 'था' क्यों सोचते हो, सन्तोष ? मघई अभी भी तो है। वर्तमान को अतीत सोचना क्या उचित है ? अहा, हा, गुणी आदमी ! सन्तोष के बाप की उमर का। उसके हाथों के बने बाँस के झूले में सन्तोष बड़ा हुआ है।

सारी बुराई की जड़ जितेन मास्टर है। पढ़ा-लिखा आदमी, माहिष्य जाति का, अजात-कुजात का भला क्यों करेगा ? उससे क्या भला हुआ ? जहाँ जिसकी जगह है वह वहीं रहे, तभी ठीक है। उसका भी अनिष्ट करना पड़ेगा, सन्तोष कितना महापापी है !

मघई के न रहने पर पानी कौन दिखायेगा ? सरकारी जिओलॉजिस्ट[1] बाबू लोग ? इलम आती है, इलम आती है, इलम आती है। तुम सैकड़ों यंत्र आदि लेकर, मिट्टी पत्थर ब्लास्ट[2] कर जो करोगे, उसे मघई खेल-खेल में कर देता है। मघई और जितेन मास्टर—दोनों दो तरह के भले आदमी हैं।

उनका बुरा करने चला है सन्तोष। पछतावा ! पछतावा !

आन्तरिक दुःख से सन्तोष ने गाँव लौटते ही माता के स्थान पर प्रसाद चढ़ाया और असंगत मात्रा में प्रसाद का जल-पान जितेन और मघई को भेजा। मानसिक पीड़ा से स्कूल फ़ंड में रुपये दिये और दो ताड़ की वल्लियों के दाम मघई को माफ़ कर दिये।

बाँध चैत के अन्त में पूरा हुआ।

इस बार सूखा और तेज़ था। बड़ी दूर तक धूप की किरणें थीं। लेकिन इस बार कम वर्षा में पानी बहुत अधिक जमा हुआ। मघई बोला, 'सुसरी ने समझ लिया है कि इस बार वह हार गयी। इस बार उसे बाँध-

---

1. भूगर्भवेत्ता 2. विस्फोट।

बूँधकर पानी ले लेंगे। नदी में और गिरी औरत में फरक नहीं है। देखो, सारी नदियाँ गिरी औरतें हैं, मा गंगा पियर्मा में माँ गंगा हैं, पाताल में पाताल-गंगा है, उसके बाद सारी नदी छिनाल औरत।'

बाँध के पत्थर पर बैठकर सूर्यास्त के समय जिनेन माहिती और मघई की आश्चर्यजनक यारी चलती। दोनों ही चैत का अवसान, आषाढ़ का आगमन चाहते थे। मघई के प्रश्न और बातें—सबका केंद्र जल था।

'माँ पाताल-गंगा से माफी माँग ली है। उन्हें पता है कि मैं उनका दास हूँ।'

'बाँध में पानी होने से क्या करेंगे ?'

'कितने दिन तक देखेंगे !'

'बाँध में मछलियाँ छोड़ना होंगी।'

'मछली के बच्चे कौन लायेगा ?'

'मैं और धूरा जायेंगे।'

'तुम्हारे देश में बहुत पानी है न ?'

'बहुत पानी।'

'जल का हिस्सा-बाँट भगवान ने ठीक नहीं किया।'

'इस बार जल मिलेगा।'

'लड़के शराब पीकर हुल्लड़ मचा देंगे।

'उसी आदत से तो मारे गये।'

'तुम्हें क्या पता ? जिंदगी में कभी पी है ?'

'छी:, छी: !'

'मुझे वह बरदाश्त नहीं होती।'

'वह तो देख रहा हूँ।'

'तुम्हारा हाल क्या है ?'

'क्यों ?'

'कुछ नहीं। गृहस्थी नहीं की ?'

'हुई ही नहीं।'

'आदमी जात। इस उमर में ब्याह हो जाना चाहिए।'

'धुत्, मघई !'

'यहाँ रहो, ब्याह करो।'

'क्या हो सकता है ?'

'रहो, खेती करो, घर बनाओ। साइकिल खरीदो। रेडियो खरीदो। टार्च की बत्ती खरीदो।'

'ना भाई मघई, यह सब करने के लिए फिर से जन्म लेना पड़ेगा।'

'तब मरो। लो, बीड़ी पियो, माचिस दो।'

दोनों बीड़ी पीने लगे। चैत का जलता दिन जलते-जलते पश्चिम दिगन्त मर रहा था। धरती और हवा में गर्मी थी। फिर भी जितेन माहिती को मन में शान्ति मिल रही थी। बरसात की-सी शीतल करने वाली शान्ति। रात में नींद में पानी देखा था। मानो कहीं जलता हुआ निःशब्द स्थान हो। मघई मानो हाथ उठाकर क्षितिज से आकाश होते चला आ रहा है। उसके पीछे एक निःशब्द जल की दीवार चली आ रही है। पृथ्वी का सत्तर भाग जल है।

वैशाख आया।

वैशाख गया।

ज्येष्ठ आया।

ज्येष्ठ गया।

आषाढ़ आया।

वर्षा आयी। पानी।

आषाढ़ में सघन आकाश। सावन में वर्षा के बाद बाढ़ आयी। मघई और जितेन माहिती भागकर पहाड़ी पर चढ़े।

ना। अब ग़लती नहीं है। गेरुआ बादलों के गरजने से बरसा बढ़ी आ रही है। फेनिल जल। मटियाले जल में बराबर भँवर और बहाव है।

मघई बोला, 'चलो मास्टर, चलकर बाँध के पास देखें।'

बाँध की ओर देखकर मघई बोला, 'इससे सुसरी की गरमी दूर नहीं हुई। देखो, देखो, टीला डूब रहा है। ओह, तुझे अक्कल नहीं है? टीला डुबा दिया?'

जितेन माहिती बोले, 'देखो मघई, टीला डूबेगा, चला जायेगा? पहले ही समझ लो। इससे कोई नुक़सान नहीं। वर्षा की बाढ़ में डूबेगा नहीं? टीला डूब जाये।'

'फिर?'

'भादों आये। बाढ़ मर जायेगी, वर्षा बीत जायेगी, तभी समझोगे कितना पानी रहा, कितना नहीं रहा?'

मघई बोला, 'भँवर देखो, फेन देखो। इस! कहाँ से बाँस-गाछ उखाड़कर ले आयी राक्षसी? जाकर बूरा से कहूँ। आगे का मोड़ देखें। वहाँ बाँस रुके तो निकाल ले। ओः, बाँस का खूँटा, ताड़ का खूँटा, वह भी सोना से माँगना पड़ा।'

उसके बाद बोला, 'इस भादों में पूजा—मनसा देवी की पूजा इस बार सार्थक होगी। तुम देखना, इस चैत में नदी में एक और बाँध बना लेंगे।

बाँध-बूँधकर उसे काबू में करेंगे।'

आषाढ़ में बाढ़, सावन में बाढ़, भादों में बाढ़। घर-घर मनसा की पूजा हुई। *मनसा माने वास्तु। वास्तु-पूजा के दिन तरह-तरह के पकवानों* का आयोजन होता। दूसरे दिन चूल्हा नहीं जलता।

सन्तोष की कारगुज़ारी देखकर सबको ताज्जुब था। पूजा के दिन उसने मनसा की डाल और वास्तु देव को सिर पर लेकर बाँध के जल से उन्हें स्नान कराया। उसके बाद ढिंढोरा पीटकर अरन्धन[1] के दिन ठंडा भात, पाँच तरकारियाँ, पाँच साग, कुम्हड़ा-पोस्त की चटनी मघई के पाड़े में बँटवायी।

जितेन से बोला, 'सोचता हूँ कि आपके स्कूल का छप्पर बड़ा बनवा दूँगा। गाँव में स्कूल रहते लड़कों को तेनूखाली भेजता हूँ, यह ठीक नहीं है। आपने कालेज में दो दर्जे पास किये हैं, वह मास्टर तो मैट्रिक फेल है।'

घूरा बोला, 'ठाकुर, ऐसे अच्छे कैसे हो गये? एँ? किसी बार इतना प्रसाद नहीं दिया?'

मघई बोला, 'तो बेटे, तुमको इससे क्या? हरामजादे, मिला है, तो खा ले।'

मघई की मनसा-पूजा दूसरे तरह से थी। मघई ने पहले मनसा-पूजा की। उसके बाद चेहरे पर रंग मल, शराब पीकर, जुलूस बना, गीत गाते-गाते पहाड़ी के ऊपर क़तार बाँधकर बाँध के ऊपर गया।

आज हलकी बौछार पड़ रही थी, हवा में वर्षा के झोंके थे। वे लोग गा रहे थे :

शंकिनी चित्राणी लगती माँ की कचुकी
चितिबोड़ा साँप लगे माता की अचली
कजरारा लगता मा के नयनों में काजल
पतुरिया लागे माता पाँवों में से पायल ।

जितेन माहितो ने उनका जुलूस देखा था। पहाड़ी पर खड़े होकर चरसा के पानी को देखना आजकल उनका सबसे जरूरी काम था। नाचते-नाचते मघई आदि ने चरसा के किनारे जाकर घड़ा डुबाया। उसके बाद घर लौटकर अभ्यस्त उपसंहार के रूप में खूब शराब पी।

एक और आदमी ने छप्पर के दोमंजिले की ऊपरी मंजिल से डोमों का जुलूस देखा। वह था सन्तोष पुजारी। ओह! शराब पीना जानते हैं ये। खुद ही बना लेते हैं। सन्तोष समझता है कि इसके बाद गाँव में गोव

---

1. अरन्धन के दिन घर में कुछ पकाया नहीं जाता है, बासी खाते हैं।

रखने के लिए उसे आस-पास के अर्थनीति के व्यापार पर क़ब्ज़ा करना पड़ेगा। इस बार शराब का लाइसेंस लेगा। पुलिस लगाकर घर-घर शराब चुआना बन्द करना पड़ेगा। साले शराब के मामले में आत्म-निर्भर हैं।

वर्षा दिन-भर टप-टप बरसती रही। गेरुआ चरसा पर धूसर बरसात की झालर थी। केवड़े के झुंड से तीखी शराब की गंध निकल रही थी। संध्या के बाद सन्तोष हाथ में टॉर्च और लाठी लेकर निकला। मघई के बांध की ओर गया। बांध उसे दिन-भर मद-भरी युवती की तरह आकर्षित करता रहा। सन्तोष भर-आंख देखेगा। संसार में मन को मतवाला बना देने वाला रूप बहुत जल्दी गायब हो जाता है।

उसने रोशनी डाली। मनोहर, मनोहर ! बांध के दोनों ओर चरसा का पानी घुटनों तक था। बांध में पानी छप-छप कर रहा था। सालों ने बांध बांधा है !

सन्तोष ने बड़ी सावधानी से बांस की लाठी डुबाई। चेहरे पर धूर्तों-सी सावधानी थी, जैसे दूसरे की पत्नी के शरीर को हाथ लगा रहा हो। बहुत पानी है। बड़े दुःख के साथ सिर हिलाया। बांध रहने से उसका ही भला है। दोनों किनारों पर उसकी जमीन है। बांध को मोल ले लेगा, मछलियां डालेगा ! सन्तोष ने मन की आंखों से देखा कि उसके बांध में उसकी छोड़ी मछलियां किलोलें कर रही हैं। आहा ! कम्पनी ने क्या होशियारी की है, जंगल, नदी, पहाड़। रेल, पोस्टापिस, थाना—इनसे सन्तोष की मिल्कियत नहीं चलती। बड़े दुःख के साथ सन्तोष ने 'साले' कहा और बांस को पानी में फेंककर चला आया।

मनसा-पूजा बीत गयी। भादों बीता। क्वार के लगभग बीच में बाजे बजने लगे। पूजा के पहले बोधन पर्व के नहीं। उत्सव के बाजे। क्वार के अन्त में पूजा होती है। सन्तोष के मंडप में प्रतिमा पर मिट्टी लगती है। सन्तोष की जिद है कि इस बार पूजा में एस० डी० ओ० को बुलाना होगा। दारोग़ा और बी० डी० ओ० तो बहुत बार आ चुके हैं। बाजा सुनकर सन्तोष ने अपने महिन्दर गोर से कहा, 'यह बाजा कैसा सुनायी दे रहा है ?'

'डोमपाड़ा में है।'

'परब है ?'

'नहीं, नहीं।'

बाबू की अज्ञता पर गोर हँसा और बोला, 'बांध से जल बांधा है। इसलिए वे लोग वहां जाकर धान की शराब पियेंगे, नाच-गाना करेंगे, मास्टर को माला पहनायेंगे। बड़ा जोश है।'

'मास्टर जायेगा ?'

'हां, बाबू।'

'और कौन-कौन गया है?'

'डोम-चमार-चंडाल—कोई भी घर में नहीं है। जल कैसा सुन्दर है, बाबू! देख आया, मिट्टी बैठकर साफ हुआ है। और भी बहुतेरे लोग आ रहे हैं। तेनुवाली के सथाल देखने आ रहे हैं। बड़ी चहल-पहल है।'

सन्तोष बोला, 'तू यहीं रह। कुमार को जो जरूरत हो दे देना। मैं सदर चला। साइकिल दे।'

साइकिल लेकर सन्तोष निकल गया।

सवेरे से बांध पर उत्सव है।

तीसरे पहर के क़रीब खाना-पीना खत्म हुआ। उसके बाद घूरा बोला, 'दिन-भर मस्ती नहीं हुई, मास्टर बाबू। अब पानी में डुबकी लगाना है।'

तीसरे पहर हवा शीतल थी। फिर भी जितेन माहिती पानी में उतर पड़े।

मघई किनारे बैठा देख रहा था, हँसता, कभी पानी में डुबकी लगाता।

तब सब लोग उतरे और ऐसी उछलकूद करने लगे कि किसी ने नहीं देखा कि पहाड़ के उस पार जीपें आकर रुक रही हैं। एक के बाद एक।

औरतें बाल-बच्चों को लेकर गांव लौट आयी थीं। मघई की पत्नी पुलिस की रुद्रमूर्ति देखकर डर गयी और 'मघई डोम? कहां है?' सुनकर दोनों हाथ उठाकर चिल्लाते-चिल्लाते पहाड़ी की ओर भागी।

सात जीपें आयी थीं, उनमें पुलिस के चालीस आदमी थे। यह इसलिए कि जितेन माहिती, एक 'फ़ार लांग स स्पिशस कैरेक्टर'[1] बुनियादी प्राइमरी स्कूल के शिक्षक का कर्तव्य छोड़कर चरसा गांव के 'डिसेंटिंग एलिमेंट्स'[2] के साथ मिलकर समाज-विरोधी कामों के लिए उनको भड़काकर गांव में आतंक फैलाने में लगा था।

वस्तुतः चरसा ब्लॉक में काम लेकर आने के पीछे भी जितेन माहिती का गुप्त अभिप्राय प्रकट होता था। पानी तो एक 'इशू-भर' था। इस गांव में उन्होंने मघई डोम के साथ जिस मुस्तैदी से मेलजोल बढ़ाया उससे समझ में आता है कि मुलाक़ात पहले से सोची हुई थी।

मघई डोम और घूरा डोम 'कानून की नजरों में संदिग्ध व्यक्ति' हैं, क्योंकि पता लगा है कि इकहत्तर के वर्ष में उन्होंने तीन क़रार आतंकवादी उग्रपंथियों को सहायता दी थी और सबूत न रहने से उन्हें शामिल नहीं

1. बहुत दिनों से संदिग्ध व्यक्ति 2 असहमत तत्वों।

किया गया। जितेन माहितो पानी के बहाने बसाई और धूरा को साथ लेकर आतंकवादी प्रयत्नों में जुटे हैं।

पुलिस के सूत्रों को पता है। चरसा गाँव की हालत विस्फोटक है। 'पानी तो एक छद्म-भर है।' जल को केंद्र बनाकर किसी भी दिन गाँव का सरक्षित अनुसूचित जनसमूह विस्फोट में पड़ सकता है। यथार्थ में इस पर्गा-मिनन में चरसा-भागला चरसा एक लाक्षागृह है। किसी भी समय...।

'कानून तोड़ने के सब आतंकवादी प्रयत्नों के अंकुरों का नाश करना पड़ेगा। इसलिए काम का सब...।'

इसी से जीपें और पुलिस ऐसी मुस्तैदी से चली आयीं। चरसा स्टेशन और चरसा गाँव के बीच से जाता कच्चा रास्ता सरकार-बहादुर से ही इमरजेंसी जीप-मोबिलिटी¹ के लिए बनाया गया है। अब वह काम आया, और क्या हुआ, यह देखने के लिए जीप से फ़ौरन उतर कर सन्तोष पहाड़ी पर चढ़ा।

पानी में छपाछपी में लगे आदमियों की आँखों के आगे सहसा पुलिस, जीप—सबकुछ को सब समझ के बाहर लगा। पुलिस क्यों है, पुलिस क्या कर सकती है? यह किसी की समझ में आने के पहले ही बाँध के पिछवाड़े और अगवाड़े के पत्थर पुलिस फेंकने लगी। 'तुम यह नहीं कर सकते' कहकर पानी में से हाथ बढ़ा पुलिस का पैर पकड़कर जितेन माहितो ने खींचा। नतीजा यह हुआ कि सिर में घूमड़ा पड़ गया और उसको घसीट से बीच किनारे पर उठाकर पुलिस ने एक लाठी और मारी।

धूरा आदि पानी से निकलने को तैयार हुए और असंभव आधुनिकता में पुलिस ने उन लोगों से 'निकलो साले! हरामी के बच्चो!' कहकर पानी से निकलने को कहा और लाठी मारकर उन्हें पानी में गिरा दिया। 'प्रॉसेस'² आधुनिकता की प्राचीन प्रतिमा थी, क्योंकि इसमें पुलिस का अस्तित्व दिखायी पड़ता था और यह भी कि ऐनथन से किस प्रकार 'डुअलिटी'³-रिकाफ़ि' इत्यादि काम करते हैं। यह पुलिस सचमुच 'ले सच्चा' भोगी है। जॉर्ज स्टेनर ने कहा है कि नात्सियों की भयानकता में 'छि' गायब हो गया था। एक नात्सी जनरल बीमोनेन ने सुना था कि वे गेटे पढ़ा रहे हैं—एक ओर यहूदी शिशु के चमड़े से टेबुल-लैम्प बना रहे हैं—लेकिन बात ऐसी नहीं थी। बीमोनेन ने सुना—शिशु-हत्या—गेटे-पाठ—नारी-हत्या एक ही आदमी कर रहे हैं।

यह जर्मनी में संभव था। उस देश की जलवायु अलग है। हमारा देश

1. सड़को योग्य 2. प्रक्रिया 3. द्वयता।

की पुरानी मूर्ति
और निकलते

उसके बाद कभी पुलिस दो से एक हो जाती है और धूरा आदि को पानी से निकाल फेंकती। मघई तब भागकर किनारे से मनसा के झंडे का बोम उठा लेता है। वह उन्होंने ही पूजा के बाद फेंक दिया था। बाँस उठाकर पुलिस की ओर दौड़ा। चिल्ला रहा था, 'बाँध नहीं तोड़ने दूंगा, हम बाँध नहीं तोड़ने देंगे, अपना बाँध ! हमने बाँधा है।'

जितेन माहितो उसे पकड़ने जा रहा था कि धड़ाम से गिर पड़ा। उनकी पीठ पर लाठी पड़ी और गिरे हुए भी उन्होंने उठने की कोशिश की। तभी उन्होंने गोलियों की आवाज सुनी और गरदन घुमाते ही मघई को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। मघई शून्य में देह को मोड़ मेहराब बना पानी में गिर रहा था। उसका शरीर शून्य में था, पीछे सूर्य, रक्ताक्त आइकेरस[1] के समान, उसके बाद 'आह-आह-आह' आर्तनाद और पानी में गिरने की छपाक् आवाज हुई।

वह आवाज एक दूसरी आवाज में दब गयी। इस वक्त बाँध के अगले भाग के पत्थरों का गिराना समाप्त हो गया था और स्वैरिणी चरसा ने छिनालपन भूलकर नंगी, प्रेमातुरा वेश्या की व्याकुलता में मघई को आलिंगन में लेकर बाँध खाली कर दिया—जल का संचय बालू की तरह कर सारा पानी लेकर बहने लगी।

जितेन माहितो और धूरा जेल भेज दिये गये। अपराध था—आई० पी० सी० 146/147/151 धारा।

मघई की लाश दो पत्थरों में अटक गयी। उसे पुलिस ले गयी।

चरसा नदी अब पहले की तरह बिना जल, शीर्ण, प्राचीन वन्ध्या की तरह अभिशप्त थी। उसकी छाती में डोम, चमार, चंडाल आदमी रात को गड्ढे खोदते। उन गड्ढों में पानी जमा होता। औरतें तड़के उस पानी को लेने आतीं। पहाड़ पर उजाड़ ताड़-खजूर के नीचे बकरियाँ चरतीं।

चरसा का बुनियादी स्कूल बंद हो गया था। चरसा में अभी भी

---

1. पौराणिक चरित्र, जो सूर्य की ओर चला था।

सैंक्शन नहीं थी। रिलीफ़ के रुपयों से मंदिर बनेगा, 'नेसेसरी पब्लिक बिल्डिंग' की श्रेणी जैसा।

सरकारी नोट : परसा ब्लॉक में हरिजन-समस्या की तरह की कोई समस्या नहीं है। पानी की समस्या भी नहीं है। पानी शरारती आंदोलनकारियों का बनाया एक 'हौआ'-भर है।

एम० डब्लू० बनाम लखिन्द[1]

'ऐट प्रेजेन्ट देयर इज नो स्टेच्युएरी मिनिमम वेज फॉर ऐग्री-कल्चरल लेबरर्ज इन वेस्ट बंगाल।'*

(मिनिमम वेज फ़ॉर एग्रीकल्चरल लेबरर्ज : मैत्रेय घटक : 'द इकोनोमिक टाइम्स', 20-6-77)

1

सपने में लखिन्द को संग्राम के अंत में एम०डब्लू० मिला था। स्वप्न में गौर लस्कर ने उसे और सारे खेतमजूरों को एम०डब्लू० दिया था। सपना देखने के लिए उसे सोने की जरूरत होती। लखिन्द दब्बू और डरपोक आदमी था। वास्तव में उसे जो भी नहीं मिल पाता, या जिन सारी परिस्थितियों का सामना वह नहीं कर सकता—तो चलते-फिरते सपना देखता और वह सब पा जाता और लाचार परिस्थितियों में जनरल रोमेल बन जाता। स्वप्न में। वॉल्टर मिटी की कहानी पढ़े बिना और डैनी के की फ़िल्म बिना देखे भी उसका पलायन का आचरण वॉल्टर मिटी की ही तरह था। इसी से समझा जा सकता है कि हर देश में आदमी एक ही होता है।

सपने में उसे एक असली रैपर मिला।

गौर लस्कर से नाक रगड़वायी थी। सामान्यतः वह चौथाई पेट खाना खाता था। परिणाम होता कि भूखे शरीर से *'स्वप्नदर्शन जीवन-विषयक'* हुआ और यूफोरिया[2] हो गया और वह अनजाने ठी-ठी-ठी हँसता रहता।

---

* "...आजकल पश्चिमी बंगाल में कृषि-मजदूरों के लिए कोई न्यायिक न्यूनतम मजदूरी नहीं है।"—(कृषि मजदूरों के लिए न्यूनतम मजदूरी मैत्रेय घटक द इकोनोमिक टाइम्स 20-6-77)

1. लखिन्द—लक्ष्मीन्द्र—मनसा मंगल में बेहुला के पति। यहाँ एक पात्र का नाम
2. भ्रमित मति।

यहाँ हँसने में उसने सिचरण की कोहनी का सिरा काट लिया और चौंककर सुना कि वसाई टूरा कह रहा है—न तो खुद काटूंगा, न मजदूरों को काटने दूंगा।

सिचरण ने हाथ उठाया। बोला, 'वह नाम याद नहीं रहेगा, वसाई। इनजिरी नाम दे रहे हो। क्या कहा तुमने? वह इनजिरी नाम समझाओ तो। नहीं तो झगड़ा हो जायेगा।'

'क्या नाम?'

'वही एम० डब्लू०। तुम तो लिखे-पढ़े हो, मिशन में गये थे।'

'वह नाम दिया था सरकार ने। मिनिमम वेज, जिंदा रहने लायक मजूरी—एम० डब्लू० देगा।'

'समझ गया, जी। अब पूरी तरह बताओ।'

'तुम्हारे माथे में तो कुछ रहता नहीं, जी। कित्ती बेर बताया, सो भूल गये।'

'पहले लखिन्दर सोचे।'

लखिन्द चौंक उठा। बोला, 'क्यों? तुम्हारा बैल मैंने नहीं मारा।'

वसाई टूरा बोला, 'तुमको मार दूंगा। खेतमजूरों को एम० डब्लू० पहले नहीं मिलता था। जलपाईगुड़ी, दार्जिलिंग, सिलीगुड़ी में मिला था। और किसी को नहीं मिला।'

सिचरण बोला, 'तुमने जो कहा था कि वह नक्सलबाड़ी दार्जिलिंग था?'

'था तो।'

'अगर वहाँ मजूर को मजूरी मिली थी तो वहाँ नक्सलबाड़ी क्यों हुआ?'

'वह और बात है। अब लखिन्दर से पूछता हूँ। अड़सठ के साल में हमारे जिला में एम० डब्लू० हुआ?'

लखिन्द बोला, 'खू—ब हुआ था। तब हम नित्त रेडियो सुनते थे। ब्बाप रे, रेडियो में तब बड़ा एम० डब्लू० हुआ था।'

'हाँ-हाँ, रेडियो में हुआ था, अखबार में हुआ था। सरकारी रेकर्ड में मरदों-बच्चों को रुपये कितने मिले थे? तीन रुपया चौअन पैसा, तीन रुपया सत्ताईस पैसा, दो रुपया दो पैसा। रेकर्ड में हम राजा बन गये थे।'

'आं? इतने रुपये?'

'हाथों में कितना आया था?'

'छः आना। लड़कों को वह भी नहीं।'

'तब साले बिडी[1] बाबू से जाकर क्यों कह आये कि सब रेकर्ड की मजूरी मिल गयी ? मिली थी कि—सी दिन ? देखा था तीन रुपया चौअन पैसा ?'

'नाः ! लस्कर ने दिया था छ—आ—ना, कहाँ से देखता ? कि—सी दिन नही देखा।'

'तब साले झूठ क्यों कबूल किया ?'

अब लखिन्द हँसा। बोला, 'लस्कर ने मुझसे कहा था न ? कहा—कह आ लखिन्द, कह आ, तुझे धान नहीं, चावल दूंगा। पांच रेक[2] भरकर।'

'उसी से कह आया ?'

बसाई टूडू ने बहुत ही दुखित होकर लखिन्दर की ओर देखा और अब वह फादर सैमुअल के फ्रस्टेशन को समझा। फादर बसाई आदि की आत्मा को हीदनूस[3] के अंधकार से निकालते।

बसाई आदि उनकी बातें मन लगाकर सुनते। किन्तु करम, सोतराइ, धरम-पूजा या काली-पूजा मे फिर गिरजा में झिझक जाते। उसके बाद बड़े दिन पर फिर गिरजा जाते और कहते, 'हम फिर आ गये है—रुपये, कबल, दवा दे दो।'

फादर सैमुअल निराश नजरों से उनकी ओर ताकते रहते।

बसाई ने निराशा से लखिन्दर की ओर देखा। बोला, 'लखिन्द ! खेतमजूर की मौत खेतमजूर के ही हाथों होती है। तुम जो कह आये, उससे हमारी मौत हुई। पांच रेक चावल पर लस्कर ने भून दिया। देखा तीन रुपया चौअन पैसा ? हम खेतमजूर दो सौ है, उसमें हर दिन सात सौ रुपये होता है। वह न देकर दिये छ आना। उसमें चौहत्तर रुपये गये। तो छः सौ छब्बीस रुपये हर दिन बचे। उसमें कितने रेक चावल होते हैं, समझता है ?'

'ना ! मुझे हिसाब कहां आता है ?'

'तब ?'

'और हाँ, बैंगन दिया था, मछली, आलू।'

'तुम्हें समझाये कौन ?'

'क्यों ? तुम ! तुम लीडर हो।'

बसाई बोला, 'ठहरो जी, अभी आया।'

बसाई पेशाब करने गया। मोनाल और गयेश्वरी गांव के खेत-मजूर आये थे, लखिन्द ने देखा। दोनों गांव गयेश्वरी नदी के किनारे

1. बी० डी० ओ० —ब्लॉक डेवलपमेंट अफसर 2. एक माप 3.

भरे-पूरे गाँव थे। लैंड-सीलिंग को ठेंगा दिखाकर गौर लस्कर अकेला ईश्वर, बहु-देवता बन गया था। अपने नाम से और तमाम नामों से गौर गयेश्वरी नदी सहित इस थाने का उपभोग करता था। उसका मकान दोमंज़िला और पक्का था, उसकी लॉरियाँ पक्की सड़क पकड़ चावल लेकर शहर को जाती। उसके घर दोल[1], दुर्गोत्सव, रटती[2] काली-पूजा और पंद्रह अगस्त मनाये जाते। उसकी बैठक के कमरे में दो अफ़सर, तीन मंत्री, सिद्धेश्वर बाबा, देहश्री शान्तनु मित्र और एक एम० एल० ए० की—कुल मिलाकर आठ तसवीरें टँगी थीं। हर-एक के साथ ही गौर लस्कर की तसवीर थी। गौर के घर में सोने के कमरे में कच्ची सीमेंट की पटिया पर सिद्धेश्वर बाबा के पैरों की छाप थी और दो ग़ैरक़ानूनी बंदूकें दीवार पर लटक रही थीं।

उसके धान के बीस बखार थे और धान छाँटने की मशीन भी थी उसकी। उसकी ससागरा धरती का पहरा देने के लिए छः बिहारी पियादे थे। इतना कुछ होने पर भी गौर के भीतर का अन्तःस्तल खोखला था। उसके लड़का न था। तीन-तीन पत्नियों से पाँच लड़कियाँ थीं। जो डोम, कुर्मी, चमार, संथाल उसके खेतों में मजूरी करते थे, उनके घर-घर में पुत्र-संतानों की बहुतायत देखकर उसके मन में हर साल विजातियों के प्रति ग़ुस्सा पैदा होता। जिस घर में 'हाय अन्न, हाय अन्न' हो, उन घरों में लड़के क्यों पैदा होते हैं?

कहना पड़ेगा कि दिन बहुत ख़राब चल रहे हैं। अब सपने में शिव भी नहीं आते। गौरव के बाप के, बरस भर से अधिक, तीर्थयात्रा के समय गौर की माँ के स्वप्न में शिव आये थे। उसके परिणामस्वरूप गौर का जन्म हुआ। जन्म पर अलौकिक प्रभा विराजमान थी। इस रहस्यमय अलौकिकता को हटाकर गौर ही पश्चिम बंग हुआ, अर्थात् गौर जो कुछ था, पश्चिमी-बंगाल के सारे ज़मींदार वही थे। हाँ, उत्साही रिसर्च-स्कॉलर लोगों ने अभी तक रिसर्च-फ़ेलोशिप की ओर ध्यान नहीं दिया है। इसीलिए यह पता नहीं चला है कि पश्चिमी बंगाल के ज़मींदार सब शक्ति हथियाये हुए हैं—क़ानून, अदालत, पुलिस टेंट में रखते हैं।

उसके पीछे आर्य और लोकायत देवी-देवताओं की कीर्ति भी बहुत कुछ है।

शिव भी असुर-उसुर को वरदान देकर मुसीबत में पड़ते थे। गौर आजकल बसाई टूरा को लेकर परेशान रहता है। आज बसाई टूरा मीटिंग

1. कृष्ण का झूला, होली 2. माघ कृष्णपक्ष चतुर्दशी।

कर रहा है, यह जानकर वह परेशान हो रहा है। आज बसाई टूरा मीटिंग कर रहा है, यह जानकर गौर कल रात लखिन्दर के घर गया। बोला, 'मिटिन है, बसाई क्या कहे—सब बता जाना।'

'सब बता जाऊँगा।'

'मुझे मालूम होना चाहिए।'

'कह जाऊँगा। मुझे एक टार्चबत्ती देना।'

'दूँगा।'

'छाइकेल।'

'अभी नहीं।'

'क्यों ?'

'सब कहेंगे कि तू चुगलखोर है, इसी से मैंने छाइकेल दी। तुझसे पूछने पर तू सब बता देगा. .।'

'क्यों ? कहूँगा, तुम लोग मिटिन में जो कहोगे, स—ब जाकर लस्कर से कहूँगा, इसीलिए उसने टार्चबत्ती दी ? छाइकेल दी ?'

'दूर हट।'

उसको बकझक कर गौर चला गया। तभी लखिन्दर की पत्नी बोली, 'अब चुगली खाओगे ?'

'ना, ना, वह कहाँ खाता हूँ ?'

अब लखिन्दर को सब याद आया। उसने कान खड़े किये। बसाई टूरा उसे बहुत अच्छा लगता था। बसाई किसी से नहीं डरता। लखिन्दर हैं, दुनिया-भर से डरता था। उसकी पत्नी ने कह दिया था . 'दादा है, निताई एक भी बात लस्कर के कान में बतायी तो घर में आग लगाकर गयेश्वरी चली जाऊँगी, हाँ ! मैं उद्धव की बेटी हूँ।'

सिवरण, निताई, लखिन्दर के साले थे। लखिन्द बोला, 'लस्कर ने कहा जो है ?'

'उसे कुछ न बतायेंगे।'

'अच्छा भाई, तुम घर में आग न लगाना।'

'लस्कर न तो तुम्हारी जात-पाँत का है, न समाज का ?'

'कुछ नहीं।'

'तो उसके डर से मरता क्यों है ?'

'ब्बाप रे, उसके राज में रहते हैं !'

लखिन्दर की दृढ़ धारणा थी कि भारत के स्वतन्त्र होने पर भी गयेश्वरी गौर लस्कर के अधीन है। स्वाधीनता के मामले में भी हाथ है, ऐसी उसकी धारणा थी। नहीं तो गौर पंद्रह अगस्त क्यों मन

लखिन्द इस इलाके में सबसे अधिक बुद्धू है।

सिचरण ने उसको टहोका दिया, 'क्या सोच रहे हो ?'

'नाः, सोच नहीं रहा हूँ।'

'तो सुनो।'

बसाई बोला, 'जिस तरह सबको एम०डब्लू० मिले, यह देखने के लिए सरकार ने निसपेट्टर लगाये हैं। हम कितने खेतमजूर हैं, यह तुम लोगों को मालूम है ?'

'दो सौ।' निताई बोला।

'दो सौ यहाँ हैं। पूरे जिले में सैंतीस लाख हैं। समझे ?'

'सैंतीस लाख ?'

लखिन्द हँसने लगा।

'हँस क्यों रहे हो ? एँ ?'

'नाः ! उसने बताया ना, सैं—ती—स लाख ! इतने आदमी कहाँ से आये ? मैंने तो अपनी आँखों देखा है कि एक गाँव से दूसरे गाँव में तीन खेतों की दूरी है। गाँव-गिराँव में बहुत होगा तो हजार मनुख हो जायेंगे। इत्ते मनुख नहीं हैं, बसाई। ओ सब रेडियो की बात है। हमें पता है।'

बसाई बोला, 'लखिन्द, यह नक्शेबाजी और तमाशे का मौका नहीं है। चुपचाप बैठो। जो कहूँ, ध्यान से सुनो। तुम लोगों को पता है कि मैं सदर गया था, यूनियन आपिस गया था। आपिस ने मुझे सारे रेकड दिये। कहा कि तुम लोग यूनियन बनाओ। खेतमजूरों की यूनियन न होने से सरकार-जमींदारों का गठबन्धन नहीं खुलेगा।'

सिचरण चिढ़कर बोला, 'बहुत दिनों तक भूखे रहने पर भी लस्कर ने धान का ओसार नहीं दिया। यह चमचा गड़बड़ करता है। लखिन्द, फिर बात कहेगा तो बहन की बात भुलाकर तुम्हारी हड्डी-पसली एक कर दूंगा। मैं उद्धव का बेटा हूँ, समझा ? ज्यादा बात नहीं।'

उधर से कन्हई बंसी बोला, 'लखिन्द, चुप भी रहो ! घर में उद्धव की बेटी है, बाहर उद्धव का बेटा।'

'मैं उनका दामाद हूँ जी...,' लखिन्द फिर मजाक करने जा रहा था। चुप रह गया। उसने तो ससुर को देखा भी नहीं था। धान की कटाई में गौर के बाप के साथ लड़ाई में वह धान के खेत में गोली खाकर गिर गया था, अस्पताल में मर गया। वह बहुत ही गुस्सेवर था।

बसाई बोला, 'जो कह रहा हूँ, ध्यान से सुनो। सरकार ने एम०डब्लू० बनाया, उसके लिए सोलह जिलों में सोलह निसपेट्टर रखे, पर उससे

काम हुआ ठेंगा ! अडसठ साल के बाद चौहत्तर साल में फिर एम० डब्लू० बढ़ा दिया। औरत-मरद बराबर-बराबर—पाँच रुपये साठ पैसे रोज। चौदह साल के ऊपर उमर वाले को गड्ढा की खुदाई चार रुपये रोज। दिन बीतने पर खेतमजूरों को जमीन का मालिक खाई-भात देने पर सवा रुपया काट लेगा। बाकी पैसे देगा। रुपयों में लो, धान लो, दाल लो। पाँच रुपये साठ पैसे पूरे कर देगा। नहीं दे तो वह गैर-कानूनी होगा। मरद-औरत साढ़े आठ घंटा मजूरी करेंगे, खोदने वाले छः घंटा। आधा घंटा जल-पान की छुट्टी। सब लोग समझ गये ?'

सोमरा टुडू बोला, 'कब से ?'

'चौहत्तर साल से।'

'आजकल छिहत्तर साल है।'

सोमरा बुड्ढा, गयेश्वरी गाँव में संथाल खेतमजूरों का मुखिया था। उसकी हालत बहुतों से अच्छी थी, क्योंकि उसे साँप-काटे का इलाज आता था। गाँव में साँपों के साथ रहना-सहना था। सोमरा के चाहने पर गर्मी में खूब बरसता।

सोमरा ने निराश आश्चर्य के साथ सिर हिलाया और सफेद भौंहें उठाकर बोला, 'अडसठ का हिसाब नहीं मिला। चौहत्तर का हिसाब नहीं मिला। छिहत्तर खतम हो रहा है। लस्कर आज भी दस आना देता है।'

बसाई बोला, 'लस्कर का बित्तान्त यहीं खतम नहीं है जी ! उसका बित्तान्त और भी है।'

लखिन्द मुग्ध होकर विस्मय के साथ सुन रहा था। उसने निताई के टहोका देते हुए कहा, 'ओ, लस्कर की अकल कितनी है, देख रहे हो ? कितने रुपये हमें दिये, समझो तो, ओ निताई भाई ! हिसाब सोचने पर सिर चकरा जाता है, कि—तना रुपया !'

बसाई ने सिर खुजाते हुए सोचकर कहा, 'आपिस ने जितनी बातें बतायी, सुनकर सदर में मेरा सिर चकरा गया। यह पहली बार एम० डब्लू० कृषि-सरम दफ्तर में रिकड हो गया। नोटिस चला गया। अब से एम० डब्लू० हो गया है। दफ्तर जाकर बीच-बीच में बेवस्था करने की राह हो गयी। उससे पचहत्तर के असाढ़ में एम० डब्लू० के साथ महँगाई-भत्ता मिलाकर लेबर डिपाट ने बताया कि औरतों का रेट छः रुपये तिरेसठ पैसे हैं।'

'हाय रे, हम लोगों को कुछ नहीं मालूम—जिसे जानना था सो जानता था। लेकिन दिया नहीं।'

'ना—आ, दिया नहीं। अब और सुनो। लस्कर का और।

सुनो। छिहत्तर साल के चैत में लेवर डिपाट ने लोटिस जारी किया—मरद-औरत की मजूरी पाँच रुपया साठ पैसा। महँगाई-भत्ता अढ़ाई रुपया।'

'उनसे कितना हुआ?'

'आठ रुपया दस पैसा।'

'व्वाप रे!'

'जमीन खोदने की मजूरी चार रुपये, भत्ता एक रुपया वियासी पैसा, उमसे हुआ पाँच रुपया वियासी पैसा।'

'कुछ दिया नहीं जी, वसाई।'

'तुम जब तक दस आने में मजूरी करोगे, लस्कर के जूते की धूल चाटोगे, इसकी-उसकी गाय-बकरी खतम करते रहोगे, भात न मिलने से भात देखकर टूट पड़ोगे, तब तक वह कुछ न देगा। और सुनो।'

'कहो जी। कहने में अच्छा लगता है। जो कह रहे हो कि हम मिट्टी चाटने का काम करते हैं, वह बताया। अब कहो।'

'महीने के हिसाब में हमारा एक सौ पैंतालीस रुपया सत्तर पैसा होता है। खोदने का सतत्तर रुपया सत्ताईस पैसा होता है। लोटिस में और भी बातें हैं। जमीन का मालिक खाते में रेकड रखेगा। उस रेकड में लिखा रहेगा—कितना दिया, कितना फाइन हुआ, ओवरटाइम कितना दिया?'

'और बताओ, भाई वसाई।'

'व—सा—ई!'

मोमरा टूडू ने हाथ उठाया। जरा काँपती आवाज़ में बोला, 'खेतमजूरों के हक के लिए कमनिस बाबू लड़े थे। देखा था। सरकार ने उन्हें मदत नहीं दी। पुलिस ने उन्हें गिरफ़्तार किया। हमें तुमने बहुत गालियाँ दी थीं। लहू में अगिन होती है, वयस की अगिन। ऐसी गाली। ऐसी गाली सिचरण के बाप ने भी दी थी। उसने...।'

'गोली से जाहान दी थी।'

'हाँ। जा—हा—न दी थी। खेतमजूरों की लड़ाई जैसी मैंने देखी। ह बताता हूँ।'

'हाँ, तुम बताओ।'

'तुममें-हममें पुराना झगड़ा नहीं है, वसाई। तुम्हारे बुलाने पर जब या, तो पुराना झगड़ा भूलकर आया। मैंने जो देखा वह सुनो। खेत-जूरों को वरस में दो बार काम मिलता है। दूसरे समय लस्कर माँगने सूद पर धान, रुपये करज देता है।'

'लस्कर ही मेरा महाजन है। जब खेती नहीं होती तो वह महाजन

बनकर हमें एक मुंह से खिलाता है। जब खेती होती है तो दूसरे मुंह से।'

'दोमुंहा सांप है।'

'हां, इस सांप का मुंह बड़ा है। खेती के समय मजूरी देने की बात पर हिसाब दिखाता है। इतना दिया, इतना लिया, इतना मिलेगा। हथेली पर रख देता है कानी कौड़ी।'

'तुम वह ले लेते हो?'

'न लें तो खायें क्या? न लेकर देखा था—यहीं क्यों, कटैयों के काम में बीरभूम, बर्धमान, मुर्शिदाबाद घूमकर देखा है—तब मुझे भगाकर जमींदार ने बाहर के कटैये मजूर लिये थे। मैंने खुद वह काम किया है।'

'छोड़ो उस बात को।'

'क्यों? तुम भी थे। आगे-आगे तुम भी साथ ले फिर रहे थे। याद नहीं है, बसाई? बीरभूम में गुनवदनसिंह का जड़हन काटने मुझे ले गये थे? उसके खेतमजूर हमारे पास आये थे! हमने कह दिया, गुनवदन के खेतों पर से पुलुस हटाओ तो हम और वे धान काटें। धान काटे। मजूरी बांट ली। याद है? पुलुस आयी। हमें मारा, उनको भी। याद नहीं?'

'है। मेरी पीठ पर चीन्ह है।'

'मैं देख रहा हूं, सरकार मालिकों को मदद देती है। इस बार क्यों सरकार खेतमजूरों को मदद दे रही है? सरकारी लोटिस—यूनियन आसिस बैठ रहा है—अच्छी बात है। यूनियन ने तो हमसे धोखा किया। सरकारी लोटिस में काम नहीं हुआ, यह तो मालूम था। यूनियन का भरोसा नहीं है। इस जिले की यूनियन कहती है कि सदर में तीन चश्मे वाले बाबू हैं। वे सदर कलकत्ता का चक्कर लगाते रहते हैं। लोटिस का काम लस्कर से कौन करायेगा? एं? उनके 'ना' करने से हम कहां जायेंगे?'

बसाई को बेचैनी हुई। वह बेचैनी दूर कर बोला, 'यह हमारी भी बात है। सो, सरकार ने जो बेवस्था की वह पहले बताऊं!'

'मैं कुछ और बोलूं?'

'कहो।'

'मैं पागल नहीं हूं। मैं जानता हूं कि बसाई हमें लड़ाई में उतारेगा। तुम्हारी बात मैं नहीं जानता। मैं उतरूंगा। किन्तु किधर से मार पड़ेगी, वह जानकर बढ़ूंगा, मिचरण, बुरा न मानना, तुम्हारे मां-बाप नहीं सोचते। सोच-विचार जो न करे, वह बसाई का सोचना है। दिन बड़े खराब है। लस्कर-पुलुस अब बहुरिया-भतार हैं। नहीं तो गांव के मास्टर का लड़का लस्कर की लारी के नीचे मरता। नालिश करने जाने पर पुलुस ने मास्टर को मीसा कर दिया। एं? सतीश मंडल भी मीसा है। मीसा क्या है, पता

नहीं। यह देखा है कि लस्कर के साथ जिसकी लगती है उसे मीसा हो जाता है। वसाई, तुम जानते हो मैं क्या कह रहा हूँ ?'

'हाँ सोमरा टूडू, जानता हूँ।'

सोनाल का गोविन्द बाउरी बोला, 'मीसा में जेहल होने वालों में मैं नहीं हूँ।'

लखिन्द फटाक-से बोला, 'मीसा होने से क्या होता है ?'

गोविन्द बोला, 'पुलुस संख बजाकर ले जाती है। दामाद की तरह ख़ातिर के साथ रखती है। तू जायेगा, लखिन्द ?'

'मेरी बहू के पास लाइलन नहीं है।'

'क्या कहा ?'

'लस्कर ने कहा है, सतीस की बहू ने लाइलान पहनकर, छाइकिल-रिक्सा पर बैठकर सदर जेहल में जाकर लेंचा[1] पिया था। मैंने भी लेंचा पिये थे। तीन।'

वसाई बोला, 'चुप करो, लखिन्द !'

'हो गये।'

'सुनो !'

'सुन रहा हूँ।'

'सरकार ने बेवस्था की है कि एम० डब्लू० न मिलने पर हम अदालत जा सकते हैं।'

इस बात से जमा लोगों में विद्रूप की हँसी की लहर उठी। गोविन्द बाउरी क्षुब्ध आवाज़ में बोला, 'वसाई, यह तुमने क्या कहा ? कोट-कचहरी ? लस्कर के नाम पर कोट-कचहरी कर गाँव में रहोगे ? वैसा हो सकता है ? हुआ है ?'

वसाई बोला, 'और बेवस्था है। मजूर कोट-कचहरी न करे। अब बहुत-से निसपेट्टर हैं। तीन सौ पैंतीस ब्लॉकों में दो सौ पैंतालीस निसपेट्टर दिये हैं। निसपेट्टर हमारे दावे-आवे लेकर लड़ेंगे।'

'निसपेट्टर कहाँ हैं ?'

इस बीच वसाई हँसा। बोला, 'मुड़ाइल के बँगले में हमारे भाग्य से अच्छा निसपेट्टर आया है। यूनियन आपिस ने कह दिया लियम नहीं, फिर भी निसपेट्टर ने जमींदार के घर से सब लिया। हमारे ब्लाक में जो निसपेट्टर है, उसने जात की तफसील, लड़के-बच्चों ने लस्कर के पावों का झगड़ा ढहा दिया, फिर भी उसके घर नहीं ठहरा। लस्कर ने डिग्गा मछली भेजी

1. लिम्का।

थी, वह नहीं ली।'

'रुपये लेता है, डिंग्ला मछली नहीं लेता, यह पुलुस निसपेट्टर के ध्यान में नहीं है? शराब नहीं ली, चावल-मुर्गी नहीं ली, हम समझे धर्मराज आ गये हैं—लेकिन रातभोर हरे ही रुपये लिये। हमे शाल देकर चला गया।'

'नाः! यह अच्छा सुना।'

'अब क्या करना है?'

'मैं बताऊँ? तुम लोग वह समझोगे तो तुम भी कहोगे।'

'कहो।'

'यह—धान—हम—काटेंगे।'

'हम काटेंगे!'

'बाहर के कटैयों को घुसने नहीं देंगे!'

'घुसने नहीं देंगे!'

'छिहत्तर की मजूरी देना होगी।'

'देना होगी!'

'अगर मजूरी काटे, तब?'

'तब?'

'जबानी हिसाब नहीं मानेंगे।'

'रजिस्टरी दिखाना होगा।'

'दिखाना होगा।'

'एम० डब्लू० हमारा जा—हा—न है।'

'जा—हान।'

'देगा तभी काटेंगे धा—न।'

'धा—न।'

'और क्या? हो गया? सोमरा ने ठीक कहा, यूनियन गड़बड़ है। फिर भी यूनियन मदत देगी। हम वह सब बात निसपेट्टर को बतायेंगे, यूनियन को भी। सब बता कर तब सीधी राह लस्कर के पास जायेंगे।'

सिचरण बोला, 'बसाई! सब बात लिख कर दोनो जगह दो कागज पर दे दो।'

'नाः! मुझे इलम नहीं है भाई, लिखने-पढ़ने की बात पर लाज आती है। लिखना-पढ़ना मेरा कहाँ हुआ? इसी से मीटिन की रिपोट लिख नहीं सकता।'

सोमरा बोला, 'तुमने पढ़ा नहीं, बसाई। तुम पर हमे कितना भरोसा था। सांउताल में सिछित कितने लोग हैं? तुमने पढ़ा नहीं।'

'वह बात छोड़ो। मेरे बाल सफेद हो गये। अब उन बातों से लाभ? मैं निसपेट्टर के पास जा रहा हूँ। मेरे साथ गोविन्द, सिचरण और लखिन्द चलो।'

'नहीं, निसपेट्टर बंदूक छोड़ता है।'

'यह पुलुस नहीं, एम० डब्लू० निसपेट्टर है।'

'नाः, डर लगता है।'

'तुम्हें जाना पड़ेगा, लखिन्द। नहीं तो तुम्हें मैं समझूंगा, तुम लस्कर से रिपोट करोगे।'

'नाः, बहू ने मना किया है। वह उद्धव की बेटी है। कह रही थी, घर में आग लगा कर गयेश्वरी चली जायेगी।'

'तब घर जाओ, हां।'

'तुमसे एक बात कहना है।'

'कहो।'

'नहीं, छिपा कर।'

बसाई उसके पास गया। दोनों जमाव से दूर चले गये। लखिन्द बोला, 'यह जो कहा है, कटैयों को घुसने नहीं दोगे?'

'कहा, तो उससे क्या?'

'मैं बेकूफ हूँ, मेरे दिमाक नहीं है। इसी से लस्कर मेरे आगे सारी बातें कह देता है।'

'क्या कहा?'

'तुम इस बार लड़ाई करोगे, एम० डब्लू० लोगे, स—ब उसे मालूम है। इससे वह आदमी भेजकर कहीं से कटैयों की खोज कर रहा है। ठहरो, कहां के कटैये आ रहे हैं, वह याद करूँ। व—ह पच्छिम से, इस बार—पूर्निया से कटैये आ रहे हैं—वहां नक्सलियों का जुलुम-उलुम बहुत है। वहां से सब भाग रहे हैं। वे कटैये पेट के भात और चौअन्नी मजूरी पर काम करेंगे।'

बसाई ने आंखें सिकोड़ीं। बोला, 'अच्छी बात बतायी।'

उसके बाद उसने कुछ सोचकर कहा, 'लखिन्द, संझा को तुम मेरे घर आना। बात है।'

'लस्कर जब पूछे? मिटिन की बात!'

'बताना—बसाई आदि को कुछ नहीं मालूम। सब निसपेट्टर के पास जायेंगे।'

'सो जो कहोगे, सो होगा।'

'निसपेट्टर और लस्कर के साथ जैसे शामिल हो।'

'होने पर होगा। अभी सामन्त...बाद में बताऊँगा। मैं निसपेट्टर के पास जा रहा हूँ।'

2

मुडाइल के डाकबँगले के फूस के छप्पर से छाये बरामदे में ईजीचेयर पर बैठे एम० डब्लू० इसपेक्टर सुवोध रुइदास[1] सथालों के एम० डब्लू० आई० के भाता और पालनकर्ता सामन्त को याद कर रहे थे।

सामन्त थे—'डिप्टी लेबर कमिश्नर इचार्ज ऑफ इन्फोर्समेंट लॉ ऐंड ऐडमिस्ट्रेशन ऑफ मिनिमम वेजेज।'

सुवोध रुइदास 'सख्यालघु' एम० डब्लू० आई० हैं और वह केवल इसलिए नहीं कि उनकी उपाधि रुइदास है। न्यूनतम वेतन इंस्पेक्टर नियुक्त होने के पहले कई शर्तों की विवेचना हुई और रहस्यमय कारणों से वे सारी शर्तें लिखित नहीं हुई। मौखिक आलोचना में ठीक हुआ :

(क) निर्वाचित प्रार्थी जमीन के मालिकों के परिवार का सदस्य न होगा।

(ख) जहाँ तक सभव हो वे शिड्यूल्ड कास्ट और ट्राइब के आदमी होंगे।

(ग) निर्दिष्ट काम के बारे में उन्हें इडियालॉजिकल मोटिवेशन रखना पड़ेगा।

कार्यकाल में देखा गया ·

(क) अधिकाश इसपेक्टर जमीन के मालिको के परिवार के आदमी हैं।

(ख) सामान्य कुछ लोग ही अनुसूचित जाति के आदमी थे।

(ग) अपायटमेंट राजनीतिक थे।

अधिकाश इसपेक्टर काग्रेस और काग्रेस की युवा-शाखा के लोग थे।

एम० डब्लू० आई० लोगो का वेतन-क्रम 300-600 और दूसरे भत्ते थे। पद स्टेट पब्लिक सर्विस कमीशन की नियत्रण-क्षमता के बाहर था।

इस विभाग के असिस्टेंट लेबर कमिश्नर का पद भी स्टेट पब्लिक सर्विस कमीशन की नियत्रण-क्षमता को ठेंगा दिखाकर बना था।

सुवोध रुइदास को पता था कि उनकी हालत क्या है? बचपन से ही मेधावी बालक होने के कारण उन्होने नि शुल्क पढना-लिखना किया। स्वाधीन भारतवर्ष के महामानव के समुद्र-तट पर सवैधानिक रूप से वर्ण-

1. रविदास, चमार।

जातिभेद नहीं है। ऑफ़िशली उन्हें यह वात उठाने नहीं दी गयी कि वह किस जाति के लड़के हैं। सुवोध को भी जिद थी। ऐफ़िडेविट से वह 'राय' या 'दास' नहीं वने। उसका नतीजा यह हुआ कि सुवोध को यह जानने को लाचार होना पड़ा कि सव अन्याय उसे सहना होगा, उसके पीछे वहुत समय तक अन्याय करने वालों के रक्त में पला जात्यभिमान रहता है। जाति का अभिमान होने से काम्यू और कमल मजूमदार से टें-टें करने वाले जम जाते। लेकिन तृतीय पक्ष सोचने पर देखा गया कि उनके अविचार और अन्याय का कोई लॉजिकल[1] कारण न था। उनके आचरण की व्याख्या खून में मिले जाति के अभिमान में रहती है।

यह नौकरी पाने पर उन्होंने वर्गभीमा माँ के मन्दिर में प्रसाद जरूर चढ़ाया, पर नौकरी देकर सूक्ष्म वना कर उसे छोड़ दिया गया था। शूल का तीखा फल उसने जीवन में सम्हाला, वह सम्हालना पड़ेगा।

वह ग़रीव था, कभी खेतमजूरों की सन्तान था। उसके परिणाम-स्वरूप यहाँ आने के पहले नेता के दफ़तर में उसकी पुकार पड़ी एक 'नाम का युवक, काम का चोर'। यह सारी पुकार लगाते थे साधारणतः मसल[2] दिखाने वाले कलम वढ़ाये भारत के भविष्य-नेताओं के अंगरक्षक। सुवोध को जिसने पुकारा उसकी पुकार की उपेक्षा करना वाघ और सिंह के लिए भी संभव नहीं था, सुवोध तो छोटी मछली था। युवानेता ने सुवोध से वैठने तक को नहीं कहा और हुमककर वोला, 'नये वेज देने के लिए शोर-शरावा मत कीजियेगा। जमींदार-जमीन के मालिकों का नमक-रोटी उठ गया है। अभी लैंड-सीलिंग, यह कृषिऋण की माफ़ी, यह वेगार वंद। एम० डब्लू० ! नये वेज देने की कोई जरूरत नहीं, पर खेतमजूरों को अभी जो मिल रहा है उससे कुछ अधिक मिले, यह देखियेगा।'

'हमें इन्स्ट्रक्शन...!'

'इडियसी[3] मत कीजिये। दूसरी जगहों पर एम० डब्लू० आई० लोग मिनिस्टरों से वात कर काम कर रहे हैं।'

'ऑफ़िशली...?'

'अकेले आप ऑफ़ियली काम कर कितनी दूर जायेंगे ? जव सव-कुछ अनऑफ़िशली हो रहा है, तो वही प्रासिजर[4] ऑफ़िशल होता है। जाइये, जाइये। कहाँ जा रहे हैं, यह जानकर ही इतनी वातें कहीं। लस्कर मेरी जान-पहचान का आदमी है।'

इस तरह युवनेता ने सुवोध रुइदास के जीवन में शूल भोंक कर उसे छोड़

---

1. तर्कसंगत 2. मांसपेशियाँ, ताक़त 3. वेवकूफ़ी 4. तरीक़ा।

दिया। शूल से बिसूरते-बिसूरते सुबोध सामन्त के पास गया। बुजुर्ग आई० ए० एस० सामन्त ने सारी बातें सुनी। उसके बाद बोले, 'देखिये, सभी नौकरियाँ नौकरी हैं। आपकी-मेरी नौकरी आग पर चलने की-सी है। बस वेतन में ज्यादा-कम है। इन पोस्टों को क्रियेट करने का मामला देखिये। समझिये कि उनके आगे एम० डब्लू० क्या चीज है!

'एग्रीकल्चरल माने ही खेतमजूर। जब स्वतंत्र देश है तो खेतमजूरों की बात भी सोचना पड़ती है। फिफ्टी थ्री तक एम० डब्लू० था केवल दार्जिलिंग और जलपाईगुड़ी जिलों में। उसके बाद अड़सठ, चौहत्तर, करेंट[1] छिहत्तर के वेज-रिवीजन की बात आपको मालूम है। मजे की बात है कि अड़सठ से सारे जिले एम० डब्लू० के अंदर हैं। इसके सिवा, कहीं भी खेत-मजूरों को एम० डब्लू० नहीं मिला। बांकुड़ा में खेतमजूरों को मिले छः आने—सेवेंटी, सेवेंटी-वन, सेवेंटी-टू में क्या रहा, खेतमजूर पाते थे छः आने—लेबर कमिश्नर की रिपोर्ट है—दैट ही एग्जिस्ट्स इज़ ए मिरैकल!'[2]

सुबोध ने कहा, 'मुझे पता है।'

ये सब बातें सुबोध अपने खून से जानता है। वह खेतमजूर का बेटा है। सेवेंटी-सेवेंटी वन-सेवेंटी टू के परिणामस्वरूप गोल्ड-राड में आर्मी उतर सकती है, लेकिन खेतमजूर की मजूरी कोई सरकार छः आने से अधिक नहीं कर सकती।

सामन्त ने कहा था: 'खेतमजूरों को एम० डब्लू० क्यों नहीं मिला? 1969 में नेशनल लेबर कमीशन ने देखा कि वेज ऐक्ट बन गया है। लेकिन खेतमजूरों को इसका पता नहीं। उस कानून को जोरदार बनाने की सरकारी इच्छा और इंतजाम नहीं है। इसलिए कमीशन ने बहुत जोर लगाकर कहा कि ऐक्ट का प्रचार होना चाहिए। कानून को जोरदार बनाने के लिए मौके पर आदमी नियुक्त किये जायें, ग्राम-पंचायत को भी भार दिया जाये।

'प्रचार के नाम पर रेडियो और अखबार थे। आदमी के नाम से चार लोगों की पोस्ट हैं। इस बरस के शुरू में तो सैंतीस लाख खेतमजूरों के लिए सोलह पोस्ट बनीं। उनसे कोई काम ही न हुआ। अब चार लोग आये हैं।

'आप लोग काम करेंगे। जमींदार और जमीन के मालिक बड़ी रुकावटें खड़ी करेंगे। जरूर करेंगे, क्योंकि किसी भी दिन उन्होंने खेतमजूरों

---

1. चालू 2 वह जिन्दा है, यह आश्चर्य है!

जातिभेद नहीं है। ऑफ़िशली उन्हें यह वात उठाने नहीं दी गयी कि वह किस जाति के लड़के हैं। सुवोध को भी ज़िद थी। ऐफ़िडेविट से वह 'राय' या 'दास' नहीं वने। उसका नतीजा यह हुआ कि सुवोध को यह जानने को लाचार होना पड़ा कि सव अन्याय उसे सहना होगा, उसके पीछे बहुत समय तक अन्याय करने वालों के रक्त में पला जात्यभिमान रहता है। जाति का अभिमान होने से काम्यू और कमल मजूमदार से टें-टें करने वाले जम जाते। लेकिन तृतीय पक्ष सोचने पर देखा गया कि उनके अविचार और अन्याय का कोई लॉजिकल[1] कारण न था। उनके आचरण की व्याख्या ख़ून में मिले जाति के अभिमान में रहती है।

यह नौकरी पाने पर उन्होंने वर्गभीमा माँ के मन्दिर में प्रसाद ज़रूर चढ़ाया, पर नौकरी देकर सूक्ष्म वना कर उसे छोड़ दिया गया था। शूल का तीखा फल उसने जीवन में सम्हाला, वह सम्हालना पड़ेगा।

वह ग़रीब था, कभी खेतमजूरों की सन्तान था। उसके परिणाम-स्वरूप यहाँ आने के पहले नेता के दफ़्तर में उसकी पुकार पड़ी एक 'नाम का युवक, काम का चोर'। यह सारी पुकार लगाते थे साधारणतः मसल[2] दिखाने वाले कलम वढ़ाये भारत के भविष्य-नेताओं के अंगरक्षक। सुवोध को जिसने पुकारा उसकी पुकार की उपेक्षा करना वाघ और सिंह के लिए भी संभव नहीं था, सुवोध तो छोटी मछली था। युवानेता ने सुवोध से बैठने तक को नहीं कहा और हुमककर वोला, 'नये वेज देने के लिए शोर-शरावा मत कीजियेगा। ज़मींदार-ज़मीन के मालिकों का नमक-रोटी उठ गया है। अभी लैंड-सीलिंग, यह कृषिऋण की माफ़ी, यह वेगार वंद। एम० डब्लू० ! नये वेज देने की कोई ज़रूरत नहीं, पर खेतमजूरों को अभी जो मिल रहा है उससे कुछ अधिक मिले, यह देखियेगा।'

'हमें इन्स्ट्रक्शन...!'

'इडियसी[3] मत कीजिये। दूसरी जगहों पर एम० डब्लू० आई० लोग मिनिस्टरों से वात कर काम कर रहे हैं।'

'ऑफ़िशली...?'

'अकेले आप ऑफ़िशली काम कर कितनी दूर जायेंगे ? जब सव-कुछ अनऑफ़िशली हो रहा है, तो वही प्रासिजर[4] ऑफ़िशल होता है। जाइये, जाइये। कहाँ जा रहे हैं, यह जानकर ही इतनी वातें कहीं। लस्कर मेरी जान-पहचान का आदमी है।'

इस तरह युवनेता ने सुवोध रुइदास के जीवन में शूल भोंक कर उसे छोड़

---

1. तर्कसंगत 2. मांसपेशियाँ, ताक़त 3. वेवकूफ़ी 4. तरीक़ा।

दिया। शूल से बिसूरते-बिसूरते सुबोध सामन्त के पास गया। बुजुर्ग आई० ए० एस० सामन्त ने सारी बातें सुनी। उसके बाद बोले, 'देखिये, सभी नौकरियाँ नौकरी है। आपकी-मेरी नौकरी आग पर चलने की-सी है। बस वेतन में ज्यादा-कम है। इन पोस्टों को क्रियेट करने का मामला देखिये। समझिये कि उनके आगे एम० डब्लू० क्या चीज है!

'ऐग्रीकल्चरल माने ही खेतमजूर। जब स्वतंत्र देश है तो खेतमजूरों की बात भी सोचना पडती है। फिफ्टी थ्री तक एम० डब्लू० था केवल दार्जिलिंग और जलपाईगुडी जिलों में। उसके बाद अडसठ, चौहत्तर, करेंट[1] छिहत्तर के वेज-रिवीजन की बात आपको मालूम है। मजे की बात है कि अडसठ से सारे जिले एम० डब्लू० के अंदर हैं। इसके सिवा, कहीं भी खेत-मजूरों को एम० डब्लू० नहीं मिला। बाँकुड़ा में खेतमजूरों को मिले छः आने—सेवेंटी, सेवेंटी-वन, सेवेंटी-टू में क्या रहा, खेतमजूर पाते थे छः आने—लेबर कमिश्नर की रिपोर्ट है—दैट ही एग्जिस्ट्स इज ए मिरैकल!'[2]

सुबोध ने कहा, 'मुझे पता है।'

ये सब बातें सुबोध अपने खून से जानता है। वह खेतमजूर का बेटा है। सेवेंटी-सेवेंटी वन-सेवेंटी टू के परिणामस्वरूप गौड-राढ मे आर्मी उतर सकती है, लेकिन खेतमजूर की मजूरी कोई सरकार छ आने से अधिक नहीं कर सकती।

सामन्त ने कहा था: 'खेतमजूरों को एम० डब्लू० क्यों नहीं मिला? 1969 मे नेशनल लेबर कमीशन ने देखा कि वेज ऐक्ट बन गया है। लेकिन खेतमजूरों को इसका पता नहीं। उस कानून को जोरदार बनाने की सरकारी इच्छा और इंतजाम नहीं है। इसलिए कमीशन ने बहुत जोर लगाकर कहा कि ऐक्ट का प्रचार होना चाहिए। कानून को जोरदार बनाने के लिए मौके पर आदमी नियुक्त किये जायें, ग्राम-पंचायत को भी भार दिया जाये।

'प्रचार के नाम पर रेडियो और अखबार थे। आदमी के नाम से आप लोगों की पोस्ट हैं। इस बरस के शुरू से तो सैंतीस लाख खेतमजूरों के लिए सोलह पोस्ट बनी। उससे कोई काम ही न हुआ। अब आप लोग आये हैं।

'आप लोग काम करेंगे। जमींदार और जमीन के मालिक बड़ी रुकावटें खडी करेंगे। जरूर करेंगे, क्योंकि किसी भी दिन उन्होंने खेतमजूरों

1. चालू 2 वह जिन्दा है, यह आश्चर्य है।

को कुछ दिया नहीं। आज क़ानून बन गया, इसलिए वे रोज़ आठ रुपये दस पैसे देंगे? नहीं देंगे। खेतमजूर माँगेंगे। आप लोगों का काम क़ानून को ज़ोरदार बनाना है।

'बहुत अधिक दबाव डाला जायेगा, डाला जा रहा है। डरियेगा मत। काम करने के लिए उतरने पर हिम्मत से काम लेंगे। किसी की तरफ़दारी मत कीजियेगा। ग़लती हो जाये तो मैं हूँ।'

'सर...!'

'कहिये?'

'ये बातें जो क़ानून में हैं—मालिक के क़ानूनन एम० डब्लू० ए० से कम पैसा देने पर खेतमजूर खुद या लिखित अधिकार-प्राप्त रजिस्टर्ड ट्रेड यूनियन कर्मचारी, अथवा एम० डब्लू० आई० ज़िला जज के पास राहत माँगे—इसके क्या कोई अर्थ हैं? खेतमजूर क्या मालिक के नाम कुछ कहने की हिम्मत कर सकता है? प्रोसीजर खेतमजूर के पक्ष में समय-सापेक्ष, गोलमाल और कठिन है।'

'जानता हूँ। यहाँ आती है असली बात। देखिये, उनकी पीठ पर कोई सक्रिय संगठन नहीं है। आज हर जगह यूनियनें हैं। इसलिए यूनियनें लड़ती हैं। काम करने वालों को न्याय मिलता है। उनकी पीठ पर अगर कोई यूनियन होती, तो हमारा काम आसान हो जाता। ज़मींदार डरते। नहीं डरते, इसका कारण है कि उस तरह की कोई यूनियन नहीं है, जो सरकार पर दबाव डालकर क़ानून को ज़ोरदार बनवा सके। इसीलिए आपको काम करना पड़ेगा।'

'क्यों नहीं है?'

'कैसे रहे? गाँव में डॉक्टर क्यों नहीं जाते? गाँव में जाकर बाबू लोग यूनियन बनायेंगे? किसानों को लेकर?'

'तो लॉ क्या राहत दे रहा है? अगर अन्त में ज़िला जज के पास जाना पड़ा, तो जज खेतमजूर को हरजाना देगा। लेकिन उसका रुपया दावे के रुपयों के दस गुने से ज्यादा न होगा और मुद्दई के झूठा साबित होने पर खेतमजूर पर जुरमाना होगा पचास रुपये।'

'हाँ। तब दावा प्रमाणित होने पर ज़मींदार या ज़मीन के मालिक को भी पाँच सौ रुपये जुरमाना नहीं तो छः महीने तक की जेल होगी। आप क्या करेंगे? खेतमजूर आपसे कहेंगे तो आप मालिक को 'शो कॉज़'[1] नोटिस देंगे। उस नोटिस से काम न होने पर आप केस ठोंक देंगे।'

---

1. कारण बताओ।

'ठीक। मोहन राय ने कहा है कि लस्कर उसकी जान-पहचान का आदमी है।'

'ममिया ससुर। उसकी पत्नी का मामा।'

'ओह् !'

'डरें नहीं। मैं हूँ।'

इस तरह से सामन्त ने युवा-नेता के शूल को बहुत-कुछ कम कर दिया और अभय देकर सुबोध रुइदास को शेर के मुँह में छोड़ दिया। उसके बाद बोले, 'अनऑफिशली कह रहा हूँ। वहाँ सदर में खेतमजूर यूनियन की शाखा है। लस्कर के साथ आपकी अगर कोई मुठभेड़ हो तो वह अदालत में होगी, युद्ध-क्षेत्र यानी धान के खेत में नहीं। वहाँ लस्कर को मसाई दूसरा फ़ाइट देगा।'

'वह कौन है?'

'एक संथाल खेतमजूर। काम का आदमी है। एक इशू पर बहुत दिनों तक लड़ा। लस्कर ने दो बार उसका घर भी जला दिया था, किसी तरह क़ाबू में नहीं कर सका। आप उसे क़ानून और लॉ-पाइंट समझा देंगे। सदर जाना हुआ है न?'

'हाँ।'

'रहना सदर में, काम करना ब्लॉक में। फिर मेरा ऑर्डर है, महीने में पच्चीस दिन ब्लॉक में रहियेगा। लस्कर आपको मिलाने की कोशिश करेगा। मिलना मत।'

'न।'

बातों को सुबोध रुइदास ने फिर याद किया। मुफ़स्सिल में आने के बाद से उसे क़दम-क़दम पर याद आता कि शूल का अदृश्य फल बहुत नुकीला है। लस्कर बहुत ही ईश्वर-सा था।

सुबोध का गाँव बस-रूट पर दूसरे ज़िले में था।

यहाँ गाँव इतना अन्दर ! ऐसा अलग-थलग था। पथरीली और कम पानी की गयेश्वरी का रूप बहुत ही निरानन्द था। ग़रीबी चारों ओर फैली हुई थी। केवल लस्कर के खेत में सुनहले धानों की सुगन्ध उठ रही थी, उसका घर डायनमो की बिजली में चमक रहा था। लस्कर ने सुबोध को एक मछली भेजी थी। उस तरह की मछली सुबोध ने अपने गाँव के ज़मींदार त्रिमोहन माहिती के घर निकट से देखी थी। वही मछली सुबोध ने दूर से ही देखी थी। लस्कर एक ऑटोमेटिक ओमेगा सी-मास्टर घड़ी पहने था। इस बीहड़ गाँव में लस्कर गोल्डफ्लेक फ़िल्टर पीता था। लस्कर ने उससे पूछा था, 'कितना वेतन मिलता है?'

'बेमिक्र तीन सौ।'

'मैं अपने ड्राइवर को चार सौ देता हूँ। लड़का लिखा-पढ़ा है। मेरे काम से कचहरी-अदालत भी करता है।'

सुबोध ने कोई जवाब नहीं दिया।

'बसाई टूरा बिसखोपरा है।'

सुबोध ने कोई जवाब नहीं दिया।

'आप रुइदास हैं?'

'आप अबकी आइये।'

'आपने मछली नहीं ली, लौटा दी—लड़के की उमर के आपिसर हैं, भले मन से दी थी। सो, काम-काज के लिए चौकीदार देख रहे हो? आदमी भेज दूं?'

'नहीं।'

तभी लस्कर ने सहसा चौकीदार को पुकारा, जैसे कि उसका बड़प्पन सुबोध की ग़रीबी के प्रमाण के लिए हो, ज़ोरों से ललकारा, 'राम? अच्छी तरह बाबू की देख-भाल करना। नहीं तो दारोगा से कहकर फँसा दूंगा। साले, सरकारी बँगले में बैठकर लोगों को लेकर गांजा पी रहा है?'

सुबोध ने अब अकेले बैठे-बैठे सारी बातें याद कीं। सामन्त की शकल और नाम याद रखना ज़रूरी था। नहीं तो किसी भी असावधानी के क्षण में कहीं सुबोध लस्कर को सलाम कर बैठे।

ज़मींदार से डरना और ख़ातिर करने का अभ्यास ख़ून में था। उसे अस्वीकार करने से क्या फ़ायदा!

सुबोध बहुत ही अनमना था। बसाई टूरा के उसके सामने आकर खड़ा होते ही उसका ध्यान टूटा। सहसा उसने देखा कि सामने, बहुत निकट, एक काला, छोटे क़द का, प्रौढ़ व्यक्ति खड़ा है। संभवतः प्रौढ़ है, क्योंकि कनपटियों के बाल सफ़ेद थे। आँखें छोटी-छोटी, ललछौंही और चमकदार। शरीर पर सस्ती-सी बुश्शर्ट, धोती पहने। नंगे पाँव। वह बरामदे में था, बरामदे के नीचे तीन आदमी थे।

'मैं बसाई टूरा हूँ।'

'बैठिये।'

'वे लोग साथ में हैं।'

'आप लोग भी आइये।'

सब ऊपर आ गये और ज़मीन पर बैठ गये। सुबोध बोला, 'कहिये। आप कल नहीं आये?'

'सदर गया था। आप बीड़ी पियेंगे?'

'नहीं, आप लोग पियें।'

'पीजिये न ?'

'न। जो वेतन पाता हूँ ...।'

'अब कहिये।'

'आप बताइये।'

'मैं क्या बताऊँ, आये हैं जड़हन कटाई के वक्त। देखिये नाम में और बेनामी लस्कर की जमीन—सोनाल, गयेश्वरी, मुड़ाइल, लिबरदिया—डेढ़ हजार बीघा है।'

सुबोध मन-ही-मन नोट लेता रहा।

'हम औरत-मरद मिलाकर दो सौ होंगे। हजार बीघा आमन धान की जड़हन खेती है। यह धान का काम साल-भर का है। आउस धान की बरसात की खेती उठवा दी। उसमें पिछले साल आठ आने दिया। इस बार दे रहा है दस आना। उसके लिए भी हमें लड़ना पड़ा था।'

'कहते चलिये।'

'उस जेठ में बीज-धान बोये। उसके बाद धान रोपे। अब धान काटेंगे। गट्ठे बाँधना, धान उठाना, ब—हुत काम है। यह रिलिप का माइलो मिलाकर काम कराता है। फिर भी हमने इस साल सूद पर धान कम लिया है।'

'किसने कितना लिया है, रेकर्ड है ?'

'इसकी बात न करें। इसका रेकर्ड बसाई टूडु के माथे में है। फिर भी लिख रखा है। उसी से लस्कर को बहुत गुस्सा है। बसाई, तुम मेरे किसानों को बिगाड़ रहे हो। उनके साथ में चिरदिन का सबंध तुम बिगाड़ रहे हो। बाबू! यह छोटा-सा हिसाब रखे बिना लस्कर का खुला मुँह बंद नहीं होता। मजूरी देने में वह खाता निकालता है, य—ह कायदा है। उसमें लिखा कहाँ है! यह, यह लिखा है। वह, वहाँ लिखा है। उसने इतना लिया, तो ले साले हिसाब जाँच। पास आ, यह काटा, ले रुपये। हिसाब में वह पुलुम है। जब सूद देता है तो कम दर, काटेगा तो चढ़ी दर के हिसाब से। उन लोगों के साथ झगड़ा करना ...।'

'आप लोग क्या करेंगे, ठीक किया है ?'

बसाई टूडु ने बीडी का कश लिया। उसके बाद बोला, 'छिहत्तर का एम० डब्लू० लेंगे। अड़सठ से जो हिसाब होगा—वह लेंगे। नहीं तो, धान नहीं काटेंगे, किसी को धान काटने नहीं देंगे।'

'उससे कह दिया है ?'

'कहेंगे। उसके पहले जानना चाहते हैं, आप क्या मदद देंगे ? वह

बताइये।'

'वह अगर राजी हो जाये तो अच्छा है।"

'सीधी उँगली से घी नहीं निकलेगा।'

'न होने पर आप मुझे बतायेंगे। लिखकर। मैं उसे नोटिस दूँगा।'

'आप! हमें कोट नहीं जाना होगा?'

'कोर्ट आप सीधे जा सकते हैं।'

'ना: ! फायदा नहीं।'

'वकील जा सकता है।'

'वकील माने कालीमूहन। लहू चूस लेगा।'

'किसी यूनियन के, ट्रेड यूनियन के अफ़सर को आपके भार देने से वे जा सकते हैं।'

'ना:। यूनियन नाम से खेतमजूर यूनियन है, दूसरा जिला नहीं जानता। वह गड़बड़ है।'

'मैं जा सकता हूँ।'

'आप?'

'हाँ, क़ानून में यही कहा है।'

'कहा है कानून में?'

'हाँ।'

'क्या कह रहे हैं? सुन, गोविन्द सुन, सुन ले सिचरन, आईन में कहा है निसपेट्टर जा सकता है।'

'क़ानून मे कहा है, आप लस्कर के आगे माँग रखें। उसके न मानने पर मुझे बतायें। मैं नोटिस देकर कहूँगा, माँग क्यों नहीं मानते, इसका कारण बताओ। अगर मान ले तो अच्छा है। पर अगर न माना, जवाब नही दिया, या न मानूंगा कहकर जवाब दिया, या कहे कि मुझे भी कुछ कहना है, तो मैं अदालत जाऊँगा।'

'वाह, वाह, वाह रे! उसके बाद?'

'वहाँ उसे रेकर्ड दिखाना पड़ेगा। बहुत दिन हुए उसे नोटिस मिला था किसने पेशगी रुपये का धान लिये, किस पर उसने जुरमाना किया, किसको खुराकी के लिए रुपया काटा है—स—ब रेकर्ड चाहिए।'

'साला कुछ छोड़ा नहीं?'

'मेरी सलाह है, आप लोग अब किसी भी कारण से उसके किसी खाते पर अँगूठा न लगायें।'

'नहीं लगायेंगे।'

'उससे सब साफ़-साफ़ कहिये। अगर वह राजी न हो, तो क्या करेंगे?'

'हम काम बंद कर देंगे।'

'वह फिर क्या कर सकता है?'

'वह एक काम करेगा।'

'क्या काम?'

'बाहर से कटैया लेगा।'

'यह मालूम है।'

'मालूम है। यह भी मालूम है कि वैसा होने पर मार-पीट होगी। अपने खून से रोपा धान किसी को काटने न देंगे। जान की कसम खाकर लड़ेंगे।'

'वह जो खाता दिखायेगा वह भी गैरकानूनी है। क़ानून बन गया है, वह उधार दिया पैसा काट नहीं सकता है।'

'बाबू! आप सहारा है। जहाँ लस्कर हो, वहाँ आईन क्या है, बाबू? पुलुस उसके हाथ में, कलकत्ते मे उसका खूंटा एमेले बाबू हैं, दारोगा, [illegible] उसके घर ठहरते हैं, खाना-पीना करते हैं—कानून से उसको क्या?'

'हमें अधिकार है, दंगा-फ़साद का डर रहने पर पुलिस लाकर [illegible] कर धान कटायेंगे।'

सुबोध ने बसाई टूरा के सामने ही बातें कही। टेक्निकल [illegible]। [illegible] गलती क्यों हुई? सुबोध बाद में समझा।

गोर लस्कर उसके निकट, त्रिमोहन माहिती के निकट [illegible] उत्सव उद्दास था।

उसके पिता ने यह सब अपमान सहा था। [illegible] कागज़ में क्या लिखा है जानना न चाहो, अँगूठे [illegible] तुमको इस सीजन में काम के लिए ग्यारह [illegible] तबीयत न हो, तो साले अदालत जाओ। [illegible] पर धान, फिर रुपये।

हाँ, लस्कर सुबोध की आँखों में [illegible] इमेज। सुबोध ने वह इमेज खंडित करना [illegible]। [illegible] आगे बातें बता बैठा। बातें कैसी [illegible] पर पुलिस लाकर मदद देगा। [illegible] थी।

'तो सब बातें हो गयीं ?'

'हाँ।'

'तुम जाओ। मैं चला।'

वे लोग चले गये। बसाई टूरा बोला, 'आज ही वहाँ जाऊँगा। कह आऊँगा।'

'कल जाकर यूनियन ऑफ़िस में भी कह देंगे।'

'हाँ, उसके पहले छाइकेल लेकर कह आऊँ, कोई लस्कर के कागज में छाप न दें।'

'उसके पास जाकर कह देखें, क्या कहता है ?'

3

लस्कर बोला, 'यह कैसी बात कह रहे हो, बसाई ? तुमको वेज मिलेगा, सरकार ने कहा है, वेज दूंगा।'

'दोगे ? तो सबको बुलाऊँ।'

'देख लूं, भाई। खाता देख लूं।'

'तुम्हारा फिर खाता चला, लस्कर बाबू ?'

'यह देखो। उधार लिया, हिसाब नहीं होगा ?'

'नाः ! आईन हो गया है, कृषि-ऋण नहीं रहा।'

'यह तो कृषि-ऋण नहीं है, बसाई।'

'फिर क्या है ?'

'पेट भरने को दिया था।'

'किसान पेट भरने को ही कर्ज लेता है।'

'पर तुम तो किसान नहीं हो, बसाई। यह सभी का अपना-अपना ऋण है। यह ऋण महाजन छोड़ सकता है ?'

'खाता कहाँ है ? निसपेट्टर को दिखाओ।'

'ना, बसाई। देखना होगा तो खाता कोट देखेगी।'

'हमारी माँग सुनो।'

'कहो।'

'अपना बोया धान हम काटेंगे।'

'उसके बाद ?'

'एम० डब्लू० लेंगे।'

'उसके बाद ?'

'छिहत्तर के रेट से।'

'और ?'

'बाहर के कटैये नहीं लेने देंगे ।'

'बस । यही ?'

'ठीक । लिख लाओ ।'

'क्यों ?'

'लिखोगे नहीं ?'

'नाः ।'

'अच्छा ।'

'तुम जवाब दो ।'

'मेरा जवाब ! जवाब का कोई पथ रखा है ? जो कहा, मान लिया । पर एक बात है !'

'क्या ?'

'मैं उधार का हिसाब लूंगा । जिसने जो लिया है, टीप देगा । उसके बाद धान में हाथ लगायेगा ।'

'लस्कर बाबू ! कि—सी भी कागज पर कोई टीप नहीं देगा । टीप हमने बहुत दिनों तक दी । मेरे बाप ने तुम्हारे बाप को टीप दी थी । बहुत टीप दी । उसी से यह दसा है ।'

'तुमने माइलो चलाया, कोई धान न लेकर अगर भूखा रहे उसमें मेरा दोष है ?'

'माइलो तुम्हीं ने पकडाया । तुम्हारे कर्ज के धान लेकर भात खाने में हमारा मरन था ।'

'बात मे बात बढती है, बसाई ।'

'तुम जवाब दे दो तो बात खतम हो जाये ।'

'टीप दिये बिना मैं को—ई बात नही करूँगा । टीप दो । मैंने सब बातें मान ली ।'

'टीप को—ई नहीं देगा, लस्कर बाबू । धान भी तुम्हारे [illegible] सड़ायेंगे ।'

बसाई चला गया ।

लस्कर बोला, 'लारी निकालो । मैं सदर जा रहा हूँ । [illegible] मैं विन्दावन दिखाऊँगा ।'

बसाई पहले लखिन्दर के घर गया । बोला, '[illegible] । [illegible] है ।'

'आ रहा हूँ । चलो ।'

उसके बाद बसाई मुडाइल गया । दुकानदार के [illegible]

ध से सारी बातें बतायीं।

'हाँ, बात गड़बड़ है।'

'मैं अभी जा रहा हूँ। इन सालों का विस्वास नहीं, इसी तरह जाकर प दे आयेंगे। इस महीने हरिपाल में, हुगली जिला में क्या हुआ, वह ापको पता है? यह तो एक ही गड़बड़ है। फिर भी खेतमजूर लड़े थे। व निसपेट्टर, पंचायत, सभी हाकिम आये थे। वहाँ मालिकों के यहाँ इतने कागज थे—स—ब में टीपछाप, लगता है कि बैलगाड़ी पर लादकर ले गया था। उसमें मजूर भरे थे।'

'आप जाइये।'

'आप क्या करेंगे?'

'क्या होगा, यह मालूम कर एक बार सदर जाऊँगा। कलकत्ते से इंस्ट्रक्शन[1] मँगाऊँगा।'

बसाई पहले घर गया। लखिन्द आँगन में बैठे फलते हुए लौकी के पेड़ को देख रहा था। वह सपना देख रहा था कि बड़ी लौकी बसाई उसे काट कर दे रहा है।

बसाई बोला, 'सुनो लखिन्द, तब नहीं कहा, अब कह रहा हूँ। सारा गाँव जानता है कि तुम लस्कर के चमचे हो। तुम चमचे हो, पर बुद्धू। तुमको लस्कर कुछ नहीं देता। फिर भी तुम चमचे का काम करते हो।'

'टाचबत्ती देगा।'

'हाँ सब दिया, जमीन, जायदाद, गाय, बकरी—टाचबत्ती देना-भर रह गया है।'

'नाः, नहीं देगा। न लूंगा। बहू ने मना किया है। लेने से बहू खफा होगी।'

'कब तक तुमको चमचा का काम करना होगा?'

'क्यों?'

'लस्कर एम० डब्लू० के लिए दंगा करेगा। उससे अलग रह। कु मारने को कहे तो जाकर कहना कि तुम्हारा चमचा कहकर बसाई मारने आता है। देख, अगर सदर जाये तो साथ जा सकोगे?'

'उसके बाद?'

'जो कहे, मुझे बता जाना।'

'वह कर सकूंगा। कान कटाने में मैं हुसियार हूँ।'

'जाओ।'

---

1. निर्देश।

लखिन्द भागा-भागा गया। वह बहुत क्रुद्ध था। बसाई टुडू ने उस पर विश्वास किया है, काम का भार दिया है। बसाई टुडू क्या मामूली आदमी है! उससे पुलिस भी डरती है।

लस्कर निश्चल खड़ा था। बोला, 'क्यों? तू कैसा चमचा है? अच्छा! बस चमचा। चल मेरे साथ। आते-जाते सुना जाता। न, चमचा कहो। उसकी पुलिसवालों में रपट कर दूँगा। घर में पुलिस घुसा दूँगा।'

'मैं चलूँगा। गाँव में रहने पर बसाई मारेगा।'

'चल, बेटा। तुझे डर क्या है? मेरे घर रहेगा?'

'बहू है।'

'हट्। मेरी बहू तो खटखिलानी[1] है। उसका क्या होगा?'

लखिन्द लस्कर के साथ सदर गया। लॉरी चढ़कर जाने में क्या मज़ा है! लगता था, सारी दुनिया दोनों ओर भाग रही हो। एकदम बँधे जीवन में रहता था लखिन्द। इसी से लॉरी का चलना उसे बहुत अच्छा लग रहा था। आते-जाते घर का सहारा छूटने पर दुःख हुआ। वे लोग कभी लॉरी नहीं चढ़े थे।

उसी रात को लखिन्द बसाई के घर गया। बोला, 'चलो, बातें बताऊँ।'

वे घर की छावन में आकर खड़े हुए। जाड़ा बहुत था। शुक्ल पक्ष की अस्पष्ट ज्योत्स्ना थी। सब-कुछ कुहरे से धुँधला था। नदी कुहरे से छायी हुई थी। कुहरे से भरी हल्की-हल्की हवा में धान की गंध थी। धान के पौधों को लस्कर और मेदनहरों की लड़ाई का पता न था। बसाई के हैंसुए के सम्मान के लिए वे रात को हवा में सिर हिला-हिलाकर बसाई को बुला रहे थे।

लखिन्द बोला, 'सुन्दर धान था आदमी, है न?'

'कितना सम्हाले, भाई। बोल तू रे।'

'हाँ।'

'क्या हुआ, बता!'

लखिन्द बोला, 'एस० डी० ओ० के पास गया था। क्या कहा, यह नहीं सुना। मुझे बाहर ही रखा। उसके बाद थाने में दारोगा वगैरह को लारी पर चढ़ाया। लारी घुमा-घुमाकर सारी बातें बतायीं। सदर बड़ा गरम हो रहा है रे। सर्कस आया है। उसमें तीन बाघ हैं। हाथी है, ऊँट है।'

'दारोगा ने क्या कहा?'

---

1. हर हाल बच्चों को जन्म देने वाली।

'बोला, निसपेट्टर मोची का लड़का है। हाड़ी[1], डोम, बाउरी, संथालों को मदद दे रहा है। तुम उसकी मदद करोगे तो खेतमजूर भड़क उठेंगे। दंगा करेंगे।'

'दारोगा ने क्या कहा?'

'दंगा होने पर देखा जायेगा।'

'और क्या कहा?'

'तुमको मीसा कर दें।'

'उसके बाद?'

'दारोगा ने कहा—तुम्हारे कहने से मीसा नहीं होगा, लस्कर। होने लायक केस हो, तभी तो होगा। वह निसपेट्टर लापरवाह नहीं है। दारोगा को आडर हैं। जहाँ निसपेट्टर बुलाये, पुलुस मदत देगी। उसके बाद दोनों ने थाने के बरामदे में खड़े होकर क्या कहा, मैंने नहीं सुना। लारी पर बैठकर बोला—बेवस्था हो गयी।'

'उसके बाद?'

'मुझे पगीलाई-लड्डू मोल ले दिये।'

'तुम जाओ। बाद में फिर बताऊँगा।'

'हाँ, मैं जा रहा हूँ।'

'जाओ।'

'बसाई!'

'कहो!'

'मैंने अच्छा काम किया?'

'हाँ, लखिन्द। तुमने जो कुछ किया, वह कोई कर सकता था? गाँव वाले गुस्सा होंगे। तुम बुद्धू बने रहना।'

'अच्छा।'

लखिन्द ने सिर हिलाया। उसके बाद बोला, 'अच्छा काम किया फिर भी बुद्धू बनकर क्यों रहूँ?'

'बुद्धू बने रहने से सभी समझेंगे, तुम उसके चमचा हो। सब तुमको बुरा सोचेंगे, यह लस्कर को मालूम होगा। तुम पर विस्वास करेगा। इससे वह क्या करना चाहता है, मुझे मालूम हो जायेगा। वह और किसी का विस्वास न करे, तुम्हारा ही विस्वास करे। उसे जैसे ही पता चलेगा कि तुम असल में हम लोगों के साथ हो, तो तुम पर उसका विस्वास चला जायेगा। उससे हम लोगों का नुकसान है। अब लड़ाई का वक्त है, लखिन्द! इस

1. हिन्दुओं में छोटी मानी जानेवाली जातियाँ।

तरह से तुम हमारा उपकार कर सकते हो।'

'बसाई, लड़ाई? ल—ड़ा—ई?'

'हाँ, लखिन्द। लड़ाई।'

'तुम्हारे पास कुछ नही है। उसके पास बन्दूक है।'

'हमारे पास भी है। हथियार निकाले नही हैं। मैं उसे मथुरा दिखा दूँगा। उसका धान है न?'

4

ताज्जुब है, बसाई जब कह रहा था 'उसका धान है न?' तब गौर लस्कर टॉर्च हाथ में ले ड्राइवर मदन को लेकर धान के पौधों को देख रहा था। धान के खेतों की हद कुहासे में अस्पष्ट थी। उससे लगता कि लस्कर के धान के खेतों की हद ही धरती की सीमा है। लगता कि सारी पृथ्वी ही लस्कर के धानों का खेत हो। लस्कर की खत्तियों में भरे जाने की पृथ्वी अपेक्षा कर रही थी। करभोग्या!

'यह स—ब मेरा है।' लस्कर मन-ही-मन कह रहा था। छाती के भीतर बड़ी उत्तेजना थी। यही धान के पौधे उसका अस्तित्व निश्चित करने की क्षमता रखते हैं। लस्कर क्या करे? हार माने? जीतेगा? बसाई की रूखी बातें। 'लेकिन बसाई, तुम क्या करोगे? क्या कर सकते हो? तुम्हारी सामर्थ्य कितनी है? सथाल हो, खेतमजूर! हर साल भड़काया करते हो। मैं खेतमजूरों का खून पीता हूँ? फिर उन्हे साल में जिन्दा कौन रखता है? तुम? तुम्हारी सामर्थ्य है? उनके जनम, मरन, बियाह, सराध, तीज-त्योहार मेरे सिवा कौन देखता है?

'तुमने बड़ा बुरा समय चुना। इमरजेन्सी का जमाना। कहीं के खेत-मजूर जीते नही बसाई, मुझे रिपोट मिली है। उस बक्त के पौष से इस साल के सावन तक, एक बरस आठ महीनों से तेरह केस हुए। ग्यारह केसों में फाइन हुआ। फाइन देने में जमीदार डरते नहीं, बसाई। कैसा ऋण माफ करने का कानून? आईन मेरा क्या करेगा? धान दूँगा, सूद लूँगा, रेकड नही, खाता किसी को नही दिखाऊँगा। असल नहीं लूँगा, सूद लूँगा, ना:! बसाई, तुमने गलती की।

'तुम सरकार को नही चीन्हते, मैं चीन्हता हूँ। पब्लिक को दिखाया एम० डब्लू० दे रहे हैं। निसपेक्टर भेजा। निसपेक्टर किसका है? वे हमारे, जमींदारों के जमीन के मालिकों के लड़के हैं। वे देंगे खेतमजूरों का हक? ना:! नही देंगे! वह मोची का लड़का कितनी दूर जायेगा, बसाई?

का आपिचर सामन्त है। सामन्त के दिन खतम हो गये हैं। मेरी वहिन
जमाई लीडर है। जमींदारों का बेटा। नमक, चीनी, किरासिन के
वा कुछ नहीं खरीदता। वह है, मंत्री है, सामन्त के हटने पर वह निम्-
क्टर मर जायेगा। तुम ऐसे बेवकूफ हो वसाई, कि पता नहीं कि इमरजेन्सी
? तुम लोगों को दुःख-सुख में पहुँचाने में मेरा कलेजा फटता है। जमीन
बाप की नहीं, दाप की होती है। एम० डब्लू० तुम लोगों को वहकाने,
पब्लिक को वहकाने की बातें हैं। दंगा होने पर तुम निश्चय ही मरोगे।
उस पर सरकार नजर नहीं डालतो है। हमारे मरने पर सरकार के हाथ-
पांव चले जायेंगे। हम लोगों के रहते एम० डब्लू० है। नक्सल हंगामे की
बात नहीं सुनी? एक-एक जमींदार के मरने के वदले सरकार कितनी
जानें ले रही है?

'मैं धान काटूंगा।

'ढेर लगाऊंगा।

'तुमको मारूंगा। भात मारूंगा।'

...बातें सोचते-सोचते लस्कर के चेहरे और आंखों में स्वप्निल तन्म-
यता उतर आयी। 'और भी वहुत कुछ कर सकता हूं, वसाई। एम०डब्लू०
तुम्हारे अधिकार की लड़ाई है। एम० डब्लू० नहीं दूंगा, यह मेरे अधिकार
की लड़ाई है।'

गोर लस्कर ठिठककर खड़ा हो गया। बोला, 'कल से घर के नौकर
मचान पर बैठेंगे। धान तैयार है।' उसने घर की ओर की राह पकड़ी।

तीन दिन बाद से शुरू हुई खेतमजूरों की लगातार हड़ताल।

सुबोध सदर चला गया। ट्रंककाल पर सामन्त बोले, 'अच्छा है, मैं
देख रहा हूं कि मामले को कितनी पब्लिसिटी दी जाती है। रेडियो और
अखबार के कवरेज की बड़ी जरूरत है। आज आप सदर ठहरिये।'

'मैं गांव नहीं जाऊं?'

'अभी ठहरिये। और इमर्जेंसी में जात्रा का ब्लॉक कंटैक्ट करेंगे
वहां रणजित पात्र एम० डब्लू० आई० है। हां, हां, विश्वासी लड़का है
दोनों जायेंगे। रिटन नोटिस जा रहा है। इस समय पब्लिसिटी की वहु
जरूरत है। आपका हीरो ऐक्टिव है?'

'वहुत। गांव छोड़कर हिलता नहीं।'

'गुड। वह रिपोर्टरों से मिल ले।'

पब्लिसिटी। सदर से जीप और टैक्सी गांव की ओर चली। रि
वहुत मूविंग और फ़क्फ़ुल हुई।

'टु विलेजेज! मार्च टु मॉडर्न टाइम्स...!'

'न्यूनतम वेतन की माँग के लिए खेतमजूरों की हड़ताल...!'

'खेतमजूर कार्यकर्ता बसाई टूडू ने कहा...।'

खेतों के किनारे-किनारे मचान।

पहरे में लगे खेतजूरों का दल।

'मिस्टर टूडू, आपने मचान क्यों खड़े किये ?'

'नहीं तो बाहर के कटैयों को घुसा देगा।'

'कब तक हड़ताल खीचेंगे ?'

'जब तक लस्कर गरदन न झुकाये।'

'आप लोगों ने अभी तक किस रेट पर वेज पाया है ?'

'अकबर बादसाह के टाइम के रेट से।'

'माने ?'

'आठ आना मिले, दस आने मिले, यह कोई रेट हुआ ? इसी से कहता हूँ, बादसाह के टाइम के रेट।'

'सारी जमीन लस्कर की है ?

'सारी जमीन का चकला उसका है।

'लैंड-सीलिंग ?

'बाबू हो। सीलिंग जानते हो। हिसाब करो। सीलिंग किसके लिए ? किस जिले में जमींदार-महाजन के हजार-हजार बीघे नहीं हैं ? कहाँ सीलिंग नहीं है ? आईन बनाते हो जमीदार को पालने को। उसके लिए ताज्जुब करने से क्या होगा ?'

'हड़ताल का कारण ?'

'वह कृषिऋण की माफी का आईन नहीं मानता। छिहत्तर का वेज दूंगा, मुँह से मानता है, लेकिन किसने क्या ऋण लिया है, उसके छिपे खाते पर टीप लगाना होगा। हम देते नहीं। इसलिए...।'

'कानून के बाद भी ?'

'कानून तो हमारे मारने के लिए है, उन्हें जिंदा रखेगा। कैसा ऋण-माफी का कानून ? सीधे-सादे खाते में लिखा ऋण माफ हो सकता है, किंतु सीधे-सादे खाते में रहती है एक रुपये की बात। छिपे नौ रुपये जो खाते में लिखे हैं ? रेकर्ड रहता नहीं क्या ? सरकार को क्या मालूम नहीं कि कितने करोड़ रुपये सूद में जाते हैं ?'

इमली के पेड़ के नीचे बसाई की प्रेस-कॉन्फ्रेंस हुई और बसाई उनके बीच खड़ा होकर स्लोगन लगाने लगा—

'ये धान—हम काटेंगे।'

'हम काटेंगे।'

'बाहर के कटैयों को घुसने नहीं देंगे।'

'ना, ना, ना।'

'अड़सठ और चौहत्तर का रुपया कहाँ है?'

'रुपया कहाँ है?'

'छिहत्तर की मजूरी देना होगा।'

'देना होगा।'

'जबानी हिसाब न मानेंगे। टीप-सही देंगे नहीं।'

'मानेंगे नहीं, देंगे नहीं।'

'एम० डब्लू० हमारी जा—न है।'

'जाऽऽऽन!'

'दोगे, तभी काटेंगे धान।'

'तभी काटेंगे धान।'

एक छोकरे रिपोर्टर ने उसी समय स्लोगन टेप कर लिये और स्लोगन के बीच में बकरी का वाँ-वाँ भी आ गया। उसने साथी से कहा, 'दिस इज़ रियल। कसम से। जिस तरह पोन्तिकावों की तसवीर है। टेप में स्लोगन के साथ म्यूजिक पंच कर लेने से बढ़िया हो जायेगी। सचमुच।'

साथी ने रक्त-दशक के आदि से अंत तक मारिजुआना खाकर क्रांति की थी। बहुत ही हाल में उसने गेंदे के फूल से भी पीले रंग के रुपयों से पुष्ट कई-कई लोगों ने लाल-पीले कुर्ते पहने अतिक्रांतिकारी को देखा था और वे लोग क्रांति में दीक्षित हो गये लोग थे। इससे उसका मन हिलकोरे लेने लगा और वह रो कर बोला, 'बसाई मानो चे-ग्येआरा है।'

बसाई इस समय कठोरता से काम कर रहा था। हर मचान पर पहरा बदल कर उसने धान के खेतों को निगरानी में रखा। लस्कर अपने कमरे में दरवाजा बंद कर विपत्तारिणी माँ—इमर्जेंसी को पुकारता। कहता, 'माँ—इमरजेन्सी! बचाओ माँ तुम्हारे नाम पर बकरा दूंगा।'

जिस कारण से लस्कर देवताओं का सहारा लिये था, उसके सपने में शिव आये, उसी कारण से सामन्त, बसाई और रिपोर्टर माँ इमर्जेंसी के ब्रह्मास्त्र से घायल हुए। समाचारों को कोई पब्लिसिटी नहीं मिली, न किसी को मालूम हुआ कि क्या हो रहा है? राइटर्स[1] से 'नॉट टु बी पब्लिश्ड' नोट के साथ सेंसर की चुभन आयी।

जिन्होंने एम० डब्लू० ए० की सफल रूपायन कामना की थी, सामन्त उन्हीं मुट्ठी-भर अफ़सरों में एक था। एम० डब्लू० के काम को जरूरी

1. राइटर्स बिल्डिंग—बंगाल सरकार का केंद्रीय कार्यालय।

पर्सिनलिटी देखा होगा, यह 'ओ के'[1] उन्हें ऊपर से मिला था, इसी से आगे बढ़े थे। वह पक्के अफ़सर थे, किसी चाल में गलती नहीं करते थे।

इसके बाद भी सेंसर का यह इस तरह का आचरण देखकर उनका मिज़ाज बिगड़ गया और वह इस मामले को लेकर भाग-दौड़ करने लगे। तब ऊपरवालों ने उन्हें यथोचित सांत्वना देकर कहा, 'जिसे लड़ाई कह रहे हैं, वह सारे पश्चिमी बंगाल के खेतमज़ूरों के हिसाब के रेशियो[2] में नहीं आता। प्रत्येक बेल्ट में ज़मींदार जो दे रहा है, खेतमज़ूर वही ले रहे हैं। यह देखिये कि पर्सनल फ़्रोडेड गँवई गाँव का मामला है। अड़ोस-पड़ोस के ब्लॉक में झगड़ा क्यों नहीं हो रहा है? देखिये, देखिये नतीजा क्या होता है? अच्छा! शान्त रहो। आउटकम अच्छी होने पर पर्सनलिटी से टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। अभी इस मामले को हाइलाइट कराने में असुविधा है।'

सामन्त सब समझते हैं और अपने कमरे में चले आते हैं। 'असुविधा है'—निरन्तर ही अनऑफ़िशली ऑफ़िशलों पर दबाव डाल रहे हैं, मन्त्री अथवा उपमन्त्री अथवा कोई युवराज। 'एम० डब्लू० ए० के लिए झगड़ा चल रहा है'—समाचार उनके लिए अशुभ है।

तमाम जगह झगड़े नहीं हो रहे हैं, एक जगह हो रहा है, इसीलिए वह समाचार है। सामन्त ने अपनी जान-पहचान के संवाददाताओं से कहा, 'सेंसर से पास हुए बिना आप समाचार कैसे छाप देते हैं?'

'घुमा-फिराकर लिख देते हैं।'

'वही कीजिये।'

वही किया गया। उसके परिणामस्वरूप हड़ताल के सातवें-आठवें दिन अख़बारों के कोने-कोने में, नीचे की ओर संक्षिप्त समाचार में ख़बर छपी और सबकी नज़रें अटक गयीं। इस ख़बर के 'ऐट ऑल' निकलने के मामले को अधिकारियों ने अच्छी नज़रों से नहीं देखा और सम्बन्धित मन्त्री के पास भागे-भागे पहुँचे।

सरकार की गाड़ी चलने पर भी सामन्त ने वापसी राह का ख़र्च दिया। इस तरह [illegible]

था। इस संघ [illegible]

नौकरी गाँव [illegible] कलकत्ता में, मन्त्री के बरामदे में। वे कहते, 'उनके पास न जाकर हम सीधे यहाँ आते हैं इसलिए उन लोगों ने बकझक की थी।'

प्रसाद-पुष्ट मर्कट को यह राय ही प्रवीण, भली, कर्मनिष्ठ ऑफ़िसर

1. 'ठीक है' का आदेश 2 अनुपात।

'वाहर के कटैयों को घुसने नहीं देंगे।'

'ना, ना, ना।'

'अड़सठ और चौहत्तर का रुपया कहाँ है ?'

'रुपया कहाँ है ?'

'छिहत्तर की मजूरी देना होगा।'

'देना होगा।'

'जवानी हिसाव न मानेंगे। टीप-सही देंगे नहीं।'

'मानेंगे नहीं, देंगे नहीं।'

'एम० डब्लू० हमारी जा—न है।'

'जाऽऽऽज्न !'

'दोगे, तभी काटेंगे धान।'

'तभी काटेंगे धान।'

एक छोकरे रिपोर्टर ने उसी समय स्लोगन टेप कर लिये और स्लोगन के वीच में वकरी का वाँ-वाँ भी आ गया। उसने साथी से कहा, 'दिस इज़ रियल। कसम से। जिस तरह पोन्तिकावों की तसवीर है। टेप में स्लोगन के साथ म्यूजिक पंच कर लेने से वढ़िया हो जायेगी। सचमुच।'

साथी ने रक्त-दशक के आदि से अंत तक मारिजुआना खाकर क्रांति की थी। वहुत ही हाल में उसने गेंदे के फूल से भी पीले रंग के रुपयों से पुष्ट कई-कई लोगों ने लाल-पीले कुर्ते पहने अतिक्रांतिकारी को देखा था और वे लोग क्रांति में दीक्षित हो गये लोग थे। इससे उसका मन हिलकोरे लेने लगा और वह रो कर वोला, 'वसाई मानो चे-ग्येआरा है।'

वसाई इस समय कठोरता से काम कर रहा था। हर मचान पर पहरा वदल कर उसने धान के खेतों को निगरानी में रखा। लस्कर अपने कमरे में दरवाजा वंद कर विपत्तारिणी माँ—इमर्जेंसी को पुकारता। कहता, 'माँ—इमरजेन्सी ! वचाओ माँ तुम्हारे नाम पर वकरा दूंगा।'

जिस कारण से लस्कर देवताओं का सहारा लिये था, उसके सपने में शिव आये, उसी कारण से सामन्त, वसाई और रिपोर्टर माँ इमर्जेंसी के ब्रह्मास्त्र से घायल हुए। समाचारों को कोई पब्लिसिटी नहीं मिली, न किसी को मालूम हुआ कि क्या हो रहा है? राइटर्स[1] से 'नॉट टु वी पब्लिश्ड' नोट के साथ सेंसर की चुभन आयी।

जिन्होंने एम० डब्लू० ए० की सफल रूपायन कामना की थी, साम उन्हीं मुट्ठी-भर अफ़सरों में एक था। एम० डब्लू० के काम को ज़रू

1. राइटर्स विल्डिंग—वंगाल सरकार का केंद्रीय कार्यालय।

पर्सेंटेज देना होगा, यह 'ओ के'[1] उन्हें ऊपर से मिला था, इसी से आगे बढ़े थे। वह पक्के अफ़सर थे, किसी चाल में ग़लती नहीं करते थे।

उसके बाद भी सेंसर का यह इस तरह का आचरण देखकर उनका मिज़ाज बिगड़ गया और वह इस मामले को लेकर भाग-दौड़ करने लगे। तब ऊपरवालों ने उन्हें यथोचित सांत्वना देकर कहा, 'जिसे लड़ाई कह रहे हैं, वह सारे पश्चिमी बंगाल के खेतमजूरों के हिसाब के रेशियो में नहीं आता। प्रत्येक बेल्ट में ज़मींदार जो दे रहा है, खेतमजूर वही ले रहे हैं। यह देखिये कि पर्सेनल फ़्यूडल संबई गाँव का मामला है। अड़ोस-पड़ोस के ब्लॉक में झगड़ा क्यों नहीं हो रहा है? देखिये, देखिये नतीजा क्या होता है।' [illegible]

[illegible]

अथवा उपमंत्री अथवा कोई युवराज। 'एम० डब्लू० ए० के लिए झगड़ा चल रहा है'—समाचार उनके लिए अशुभ है।

तमाम जगह झगड़े नहीं हो रहे हैं, एक जगह हो रहा है, इसीलिए यह समाचार है। सामन्त ने अपनी जान-पहचान के संवाददाताओं से कहा, 'सेंसर से पास हुए बिना आप समाचार कैसे छाप देते हैं?'

'घुमा-फिराकर लिख देते हैं।'

'वही कीजिये।'

वही किया गया। उसके परिणामस्वरूप हड़ताल के सातवें-आठवें दिन अख़बारों के कोने-कोने में, नीचे की ओर संक्षिप्त समाचार में ख़बर छपी और सबकी नज़रें अटक गयीं। इस ख़बर के 'एट ऑल' निकलने के मामले को अधिकारियों ने अच्छी नज़रों से नहीं देखा और संबंधित मंत्री के पास भागे-भागे पहुँचे।

सरकार की गाड़ी चढ़ने पर भी सामन्त ने वापसी राह का ख़र्च दिया। इस तरह से उस वक़्त अफ़सरों का दल पकड़ना मुश्किल हो जाता था। इस क्षेत्र में दूसरे एम० डब्लू० आई०वाले मदद के लिए आये। उनकी नौकरी गाँव के ब्लॉकों में रहती और वे रहते कलकत्ते में, मंत्री के बरामदे में। वे कहते, 'उनके पास न आकर हम सीधे यहाँ आते हैं इसलिए उन लोगों ने बकझक की थी।'

प्रसाद-पुष्ट मर्कट की यह राय ही प्रवीण, भली, कर्मनिष्ठ ऑफ़िसर

1. 'ठीक है' का आदेश 2 अनुवाद।

को लँगड़ी देने में काफ़ी हुई और लँगड़ी देने का आयोजन इलैबोरेटली[1] चलने लगा।

नौ दिन हड़ताल चलते ही लस्कर की हालत पतली हो गयी। धान काटे बिना अब न चलेगा। उसने लखिन्द से कहा, 'निसपेट्टर के पास जा, कहना—मैं बात करने को तैयार हूँ।'

सुबोध इस बात से ख़ुश हुआ। बसाई पर खेतमजूरों का विश्वास अटल था। इसी से वे निश्चय के साथ हड़ताल चला रहे थे। यूनियन के बाबू लोगों ने इस समय चावल और खेसारी की पतली खिचड़ी का इंतजाम कर सहायता की। लेकिन बसाई भी समझ रहा था कि इस तरह ज्यादा दिनों तक नहीं चलेगा।

लखिन्द ने बसाई से कहा, 'इस बार समझौता कर लो जी। वह नरम पड़ गया है।'

सुबोध बोला, 'देखिये, दिस इज़ गुड।[2] लस्कर ही समझौते की राह पर आगे बढ़ रहा है।'

गाँव के इमली के पेड़ के नीचे तीनों पक्षों की मीटिंग हुई। लस्कर—के० एम० यूनियन के कर्मचारी और बसाई—सुबोध।

बसाई बोला, 'तुमने मुझे विन्दावन दिखाना चाहा था, लस्कर। मैंने कहा था कि मैं तुमको मथुरा दिखा दूँगा। धान किसके नष्ट हो रहे हैं?'

'बसाई, काम की बातें किया करो।'

सुबोध बोला, 'आप इन लोगों की माँगों की बात जानते हैं।'

'यही धान काटेंगे—नम्बर एक।'

'बाहर के कटैये नहीं आयेंगे—नम्बर दो।'

'अड़सठ और चौहत्तर के रेट पूरे देंगे—नम्बर तीन और चार।'

'इस बार की मजूरी लेबर डिपार्टमेंट के नोटिफ़िकेशन में अप्रैल 1976 के डिक्लेयर्ड रेट पर। पाँच नम्बर।'

'इन पाँचों माँगों के संबंध में बताइये, आप क्या कहना चाहते हैं?'

लस्कर बोला, 'क्या कहूँ? सरकार ने बाँस कर दिया। आप कानून दिखा रहे हैं। अच्छा, ठीक बात है। लेकिन कोई भी जमींदार नहीं दे रहा है, मैं क्यों दूँ? क्या सारे ब्लाकों में एम० डब्लू० नहीं आयी है या खेतमजूर नहीं हैं?'

'दूसरे लोग ग़ैर-क़ानूनी काम करें तो आप भी करेंगे? आपको जो कहना हो, कहिये।'

---

1. बड़े पैमाने पर 2. यह अच्छा है।

आकर हिसाब बनाऊँगा। परसों तो रुपये मिलेंगे, काम शुरू हो रहा है।'

बसाई चिन्तातुर चेहरे से उदास हँसी हँसकर बोला, 'आप देखिये। उसका विश्वास नहीं है। किसी को पता नहीं, क्या करेगा? ऐसा भला लड़का बनकर सब मान लिया।'

सुबोध बोला, 'मेरे सही हैं सरकार की ओर से। काग़ज भी मेरे पास है। इतनी फ़िकर मत कीजिये।'

बस में सदर जाते-जाते सुबोध ने कमल घोड़ुई से कहा, 'यह बड़े ताज्जुब की बात है। कृषक-आंदोलन इनको छोड़कर हो सकता है? अधिकतर जमीनों पर तो प्राइवेट मिल्कियत है, भूमिहीन खेतमजूर खेती करते हैं। संगठन क्यों नहीं है?'

कमल घोड़ुई ज्ञानियों की हँसी हँसकर बोला, 'होगा, होगा।'

सदर जाकर सुबोध ने इस सिग्नल विक्टरी का समाचार सामन्त को भेजा। उसके बाद जिन सरकारी कर्मचारियों के ज्वाइंट मेस में ठहराया था, वहाँ जाकर दोपहर को सोया, शाम को सिनेमा देखने गया।

दूसरे दिन दस बजे के वक़्त वह बस से आयेगा। लेकिन सवेरे ही उसके पास एक रोगी-सा, भांड़ लगनेवाला आदमी आया। बोला, 'मुड़ाइल की लारी पकड़कर आ रहा हूँ, बाबू। आप चलिये। सर्वनाश हो गया है।'

'क्या हुआ? तुम कौन हो?'

'मैं लख़िन्द हूँ। कहाँ इतने काटने वाले छिपा रखे थे? सवेरा होते ही लस्कर ने दूसरे गाँव के कटैये घुसा दिये। वे धान काटने लगे। उससे बसाई सबको लेकर खेत में उतरा। बहुत दंगा हुआ। लस्कर बंदूक ले आया।'

सुबोध उसी समय थाने भागा। थाने के अफ़सर बोले, 'एस०डी०ओ० का ऑर्डर चाहिए।'

एस० डी० ओ० बोले, 'ऑर्डर लेकर पुलिस जा रही है। आप गाँव जाइये। यहाँ एम० डब्लू० आई० क्या कर रहे हैं?'

सुबोध लख़िन्द को लेकर गाँव पहुँचा और जो दृश्य देखा वह आश्चर्य-जनक था। मार खाने वाले खेतमजूरों के लड़कों से सुबोध को लगा कि यह लिलीपुट है। सामने जो हो रहा है वह विस्तृत कोटि की घटना थी। सहसा पिरामिड, या अदीना की मसजिद, या इलोरा देखकर भवनों की विशालता जिस प्रकार आश्चर्यान्वित करती हो, सुबोध उसी आश्चर्य में पड़ गया। अन्तर इतना था कि उसके सामने कोई मृत विशाल भवन नहीं था, कुछ आदमी लड़ रहे थे। इस लड़ाई का चित्र आकाश के कैन्वस पर अमिट रंगों में अंकित कर सारे मनुष्यों को चिरकाल देखने के लिए विवश करना

उचित था।

धान के खेत में काले-काले आदमी थे। उनके दो सौ, उनके शायद चार सौ। हुँमुओं से लड़ाई हो रही थी। लाठी ऊपर-नीचे हो रही थी। लस्कर मचान पर खड़ा था। उसके हाथ में बन्दूक थी। वह गरज रहा था, 'निकलो साल्लो संथालो, मेरे खेत से, नहीं तो बंदूक मार दूँगा।'

सुबोध भागा, साथ में लखिन्द था। सुबोध बोला, 'लस्कर बाबू, क्या कर रहे हैं?'

'तुम हट जाओ।'

'उतर आइये।'

'इन संथालों को मैं देख लूँगा। ओ रे भजन! तुम लाठियों से औरतों को भगा दो।'

लस्कर अश्लील गालियाँ देता हुआ बोला, 'तुम्हारे एम० डब्लू० की मैं...! हट जाओ।'

तभी ललिन्द को सहसा नेवले की अक्ल आ गयी। बंदूक देखकर उसका कलेजा काँपने लगता था, फिर भी वह मचान के नीचे घुसकर लस्कर का पैर पकड़कर लटक गया। झटके को संभालने में लस्कर की बदूक सामने गिर पड़ी। उसके बाद गिरा लस्कर।

सुबोध ने बंदूक उठा ली। लस्कर जमीन से उठकर खड़ा हुआ और बड़े उजड्ड गुस्से में लखिन्द से बोला, 'तू? तू जाकर इस साले मोची के बच्चे को ले आया? एँ?' उसने लखिन्द के लाठी मारी।

सुबोध उसका यार-दादा बन गया। सामने त्रिमोहन माहिती था। उसने लस्कर के कान पर थप्पड़ मारा। लस्कर और सुबोध आमने-सामने थे। लस्कर बन्दूक की ओर झपटा। तभी पुलिस न आ जाती तो कहा नहीं जा सकता कि क्या हो जाता!

पुलिस, पुलिस। पके धान, बटँये, खेतमजूर, पुलिस। पुलिस ने हंगामा रोकने के लिए हवा में गोलियाँ छोड़ीं और धान के खेत में उतर गयी।

बटँये, खेतमजूर—सभी एक-एक कर धान के खेत से निकल गये। पुलिस के साथ रणजीत पात्र को देखकर सुबोध को सहारा मिला। लस्कर ने अफ़सर को देखकर आँखें सिकोड़ीं और लखिन्द कमर पर लगी लाठी को भूलकर चिल्ला उठा, 'साथी दारोगा नहीं आया है। पुराना दुश्मन आया, इससे लस्कर बाबू डर गये।'

अफ़सर ने लस्कर के घर पर बैठने के बुलावे की उपेक्षा कर दी। उसने ग़ैरक़ानूनी बंदूक ले ली। लखिन्द बोला, 'यह बंदूक मेहरिया है! बड़ी बंदूक, मेहरिया का भतार, घर में है।'

अफ़सर ने यह बात न सुनी। उखड़ी आवाज़ में बोला, 'एम० डब्ल्यू० आई० कौन है ?'

'मैं।'

'मारपीट की थी ?'

'उन्होंने मुझे 'मोची' कहकर गाली दी, इस लखिन्द को लाठी मारी, मेरा अपराध है कि उनकी बंदूक छिटककर गिर गयी थी, उठा ली, उन्हें नहीं दी।'

'ऐग्रीमेंट-पेपर कहाँ है ?'

यह बात सुनकर सुबोध समझा, काग़ज़ की बात सामन्त ने बता दी होगी।

वह बोला, 'मेरे पास।'

'देखें।'

'सदर के मेस में है।'

'क्या बात हुई थी ?'

सुबोध ने सब बता दिया।

ऑफ़िसर बोले, 'आज धान-कटाई न होगी। पुलिस रहेगी।

'कल पुलिस खड़ी कर धान काटे जायेंगे।

'आप सदर चलिये। ऐग्रीमेंट देखूंगा।'

बसाई बढ़कर आया। सुबोध से बोला, 'इसी सबब से कल मैंने खुशी नहीं मनायी। देख रहे हो। काटने वालों को ले रहा है। नदी किनारे के गोठ में ठहराया। खाना-पानी दिया, रुपया रोज मजूरी तय हुई है।'

'तुम कौन हो ?'

लस्कर दबी आवाज़ में बोला, 'दल का सरदार। बसाई टूरा। संथालों का बच्चा है।'

'चुप रह हरामी ! तुम्हारी पैदाइश की बात सब जानते हैं। मैं संथाल हूँ। अपने बाप से पैदा।'

लस्कर इस पर गरज पड़ा और उसे और बसाई को चौंकाते हुए नाटे अफ़सर तोप-सी गरज में जल-थल कँपाते हुए बोले, 'स्टॉप !'

गाँव, धान के खेत, नदी, आदमी उदास थे। अफ़सर सुबोध को लेकर सदर लौट गये। ऐग्रीमेंट देखकर बोले, 'यह तो परियों की कहानी है। स—ब मान लिया ? कल पुलिस के पहरे में धान कटाइयेगा।'

'जैसा कहें। इसके बाद आ रहे हैं ज़िले के अथॉरिटी ! लस्कर के कलकत्ते के खूंटे को मूव करने से क्या होगा, पता नहीं।

'एस० पी० आयेंगे, मैं चला।'

'कल आइये।'

'आप लौटेंगे ?'

'हाँ।'

'कहाँ ठहरेंगे ?'

'मुड़ाइल में।'

'ठहरिये, आपका स्टेटमेंट ले लूं।'

मुद्रांग ने स्टेटमेंट दिया।

दूसरे दिन और उसके बाद के दिन, दो दिन पुलिस के पहरे में धान की कटाई हुई। अफ़सर की बात पर लस्कर ने रुपये देने की बात मान ली।

दो दिन बाद पुलिस का पहरा उठा लिया गया। बाहर से आये कटैये नदी-किनारे के गोठ को वापस चले गये। उनमें से एक बूढ़ा बसाई के पास आया और बोला, 'तुम काटो, हम भी काटें। हम रुपया-रुपया ही लेंगे। हमारा घर वीरभूम है। सत्तर साल हुए, पुलुस के जुलुम से गाँव छोड़ दिया। जिले-जिले घूमते रहते हैं।'

'देखा जायेगा। धान काटने ही से तो काम खतम नहीं हो जाता।'

'हम झगड़ा नहीं चाहते।'

'तुम नहीं चाहते, हम नहीं चाहते, लस्कर चाहता है।'

पुलिस चली गयी। टेलिग्राफ़िक मेसेज चलने लगे—'टाइमली इंटर्वेंशन ऑफ़ पी० ओ० ब्रिग्स सिचुएशन अंडर कंट्रोल।'[1]

'पीसफ़ुल हार्वेस्टिंग गोइंग ऑन।'[2]

गोपनीय मेसेज—

'एम० डब्ल्यू० आई० ओपेनली साइडिंग विद के० एम्स०।'[3]

उत्तर में निर्देश—

'कीप ए टैब ऑन हिम।'[4]

गोपन मेसेज—

'बसाई टूडू लीडर ऑफ़ द एजिटेटर्स।'[5]

जवाब में निर्देश—

'अरेस्ट हिम अंडर मीसा ऐट द फर्स्ट चान्स।'[6]

धान-कटाई कब की हो गयी। खेत में, मैदान में भूसा पड़ा रहा। चारों

उचित समय पर रोकने से स्थिति क़ाबू में आ गयी 2. कटाई शांतिपूर्वक चल रही है 3. न्यूनतम मजदूरी का इंसपेक्टर खुल्लमखुल्ला खेतमजूरों का पक्ष ले रहा है 4. उस पर नजर रखो 5 बसाई टूडू आंदोलनकर्ताओं का नेता है 6. पहले मौके पर उसे मीसा में गिरफ्तार कर लो।

अफ़सर ने यह बात न सुनी। उखड़ी आवाज़ में बोला, 'एम० डब्लू० आई० कौन है?'

'मैं।'

'मारपीट की थी?'

'उन्होंने मुझे 'मोची' कहकर गाली दी, इस लखिन्द को लाठी मारी। मेरा अपराध है कि उनकी बंदूक छिटककर गिर गयी थी, उठा ली, उन्हें नहीं दी।'

'ऐग्रीमेंट-पेपर कहाँ है?'

यह बात सुनकर सुबोध समझा, काग़ज़ की बात सामन्त ने बता दी होगी।

वह बोला, 'मेरे पास।'

'देखें।'

'सदर के मेस में है।'

'क्या बात हुई थी?'

सुबोध ने सब बता दिया।

ऑफ़िसर बोले, 'आज धान-कटाई न होगी। पुलिस रहेगी।

'कल पुलिस खड़ी कर धान काटे जायेंगे।

'आप सदर चलिये। ऐग्रीमेंट देखूंगा।'

बसाई बढ़कर आया। सुबोध से बोला, 'इसी सबब से कल मैंने ख़ुशी नहीं मनायी। देख रहे हो। काटने वालों को ले रहा है। नदी किनारे के गोठ में ठहराया। खाना-पानी दिया, रुपया रोज मजूरी तय हुई है।'

'तुम कौन हो?'

लस्कर दबी आवाज़ में बोला, 'दल का सरदार। बसाई टूरा। संथालों का बच्चा है।'

'चुप रह हरामी! तुम्हारी पैदाइश की बात सब जानते हैं। मैं संथाल हूँ। अपने बाप से पैदा।'

लस्कर इस पर गरज पड़ा और उसे और बसाई को चौंकाते हुए नाटे अफ़सर तोप-सी गरज में जल-थल कँपाते हुए बोले, 'स्टॉप!'

गांव, धान के खेत, नदी, आदमी उदास थे। अफ़सर सुबोध को लेकर सदर लौट गये। ऐग्रीमेंट देखकर बोले, 'यह तो परियों की कहानी है। स—ब मान लिया? कल पुलिस के पहरे में धान कटाइयेगा।'

'जैसा कहें। इसके बाद आ रहे हैं ज़िले के अथॉरिटी! लस्कर के कलकत्ते के खूंटे को मूव करने से क्या होगा, पता नहीं।

'एस० पी० आयेंगे, मैं चला।'

'कल आइये।'

'आप लौटेंगे ?'

'हाँ।'

'कहाँ ठहरेंगे ?'

'मुड़ाइल में।'

'ठहरिये, आपका स्टेटमेंट ले लूं।'

सुबोध ने स्टेटमेंट दिया।

दूसरे दिन और उसके बाद के दिन, दो दिन पुलिस के पहरे में धान की कटाई हुई। अफसर की बात पर लस्कर ने रुपये देने की बात मान ली।

दो दिन बाद पुलिस का पहरा उठा लिया गया। बाहर से आये कटैये नदी-किनारे के गोठ को वापस चले गये। उनमें से एक बूढ़ा बसाई के पास आया और बोला, 'तुम काटो, हम भी काटें। हम रुपया-रुपया ही लेंगे। हमारा घर वीरभूम है। सत्तर साल हुए, पुलुस के जुलुम से गाँव छोड़ दिया। जिले-जिले घूमते रहते हैं।'

'देखा जायेगा। धान काटने ही से तो काम खतम नहीं हो जाता।'

'हम झगड़ा नहीं चाहते।'

'तुम नहीं चाहते, हम नहीं चाहते, लस्कर चाहता है।'

पुलिस चली गयी। टेलिग्राफ़िक मेसेज चलने लगे—'टाइमली इंटर्वेंशन ऑफ़ पी० ओ० ब्रिंग्स सिचुएशन अंडर कंट्रोल।'[1]

'पीसफुल हार्वेस्टिंग गोइंग ऑन।'[2]

गोपनीय मेसेज—

'एम० डब्लू० आई० ओपेनली साइडिंग विद के० एम्स०।'[3]

उत्तर में निर्देश—

'कीप ए टैब ऑन हिम।'[4]

गोपन मेसेज—

'बसाई टूडू लीडर ऑफ़ द एजिटेटर्स।'[5]

जवाब में निर्देश—

'अरेस्ट हिम अंडर मीसा ऐट द फ़र्स्ट चांस।'[6]

धान-कटाई कब की हो गयी। खेत में, मैदान में [illegible]

---

1. उचित समय पर रोकने से स्थिति काबू में आ गयी 2. [illegible] है 3. न्यूनतम मजदूरी का इंसपेक्टर [illegible] 4. उस पर नजर रखो 5 बसाई टूडू [illegible] अवसर पर उसे मीसा में गिरफ्तार कर लो।

और चराचर में जाड़े की शान्ति थी। जानवरों के गले में घंटे बजते थे।

किन्तु आकाश पवन, सारा परिवेश अग्निगर्भ थे। पत्नी को पुलिस के हाथों में देकर लस्कर मेहनत के साथ बंदूक की नली साफ़ करने लगा।

उसके बाद एस० पी० ने रंगमंच पर प्रवेश किया। अफ़सर हँसते हुए रंगमच से विदा हुए। पुलिस के पहरे में धान कटाने के लिए कलकत्ते में तलबी हुई। कलकत्ता जाकर वे फ़ायरिंग स्क्वाड[1] के सामने आये। जो स्क्वाड में थे वे इतने सामर्थ्यवान थे कि उन्होंने बिना विरोध चार्जशीट मान ली।

अब लस्कर ने समझा कि फिर अभय का वरदान और आश्वासन है। 'जय माँ—इमरजेन्सी' कहकर उसने गोठ के कटैयों को खबर दी। जिस रात उसने गोठ में खबर भेजी, उस रात को बसाई के घर मादल डिमडिम बज रही थी और ठंडक से बचने के लिए आग को घेर कर बैठे संथाल एकरस सुर में गाना गा रहे थे। दूर से वह सुर विलाप की तरह लग रहा था। उनके गाने के सुर में विचित्रता नहीं थी। लस्कर ने मदन से पूछा, 'लखिन्द कहाँ है ?'

'भाग गया है।'

'भागकर कहाँ जायेगा ? निमकहरामी करके भागेगा कहाँ ? लखिन्द, तू जायेगा कहाँ ?'

लखिन्द उस समय बरोसी[2] की आग से हाथ तपाते-तपाते तीन रिवीजन के एम० डब्लू० लिये, छप्पर में खड़ा, ओसारे में मिट्टी लगा रहा था, बीवी-बच्चों को सदर में सर्कस दिखा रहा था।

गयेश्वरी की चाँदी-सी बालू पार कर कटैये आ रहे थे। वे बहुत दुखी और हारे हुए थे। जहाँ जाते, वहीं उन्हे बँधे खेतमजूरों के अन्न पर बैठना पड़ता। उसके लिए मार-पीट और दंगा-फ़साद होता। यह उनका अभ्यास हो गया था।

उस रात सदर से तीन जीपें आयीं।

5

तीन जीपों पर चढ़ कर जो आये थे, वे लस्कर की बहिन के दामाद के दल के लोग थे। आजकल उनके हाथों में रुपये, नाम में छाप थी। जीप में चढ़

1. गोली चलाने वाला दस्ता 2. मिट्टी का बर्तन, जिसमें राख से दबाकर आग रखी जाती है।

कर वे सदर को आतंकित किये रहते। यही युव-शक्ति और अधमरों को फिनिश करना ही इनका देश-प्रेम, मातृ-सेवा थी। माँ जो बन गयी, उससे इन सारे लेफ्टिनेंटों के बिना फ़ील्ड में ऑपरेशन चलाना उनके लिए संभव नहीं है।

वे आये, लस्कर के घर पर ठहरे। लस्कर से कहा, 'साले, पाइंट और बकरा रखकर तुम चले जाओ। हम सामना कर लेंगे।'

लड़के नविन्द मैदान में बैठने के लिए निकला और लस्कर के बखार के आगे आग के चारों ओर सैकड़ों कटैयों को बैठा देखकर बसाई के घर की ओर भागा।

भोर होते-न-होते बसाई मुडाइल चला गया था और सुबोध को खबर देकर चला आया।

सुबोध के आते-न-आते लस्कर के बखार के सामने दो गाँव के खेत-मजूर जमा होकर नारे लगा रहे थे। वे धान के पहाड़ को घेरकर खड़े थे।

'बाहरी कटैये हटाओ!'

'हिसाब से एम० डब्लू० दो!'

जल्दी-जल्दी नारे लगने लगे। सुबोध ने चलते-चलते बसाई से कहा, 'आपको बस नहीं मिलेगी। साइकिल से सदर जाइये। कुल चार मील है। अफसर को बताइयेगा।'

'मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।'

सुबोध के बार-बार बुलाने से लस्कर निकला और आँखें लाल कर बोला, 'क्या हुआ?'

'आप इन्हें फिर क्यों लाये?'

'काम नहीं है?'

'एग्रीमेंट पढ़िये।'

'एग्रीमेंट तुम पढ़ो। एग्रीमेंट है कि ये धान काटेंगे, सो धान काटें। धान पर पहरा देंगे, ढेरी लगायेंगे। धान साफ़ करेंगे, ये बातें लिखी हैं?'

तब बसाई ने देखा कि लस्कर के धान उन्हें लस्कर के बखार में कोई रखने न देगा। वह बोला, 'उनसे धान साफ कराओगे, गट्ठे बँधवाओगे, पहरा दिलवाओगे? हमें हमारा हक न दोगे?'

बसाई भागा-भागा गया। चिल्लाते हुए गया, 'तुम लोग आओ! लस्कर के कटैये उठा रहे हैं बखार में। तुम आओ। लाठियाँ लेकर निकलो। पीटो कटैयों को। इस बार हक छोड़ दिया तो फिर नहीं मिलेगा। चलो...।'

उसकी आवाज़ आर्त्त और विपन्न थी। खेतमजूर लाठी लेकर भागे-

भागे आये और कटैयों को मारने लगे। 'हमारा हक छीन लोगे ? हमारा हक ? रुपया-रुपया रोज लेकर हमारा एम० डब्लू० मारोगे ?'

कटैये चीखते हुए बिखर गये और भागे। किसी-किसी ने लौट कर मारा। गाँव की औरतें चिल्लाती हुई और उन्हें जो भी मिला उसे लेकर भागी आयीं। कटैयों की औरतें रो रही थीं। धक्कामुक्की में आग के कौड़े में धान गिरते रहे। वे भभक उठे। गुस्से और बेहोशी में पागल बसाई बोला, 'जलने दो सारा।'

कहकर जलते हुए धान के पौधों का गुच्छा धान के ढेर में फेंक कर मारा। धुआँ, कुहरे से भीगे धानों में धुआँ। फिर आग लग गयी।

लखिन्द बोला, 'सब जला दें ! तुमने कहा, सब जल जाये, जला दूँ, बसाई !'

अब लस्कर के घर से पंद्रह युवक निकल आये। सुबोध ने डरते हुए देखा। उनके हाथों में तीन बन्दूकें, छुरे और गुप्तियाँ थीं।

उन्होंने पहले लखिन्द को गोली मार दी और टाँग पकड़कर शून्य में उछाल कर जलते हुए धानों में फेंक दिया। उसके बाद खेतमजूरों के बीच आश्चर्य की शृंखला और निर्दयता उतर पड़ी। बसाई चिल्ला रहा था, 'साला गुंडे ले आया है, रे !' और सुबोध ने देखा कि बसाई भाग कर आते-आते दोनों हाथ फैलाकर लड़खड़ा रहा है, चक्कर खाकर गिर गया ! बसाई के बेटे का आतंकित चेहरा, सिर पर गहरी चोट खाकर बेहोश होते सुबोध ने सुना कि लस्कर चिल्ला रहा है, 'खतम कर दो उसकी जान, संथाल का सँपोला !'

किसी ने सूचना नहीं दी। टेलीपैथी से पुलिस आ गयी। बसाई और लखिन्दर की लाशें लेकर जो वैन गयी उसी से सुबोध को अस्पताल ले जाया गया।

पुलिस की तैनाती से कटैयों ने निडर काम किया ! दोनों गाँवों को तहस-नहस कर दिया गया, जिससे बहुत-से खेतमजूर गाँव छोड़कर भाग गये।

अब सुबोध का कोई स्टेटमेंट नहीं माना गया और कलकत्ते में फ़ोन करना चाहने पर उसने सुना कि सामन्त मत्स्य-विभाग में चले गये हैं।

सुबोध का सस्पेंशन हुआ और वह चार्जशीट हुए।

लखिन्द और बसाई के घर, सिचरण और निताई के घर, सोमाई का माझीपाड़ा—अब बिच्छबूटी के जंगल थे।

अब लस्कर बरस में तीन फ़सलें लेता। वह ख़रीफ़ और रबी के सिवा

मोटा धान भी लेता। इस बार वह तीनों फसल, एक रुपया रोज पर कटैयों से करायेगा।

सोनाल और गयेश्वरी के खेतमजूरों ने गाँव छोड़ना शुरू कर दिया।

लस्कर ने सदर के पुलिस-क्लब को दस हजार रुपये दिये।